चन्द्रकान्ता सन्तति

बाबू देवकीनन्दन खत्री

भारती भाषा प्रकाशन
शाहदरा, दिल्ली-110032

चन्द्रकान्ता सन्तति

बाबू देवकीनन्दन खत्री

3

प्रकाशक :
भारती भाषा प्रकाशन
518/6-बी, विश्वासनगर,
शाहदरा, दिल्ली-110032

आवरण : हरिप्रकाश त्यागी

प्रथम संस्करण : 1995   मूल्य : 125.00

मुद्रक : विकास ऑफसेट
सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

CHANDRAKANTA SANTATI, Part III (Novel) by
Babu Devkinandan Khatri

चन्द्रकान्ता सन्तति

नौवाँ भाग

1

अब वह मौका आ गया है कि हम अपने पाठकों को तिलिस्म के अन्दर ले चलें और वहाँ की सैर करावें, क्योंकि कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह तथा मायारानी तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में जा विराजे हैं जिसे एक तरह तिलिस्म का दरवाजा कहना चाहिए। ऊपर के भाग में यह लिखा जा चुका है कि भैरोंसिंह को रोहतासगढ़ की तरफ और राजा गोपालसिंह और देवीसिंह को काशी की तरफ रवाना करने के बाद इन्द्रजीतसिंह, आनन्दसिंह, तेजसिंह, तारासिंह, शेरसिंह और लाड़िली को साथ लिए हुए कमलिनी तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में जा पहुँची और उसने राजा गोपालसिंह के कहे अनुसार देवमन्दिर में, जिसका हाल आगे चलकर खुलेगा, डेरा डाला। हमने कमलिनी और कुंअर इन्द्रजीतसिंह वगैरह को दारोगा वाले मकान के पास के एक टीले पर ही पहुँचा कर छोड़ दिया था और यह नहीं लिखा कि वे लोग तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में किस राह से पहुँचे या वह रास्ता किस प्रकार का था। खैर, हमारे पाठक महाशय ऐयारों के साथ कई दफा उस तिलिस्मी बाग में जायँगे इसलिए वहाँ के रास्ते का हाल उनसे छिपा न रह जायगा।

तिलिस्मी बाग का चौथा दर्जा अद्भुत और भयानक रस का खजाना था। वहाँ का पूरा हाल तो तब मालूम होगा जब तिलिस्म बखूबी टूट जायगा मगर जाहिरा हाल जिसे कुँअर इन्द्रजीतसिंह और उनके साथियों ने वहाँ पहुँचने के साथ ही देखा, हम इस जगह लिख देते हैं।

उस हिस्से में फूल-फल और पत्तों की किस्म में से ऐसा कुछ विशेष न था जिससे हम उसे बाग कहते, हाँ चारों तरफ तरह-तरह की इमारतें जरूर बहुतायत से बनी हुई थीं जिनका हाल हम उस देवमन्दिर को मध्य मान कर लिखते हैं जिसमें इस समय हमारे दोनों कुमार और दोनों नेकदिल खैरख्वाह और मुहब्बत का नायाब नमूना दिखानेवाली नायिकाएँ तथा उनके साथी लोग विराज रहे हैं। जैसा कि नाम से समझा जाता है वह देवमन्दिर वास्तव में कोई मन्दिर या शिवालय नहीं था, वह केवल सुर्ख पत्थर का बना

हुआ एक मकान था जिसमें दस हाथ की कुर्सी के ऊपर चालीस खम्भों का केवल एक अपूर्व कमरा था जिसके बीचोंबीच में दस हाथ के घेरे का एक गोल खम्भा था और उस पर तरह-तरह की तस्वीरें बनी हुई थीं। बस, इसके अतिरिक्त देवमन्दिर में और कोई बात न थी। उस देवमन्दिर वाले कमरे में जाने के लिए जाहिर में कोई रास्ता न था, इसके सिवाय एक बात यह और थी कि कमरा चारों तरफ से परदेनुमा ऊँची दीवारों से ऐसा घिरा हुआ था कि उसके अन्दर रहने वाले आदमियों को बाहर से कोई देख नहीं सकता था। उस देवमन्दिर के चारों तरफ थोड़ी-सी जमीन में बाग की पक्की क्यारियाँ बनी हुई थीं और उनमें तरह-तरह के पेड़ लगे हुए थे, मगर ये पेड़ भी सच्चे न थे, बल्कि एक प्रकार की धातु के बने हुए थे और असली मालूम होने के लिए उन पर तरह-तरह के रंग चढ़े हुए थे, यदि इस खयाल से उसे हम बाग कहें तो हो सकता है और ताज्जुब नहीं कि इन्हीं पेड़ों की वजह से वह हिस्सा बाग के नाम से पुकारा भी जाता हो। उस नकली बाग में दो-दो आदमियों के बैठने लायक कई कुर्सियाँ भी जगह-जगह बनी हुई थीं।

उन क्यारियों के चारों तरफ छोटी-छोटी कई कोठरियाँ और मकान भी बने थे जिनका अलग-अलग हाल लिखना इस समय आवश्यक नहीं, मगर उन चार मकानों का हाल लिखे बिना काम न चलेगा जो कि देवमन्दिर या यों कहिए कि इस नकली बाग के चारों तरफ एक-दूसरे के मुकाबले में बने हुए थे और जिन चारों ही मकानों के बगल में एक-एक कोठरी और कोठरी से थोड़ी दूर के फासले पर एक-एक कुआँ भी बना हुआ था।

पूरब की तरफ वाले मकान के चारों तरफ पीतल की ऊँची दीवार थी इसलिए उस मकान का केवल ऊपर वाला हिस्सा दिखाई देता था और कुछ मालूम नहीं होता था कि उसके अन्दर क्या है, हाँ छत के ऊपर एक लोहे का पतला महराबदार खम्भ निकला हुआ जरूर दिखाई दे रहा था जिसका दूसरा सिरा उसके पास वाले कुएँ के अन्दर गया हुआ था। उस मकान के चारों तरफ जो पीतल की दीवार थी उसी में एक बन्द दरवाजा भी दिखाई देता था जिसके दोनों तरफ पीतल के दो-दो आदमी हाथ में नंगी तलवारें लिए खड़े थे।

पश्चिम तरफ वाले मकान के दरवाजे पर हड्डियों का एक बड़ा-सा ढेर था और उसके बीचोंबीच में लोहे की एक जंजीर गड़ी थी जिसका दूसरा सिरा उसके पास वाले कुएँ के अन्दर गया था।

उत्तर तरफ वाला मकान गोलाकार स्याह पत्थरों का बना हुआ था और उसके चारों तरफ चर्खियाँ और तरह-तरह के कल-पुर्जे लगे हुए थे। इसी मकान के पास वाले कुएँ के अन्दर मायारानी अपने पति का काम तमाम करने के लिए गई थी।

दक्खिन की तरफ वाले मकान के ऊपर चारों कोनों पर चार बुर्जियाँ थीं और उनके ऊपर लोहे का जाल पड़ा था। उन चारों बुर्जियों पर (जाल के अन्दर) चार मोर न मालूम किस चीज के बने हुए थे जो हर वक्त नाचा करते थे।

आज उसी देवमन्दिर के कमरे में दोनों कुमार, कमलिनी, लाड़िली और ऐयार लोग बैठे आपस में कुछ बातें कर रहे हैं। रिक्तगन्थ अर्थात् किसी के खून से लिखी हुई किताब कुँअर इन्द्रजीतसिंह के हाथों में है और वह बड़े प्रेम से उसकी जिल्द को देख रहे

हैं, मगर अभी तक उस किताब को पढ़ने की नौबत नहीं आई है। कमलिनी मुहब्बत की निगाह से इन्द्रजीतसिंह को देख रही है और उसी तरह लाड़िली भी छिपी निगाहें कुँअर आनन्दसिंह पर डाल रही है।

कमलिनी—(इन्द्रजीतसिंह से) अब आपको चाहिए कि जहाँ तक जल्द हो सके यह रिक्तगंथ पढ़ जायँ।

इन्द्रजीतसिंह—हाँ, मैं भी यही चाहता हूँ, परन्तु पहले उन कामों से छुट्टी पा लेनी चाहिए जिनके लिए तेजसिंह चाचा को और ऐयारों को हम लोग यहाँ तक साथ लाए हैं।

कमलिनी—मैं इन लोगों को केवल रास्ता दिखाने के लिए यहाँ तक लाई थी सो काम तो हो ही चुका, अब इन लोगों को यहाँ से जाना और कोई नया काम करना चाहिए और आपको भी रिक्तग्रंथ पढ़ने के बाद तिलिस्म तोड़ने में लग जाना चाहिए।

इन्द्रजीतसिंह—राजा गोपालसिंह ने कहा था कि किशोरी और कामिनी को छुड़ा कर जब हम आ जायँ तब तिलिस्म तोड़ने में हाथ लगाना। इसके अतिरिक्त तेजसिंह चाचा से मुझे राजा गोपालसिंह के छुड़ाने का हाल सुनना भी बाकी है।

तेजसिंह—उस बारे में कुछ हाल तो मैं आपसे कह भी चुका हूँ!

आनन्दसिंह—जी हाँ, आप वहाँ तक कह चुके हैं जब (कमलिनी की तरफ देख कर) ये चंडूल की सूरत बनाकर आपके पास आई थीं, मगर हमें यह न मालूम हुआ कि इन्होंने हरनामसिंह, बिहारीसिंह और मायारानी के कान में क्या कहा जिसे सुन सभी की अवस्था बदल गई थी। जहाँ तक मैं समझता हूँ, शायद इन्होंने राजा गोपालसिंह के ही बारे में कोई इशारा किया होगा।

कमलिनी—जी हाँ, यही बात है। राजा गोपालसिंह को कैद करने में हरनामसिंह और बिहारीसिंह ने भी मायारानी का साथ दिया था और धनपत इस काम की जड़ है।

इन्द्रजीतसिंह—(हँस कर) धनपत इस काम की जड़ है!

कमलिनी—जी हाँ, मैं बोलने में भूलती नहीं, धनपत वास्तव में औरत नहीं है बल्कि मर्द है। उसकी खूबसूरती ने मायारानी को फँसा लिया और उसी की मुहब्बत में पड़ कर उसने यह अनर्थ किया था। ईश्वर ने धनपत का चेहरा ऐसा बनाया है कि वह मुद्दत तक औरत बन कर रह सकता है। एक तो वह नाटा है। दूसरे अठारह वर्ष की अवस्था हो जाने पर भी दाढ़ी-मूँछ की निशानी नहीं आई। लेकिन जनानी सूरत होने पर भी उसमें ताकत बहुत है।

इन्द्रजीतसिंह—(ताज्जुब से) यह तो एक नई बात तुमने सुनाई। अच्छा तब?

लाड़िली—क्या धनपत मर्द है?

कमलिनी—हाँ, और यह हाल मायारानी, बिहारीसिंह और हरनामसिंह के सिवाय और किसी को मालूम नहीं है। कुछ दिन बाद मुझे मालूम हो गया था, मगर आज के पहले यह हाल मैंने भी किसी से नहीं कहा था। इसी तरह राजा गोपालसिंह का हाल भी उन चारों के सिवाय और कोई नहीं जानता था और जब कोई पाँचवाँ आदमी

उस भेद को जानेगा तो बेशक हम चारों की जान जायगी और यही सबब उस समय उन लोगों की बदहवासी का था जब मैंने चंडूल बन कर उन तीनों के कानों में पते की बात कही थी, मगर उस समय इसके साथ-साथ ही मैंने यह भी कह दिया था कि राजा गोपालसिंह का हाल हजारों आदमी जान गए हैं और राजा वीरेन्द्रसिंह के लश्कर में भी यह बात मशहूर हो गई है।

आनन्दसिंह—ठीक है, मगर बिहारीसिंह ने मायारानी से यह हाल क्यों नहीं कहा ?

कमलिनी—इसका एक खास सबब है।

इन्द्रजीतसिंह—वह क्या ?

कमलिनी—बिहारी और हरनाम ने मायारानी के दो प्रेमी पात्रों का खून किया है जिसका हाल मायारानी को भी मालूम नहीं है, उसका भी इशारा मैंने उन दोनों के कानों में किया था।

इन्द्रजीतसिंह—(हँस कर) तुम्हारी बहिन बड़ी ही शैतान है ! मगर देखना चाहिए तुम कैसी निकलती हो, खून का साथ देती हो या नहीं !

कमलिनी-- (हाथ जोड़ कर) बस, माफ कीजिए, ऐसा कहना हम दोनों बहिनों (लाड़िली की तरफ इशारा करके) के लिए उचित नहीं ! इसका एक सबब भी है।

इन्द्रजीतसिंह—वह क्या ?

कमलिनी—मेरे पिता की दो शादियाँ हुई थीं। मैं और लाड़िली एक माँ के पेट से हुईं और कम्बख्त मायारानी दूसरी माँ के पेट से, इसलिए हम दोनों का खून उसके संग नहीं मिल सकता।

इन्द्रजीतसिंह—(हँस कर) शुक्र है, खैर यह कहो कि चंडूल बनने के बाद तुमने क्या किया ?

कमलिनी—चंडूल बनने के बाद मैंने नानक को बाग के बाहर कर दिया और तेजसिंह जी को राजा गोपालसिंह के पास ले जाकर दोनों की मुलाकात कराई, इसके बाद वहाँ रहने का स्थान, राजा गोपालसिंह के छुड़ाने की तरकीब, और फिर उन्हें साथ लेकर बाग के बाहर हो जाने का रास्ता बताकर मैं तेजसिंह जी से बिदा हुई और आप लोगों को कैद से छुड़ाने का उद्योग करने लगी। इसके बाद जो कुछ हुआ आप जान ही चुके हैं। हाँ, राजा गोपालसिंह को छुड़ाने के समय तेजसिंहजी ने क्या-क्या किया सो आप इन्हीं से पूछिए।

अब पाठक समझ ही गये होंगे कि राजा गोपालसिंह को कैद से छुड़ाने वाले तेजसिंह थे और जब राजा गोपालसिंह को मारने के लिए मायारानी कैदखाने में गई थी तो तेजसिंह ही ने आवाज देकर उसे परेशान कर दिया था। दोनों कुमारों के पूछने पर तेजसिंह ने अपना पूरा-पूरा हाल बयान किया जिसे सुनकर कुमार बहुत प्रसन्न हुए।

2

ऐयारों को जो कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के साथ थे, बाग के चौथे दर्जे के देवमन्दिर में आने-जाने का रास्ता बताकर कमलिनी ने तेजसिंह को रोहतासगढ़ जाने के लिए कहा और बाकी ऐयारों को अलग-अलग काम सुपुर्द करके दूसरी तरफ बिदा किया।

इस बाग के चौथे दर्जे की इमारत का हाल हम ऊपर लिख आए हैं और यह भी लिख आये हैं कि वहाँ असली फूल-पत्तों का नाम-निशान भी न था। यहाँ की ऐसी अवस्था देखकर कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने कमलिनी से पूछा, "राजा गोपालसिंह ने कहा था कि 'चौथे दर्जे में मेवे बहुतायत से हैं खाने-पीने की तकलीफ न होगी', मगर यहाँ तो कुछ भी दिखाई नहीं देता ! हम लोगों को यहाँ कई दिनों तक रहना होगा, कैसे काम चलेगा ?" इसके जवाब में कमलिनी ने कहा, "आपका कहना ठीक है और राजा गोपालसिंह ने भी गलत नहीं कहा। यहाँ मेवों के पेड़ नहीं हैं मगर (हाथ का इशारा करके) उस तरफ थोड़ी-सी जमीन मजबूत चहारदीवारी से घिरी हुई है जिसे आप मेवों का बाग कह सकते हैं। उसको कोई सींचता या दुरुस्त नहीं करता है, बाहर से एक नहर दीवार तोड़ कर उसके अन्दर पहुँचाई गई है और उसी की तरावट से वह बाग सूखने नहीं पाता। कई पेड़ पुराने होकर मर जाते है और कई नये पैदा होते रहते हैं। इस तिलिस्मी बाग का राजा दस-पन्द्रह वर्ष पीछे कभी उसकी सफाई करा दिया करता है। मैं वहाँ जाने का रास्ता आपको बता दूँगी !"

ऐयारों को बिदा करने के बाद ही कमलिनी भी लाड़िली को लेकर दोनों कुमारों से यह कह कर बिदा हुई—"कई जरूरी कामों को पूरा करने के लिए मैं जाती हूँ, परसों यहाँ आऊँगी।"

तीन दिन तक कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह देवमन्दिर में रहे। जब आवश्यकता होती मेवों वाले बाग में चले जाते और पेट भर कर फिर उस देवमन्दिर में चले आते। इस बीच में दोनों भाइयों ने मिल कर 'रिक्तगंथ' (खून से लिखी किताब) भी पढ़ डाली, मगर रिक्तगंथ में जो भी बातें लिखी थीं, वे सब-की-सब बखूबी समझ में न आईं क्योंकि उसमें बहुत से शब्द इशारे के तौर पर लिखे थे जिनका भेद जाने बिना असल बात का पता लगाना बहुत ही कठिन था, तथापि तिलिस्म के कई भेदों और रास्तों का पता उन दोनों को मालूम हो गया और बाकी के विषय में निश्चय किया कि कमलिनी से मुलाकात होने पर उन शब्दों का अर्थ पूछेंगे जिनके जाने बिना कोई काम नहीं चलता।

यद्यपि कुँअर इन्द्रजीतसिंह किशोरी के लिए और आनन्दसिंह कामिनी के लिए बेचैन हो रहे थे, मगर कमलिनी और लाड़िली की भोली सूरत के साथ-साथ उनके अहसानों ने भी दोनों कुमारों के दिलों को पूरी तरह से अपने काबू में कर लिया था फिर भी किशोरी और कामिनी की मुहब्बत के खयाल से दोनों कुमार अपने दिलों को

कोशिश के साथ दबाए जाते थे ।

दोनों कुमारों को देवमन्दिर में टिके हुए आज तीसरा दिन है । ओढ़ने और बिछाने का कोई सामान न होने पर भी उन दोनों को किसी तरह की तकलीफ नहीं मालूम होती । रात आधी से ज्यादा जा चुकी है । तिलिस्मी बाग के दूसरे दर्जे से होती और वहाँ के खुशबूदार फूलों से बसी हुई मन्द चलने वाली हवा ने नर्म थपकियाँ लगा-लगाकर दोनों नौजवान, सुन्दर और सुकुमार कुमारों को सुला दिया है । ताज्जुब नहीं कि दिन-रात ध्यान बने रहने के कारण दोनों कुमार इस समय स्वप्न में भी अपनी-अपनी माशूकाओं से लाड़-प्यार की बातें कर रहे हों, और उन्हें इस बात का गुमान भी न हो कि पलक उठते ही रंग बदल जायगा और नर्म कलाइयों का आनन्द लेने वाला हाथ सिर तक पहुँचने का उद्योग करेगा ।

यकायक घड़घड़ाहट की आवाज ने दोनों को जगा दिया । वे चौंक कर उठ बैठे और ताज्जुब भरी निगाहों से चारों तरफ देखने और सोचने लगे कि यह आवाज कहाँ से आ रही है । ज्यादा ध्यान देने पर भी यह निश्चय न हो सका कि आवाज किस चीज की है, हाँ, इतनी बात मालूम हो गई कि देवमन्दिर के पूरब तरफ वाले मकान के अन्दर से यह आवाज आ रही है । दोनों राजकुमारों को देवमन्दिर से नीचे उतर कर उस मकान के पास जाना उचित न मालूम न हुआ, इसलिए वे देवमन्दिर की छत पर चढ़ गये और गौर से उस तरफ देखने लगे ।

आधे घंटे तक वह आवाज एक रंग से बराबर आती रही और इसके बाद धीरे-धीरे कम होकर बन्द हो गई । उस समय दरवाजा खोलकर अन्दर से आता हुआ एक आदमी उन्हें दिखाई पड़ा । वह आदमी धीरे-धीरे देवमन्दिर के पास आया और थोड़ी देर तक खड़ा रहकर उस कुएँ की तरफ लौटा जो पूरब की तरफ वाले मकान के साथ और उससे थोड़ी ही दूर पर था । कुएँ के पास पहुँचकर थोड़ी देर तक वहाँ भी खड़ा रहा और फिर आगे बढ़ा, यहाँ तक कि घूमता-फिरता छोटे-छोटे मकानों की आड़ में जाकर वह न जाने कहाँ नजरों से ओझल हो गया और इसके थोड़ी ही देर बाद उस तरफ एक कमसिन औरत के रोने की आवाज आई ।

इन्द्रजीतसिंह—जिस तौर से यह आदमी इस चौथे दर्जे में आया है, वह बेशक ताज्जुब की बात है ।

आनन्दसिंह—तिस पर इस रोने की आवाज ने और भी ताज्जुब में डाल दिया है । मुझे आज्ञा हो तो जाकर देखूँ कि क्या मामला है ?

इन्द्रजीतसिंह—जाने में कोई हर्ज नहीं है, मगर··· खैर, तुम इसी जगह ठहरो, मैं जाता हूँ ।

आनन्दसिंह—यदि ऐसा ही है तो चलिये हम दोनों आदमी चलें ।

इन्द्रजीतसिंह—नहीं, एक आदमी का यहाँ रहना बहुत जरूरी है । खैर, तुम ही जाओ, कोई हर्ज नहीं, मगर तलवार लेते जाओ ।

दोनों भाई छत के नीचे उतर आये । आनन्दसिंह ने खूँटी से लटकती हुई अपनी तलवार ले ली और कमरे के बीचोंबीच वाले गोल खम्भे के पास पहुँचे । हम ऊपर लिख

आये हैं कि उस खम्भे में तरह-तरह की तस्वीरें बनी हुई थीं। आनन्दसिंह ने एक मूरत पर हाथ रख कर जोर से दबाया, साथ ही एक छोटी-सी खिड़की अन्दर जाने के लिए दिखाई दी। छोटे कुमार उसी खिड़की की राह उस गोल खम्भे के अन्दर घुस गये, और थोड़ी ही देर बाद उस नकली बाग में दिखाई देने लगे। खम्भे के अन्दर रास्ता कैसा था और वह नकली बाग के पास क्योंकर पहुँचे, इसका हाल आगे चलकर दूसरी दफे किसी और के आने या जाने के समय बयान करेंगे, यहाँ मुख्तसिर ही में लिखकर मतलब पूरा करते हैं।

आनन्दसिंह भी उस तरफ गये, जिधर वह आदमी गया था या जिधर से किसी औरत के रोने की आवाज आई थी। घूमते-फिरते एक छोटे मकान के आगे पहुँचे जिस का दरवाजा खुला हुआ था। वहाँ औरत तो कोई दिखाई न दी, मगर उस आदमी को दरवाजे पर खड़े हुए जरूर पाया।

आनन्दसिंह को देखते ही वह आदमी झट मकान के अन्दर घुस गया और कुमार भी तेजी के साथ उसका पीछा किए बेखौफ मकान के अन्दर चले गये। वह मकान दो मंजिल का था, उसके अन्दर छोटी-छोटी कई कोठरियाँ थीं और हर एक कोठरी में दो-दो दरवाजे थे, जिससे आदमी एक कोठरी के अन्दर जाकर कुल कोठरियों की सैर कर सकता था।

यद्यपि कुमार तेजी के साथ पीछा किए हुए चले गये, मगर वह आदमी एक कोठरी के अन्दर जाने के बाद कई कोठरियों में घूम-फिर कर कहीं गायब हो गया। रात का समय था और मकान के अन्दर तथा कोठरियों में बिल्कुल अन्धकार छाया हुआ था, ऐसी अवस्था में कोठरियों के अन्दर घूम-घूम कर उस आदमी का पता लगाना बहुत ही मुश्किल था, दूसरे, इसका भी शक था कि वह कहीं हमारा दुश्मन न हो, लाचार होकर कुमार वहाँ से लौटे, मगर मकान के बाहर न निकल सके, क्योंकि वह दरवाजा बन्द हो गया था जिसकी राह से कुमार मकान के अन्दर घुसे थे। कुमार ने दरवाजा उतारने का भी उद्योग किया मगर उसकी मजबूती के आगे कुछ बस न चला। आखिर दुखी होकर फिर मकान के अन्दर घुसे और एक कोठरी के दरवाजे पर जाकर खड़े हो गये। थोड़ी देर के बाद ऊपर की छत पर से फिर किसी औरत के रोने की आवाज आई, गौर करने से कुमार को मालूम हुआ कि यह बेशक उसी औरत की आवाज है जिसे सुनकर यहाँ तक आए थे। उस आवाज की सीध पर कुमार ने ऊपर की दूसरी मंजिल पर जाने का इरादा किया, मगर सीढ़ियों का पता न लगा।

इस समय कुमार का दिल कैसा बेचैन था, यह वही जानते होंगे। हमारे पाठकों में भी जो दिलेर और बहादुर होंगे, वह उनके दिल की हालत कुछ समझ सकेंगे। बेचारे आनन्दसिंह हर तरह से उद्योग करके रह गए, पर कुछ भी न बन पड़ा। न तो वे उस आदमी का पता लगा सकते थे, जिसके पीछे-पीछे मकान के अन्दर घुसे थे, न उस औरत का हाल मालूम कर सकते थे, जिसके रोने की आवाज से दिल बेताब हो रहा था, और न उस मकान ही से बाहर होकर अपने भाई इन्द्रजीतसिंह को इन सब बातों की खबर कर सकते थे, बल्कि यों कहना चाहिए कि सिवाय चुपचाप खड़े रहने या बैठ

जाने के और कुछ भी नहीं कर सकते थे।

जो कुछ रात थी खड़े-खड़े बीत गई। सुबह की सुफेदी ने जिधर से रास्ता पाया मकान के अन्दर घुसकर उजाला कर दिया, जिससे कुंअर आनन्दसिंह को वहाँ की हर एक चीज साफ-साफ दिखाई देने लगी। यकायक पीछे की तरफ से दरवाजा खुलने की आवाज कुमार के कान में पड़ी। कुमार ने घूमकर देखा तो एक कोठरी का दरवाजा, जो इसके पहले बन्द था, खुला हुआ पाया। वे बेधड़क उसके अन्दर घुस गए और वहाँ ऊपर की तरफ गई हुई छोटी-छोटी खूबसूरत सीढ़ियाँ देखीं। धड़धड़ाते हुए दूसरी मंजिल पर चढ़ गए और हर तरफ गौर करके देखने लगे। इस मंजिल में बारह कोठरियाँ एक ही रंग-ढंग की देखने में आईं। हर एक कोठरी में दो दरवाजे थे। एक दरवाजा कोठरी के अन्दर घुसने के लिए और दूसरा अन्दर की तरफ से दूसरी कोठरी में जाने के लिए था। इस तरह पर किसी एक कोठरी के अन्दर घुसकर कुल कोठरियों में आदमी घूम आ सकता था। धीरे-धीरे अच्छी तरह उजाला हो गया और वहाँ की हर एक चीज बखूबी देखने का मौका कुमार को मिला। छोटे कुमार एक कोठरी के अन्दर घुसे और देखा कि वहाँ सिवाय एक चबूतरे के और कुछ भी नहीं है। यह चबूतरा स्याह पत्थर का बना हुआ था और उसके ऊपर एक कमान और पाँच तीर रखे हुए थे। कुमार ने तीर और कमान पर हाथ रखा, मालूम हुआ कि सब पत्थर का बना हुआ है और किसी काम में आने योग्य नहीं है। दूसरे दरवाजे से दूसरी कोठरी में घुसे तो वहाँ एक लाश पड़ी देखी जिसका कटा हुआ सिर पास ही पड़ा हुआ था और वह लाश भी पत्थर ही की थी। उसे अच्छी तरह देखभाल कर तीसरी कोठरी में पहुँचे।

इसके चारों तरफ दीवार में कई खूँटियाँ थीं और हर एक खूँटी से एक-एक नंगी तलवार लटक रही थी। ये तलवारें नकली न थीं, बल्कि असली लोहे की थीं मगर हर एक पर जंग चढ़ा हुआ था। जब चौथी कोठरी में पहुँचे तो वहाँ चाँदी के सिंहासन पर बैठी हुई एक मूरत दिखाई पड़ी। वह मूरत किसी प्रकार की धातु की बहुत ही खूबसूरत और ठीक-ठीक बनी हुई थी, जिसे देखने के साथ ही कुमार ने पहचान लिया कि यह मायारानी की छोटी बहन लाड़िली की मूरत है। कुमार मुहब्बत भरी निगाहें उस मूरत पर डालने लगे। निराली जगह अपने माशूक को देखने का उन्हें अच्छा मौका मिला, यद्यपि वह माशूक असली नहीं, बल्कि केवल उसकी एक छवि मात्र थी तथापि इस सबब से कि यहाँ पर कोई ऐसा आदमी न था जिसका लिहाज या खयाल होता, उन्हें एक निराले ढंग की खुशी हुई और वे देर तक उसके हर एक अंग की खूबसूरती को देखते रहे। इसी बीच बगल वाली कोठरी में से यकायक एक खटके की आवाज आई। कुमार चौंक पड़े और यह सोचते हुए उस कोठरी की तरफ बढ़े कि शायद वह आदमी उसमें मिले जिसके पीछे-पीछे इस मकान के अन्दर आए हैं, मगर इस कोठरी में भी किसी की सूरत दिखाई न दी।

इस कोठरी में, जिसमें कुमार पहुँचे हैं, चाँदी का केवल एक सन्दूक था, जिसके बीच में हाथ डालने के लायक एक छेद भी बना हुआ था और छेद के ऊपर सुनहले हर्फों में यह लिखा हुआ था—

"इस छेद में हाथ डाल के देखो, क्या अनूठी चीज है।"

कुँअर आनन्दसिंह ने बिना सोचे-विचारे उस छेद में हाथ डाल दिया, मगर फिर हाथ निकाल न सके। सन्दूक के अन्दर हाथ जाते ही मानो लोहे की हथकड़ी पड़ गई जो किसी तरह हाथ बाहर निकालने की इजाजत नहीं देती थी। कुमार ने झुक कर सन्दूक के नीचे की तरफ देखा तो मालूम हुआ कि सन्दूक जमीन से अलग नहीं है और इसलिए उसे किसी तरह खिसका भी नहीं सकते थे।

3

कुँअर आनन्दसिंह के जाने के बाद इन्द्रजीतसिंह देर तक उनके आने की राह देखते रहे। जैसे-जैसे देर होती थी, जी बेचैन होता जाता था। यहाँ तक कि तमाम रात बीत गई, सवेरा हो गया, और पूरब तरफ से सूर्य भगवान दर्शन देकर धीरे-धीरे आसमान पर चढ़ने लगे। जब पहर भर से ज्यादा दिन चढ़ गया, तब इन्द्रजीतसिंह बहुत ही बेताब हुए और उन्हें निश्चय हो गया कि आनन्दसिंह जरूर किसी आफत में फँस गये।

कुँअर इन्द्रजीतसिंह सोच ही रहे थे कि स्वयं चल के आनन्दसिंह का पता लगाना चाहिए कि इतने ही में लाड़िली को साथ लिए हुए कमलिनी वहाँ आ पहुँची। इन्हें देख कुमार की बेचैनी कुछ कम हुई और आशा की सूरत दिखाई देने लगी। कमलिनी ने जब कुमार को उस जगह अकेले और उदास देखा तो उसे ताज्जुब हुआ, मगर वह बुद्धिमान औरत तुरत ही समझ गई कि इनके छोटे भाई आनन्दसिंह इनके साथ नहीं दिखाई देते, जरूर वे किसी मुसीबत में पड़ गए हैं, और ऐसा होना कोई ताज्जुब की बात नहीं है क्योंकि यह तिलिस्म का मौका है, और यहाँ का रहने वाला थोड़ी भूल में तकलीफ उठा सकता है।

कमलिनी ने कुँअर इन्द्रजीतसिंह से उदासी का कारण और कुँअर आनन्दसिंह के न दिखने का सबब पूछा, जिसके जवाब में इन्द्रजीतसिंह ने जो कुछ हुआ था, बयान करके कहा कि "आनन्द को गए हुए नौ घंटे के लगभग हो गये।"

इस समय कोई लाड़िली की सूरत गौर से देखता तो बेशक समझ जाता कि आनन्दसिंह का हाल सुनकर उसको हद से ज्यादा रंज हुआ है। ताज्जुब नहीं कि कमलिनी और इन्द्रजीतसिंह भी उसके दिल की हालत जान गये हों, क्योंकि वह अपनी आँखों को डबडबाने और आँसू के निकलने को बड़े परिश्रमपूर्वक रोक रही थी। यद्यपि उसे निश्चय था कि दोनों कुमार इस तिलिस्म को अवश्य तोड़ेंगे, तथापि उसका दिल दुःख गया था। कौन ऐसा है जो अपने प्यारे पर आई हुई मुसीबत का हाल सुनकर बेचैन न हो?

कमलिनी—(सब बातें सुनकर) किसी का आना ताज्जुब नहीं है, हाँ, किसी

औरत का आना बेशक ताज्जुब है, क्योंकि (इन्द्रजीतसिंह की तरफ इशारा करके) आप कहते हैं कि एक औरत के रोने की आवाज आई थी।

लाड़ली—ठीक है, जहाँ तक मैं समझती हूँ सिवाय तुम्हारे, मायारानी के और मेरे किसी चौथी औरत को यहाँ आने का रास्ता मालूम नहीं है, हाँ, मर्दों में कई जरूर ऐसे हैं, जो यहाँ आ सकते हैं।

कमलिनी—मगर इस देवमन्दिर के अन्दर हम लोगों के अतिरिक्त राजा गोपालसिंह के सिवाय और कोई भी नहीं आ सकता। खैर, इन सब बातों को जाने दो, अब यहाँ से चलकर कुँअर साहब का पता लगाना बहुत जरूरी है। यद्यपि यहाँ किसी दुश्मन का आना बहुत कठिन है, तथापि खुटका लगा ही रहता है। जब दोनों कुमारों को मायारानी के कैदखाने से छुड़ाकर हम लोग सुरंग ही सुरंग तिलिस्मी बाग से बाहर हो रहे थे, तो उस हरामजादे के आ पहुँचने की कौन उम्मीद थी, जिसने कुमार को जख्मी किया था! इसी तरह कौन ठिकाना यहाँ भी कोई दुष्ट आ पहुँचा हो!

आखिर कुँअर आनन्दसिंह को खोजने के लिए तीनों वहाँ से रवाना हुए और देवमन्दिर के नीचे उतर उसी तरफ चले जिधर आनन्दसिंह गये थे। जब एक मकान के दरवाजे पर पहुँचे तो कमलिनी रुकी और बड़े गौर से उस दरवाजे को जो बन्द था, देखने लगी। इसके बाद फिर आगे बढ़ी, दूसरे मकान के दरवाजे पर पहुँच कर उसे भी गौर से देखा और सिर हिलाती हुई फिर आगे बढ़ी। इसी तरह कुँअर इन्द्रजीतसिंह और लाड़िली को साथ लिए हुए, कमलिनी सात-आठ मकानों के दरवाजे पर गई। हर एक मकान का दरवाजा बन्द था, और हर एक दरवाजे को कमलिनी ने गौर से देखा, लेकिन कुछ काम न चला, मगर जब उस मकान के दरवाजे पर पहुँची, जिसमें कुँअर आनन्दसिंह गये थे तो रुककर मामूली तौर पर उसके दरवाजे को भी बड़े गौर से देखने लगी और थोड़ी ही देर में बोल उठी, "बेशक कुँअर आनन्दसिंह इसी मकान के अन्दर हैं। (उँगली से दरवाजे के ऊपर वाले चौखटे की तरफ इशारा करके) देखिये, यह स्याह पत्थर की तीन खूँटियाँ नीचे की तरफ झुक गई हैं।"

कुमार—इन खूँटियों से क्या मतलब है?

कमलिनी—इस मकान के अन्दर जितने आदमी जायेंगे, उतनी खूँटियाँ नीचे की तरफ झुक जायँगी।

कुमार—(ऊपर वाले चौखटे की तरफ इशारा करके) ऊपर कुल बारह खूँटियाँ हैं, मान लिया जाय कि बारहों खूँटियाँ उस समय झुक जायँगी, जब बारह आदमी इस मकान के अन्दर जा पहुँचेंगे, मगर जब बारह से ज्यादा आदमी इस मकान के अन्दर जायँगे, तब क्या होगा?

कमलिनी—बारह से ज्यादा आदमी इस मकान के अन्दर जा ही नहीं सकते! तिलिस्मी बातों में किसी की जबर्दस्ती नहीं चल सकती।

कुमार—ठीक है, मगर तुमने यह कैसे जाना कि आनन्दसिंह इसी मकान के अन्दर हैं?

कमलिनी—सिर्फ अन्दाज से समझती हूँ कि आनन्दसिंह इसी मकान में होंगे,

क्योंकि इस बाग में एक आदमी का का आना आपने बयान किया था, इसके बाद कहा था किसी औरत के रोने की आवाज आई थी, दो हो तो चुके, तीसरे आनन्दसिंह भी पीछा किये हुए इधर ही आये हैं और इस तरह इस मकान के अन्दर तीन आदमियों का होना साबित होता है। इन्हीं सब बातों से मुझे विश्वास होता है कि वे ही तीन आदमी इस मकान के अन्दर हैं।

कुमार—तुम्हारा सोचना बहुत ठीक है, मगर जहाँ तक जल्द हो सके, इस बात का निश्चय करके आनन्द को छुड़ाना चाहिए, न मालूम वह किस आफत में फँस गया है।

कमलिनी—देखिये, मैं बहुत जल्द इसका बन्दोबस्त करती हूँ।

इसके बाद कमलिनी ने कुँअर इन्द्रजीतसिंह से कहा, "इस मकान का दरवाजा खोलना तो जरा मुश्किल है, मगर चौखट के ऊपर जो बारह खूँटियाँ हैं उनमें से तीन नीचे की तरफ झुक गई हैं, और बाकी नौ ऊपर की तरफ उठी हुई हैं, उनमें से किसी एक को आप उछल कर थाम लीजिए और जोर करके नीचे की तरफ झुकाइए, देखिये, क्या होता है।" कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने वैसा ही किया। उछल कर एक खूँटी को थाम लिया और झटका देकर उसे नीचे की तरफ झुकाया तथा जब वह नीचे को झुक गई तो उसे छोड़कर अलग हो गये। यकायक मकान के अन्दर से इस तरह की आवाज आने लगी, जैसे बड़े-बड़े कल पुर्जे और चरखे घूमते हों, या कई गाड़ियाँ मकान के अन्दर दौड़ रही हों। तीनों आदमी दरवाजे से हटकर खड़े हो गये और राह देखने लगे कि अब क्या होता है।

थोड़ी ही देर बाद मकान की छत पर से एक आवाज आई—"इधर देखो" जिसे सुनते ही तीनों आदमी चौंके और ऊपर की तरफ देखने लगे। एक आदमी, जो अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए था, छत से नीचे की तरफ झाँकता हुआ दिखाई दिया। उसने कमलिनी, लाड़िली और कुँअर इन्द्रजीतसिंह को अपनी तरफ देखते देख एक लपेटा हुआ कागज नीचे गिरा दिया, जिसे झट कमलिनी ने उठा लिया और बढ़कर कुँअर इन्द्रजीतसिंह से कहा, "बस अब जिस तरह हो सके आप इस खूँटी को, जिसे झुकाया है, ज्यों-की-त्यों सीधी कर दीजिए।"

इन्द्रज़ीतसिंह—आखिर इसका क्या सबब है? इस पुर्जे में क्या लिखा हुआ है?

कमलिनी—पहले आप उसे कीजिए, जो मैं कह चुकी हूँ। देर करने में हमारा ही हर्ज होगा।

लाचार कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने वैसा ही किया। उछलकर नीचे की तरफ से एक झटका ऐसा दिया कि वह खूँटी सीधी हो गई और इसके साथ ही मकान के अन्दर सन्नाटा छा गया, अर्थात् वह जोर-शोर की आवाज, जो खूँटी झुकने के साथ ही आने लगी थी, एकदम बन्द हो गई। इसके बाद कमलिनी ने वह कागज का पुर्जा जो मकान की छत पर से गिराया गया था, कुमार के हाथ में दे दिया। कुमार ने उसे देखा, यह लिखा हुआ था—

1	2	3	4	5	6
एच	मेमचे	काटनो	केआरेयाँ	डेह	नेपो
7	8	9	10	11	12
किमटू	च्वाला	मेम	कुम	नीपो	इच्चो
				13	लव
				14	कचीचा
				15	टेप

इस चिट्ठी का मतलब तो कुमार तुरत समझ गए, क्योंकि यह ऐयारी भाषा में लिखी हुई थी और कुमार ऐयारी भाषा बखूबी जानते थे, मगर यह उनकी समझ में न आया कि चिट्ठी लिखने वाला कौन है, क्योंकि उसने अपना नाम टेप लिखा था। कुमार ने कमलिनी से 'टेप' का अर्थ पूछा, जिसके जवाब में उसने कहा, "थोड़ी देर सब्र कीजिए, आप-से-आप उस आदमी का पता लग जायगा।" कुमार चुप हो रहे और दरवाजे की तरफ देखने लगे। हमारे पाठक महाशय ऐयारी भाषा शायद न जानते होंगे, अस्तु उन्हें समझाने के लिए उस चिट्ठी का अर्थ हम नीचे लिखे देते हैं—

1	2	3	4	5	6
यहाँ	मैं हूँ	डरो मत	कुमार को	तकलीफ	न होगी
7	8	9	10	11	12
थोड़ी देर	सब्र करो	मैं	स्वयं	नीचे	आता हूँ
				13	वही
				14	दिलजला
				15	टेप

4

मायारानी आज यह विचार कर बहुत खुश है कि आधी रात के समय कमलिनी इस बाग में आयेगी और मैं उसे अवश्य गिरफ्तार करूँगी, मगर इस बात को जानने के लिए उसका जी बेचैन हो रहा कि उसके सोने वाले कमरे में रात को कौन आया था। वह चारों तरफ खयाल दौड़ाती थी, मगर कुछ समझ में न आता था और आखिर दिल में यही कहती थी कि आने वाला चाहे कोई हो, मगर काम कमलिनी ही का है। आज अगर कमलिनी गिरफ्तार हो जायगी तो सब टण्टा मिट जायगा। जितनी बेफिक्री राजा गोपालसिंह के मरने से मिली है, उतनी ही कमलिनी के भी मारने से मिलेगी, क्योंकि उसके मरने के बाद मेरे साथ दुश्मनी करने का साहस फिर कोई भी नहीं कर सकता।

आधी रात जाने के पहले ही मायारानी धनपत को साथ लिए हुए उस दरवाजे के पास आ पहुँची जिधर से कमलिनी के आने की खबर सुनी थी। मायारानी के कहे

मुताबिक पहरा देने वाली कई औरतें भी नंगी तलवारें लिए उस चोर दरवाजे के पास पहुँच कर इधर-उधर पेड़ों और झाड़ियों की आड़ में दुबक रही थीं और धनपत भी उस चोरदरवाजे के बगल ही में एक झाड़ी के अन्दर घुस गई थी। मायारानी अपने को हर बला से बचाये रहने की नीयत से कुछ दूर पर छिप कर बैठ रही।

अब वह समय आ गया कि चोर-दरवाजे की राह से कमलिनी बाग के अन्दर आवे, इसलिए धनपत अपने छिपे रहने वाले स्थान से उठ कर चोर दरवाजे के पास आई और यह विचार कर बैठ गई कि बाहर से कोई आदमी दरवाजा खोलने का इशारा करे तो मैं झट से दरवाजा खोल दूँ। इस समय धनपत अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए थी और हाथ में खंजर लिए मौका पड़ने पर लड़ने के लिए भी तैयार थी। थोड़ी देर के बाद बाहर से किसी ने चोरदरवाजे पर थपकी मारी। धनपत खुश होकर उठी और झट से दरवाजा खोल कर एक किनारे हो गई। दो आदमी बाग के अन्दर दाखिल हुए। इन दोनों ही का बदन स्याह कपड़ों से ढँका हुआ था और दोनों ही के चेहरों पर नकाब पड़ी हुई थी जिससे रात के समय यह जानना बहुत ही कठिन था कि ये औरतें हैं या मर्द, हाँ एक का कद कुछ लम्बा था इसलिए उस पर मर्द होने का गुमान हो सकता था।

जब दोनों नकाबपोश बाग के अन्दर आ गए तो धनपत ने चोर-दरवाजा बन्द कर दिया और उन दोनों को अपने पीछे-पीछे आने का इशारा किया। मालूम होता था कि वे दोनों नकाबपोश बेफिक्र हैं और उन्हें इस बात की जरा भी खबर नहीं कि यहाँ का रंग बदला हुआ है। उन दोनों को साथ लिए धनपत जब उस जगह पहुँची जहाँ पहरा देने वाली लौंडियाँ नंगी तलवारें लिए हुए छिपी हुई थीं, तो खड़ी हो गई और उन दोनों की तरफ देख कर बोली, "आपकी आज्ञानुसार मैंने अपना काम पूरा कर दिया अब मुझे इनाम मिलना चाहिए!" इसके जवाब में उस नकाबपोश ने, जिसका कद बनिस्बत दूसरे के छोटा था, जवाब दिया, "धनपत को जो मर्द होकर औरत की सूरत में मायारानी के साथ रहता है, किसी से इनाम लेने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह स्वयं मालदार है, मगर मैं समझता हूँ कि कम्बख्त मायारानी भी लोगों को गिरफ्तार करने की नीयत से इसी जगह आकर कहीं छिपी होगी, उसे जल्द बुला, क्योंकि खास उसी को इनाम देने के लिए हम लोग यहाँ आये हैं।"

धनपत वास्तव में मर्द था, मगर यह हाल किसी को मालूम न था, इसलिए हम भी उसे अभी तक औरत ही लिखते चले आए मगर अब पूरी तरह से निश्चय हो गया कि वह मर्द है और हमारे पाठकों को भी यह बात मालूम हो गई इसलिए अब हम उसके लिए उन्हीं शब्दों का बर्ताव करेंगे, जो मर्दों के लिए उचित हैं।

उस आदमी की बात सुन कर धनपत परेशान हो गया, उसे यह फिक्र पैदा हुई कि अब हमारा भेद खुल गया और इसलिए जान बचना मुश्किल है। केवल धनपत ही नहीं बल्कि मायारानी और उन लौंडियों ने भी उस आदमी की बातें सुन लीं जो उसी के आसपास पेड़ों के नीचे छिपी हुई थीं। मायारानी के दिल में भी तरह-तरह की बातें पैदा होने लगीं। उसने पहचानने की नीयत से उस नकाबपोश की आवाज पर ध्यान दिया, मगर कुछ काम न चला क्योंकि उसकी आवाज फँसी हुई थी और इस समय हर

एक आदमी जो उसकी बात सुनता कह सकता था कि वह अपनी आवाज को बिगाड़ कर बातें कर रहा है।

धनपत यद्यपि इस फिक्र में था कि दोनों नकाबपोशों को गिरफ्तार करना चाहिए मगर इस नकाबपोश की गहरी और भेद से भरी हुई बात ने उसका कलेजा यहाँ तक दहला दिया कि उसके लिए बात का जवाब देना भी कठिन हो गया, मगर वे लौंडियाँ जो उस जगह छिपी हुई थीं चारों तरफ से आकर जरूर वहाँ जुट गईं और उन्होंने दोनों नकाबपोशों को घेर लिया। धनपत सोच रहा था कि मायारानी भी इसी जगह आ पहुँचेगी लेकिन यह आशा उसकी वृथा ही हुई, क्योंकि उस नकाबपोश की आवाज का सबसे ज्यादा असर मायारानी पर ही हुआ। वह घबरा कर वहाँ से भागी और अपने दीवानखाने में जाकर बैठ रही, जहाँ कई लौंडियाँ पहरा दे रही थीं। आते ही उसने एक लौंडी की जुबानी अपने सिपाहियों को जो बाग के पहले दर्जे में रहा में रहा करते थे, कहला भेजा कि 'खास बाग में फलां जगह पर दो दुश्मन घुस आये हैं, उन्हें जाकर फौरन गिरफ्तार करो और उनका सिर काट कर मेरे पास भेजो।'' इधर धनपत ने देखा कि बहुत-सी लौंडियाँ हमारी मदद पर आ पहुँची हैं तो उसे भी कुछ हिम्मत हुई और वह उस नकाबपोश की तरफ देख कर बोला—

धनपत—तुम लोग यहाँ किस काम के लिए आये हो ?

नकाब—इसका जवाब हम तुझ कम्बख्त को क्यों दें ?

धनपत—मालूम होता है कि मौत तुम दोनों को यहाँ तक खींच लाई है।

नकाब—(हँस कर) हाँ, मैं भी यहीं समझता हूँ कि तेरी मौत हम दोनों को यहाँ तक खींच लाई है।

इतना सुनते ही धनपत ने नकाबपोश पर खंजर का वार किया। मगर उसने फुर्ती से पैंतरा बदल कर वार खाली कर दिया, मगर दूसरे नकाबपोश ने चालाकी से धनपत के पीछे जाकर एक लात उसकी कमर में ऐसे जोर से मारी कि वह औंधे मुँह जमीन पर गिर पड़ा। मगर तुरन्त ही सम्हल कर उठ बैठा और दोनों नकाबपोशों को गिरफ्तार करने के लिए लौंडियों को ललकारा। लौंडियाँ दोनों नकाबपोशों की अवस्था देख परेशान हो रही थीं। एक तो उन्हें विश्वास हो गया कि ये दोनों नकाबपोश मर्द हैं, दूसरे धनपत की ताकत पर उन सभी को बहुत-कुछ भरोसा था सो उसकी भी दुर्दशा आँखों के सामने देखने में आई। तीसरे, नकाबपोश की जुबानी यह सुनकर कि धनपत मर्द है और उसके जवाब में धनपत को चुप पाकर लौंडियों का खयाल बिल्कुल ही बदल गया था, तिस पर भी, वे सब दोनों नक़ाबपोशों को घेर कर खड़ी हो गईं। धनपत ने फिर ललकार कर कहा, ''देखो, ये दोनों चोर हैं, भागने न पावें।''

लम्बे नकाबपोश ने लपक कर बहादुरी के साथ धनपत की दाहिनी कलाई जिसमें खंजर था, पकड़ ली और कहा, ''हम लोग भागने के लिए नहीं आये हैं, बल्कि गिरफ्तार होकर एक अनूठा तमाशा दिखाने के लिए आये हैं। मगर तुमको भाग जाने का मौका न देंगे। (लौंडियों की तरफ देख कर) हम लोग स्वयं यहाँ से टलने वाले नहीं हैं और जहाँ कहो चलने के लिए तैयार हैं।''

धनपत को मालूम हो गया कि ये दोनों नकाबपोश कोई साधारण आदमी नहीं हैं और इनके सामने ताकत का घमंड करना वृथा है। वह सोचने लगा—"अफसोस, अब भारी मुसीबत का सामना हुआ चाहता है।"

इतने ही में 'चोर-चोर' का गुल मचा और कई मशालों की रोशनी दिखाई दी। यह रोशनी उन सिपाहियों के साथ थी जो बाग के पहले दर्जे में रहने वाले सिपाहियों में से थे और इस समय वे सब मायारानी की आज्ञानुसार दोनों चोरों को अर्थात् इन नकाबपोशों को गिरफ्तार करने के लिए यहाँ आये थे। बात की बात में वे सब वहाँ पहुँच गये और उन्होंने देखा कि लौंडियों के घेरे में दो नकाबपोश छाती ऊँची किये खड़े हैं और उनमें से एक धनपत की कलाई पकड़े हुए है।

इसके पहले कि सिपाहियों को दोनों नकाबपोशों के साथ किसी तरह के बर्ताव की नौबत आवे, छोटे नकाबपोश ने ऊँची आवाज में ललकार कर कहा, "भाइयो, तुम लोग यह न समझो कि हम लोग भाग जायेंगे, मैं भागने के लिए नहीं आया हूँ, मैं तुम लोगों का दुश्मन नहीं हूँ और न तुम लोगों के दुश्मनों का साथी हूँ, बल्कि तुम्हारा सच्चा दोस्त और खैरखाह हूँ। जिस समय सूर्य भगवान के दर्शन होंगे और मैं अपने चेहरे पर से नकाब उठाऊँगा, तुम लोगों को मालूम हो जायगा कि मैं तुम्हारा पुराना साथी हूँ। इस समय मैं तुम लोगों की वह बेवकूफी जाहिर करने आया हूँ, जिसे तुम लोग खुद नहीं जानते हो। हाय, तुम्हारे प्यारे मालिक राजा गोपालसिंह के गले पर छुरी फिर जाय और तुम लोगों को खबर तक न हो? इससे भी बढ़ कर अफसोस की बात तो यह है कि राजा गोपालसिंह को मारने वाला, उनकी उम्मीदों का खून करने वाला, उनकी रिआया के दिल पर सदमा पहुँचाने वाला, उनकी इज्जत और हुर्मत को बिगाड़ने वाला, उनके धर्म और अर्थ का सत्यानाश करने वाला, दिन-रात तुम्हारे पास रहे, तुम पर हुकूमत करे, तुम्हें बेवकूफ बनावे, और तुम उसका कुछ भी न कर सको! यह मत समझो कि राजा गोपालसिंह को मरे हुए कई वर्ष हो गये, मैं साबित कर दूंगा कि उनके खून से गीली हुई जमीन भी अभी तक सूखी नहीं है और अगर तुम मुझ से पूछने और यह जानने की इच्छा करोगे कि तुम्हारे राजा गोपालसिंह को किसने मारा या उनका कातिल कौन है तो मैं जरूर उसका भी पता दूंगा और वास्तव में मैं इसी काम के लिए यहाँ आया भी हूँ।"

छोटे नकाबपोश की इस बात ने सिपाहियों और पहरा देने वाली लौंडियों का दिल हिला दिया। राजा गोपालसिंह की याद ने और इस खबर ने कि—'उन्हें मरे बहुत दिन नहीं हुए और उनका कातिल इसी जगह रह कर उन पर हुकूमत करता है' उनके दिलों को बेचैन कर दिया। सभी की आँखों से आँसू की बूंदें जारी हो गईं और हर तरफ से आवाज आने लगी—"कहो-कहो, जल्द कहो, नेकदिल गरीबपरवर और हमारे हितैषी राजा को मारने वाला दुष्ट कौन है और कहाँ है?" इसके जवाब में छोटे नकाबपोश ने पुनः कहा, "यही कम्बख्त, जिसे इस समय मेरे साथी ने पकड़ रखा है, तुम्हारे राजा का कातिल तथा उसकी इज्जत और हुर्मत को बिगाड़ने वाला है। इस बात से मत डरो कि इसकी इज्जत मायारानी के दरबार में बहुत है, बल्कि आजमाओ

और देखो कि यह मर्द है या औरत ! मैं सच कहता हूँ कि यह कई वर्ष से तुम लोगों की आँखों में धूल डाल कर अर्थात् औरत बन कर तुम्हारे घर में रहता है और इस राज्य को चौपट कर रहा है, मगर तुम लोगों को इसकी कुछ भी खबर नहीं है । इतना ही नहीं, मैं तुम लोगों से एक बात और कहूँगा, मगर अभी नहीं, जरा ठहरो, घंटे भर और गम खाओ, सवेरा होने दो और हम दोनों को इसी जगह रहने देकर और कहीं ले जाने का उद्योग मत करो !"

छोटे नकाबपोश की इस दूसरी बात ने रंग और भी चोखा कर दिया । चारों तरफ सिपाहियों और लौंडियों में गुरचूं-गुरचूं और काना-फूसी होने लगी । किसी की आँखों से आँसू जारी था, किसी भी गर्दन शर्म से नीची हो रही थी, किसी ने अफसोस से अपना हाथ अपने कलेजे पर रख लिया, कोई ठुड्डी पकड़ कर सोच रहा था, और कोई दाँत पीस-पीस कर धनपत की तरफ देख रहा था । यद्यपि रात का समय था मगर उन मशालों की रोशनी बखूबी हो रही थी, जो मायारानी के सिपाहियों के हाथ में थे और इस सबब से वहाँ की हर एक चीज साफ दिखाई दे रही थी । सिपाहियों ने धनपत का चेहरा गौर से देखा और उसमें बहुत फर्क पाया । खौफ और तरद्दुद ने धनपत को अधमरा कर दिया था और उसका रंग जर्द हो रहा था । दोनों नकाबपोशों ने जब देखा कि इस समय सिपाहियों के दिलों में जोश बखूबी पैदा हो गया है और वे लोग अब सब्र करना पसन्द नहीं करेंगे तो आपस में कुछ इशारा करने के बाद छोटे नकाबपोश ने धनपत की साड़ी का ऊपरी भाग फुर्ती से खींच लिया और उसकी चोली भी फाड़ डाली, इसके साथ ही दो बनावटी गेंद बाहर गिर पड़े और उसकी सूरत से मर्दानापन झलकने लगा । अब तो मायारानी के सिपाहियों को पूरे दर्जे पर क्रोध चढ़ आया और उन्हें निश्चय हो गया कि उनके मालिक राजा गोपालसिंह इसी कम्बख्त के सबब से मारे गए हैं । पहरा देने वाली जितनी औरतें थीं, सब ताज्जुब में आकर एक-दूसरे की सूरत देखने लगीं और उधर सिपाहियों ने पास पहुँच कर धनपत को घेर लिया तथा उसकी दुर्गत करने लगे । ऐसी अवस्था में दोनों नकाबपोश धनपत को छोड़कर अलग जा खड़े हुए । सिपाहियों ने बारी-बारी से धनपत से प्रश्न करना शुरू किया, मगर उसकी अवस्था इस लायक न थी कि किसी के प्रश्न का उत्तर देता । बहुत कुछ सोचने-विचारने के बाद यह राय पक्की हुई कि धनपत को राजदीवान के पास ले चलना चाहिए और इसी के साथ-साथ इन दोनों नकाबपोशों को भी उन्हीं के सामने पेश करना उचित होगा ।

सिपाही लोग जिस समय धनपत के विषय में सोच-विचार कर रहे और क्रोध में भरे हुए थे । दोनों नकाबपोशों से जो धनपत को छोड़ अलग हो गये थे, थोड़ी देर के लिए बिल्कुल बेफिक्र और लापरवाह हो गए थे, मगर इस समय जब यह राय पक्की हुई कि धनपत के साथ ही साथ उन दोनों को भी दीवान साहब के पास ले चलना चाहिए तो उन दोनों की खोज करने लगे, मगर वे, दोनों नकाबपोश मौका पाकर ऐसा गायब हुए कि उनकी झलक तक दिखाई न दी । एक बोला, "अभी इसी जगह तो थे !" दूसरे ने कहा, "यह तो हम भी जानते हैं । मगर यह बताओ कि वे चले कहाँ गए ?" तीसरे ने कहा, "भाई वे दोनों भागने वाले तो हैं नहीं, इसी जगह कहीं छिप कर हम

लोगों का तमाशा देखते होंगे !" इत्यादि तरह-तरह की बातें सब लोग आपस में करने और दोनों नकाबपोशों को चारों तरफ ढूँढ़ने लगे, लेकिन दोनों वहाँ थे कहाँ, जो पता लगता ! आखिर खोजते-ढूँढ़ते सुबह हो गई और इतनी ही देर में इस आश्चर्यजनक घटना की खबर जादू की तरह हवा के साथ मिल कर दूर-दूर तक फैल गई। इस समय मायारानी के सिपाही बिल्कुल ही स्वतन्त्र और खुदराय बल्कि बागियों की तरह हो रहे थे। बहुत खोजने और ढूँढ़ने पर भी उन्हें जब दोनों नकाबपोशों का पता न लगा तब लाचार होकर कम्बखत धनपत को घसीटते हुए, वे बाग के बाहर की तरफ रवाना हुए।

जब इन बातों की खबर मायारानी को पहुँची तो वह बहुत ही घबराई। अपनी तथा धनपत की जान से नाउम्मीद होकर सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिए ? इस समय उसकी सूरत से उसके दिल का बहुत-कुछ पता लगता था। उसका चेहरा जर्द और पलकें नीचे की तरफ झुकी हुई थीं। कभी-कभी उसके बदन में कंप हो जाता और कभी आँखें चंचल होकर सुर्ख हो जातीं। मगर थोड़ी ही देर बाद उसके होंठ काँपने लगे और आँखों की सुर्खी बढ़ जाने के साथ ही उसका चेहरा भी लाल हो गया जिसे देखते ही वे लौंडियाँ जो उसके सामने मौजूद थीं समझ गईं कि अब उसे हद दर्जे का क्रोध चढ़ आया है। कुछ सोच-विचार कर मायारानी बोल उठी, "इस समय उन कम्बख्तों को समझाने-बुझाने का उद्योग करना वृथा समय नष्ट करना है, दूसरे, मैं तिलिस्म की रानी ही क्या ठहरी, जो इन थोड़े-से कम्बखतों को काबू में न कर सकी या इन थोड़े सिपाहियों को आज्ञा भंग करने की सजा न दे सकी !" इतना कहते ही मायारानी अपने स्थान से उठी और दीवानखाने में से होती हुई उस कोठरी में जा पहुँची, जहाँ से बाग के तीसरे दर्जे में जाने का वह रास्ता था जिसका जिक्र हम उस समय कर आये हैं जब पागल बने हुए तेजसिंह मायारानी की आज्ञानुसार हरनामसिंह द्वारा बाग के तीसरे दर्जे में पहुँचाए गये थे।

मायारानी कोठरी के अन्दर गई। वहाँ एक दूसरी कोठरी में जाने के लिए दरवाजा था, उस दरवाजे को खोल कर दूसरी कोठरी में गई। वहाँ एक छोटा-सा कुआँ था, जिसमें उतरने के लिए जंजीर लगी हुई थी। वह इस कुएँ के अन्दर उतर गई और एक लम्बे-चौड़े स्थान में पहुँची, जहाँ बिल्कुल ही अंधकार था। मायारानी टटोलती हुई एक कोने की तरफ चली गई और वहाँ उसने कोई पेंच घुमाया, जिसके साथ ही उस स्थान में बखूबी रोशनी हो गई और वहाँ की हर एक चीज साफ-साफ दिखाई देने लगी। यह रोशनी शीशे के एक गोले में से निकल रही थी, जो छत के साथ लटक रहा था। यह स्थान, जिसे एक लम्बा-चौड़ा दालान या चारों तरफ दीवार होने के कारण कमरा कहना चाहिए, अद्भुत चीजों और तरह-तरह के कल-पुर्जों से भरा हुआ था। बीच में कतार बाँध कर चौबीस खम्भे संगमरमर के खड़े थे और हर दो खम्भों के ऊपर एक-एक महरादार पत्थर चढ़ा हुआ था, जिसे मामूली तौर पर आप बिना दरवाजे का फाटक कह सकते हैं। इन महराबी पत्थरों के बीचोंबीच बड़े-बड़े घण्टे लटक रहे थे और हर एक घण्टे के नीचे एक गरारीदार पहिया था।

मायारानी ने हर एक महाराब को, जिस पर मोटे-मोटे अक्षर लिखे हुए थे,

गौर से देखना शुरू किया और एक महाराब के नीचे पहुँच कर खड़ी हो गई जिस पर यह लिखा हुआ था—"दूसरे दर्जे का तिलिस्मी दरवाजा।" मायारानी ने उस पहिये को घुमाना शुरू किया जो उस महराब में लटकते हुए घण्टे के नीचे था। पहिया चार-पाँच दफे घूम कर रुक गया, तब मायारानी वहाँ से हटी और यह कहती हुई घूम कर सामने वाली दीवार के पास गई कि 'देखें अब वे कम्बख्त क्योंकर बाग के बाहर जाते हैं!' दीवार में नम्बरवार बिना पल्ले की पाँच आलमारियाँ थीं और हर एक आलमारी में चार दर्जे बने हुए थे। पहिली आलमारी में शीशे की सुराहियाँ थीं, दूसरी में ताँबे के बहुत से डिब्बे थे, तीसरी कागज के मुट्ठों से भरी थी, जिन्हें दीमकों ने बर्बाद कर डाला था, चौथी अष्ट धातु की छोटी-छोटी बहुत-सी मूरतें थीं और पाँचवीं आलमारी में केवल चार ताम्रपत्र थे जिनमें खूबसूरत उभरे हुए अक्षरों में कुछ लिखा हुआ था।

मायारानी उस आलमारी के पास गई जिसमें शीशे की सुराहियाँ थीं और एक सुराही उठा ली। शायद उसमें किसी तरह का अर्क था, जिसे थोड़ा-सा पीने के बाद सुराही हाथ में लिए हुए, वहाँ से हटी और दूसरी आलमारी के पास गई, जिसमें ताँबे के डिब्बे थे। एक डिब्बा उठा लिया और वहाँ से रवाना हुई। जिस तरह उसका जाना हम लिख आये हैं, उसी तरह घूमती हुई वह अपने दीवानखाने में पहुँची। जिसके आगे तरह-तरह के खुशनुमा पत्तों वाले खूबसूरत गमले सजाये हुए थे। वहाँ पहुँच कर उसने वह डिब्बा खोला। उसके अन्दर एक प्रकार की बुकनी भरी हुई थी। उसमें से आधी बुकनी अपने हाथ से खूबसूरत गमलों में छिड़कने के बाद बची हुई आधी बुकनी डिब्बे में लिए हुए वह दीवानखाने की छत पर चढ़ गई और अपने साथ केवल एक लौंडी को जिसका नाम लीला था और जो उसकी सब लौंडियों की सरदार थी, लेती गई। यह सब काम, जो हम ऊपर लिख आये हैं, मायारानी ने बड़ी फुर्ती से उसके पहले-पहले ही कर लिया जब तक कि उसके बागी सिपाही धनपत को लिए हुए बाग के दूसरे दर्जे के बाहर जायँ।

जब मायारानी लीला को साथ लिये हुए दीवानखाने की छत पर चढ़ गई तब उसने एक सुराही दिखाकर लीला से कहा, "चुल्लू कर, इसमें से थोड़ा सा अर्क तुझे देती हूँ उसे पी जा और आफत से बची रह, जो थोड़ी ही देर में यहाँ के रहने वालों पर आने वाली है।"

लीला—(हाथ फैला कर) मैं खूब जानती हूँ कि आपकी मेहरबानी जितनी मुझ पर रहती है उतनी और किसी पर नहीं।

मायारानी—(लीला की अंजुली में अर्क डाल कर) इसे जल्दी पी जा और जो कुछ मैं कहती हूँ उसे गौर से सुन।

लीला—बेशक मैं पूरा ध्यान देकर सुनूँगी, क्योंकि इस समय आपकी अवस्था बिल्कुल ही बदल रही है और यह जानने के लिए मेरा जी बहुत बेचैन है कि अब क्या किया जायगा?

मायारानी—मैं अपने भेद तुझसे छिपा नहीं रखती। जो कुछ मैं कर चुकी हूँ तुझे सब मालूम है। केवल दो भेद मैंने तुझसे छिपाए, जिनमें से एक तो आज खुल ही

गया और एक का हाल मैं तुझसे फिर किसी समय कहूँगी। इन भेदों के विषय में मेरा विश्वास था कि यदि किसी को मालूम हो जायगा तो मेरी जान आफत में फँस जायगी और आखिर वैसा ही हुआ। तू देख ही चुकी है कि दो कम्बख्त नकाबपोशों ने यहाँ पहुँच कर क्या गजब मचा रखा है। अब जहाँ तक मैं समझती हूँ, धनपत का भेद छिपा रहना बहुत मुश्किल है और साथ ही इसके कम्बख्त फौजी सिपाहियों का भी मिजाज बिगड़ गया है। मान लिया जाय कि अगर मैंने किसी तरह की बुराई की भी तो उनको मेरे खिलाफ होना मुनासिब न था। खैर, सिपाही लोग तो उजड्ड हुआ ही करते हैं, मगर मुझसे बुराई करने का नतीजा कदापि अच्छा न होगा। अफसोस, उन लोगों ने इस बात पर ध्यान न दिया कि आखिर मायारानी तिलिस्म की रानी है! देख, मैंने इस बाग के बाहर जाने का रास्ता बन्द कर दिया, अब उन लोगों की मजाल नहीं कि यहाँ से बाहर जा सकें, बल्कि थोड़ी ही देर में तू देखेगी कि उन लोगों को मैं कैसे हलाल करती हूँ। यह दवा जो मैंने गमलों में छिड़की है, बहुत ही तेज और अपनी महक दूर-दूर तक फैलाने वाली है, इससे बढ़कर बेहोशी की कोई दवा दुनिया में न होगी, और यही उन बदमाशों के साथ जहर का काम करेगी। तू उन सभी के पास जा और उन्हें ऊँच-नीच समझा कर मेरे पास ले आ—या—नहीं, अच्छा देख—खैर जाने दे—मैं तुझसे एक बात और कहती हूँ—यह तो मैं समझ ही चुकी कि अब मेरी जान जाना चाहती है मगर तो भी हजारों को मारे बिना मैं न छोड़ूँगी। अफसोस, वे दोनों कम्बख्त नकाबपोश न मालूम कहाँ चले गए। खैर, देखा जायगा—ओफ, (अपनी ठुड्डी पकड़ के) मुझे शक है—एक तो उनमें से जरूर—हाँ जरूर—जरूर—बेशक वही है और होगा, दूसरा भी—मैं समझ गई, मगर ओफ, उस चीज का जाना ही बुरा हुआ। अच्छा अब मैं दूसरे काम की फिक्र करती हूँ, अब तो जान पर खेलना ही पड़ा, एक दफे तो मुझे तुझे छोड़—हाँ, तू मेरा मतलब तो समझ गई न? इस समय मेरी तबीयत—अच्छा, तू जा, देख मान जाय तो ठीक है, नहीं तो आज इस बाग को मैं उन्हीं के खून से तर करूँगी!

इस समय मायारानी की बातें यद्यपि बिल्कुल बेढंगी और बेतुकी थीं तथापि चालाक और धूर्त लीला उसका मतलब समझ गई और यह कहती हुई वहाँ से रवाना हुई, "आप चिन्ता न कीजिए, मैं अभी जाकर उन सभी को ठीक करती हूँ। जरा आप अपना मिजाज ठिकाने कीजिए और तिलिस्मी कवच को भी झटपट···"

5

मायारानी के सिपाही जो दोनों नकाबपोशों को गिरफ्तार करने आए थे, धनपत को लिए हुए बाग के पहले दर्जे की तरफ रवाना हुए जहाँ वे रहा करते थे, मगर वे इच्छानुसार अपने ठिकाने न पहुँच सके, क्योंकि बाग के दूसरे दर्जे के बाहर निकलने का रास्ता मायारानी की कारीगरी से बन्द हो गया था। ये दरवाजे तिलिस्मी और बहुत

ही मजबूत थे और इनका खोलना या तोड़ना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव था। पाठकों को याद होगा कि बाग के दूसरे दर्जे और पहले दर्जे के बीच में एक बहुत लम्बी-चौड़ी दीवार थी जिस पर कमन्द लगा कर चढ़ना भी असम्भव था और सीढ़ियों के जरिए उस दीवार पर चढ़ और उसे लाँघ कर ही एक दर्जे से दूसरे दर्जे में जाना होता था। इस समय जो दरवाजा मायारानी ने तिलिस्मी रीति से बन्द किया है इसी के बाद वह दीवार पड़ती थी जिसे लाँघ कर सिपाही लोग पहले दर्जे में जाते थे। उस दीवार पर चढ़ने के लिए जो सीढ़ियाँ थीं वे लोहे की थीं और इस समय दोनों तरफ की सीढ़ियाँ दीवार के अन्दर घुस गई थीं इसलिए दीवार पर चढ़ना एकदम असम्भव हो गया था।

दरवाजे को तिलिस्मी रीति से बन्द देखकर सिपाही लोग समझ गए कि यह मायारानी की कार्रवाई है। इसलिए उन लोगों के दिल में डर पैदा हुआ और वे सोचने लगे कि कहीं ऐसा न हो कि मायारानी हम लोगों को इसी बाग में फँसा कर मार डाले, क्योंकि आखिर वह तिलिस्म की रानी है, मगर यह विचार उन लोगों के दिल में ज्यादा देर तक न रहा क्योंकि राजा गोपालसिंह के साथ दगा किये जाने का जो हाल नकाबपोशों की जुबानी सुना था उस पर उन लोगों को पूरा-पूरा विश्वास हो गया था और इसी सबब से गुस्से के मारे उन सब की अवस्था ही बदली हुई थी।

आखिर धनपत को साथ लिए हुए वे सिपाही यह सोच कर पीछे की तरफ लौटे कि उस चोरदरवाजे की राह से बाहर निकल जायँगे जिस राह से दोनों नकाबपोश बाग के अन्दर घुसे थे, मगर उस ठिकाने पर पहुँचकर भी वे लोग बहुत ही घबराये और ताज्जुब करने लगे क्योंकि उन्हें वह खिड़की कहीं नजर न आई। हाँ एक निशान दीवार में जरूर पाया जाता था, जिससे यह कहा जा सकता था कि शायद इसी जगह वह खिड़की रही होगी। यह निशान भी मामूली न था बल्कि ऐसा मालूम होता था कि दीवार वाले चोरदरवाजे पर फौलादी चादर जड़ दी गई है। अब उन सिपाहियों को पहले से भी ज्यादा तरद्दुद हुआ क्योंकि सिवाय उन दोनों रास्तों के बाहर निकलने का कोई और जरिया न था। एक बार उन सिपाहियों के दिल में यह भी आया कि मायारानी की तरफ चलना चाहिए, मगर खौफ से ऐसा करने की हिम्मत न पड़ी।

उस समय दिन घण्टे भर से कुछ ज्यादा चढ़ चुका था। सिपाही लोग क्रोध की अवस्था में भी तरद्दुद और घबराहट से खाली न थे और खड़े-खड़े सोच ही रहे थे कि किधर जाना और क्या करना चाहिए कि इतने ही में सामने से लीला आती हुई दिखाई पड़ी। जब वह पास पहुँची तो सिपाहियों की तरफ देख कर ऊँची आवाज में बोली, "तुम लोग अपनी जान के दुश्मन क्यों हो रहे हो? क्या तुम जमानिया राज्य के नौकर हो कर भी इस बात को भूल गए कि मायारानी एक भारी तिलिस्म की रानी है और जो चाहे कर सकती है? दो-चार सौ आदमियों को बरबाद कर डालना उसके लिए एक अदना काम है। अफसोस, ऐसे मालिक के खिलाफ होकर तुम अपनी जान बचाना चाहते हो? याद रक्खो कि इस बाग में भूखे-प्यासे मर जाओगे, तुम्हारे किए कुछ भी न होगा। मैं तुम लोगों को समझाती हूँ और कहती हूँ कि अपने मालिक के पास चलो और उससे माफी माँग कर अपनी जान बचाओ।"

इसी तरह की ऊँच-नीच की बहुत-सी बातें लीला उन सिपाहियों से देर तक कहती रही और सिपाही लोग भी लीला की बात पर गौर कर ही रहे थे कि यकायक बाईं तरफ से एक शंख के बजने की आवाज आई, घूम कर देखा तो वे ही दोनों नकाबपोश दिखाई पड़े जो हाथ के इशारे से उन सिपाहियों को अपनी तरफ बुला रहे थे। उन्हें देखते ही सिपाहियों की अवस्था बदल गई और उनके दिल के अन्दर उम्मीद, रंज, डर और तरद्दुद का चर्खा तेजी के साथ घूमने लगा। लीला की बातों पर जो कुछ सोच कर रहे थे उसे छोड़ दिया और धनपत को साथ लिए हुए इस तरह दोनों नकाबपोशों की तरफ बढ़े जैसे प्यासे पंसाले (पौसारे) की तरफ लपकते हैं।

जब उन दोनों नकाबपोशों के पास पहुँचे तो एक नकाबपोश ने पुकार कर कहा, "इस बात से मत घबराओ कि मायारानी ने तुम लोगों को मजबूर कर दिया और इस बाग से बाहर जाने लायक नहीं रक्खा। आओ हम तुम सभी को इस बाग से बाहर कर देते हैं मगर इसके पहले तुम्हें एक ऐसा तमाशा दिखाना चाहते हैं जिसे देख कर तुम बहुत ही खुश हो जाओगे और हद से ज्यादा बेफिक्री तुम लोगों के भाग में पड़ेगी, मगर वह तमाशा हम एकदम से सभी को नहीं दिखाना चाहते। मैं एक कोठरी में (हाथ का इशारा करके) जाता हूँ, तुम लोग बारी-बारी से पाँच-पाँच आदमी आओ और अद्भुत, अद्वितीय, अनूठा तथा आश्चर्यजनक तमाशा देखो।"

इस समय दोनों नकाबपोश जिस जगह खड़े थे, उसके पीछे की तरफ एक दीवार थी जो बाग के दूसरे और तीसरे दर्जे की हद को अलग कर रही थी और उसी जगह पर एक मामूली कोठरी भी थी। बात पूरी होते ही दोनों नकाबपोश पाँच सिपाहियों को अपने साथ आने के लिए कहकर उस कोठरी के अन्दर घुस गए। इस समय इन सिपाहियों की अवस्था कैसी थी, इसे दिखाना जरा कठिन है। न तो इन लोगों का दिल उन दोनों नकाबपोशों के साथ दुश्मनी करने की आज्ञा देता था और न यही कहता था कि उन दोनों को छोड़ दो और जिधर जाएँ जाने दो।

जब दोनों नकाबपोश कोठरी के अन्दर घुस गए तो उसके बाद पाँच सिपाही जो दिलावर और ताकतवर थे कोठरी में घुसे और चौथाई घड़ी तक उसके अन्दर रहे। इसके बाद जब वे उस कोठरी के बाहर निकले तो उनके साथियों ने देखा कि उन पाँचों के चेहरे से उदासी झलक रही है, आँखों से आँसू की बूँदें टपक रही हैं और वे सिर झुकाए अपने साथियों की तरफ आ रहे हैं। जब पास आए तो उन पाँचों की अवस्था एकदम बदल जाने का सबब सिपाहियों ने पूछा जिसके जवाब में उन पाँचों ने कहा, "पूछने की कोई आवश्यकता नहीं है, तुम लोग पाँच-पाँच आदमी बारी-बारी से जाओ और जो कुछ है अपनी आँखों से देख लो, हम लोगों से पूछोगे तो कुछ भी न बतायेंगे, हाँ इतना अवश्य कहेंगे कि वहाँ जाने में किसी तरह का हर्ज नहीं है।"

आपस में ताज्जुब से भरी बातें करने के बाद और पाँच सिपाही उस कोठरी के अन्दर घुसे जिसमें दोनों नकाबपोश थे और पहले पाँचों की तरह ये पाँचों भी चौथाई घड़ी तक उस कोठरी के अन्दर रहे। इसके बाद जब बाहर निकले तो इन पाँचों की भी वही अवस्था थी जैसी उन पाँचों की जो इनके पहले कोठरी के अन्दर से हो कर आए

थे। इसके बाद फिर पाँच सिपाही कोठरी के अन्दर घुसे और इनकी भी वही अवस्था हुई, यहाँ तक कि जितने सिपाही वहाँ मौजूद थे पाँच-पाँच करके सभी कोठरी के अन्दर से हो आए और सब ही की वही अवस्था हुई जैसी पहले गये हुए पाँचों सिपाहियों की हुई थी। धनपत ताज्जुब-भरी निगाहों से यह तमाशा देख और असल भेद जानने के लिए बेचैन हो रहा था मगर इतनी हिम्मत न पड़ती थी कि किसी से कुछ पूछता, क्योंकि नकाबपोशों की आज्ञानुसार सिपाहियों की तरह वह उस कोठरी के अन्दर जाने नहीं पाया था जिसमें दोनों नकाबपोश थे। अन्त में सब सिपाहियों ने आपस में बातें करके इशारे में इस बात का निश्चय कर लिया कि कोठरी के अन्दर उन सभी ने एक ही रंग-ढंग का तमाशा देखा था।

थोड़ी देर बाद दोनों नकाबपोश उस कोठरी के बाहर निकल आए और उनमें से नाटे नकाबपोश ने सिपाहियों की तरफ देख कर कहा, "धनपत को मेरे हवाले करो।" सिपाहियों ने कुछ भी उज्र न किया बल्कि बहुत अदब के साथ आगे बढ़कर धनपत को नकाबपोश के हवाले कर दिया। दोनों नकाबपोश उसे साथ लिये हुए फिर उस कोठरी के अन्दर घुस गये और आधे घंटे तक वहाँ रहे, इसके बाद जब कोठरी के बाहर निकले तो नाटे नकाबपोश ने सिपाहियों से कहा, "धनपत को हमने ठिकाने पहुँचा दिया है, अब आओ, तुम लोगों को भी इस बाग के बाहर कर दें।" सिपाहियों ने कुछ भी उज्र न किया और दो-तीन झुण्डों में होकर नकाबपोश के साथ-साथ उस कोठरी के अन्दर गए और गायब हो गए। दोनों नकाबपोश भी उसी कोठरी के अन्दर जाकर गायब हो गये और उस कोठरी का दरवाजा भीतर से बन्द हो गया।

इस पचड़े में दो पहर दिन चढ़ आया, लीला दूर से खड़ी यह तमाशा देख रही थी, जब सन्नाटा हो गया तो वह भी लौटी और उसने इन बातों की खबर मायारानी तक पहुँचाई।

6

लीला की जुबानी दोनों नकाबपोशों, सिपाहियों और धनपत का हाल सुनकर मायारानी बहुत ही उदास और परेशान हो गई। वह आशा जो तिलिस्मी दरवाजा बन्द करने और बेहोशी का अद्भुत धूरा छिड़ककर पर उसे बँधी थी, बिल्कुल जाती रही। तिलिस्म में जाकर तिलिस्मी दरवाजे को बन्द करना, तिलिस्मी दवा पीना और लीला को पिलाना, बेहोशी की बुकनी फूलों के गमलों में डालना—सब बिल्कुल ही व्यर्थ हो गया। धनपत दोनों नकाबपोशों के कब्जे में पड़ गया और सब सिपाही भी सहज ही में बाग के बाहर हो गये। इस समय उन दोनों नकाबपोशों की कार्रवाइयों ने उसे इतना बदहवास कर दिया कि वह अपने बचाव की कोई अच्छी सूरत सोच नहीं सकती थी। आखिर वह हर तरह से दुःखी होकर फिर उसी तहखाने के अन्दर गई जिसमें पहली

दफा जाकर बाग के दूसरे दर्जे का दरवाजा तिलिस्मी रीति से बन्द किया था। हम ऊपर लिख आये हैं कि वहाँ दीवार में बिना दरवाजे की पाँच आलमारियाँ थीं और एक आलमारी में ताँबे के बहुत से डिब्बे रक्खे थे। इस समय मायारानी ने उन्हीं डिब्बों को खोल-खोल कर देखना शुरू किया। ये डिब्बे छोटे और बड़े हर प्रकार के थे। कई डिब्बे खोल-खोल कर देखने के बाद मायारानी ने एक डिब्बा खोला जिसका पेटा एक हाथ से कम न होगा। उस डिब्बे में एक हाथीदाँत का तमंचा बारह अंगुल का और छोटी-छोटी बहुत-सी गोलियाँ रक्खी हुई थीं। उन गोलियों का रंग लाल था, और उनके अलावा एक ताम्रपत्र भी उस डिब्बे के अन्दर था। मायारानी इस डिब्बे को लेकर वहाँ से रवाना हुई और तहखाने का दरवाजा बन्द करती हुई अपने स्थान पर उस जगह पहुँची जहाँ उसकी लौंडियाँ उसकी राह देख रही थीं। उसने सब लौंडियों के सामने ही उस डिब्बे को खोला और ताम्रपत्र हाथ में लेकर पढ़ने लगी, जब पूरी तरह पढ़ चुकी तो लीला की तरफ देखकर बोली, "तू देखती है कि मैं किस बला में फँस गई हूँ ?"

लीला—जी हाँ, मैं बखूबी देख रही हूँ। दोनों नकाबपोशों की तरफ जब ध्यान देती हूँ तो कलेजा काँप जाता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अब कोई भारी उपद्रव उठने वाला है क्योंकि नकाबपोशों की बदौलत इस बाग के सिपाही भी बागी हो गए हैं।

मायारानी—बेशक ऐसा ही है और ताज्जुब नहीं कि वे सिपाही लोग जो इस समय मेरे पंजे से निकल गए हैं मेरे बाकी के फौजी सिपाहियों को भी भड़कावें।

लीला—इसमें कुछ भी सन्देह नहीं, बल्कि इन सिपाहियों की बदौलत आपकी रिआआ भी बागी हो जायगी और तब जान बचाना मुश्किल हो जायगा। अफसोस, आपने व्यर्थ ही अपने दोनों भेद मुझसे छिपा रक्खे, नहीं तो मैं इस विषय में कुछ राय देती !

मायारानी—(ताज्जुब से) दोनों भेद कौन से ?

लीला—एक तो यही धनपत वाला।

मायारानी—हाँ, ठीक है, और दूसरा कौन ?

लीला—(मायारानी के कान की तरफ झुक कर धीरे से) राजा गोपालसिंह वाला, जिन्हें भूतनाथ की मदद से आपने मार डाला !

लीला की बात सुनकर मायारानी चौंक पड़ी, वह अपनी जगह से उठ खड़ी हुई और लीला का हाथ पकड़ के किनारे ले जाकर धीरे-से बोली, "देख लीला, तू केवल मेरी लौंडियों की सरदार ही नहीं बल्कि बचपन की साथी और मेरी सखी भी है। सच बता, गोपालसिंह वाला भेद तुझे कैसे मालूम हुआ ?"

लीला—आप जानती ही हैं कि मुझे कुछ ऐयारी का भी शौक है।

मायारानी—हाँ, मैं खूब जानती हूँ कि तू ऐयारी भी कर सकती है लेकिन इस किस्म का काम मैंने तुझसे कभी लिया नहीं।

लीला—यह मेरी बदकिस्मती थी, नहीं तो मैं अब तक ऐयारा की पदवी पा चुकी होती।

मायारानी—ठीक है, खैर, तो इससे मालूम हुआ कि तूने ऐयारी से गोपालसिंह

वाला भेद मालूम कर लिया ?

लीला—जी हाँ, ऐसा ही है। मैंने ऐयारी से और भी बहुत से भेद मालूम कर लिये हैं जिनकी खबर आपको भी नहीं और जिनको इस समय कहना मैं उचित नहीं समझती, मगर शीघ्र ही उस विषय में मैं आपसे बातचीत करूँगी। इस समय तो मुझे केवल इतना ही कहना है कि किसी तरह अपनी जान बचाने की फिक्र कीजिये क्योंकि मुझे भूतनाथ की दोस्ती पर शक है।

मायारानी—क्या तू समझती है कि भूतनाथ ने मुझे धोखा दिया ?

लीला—जी हाँ, बल्कि मैं तो यही समझती हूँ कि राजा गोपालसिंह मारे नहीं गये, बल्कि जीते हैं।

मायारानी—अगर ऐसा है तो बड़ा ही गजब हो जायगा। मगर इसका कोई सबूत भी है ?

लीला—आज तो नहीं, मगर कल तक मैं इसका सबूत आप को दे सकूँगी।

मायारानी—अफसोस, अफसोस ! मैं इस समय किले में जा कर अपने दीवान से राय लेने वाली थी मगर अब तो कुछ और ही सोचना पड़ा।

लीला—(उस डिब्बे की तरफ इशारा करके जो अभी तिलिस्मी तहखाने में से मायारानी लाई थी) पहले यह बताइये कि इस डिब्बे को आप किस नीयत से लाई हैं ? यह हाथीदाँत का तमंचा कैसा है और ये गोलियाँ क्या काम दे सकती हैं ?

मायारानी—ये गोलियाँ इसी तमंचे में रख कर चलाई जायँगी। इसके चलाने में किसी तरह की आवाज नहीं होती और गोली भी आध कोस तक जा सकती है। जब यह बोली किसी के बदन पर लगेगी या जमीन पर गिरेगी तो एक आवाज देकर फट जायगी और इसके अन्दर से बहुत-सा जहरीला धुआँ निकलेगा। वह धुआँ जिसकी नाक में जायगा वह आदमी फौरन ही बेहोश हो जायगा। अगर हजार आदमियों की भीड़ आ रही हो तो उन सभी को बेहोश करने के लिए केवल दस-पाँच गोलियाँ काफी हैं।

लीला—बेशक यह बहुत अच्छी चीज है और ऐसे समय में आपको बड़ा काम दे सकती है, मगर मैं समझती हूँ कि उस डिब्बे में पाँच सौ से ज्यादा गोलियाँ न होंगी, इसके बाद कदाचित् वह ताम्रपत्र[1] कुछ काम दे सके जो उस डिब्बे में है और जिसे आपने लोगों के सामने पढ़ा था।

मायारानी—वाह तुम बहुत समझदार हो। बेशक ऐसा ही है। इस ताम्रपत्र में उन गोलियों के बनाने की तरकीब लिखी है। इस तिलिस्म में ऐसी हजारों चीजें हैं मगर लाचार हूँ कि तिलिस्म का पूरा हाल मुझे मालूम नहीं है बल्कि चौथे दर्जे के विषय में तो मैं कुछ भी नहीं जानती। फिर भी जो कुछ मैं जानती हूँ या जहाँ तक तिलिस्म में मैं जा सकती हूँ वहाँ ऐसी और भी कितनी ही चीजें हैं जो समय पर मेरे काम आ सकती हैं।

लीला—अब यही समय है कि उन चीजों को लेकर आप यहाँ से चल दीजिये क्योंकि इस बाग तथा आपके राज्य पर अब आफत आना ही चाहती है। मैंने सुना है कि

---

1. ताम्रपत्र—ताँबे की तख्ती जिस पर कुछ लिखा या खुदा हुआ हो।

राजा वीरेन्द्रसिंह की बेशुमार फौज जमानिया की तरफ आ रही है, बल्कि यों कहना चाहिए कि आज-कल में पहुँचना ही चाहती है।

मायारानी—हाँ, यह खबर मैंने भी सुनी है। यदि गोपालसिंह का और धनपत का मामला न बिगड़ा होता तो मैं मुकाबला करने के लिए तैयार हो जाती, परन्तु इस समय तो मुझे अपनी रिआया में से किसी का भी भरोसा नहीं।

लीला—भरोसे के साथ-ही-साथ आप समझ रखिए कि आप अपने किसी नौकर पर हकूमत की लाल आँख भी अब नहीं दिखा सकतीं। मगर इन बातों में वृथा देर हो रही है। इस विषय को बहुत जल्द तय कर लेना चाहिए कि अब क्या करना और कहाँ जाना मुनासिब होगा।

मायारानी—हाँ, ठीक है मगर इसके भी पहले मैं तुमसे यह पूछती हूँ कि तुम इस मुसीबत में मेरा साथ देने के लिए कब तक तैयार रहोगी?

लीला—जब तक मेरी जिन्दगी है या जब तक आप मुझ पर भरोसा करेंगी।

मायारानी—यह जवाब तो साफ नहीं है, बल्कि टेढ़ा है।

लीला—इस पर आप अच्छी तरह गौर कीजिएगा मगर यहाँ से निकल चलने के बाद।

मायारानी—अच्छा, यह तो बताओ कि मेरी और लौंडियों का क्या हाल है?

लीला—आपकी लौंडियाँ केवल चार-पाँच ऐसी हैं जिन पर मैं भरोसा कर सकती हूँ, बाकी लौंडियों के विषय में मैं कुछ भी नहीं कह सकती और न उनके दिल का हाल ही जाना जा सकता है।

मायारानी—(ऊँची साँस लेकर) हाय, यहाँ तक नौबत पहुँच गई! यह सब मेरे पापों का फल है। अच्छा जो होगा देखा जायगा। इस अनूठे तमंचे और गोलियों को मैं सम्हालती हूँ और थोड़ी देर के लिए पुनः तिलिस्मी तहखाने में जाकर देखती हूँ कि मेरे काम की ऐसी कौन-सी चीज है जिसे सफर में अपने साथ ले जा सकूँ। जो कुछ हाथ लगे सो ले आती हूँ और बहुत जल्द तुमको और उन लौंडियों को साथ लेकर निकल भागती हूँ जिन पर तुम भरोसा रखती हो। कोई हर्ज नहीं, इस गई-गुजरी हालत में भी मैं एक दफा लाखों दुश्मनों को जहन्नुम पहुँचाने की हिम्मत रखती हूँ!

इसके जवाब में पीछे की तरफ से किसी गुप्त मनुष्य ने कहा—"बेशक-बेशक, तुम मरते-मरते भी हजारों घर चौपट करोगी!"

7

ऐयारी भाषा की चिट्ठी को पढ़ने और कमलिनी के ढाढ़स दिलाने पर कुँअर इन्द्रजीतसिंह की दिलजमई तो हो गई परन्तु 'टेप' का परिचय पाने के लिए वे बेचैन हो हो रहे थे अस्तु उससे मिलने की आशा में दरवाजे की तरफ ध्यान लगाकर थोड़ी देर तक खड़े हो गए। यकायक उस मकान का दरवाजा खुला और धनपत की कलाई पकड़े

'टेप' महाशय अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए आते दिखाई दिये। दरवाजे के बाहर निकलते ही 'टेप' ने अपने चेहरे पर से नकाब हटा दी, सूरत देखते ही कुँअर इन्द्रजीतसिंह हँस पड़े और लपक के उनकी कलाई पकड़ कर बोले, "अहा, यह किसे आशा थी कि यहाँ पर राजा गोपालसिंह से मुलाकात होगी? (कमलिनी की तरफ देख कर) तो क्या इन्हीं ने अपना नाम 'टेप' रक्खा है?"

कमलिनी—जी हाँ।

इन्द्रजीतसिंह—(गोपालसिंह से) क्या आनन्दसिंह इसी मकान के अन्दर है?

गोपालसिंह—जी हाँ, आप मकान के अन्दर चलिये और उनसे मिलिये।

इन्द्रजीतसिंह—एक औरत के रोने की आवाज हम लोगों ने सुनी थी, शायद वह भी इसी मकान के अन्दर हो।

गोपालसिंह—जी नहीं, वह कम्बख्त औरत (धनपत की तरफ इशारा कर) यही है! न मालूम ईश्वर ने इस हरामजादे को कैसा मर्द बनाया है कि आवाज से भी कोई इसे मर्द नहीं समझ सकता!

कमलिनी—इसे आपने कब पकड़ा?

गोपालसिंह—यह कल से मेरे कब्जे में है और मैं कल ही इसे इस मकान में कैद कर गया था, बल्कि आज छुड़ाने के लिए आया था।

इन्द्रजीतसिंह—तो आप कल भी इस मकान में आ चुके हैं! मगर मुझसे मिलने के लिए शायद कसम खा चुके थे!

गोपालसिंह—(हँसकर) नहीं-नहीं, मेरा वह समय बड़ा ही अनमोल था, एक-एक पल की देर बुरी मालूम होती थी; इसी से आपसे मिलने के लिए मैं रुक न सका। इसका खुलासा हाल आप सुनेंगे तो बहुत ही हँसेंगे और खुश होंगे। मगर पहले मकान के अन्दर चलकर आनन्दसिंह से मिल लीजिए, तब यह अनूठा किस्सा आपसे कहूँगा।

इन्द्रजीतसिंह—क्या आनन्द यहाँ तक नहीं आ सकता?

गोपालसिंह—नहीं, वे यहाँ नहीं आ सकते। वे तिलिस्मी कारखाने में फँस चुके हैं, इसलिए छूटने का उद्योग नहीं कर सकते, बल्कि वे तिलिस्म के अन्दर जा सकते हैं और उसे तोड़कर निकल आ सकते हैं। मगर अब उनसे मिलने में देर न कीजिए।

इन्द्रजीतसिंह—आप जिस काम के लिए गये थे वह हुआ?

गोपालसिंह—वह काम भी बखूबी हो गया, उसका खुलासा हाल थोड़ी देर में आपसे कहूँगा।

कमलिनी—भूतनाथ को आपने कहाँ छोड़ा?

गोपालसिंह—वह भी आता ही होगा। वास्तव में वह बड़ा ही चालाक और धूर्त ऐयार है। उसने जो काम किए हैं तुम सुनोगी तो हँसते-हँसते लोटन कबूतर बन जाओगी। (इन्द्रजीतसिंह की तरफ देखकर) आप आनन्दसिंह के फँसने से दुःखी न होइए क्योंकि आप दोनों भाइयों के लिए इस तिलिस्म का तोड़ना जरूरी हो चुका है।

इन्द्रजीतसिंह—ठीक है, मगर रिक्तगन्थ का पूरा-पूरा मतलब उसकी समझ में नहीं आया है और इसके तिलिस्म के काम में उसे तकलीफ होना सम्भव है। उसमें दस

बारह शब्द ऐसे हैं, जिनका अर्थ नहीं लगता और उन शब्दों का अर्थ जाने बिना बहुत-सी बातों का मतलब समझ में नहीं आता।

गोपालसिंह—(हँसकर) आपका यह कहना ठीक है, मगर मैं एक बात आपको ऐसी बताता हूँ कि जिससे आप हर एक तिलिस्मी ग्रन्थ को अच्छी तरह पढ़ और समझ लेंगे और उनमें चाहे कैसे भी टेढ़े शब्द क्यों न हों, मगर मतलब समझने में कठिनता न होगी।

इन्द्रजीतसिंह—वह क्या?

गोपालसिंह—केवल एक छोटी-सी बात है।

इन्द्रजीतसिंह—मगर उसके बताने में आप हुज्जत बड़ी कर रहे हैं।

गोपालसिंह ने झुककर इन्द्रजीतसिंह के कान में कुछ कहा, जिसे सुनते ही कुमार हँस पड़े और बोले, "बेशक, बड़ी चतुराई की गई है! जरा-से फेर में मतलब कैसा बिगड़ जाता है! आपका कहना बहुत ठीक है। अब कोई शब्द- ऐसा नहीं निकलता जिसका अर्थ मैं न लगा सकूँ! क्यों न हो, आखिर आप तिलिस्म के राजा जो ठहरे।"

कमलिनी से इस समय चुप न रहा गया, वह ताने के तौर पर सिर नीचा करके बोली, "बेशक, राजा ही ठहरे, इसी से तो बेमुरौवती कूट-कूटकर भरी है!" इसके जवाब में गोपालसिंह ने कहा, "नहीं-नहीं, ऐसा मत खयाल करो! तुम्हारा उदास चेहरा कहे देता है कि तुम्हें इस बात का रंज है कि हमने जो कुछ कुमार के कान में कहा, उससे तुमको जानबूझ के वंचित रखा, मगर नहीं (धनपत की तरफ इशारा करके) इस कम्बख्त के खयाल से मैंने ऐसा किया। आखिर वह भेद तुमसे छिपा न रहेगा।"

इस पर कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने एक विचित्र निगाह कमलिनी पर डाली, जिसे देखते ही वह हँस पड़ी और मकान के अन्दर जाने के लिए दरवाजे की तरफ बढ़ी। कुँअर इन्द्रजीतसिंह, कमलिनी, लाड़िली और उनके साथ ही धनपत का हाथ पकड़े हुए राजा गोपालसिंह उस मकान के अन्दर चले।

इस मकान की हालत हम ऊपर लिख आये हैं। इसलिए पुनः नहीं लिखते। गोपालसिंह सभी को साथ लिए हुए उस कोठरी में पहुँचे, जिसमें कुँअर आनन्दसिंह फँसे हुए थे, मगर इस समय वहाँ की अवस्था वैसी न थी जैसी कि हम ऊपर लिख आये हैं, अर्थात् वह तिलिस्मी सन्दूक, जिसमें आनन्दसिंह का हाथ फँस गया था, वहाँ न था और न आनन्दसिंह वहाँ थे। हाँ, उस कोठरी की जमीन का वह हिस्सा जिस पर सन्दूक था, जमीन के अन्दर धँस गया था और वहाँ एक कुएँ की शक्ल दिखाई दे रही थी। यह देख राजा गोपालसिंह ताज्जुब में आ गये और उस कुएँ की तरफ देखकर कुछ सोचने लगे, आखिर कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने उन्हें टोका और चुप रहने का सबब पूछा।

इन्द्रजीतसिंह—आप अब क्या सोच रहे हैं। शायद आनन्दसिंह को आपने इसी कोठरी में छोड़ा था?

गोपालसिंह—जी हाँ, इस जगह जहाँ आप कुएँ की तरह का गड्ढा देखते हैं, एक सन्दूक था और उसमें एक छेद था, उसी छेद के अन्दर हाथ डालकर कुमार ने अपने को फँसा लिया था। मालूम होता है कि अब वे तिलिस्म के अन्दर चले गये। इसी

खयाल से मैंने आपसे कहा था कि कुँअर आनन्दसिंह अपने को छुड़ा नहीं सकते, बल्कि तिलिस्म के अन्दर जा सकते हैं।

इन्द्रजीतसिंह—अफसोस ! खैर, मर्जी परमेश्वर की ! इस समय मेरा दिमाग परेशान हो रहा है। धनपत को मैं इस अवस्था में क्यों देख रहा हूँ ? यकायक आपका इस बाग में आना कैसे हुआ ? आप मुझसे मिले बिना सीधे इस मकान में क्यों आये ? आनन्द को इस मकान में आपने ठहरने क्यों दिया अथवा उसे बचाने का उद्योग क्यों न किया ? इत्यादि बहुत-सी बातें जानने के लिए मैं इस समय परेशान हो रहा हूँ, मगर इसके पहले मैं इस कुएँ की अवस्था जानने का उद्योग करूँगा। (कमलिनी की तरफ देखकर) जरा तिलिस्मी खंजर मुझे दो, उसके जरिये से इस कुएँ में उजाला करके मैं देखूंगा कि इसके अन्दर क्या है ?

कमलिनी—(तिलिस्मी खंजर और अँगूठी कुमार के सामने रखकर) लीजिए, शायद इससे कुछ काम चले !

कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने अँगूठी पहनकर खंजर हाथ में लिया और धीरे-धीरे उस गड्ढे के किनारे गये जो ठीक कुएँ की तरह का हो रहा था। खंजर वाला हाथ कुमार ने कुएं के अन्दर डाला और उसका कब्जा दबाकर उजाला करने के बाद झाँककर देखा कि उसके अन्दर क्या है।

न मालूम कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने कुएँ के अन्दर क्या देखा कि वे यकायक बिना किसी से कुछ कहे तिलिस्मी खंजर हाथ में लिए उस कुएँ के अन्दर कूद पड़े। यह देखते ही कमलिनी और लाड़िली परेशान हो गयीं और राजा गोपालसिंह को भी बहुत ताज्जुब हुआ। इन्द्रजीतसिंह की तरह राजा गोपालसिंह ने भी अपना तिलिस्मी खंजर हाथ में लेकर कुएँ अन्दर किया और उसका कब्जा दबा रोशनी करने के बाद झाँककर देखा कि क्या बात है, मगर कुछ दिखाई न पड़ा।

कमलिनी—कुछ मालूम हुआ कि इस गड्ढे में क्या है ?

गोपालसिंह—कुछ भी मालूम नहीं होता, न जाने क्या देखकर कुमार इसमें कूद गये।

कमलिनी—खैर, आप यहाँ से हटिये और सोचिये कि अब क्या करना होगा ?

गोपालसिंह—यद्यपि मैं जानता हूँ कि यह तिलिस्म कुमार के ही हाथ से टूटेगा, परन्तु इस रीति से दोनों कुमारों का तिलिस्म के अन्दर जाना ठीक न हुआ। देखना चाहिए, ईश्वर क्या करता है ? चलो, अब यहाँ रहना उचित नहीं है और न कुमार से मुलाकात होने की ही कोई आशा है।

कमलिनी—(अफसोस के साथ) चलिये।

गोपालसिंह—(बाहर की तरफ चलते हुए) अफसोस ! कुमार से कई बातें कहने की आवश्यकता थी, मगर लाचार !

कमलिनी—(धनपत की तरफ इशारा करके) इसे आप कहाँ-कहाँ लिए फिरेंगे और यहाँ क्यों लाए थे ?

गोपालसिंह—इसे मैं कल गिरफ्तार करके इसी मकान के अन्दर छोड़ गया था।

मुझे आशा थी कि यह स्वयं इस मकान से बाहर न निकल सकेगा, मगर आज इस मकान में आकर देखा तो बड़ा ही आश्चर्य हुआ। इस मकान के तीन दरवाजे यह खोल चुका था और चौथा दरवाजा खोलना ही चाहता था। न मालूम इस मकान का भेद इसे क्योंकर मालूम हुआ।

कमलिनी—इसे आपने किस रीति से गिरफ्तार किया?

गोपालसिंह—पहले इस कम्बखत का इन्तजाम कर लूँ तो इसका अनूठा किस्सा कहूँ।

कमलिनी और लाड़िली के साथ धनपत को पकड़े हुए राजा गोपालसिंह उस मकान के बाहर आये और देवमन्दिर की तरफ रवाना होकर उसके पश्चिम की तरफ वाले मकान के पास पहुँचे। हम ऊपर लिख आये हैं कि देवमन्दिर के पश्चिम की तरफ वाले मकान के पास दरवाजे पर हड्डियों का एक ढेर था और उसके बीचोंबीच में लोहे की एक जंजीर गड़ी हुई थी, जिसका दूसरा सिरा उसके पास वाले कुएँ के अन्दर गया हुआ था।

धनपत को घसीटते हुए राजा गोपालसिंह उसी कुएँ पर गये और उस हरामजादे स्त्री-रूपधारी मर्द को जबर्दस्ती उसी कुएँ के अन्दर धकेल दिया। इसके साथ ही उस कुएँ के अन्दर से धनपत के चिल्लाने की आवाज आने लगी। परन्तु राजा गोपालसिंह, कमलिनी और लाड़िली ने उस पर कुछ ध्यान न दिया। तीनों आदमी देवमन्दिर में आकर बैठ गये और बातचीत करने लगे।

कमलिनी—हाँ, अब आप पहले यह कहिये कि भूतनाथ ने क्या किया? मैंने उसे आपके पास भेजा था। इसलिए पूछती हूँ कि उसने अपना काम ईमानदारी से किया या नहीं?

गोपालसिंह—बेशक, भूतनाथ ने अपना काम हद से ज्यादा ईमानदारी के साथ किया। वह जाहिर में मायारानी के साथ ऐसा मिला कि उसे भूतनाथ पर विश्वास हो गया और वह यह समझने लगी कि भूतनाथ इनाम की लालच से मेरा काम उद्योग के साथ करेगा।

कमलिनी—हाँ, उसने मायारानी के साथ मेल पैदा करने का हाल मुझसे कहा था। (मुस्कराकर) अजीब ढंग से उसने मायारानी को धोखा दिया। हमारी तरफ की मामूली सच्ची बातें कहकर उसने अपना काम पूरा-पूरा निकाला, मगर मैं उसके बाद का हाल पूछती हूँ, जब मैंने उसे आपके पास काशी में भेजा था, क्योंकि उसके बाद अभी तक वह मुझसे नहीं मिला।

गोपालसिंह—उसके बाद तो भूतनाथ ने दो-तीन काम बड़े अनूठे किये, जिनका खुलासा हाल मैं तुमसे कहूँगा। लेकिन उन कामों में एक काम सबसे बढ़-चढ़ के हुआ।

कमलिनी—वह क्या?

गोपालसिंह—उसने मायारानी से कहा कि मैं गोपालसिंह को गिरफ्तार करके दारोगा वाले मकान में कैद कर देता हूँ, तुम उसे अपने हाथ से मारकर निश्चिन्त हो जाओ। यह सुनकर मायारानी बहुत ही खुश हुई और भूतनाथ ने भी वह काम बड़ी

खुशी के साथ किया। बल्कि इसके इनाम में अजायबघर की ताली मायारानी से ले ली !

कममिनी—क्या अजायबघर की ताली भूतनाथ ने ले ली ?

गोपालसिंह—हाँ ।

कमलिनी—यह बड़ा काम हुआ और इस काम के लिए मैंने उसे सख्त ताकीद की थी। अब वह ताली किसके पास है ?

गोपार्लसिंह—ताली मेरे पास है, मुझे आशा न थी कि भूतनाथ मुझे देगा, मगर उसने कोई उज्र न किया।

कमलिनी—वह आपसे किसी तरह उज्र नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने उसे कसम देकर कह दिया था कि जितना मुझे मानते हो, उतना ही राजा गोपालसिंह को मानना। असल बात तो यह है कि भूतनाथ बड़े काम का आदमी है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह राजा वीरेन्द्रसिंह का गुनहगार है और उसने सजा पाने लायक काम किया है, मगर वह कसूर उससे धोखे में हुआ। इश्क का भूत उसके ऊपर सवार था और उसी ने उससे वह काम कराया, पर वास्तव में उसकी नीयत साफ है और उस कसूर का उसे सख्त रंज है, ऐसी अवस्था में जिस तरह हो, उसका कसूर माफ होना ही चाहिए।

गोपालसिंह—बेशक-बेशक, और उसके बाद तुम्हारी बदौलत उसके हाथ से कई ऐसे काम निकले हैं, जिनके आगे वह कसूर कुछ भी नहीं है।

कमलिनी—अच्छा अब खुलासा कहिए कि भूतनाथ ने आपके मारने के विषय में किस तरह महारानी को धोखा दिया और अजायबघर की ताली क्योंकर ली ?

राजा गोपालसिंह के विषय में भूतनाथ ने जिस तरह मायारानी को धोखा दिया था, उसका हाल हम ऊपर के बयानों में लिख आये हैं। इस समय वही हाल राजा गोपालसिंह ने अपने तौर पर कमलिनी से बयान किया। ताज्जुब नहीं कि भूतनाथ के विषय में हमारे पाठकों को धोखा हुआ हो और वे समझ बैठे हों कि भूतनाथ वास्तव में मायारानी से मिल गया, मगर नहीं। उन्हें अब मालूम हुआ होगा कि भूतनाथ ने मायारानी से मिलकर केवल अपना काम साधा और मायारानी को हर तरह से नीचा दिखाया।

8

अहा, ईश्वर की महिमा भी कैसी विचित्र है ! बुरे कर्मों का बुरा फल अवश्य ही भोगना पड़ता है। जो मायारानी अपने सामने किसी को कुछ समझती ही न थी, वही आज किसी के सामने जाने या किसी को मुँह दिखाने का साहस नहीं कर सकती। जो मायारानी कभी किसी से डरती ही न थी, वही आज एक पत्ते के खड़खड़ाने से भी डर कर बदहवास हो जाती है। जो मायारानी दिन-रात हँसी-खुशी में बिताया करती थी, वह आज रो-रोकर अपनी आँखें सुजा रही है। संध्या के समय भयानक जंगल में उदास

और दु:खी मायारानी केवल पाँच लौंडियों के साथ सिर झुकाये अपने किये हुए बुरे कर्मों की याद कर करके पछता रही है। रात की अवाई के कारण जैसे-जैसे अँधेरा होता जाता है, तैसे-तैसे उसकी घबराहट भी बढ़ती जाती है। इस समय मायारानी और उसकी लौंडियाँ मर्दाने भेष में हैं। लौंडियों के पास नीमचा तथा तीर-कमान मौजूद हैं। मगर मायारानी केवल तिलिस्मी तमंचा कमर में छिपाये हुए है। वह घबड़ा-घबड़ाकर बार-बार पूरब की तरफ देख रही है, जिससे मालूम होता है कि इस समय उधर से कोई उसके पास आने वाला है। थोड़ी ही देर बाद अच्छी तरह अँधेरा हो गया और इसी बीच में पूरब की तरफ से किसी के आने की आहट मालूम हुई। यह लीला थी जो मर्दाने भेष में पीतल की जालदार लालटेन लिए हुए कहीं दूर से चली आ रही थी। जब वह पास आयी, मायारानी ने घबराहट के साथ पूछा, "कहो, क्या हाल है?"

लाली—हाल बहुत ही खराब है, अब तुम्हें जमानिया की गद्दी कदापि नहीं मिल सकती।

मायारानी—यह तो मैं पहले ही से समझे बैठी हूँ। तू दीवान साहब के पास गई थी?

लाली—हाँ, गई थी, उस समय उन सिपाहियों में से कई सिपाही वहाँ मौजूद जो आपके तिलिस्मी बाग में रहते हैं और जिन्होंने दोनों नकाबपोशों का साथ दिया था। उस समय वे सिपाही दीवान साहब से दोनों नकाबपोशों का हाल बयान कर रहे थे, मगर मुझे देखते ही चुप हो गये।

मायारानी—तब क्या हुआ?

लीला—दीवान साहब ने मुझे एक तरफ बैठने का इशारा किया और पूछा कि 'तू यहाँ क्यों आई है?' इसके जवाब में मैंने कहा कि 'मायारानी हम लोगों को छोड़कर न मालूम कहाँ चली गई। जब चारों तरफ ढूँढ़ने पर भी पता न लगा तो इत्तिला के लिए आपके पास आई हूँ।' यह सुनकर दीवान साहब ने कहा कि 'अच्छा ठहर, मैं इन सिपाहियों से बातें कर लूँ, तब तुझसे करूँ।'

मायारानी—अच्छा, तब तूने उन सिपाहियों की बातें सुनीं?

लीला—जी नहीं, सिपाहियों ने मेरे सामने बात करने से इनकार किया और कहा कि 'हम लोगों को लीला पर विश्वास नहीं है!' आखिर दीवान साहब ने मुझे बाहर जाने का हुक्म दिया। उस समय मुझे अंदाज से मालूम हुआ कि मामला बेढब हो गया और ताज्जुब नहीं कि मैं गिरफ्तार कर ली जाऊँ, इसलिए पहरे वालों से बात बनाकर मैंने अपना पीछा छुड़ाया और भाग कर मैदान का रास्ता लिया।

मायारानी—संक्षेप में कह कि उन दोनों नकाबपोशों का कुछ भेद मालूम हुआ कि नहीं?

लीला—दोनों नकाबपोशों का असल भेद कुछ भी मालूम न हुँआ, हाँ उस आदमी का पता लग गया, जिसने बाग से निकल भागने का विचार करते समय गुप्त रीति से कहा था कि 'बेशक-बेशक, तुम मरते-मरते भी हजारों घर चौपट करोगी!'

मायारानी—हाँ, कैसे पता लगा? वह कौन था?

लीला—वह भूतनाथ था। जब मैं दीवान साहब के यहाँ से भागकर शहर के बाहर हो रही थी, यकायक उससे मुलाकात हुई। उसने स्वयं मुझसे कहा कि 'फला बात का कहने वाला मैं हूँ, तू मायारानी से कह दीजियो कि अब तेरे दिन खोटे आए हैं, अपने किए का फल भोगने के लिए तैयार हो रहे, हाँ, यदि मुझे कुछ देने की सामर्थ्य हो तो मैं उसका साथ दे सकता हूँ।'

मायारानी—(ऊँची साँस लेकर) हाय ! अच्छा और क्या-क्या मालूम हुआ ?

लीला—और क्या कहूँ ? राजा वीरेन्द्रसिंह की बीस हजार फौज आ गई है, जिसकी सरदारी नाहरसिंह कर रहा है। दीवान साहब ने एक सरदार को पत्र देकर नाहरसिंह के पास भेजा था, मालूम नहीं उस पत्र में क्या लिखा था, मगर नाहरसिंह ने उसका यह जवाब जबानी कहला भेजा कि हम केवल मायारानी को गिरफ्तार करने के लिए आए हैं। इसके बाद पता चला कि दीवान साहब ने आपकी खोज में कई जासूस रवाना किए हैं।

मायारानी—तो इससे निश्चित होता है कि कम्बख्त दीवान भी मेरा दुश्मन हो गया !

लीला—क्या इस बात में अब भी शक है ?

मायारानी—(लम्बी साँस लेकर) अच्छा और क्या मालूम हुआ ?

लीला—एक बात सबसे ज्यादा ताज्जुब की मालूम हुई।

मायारानी—वह क्या ?

लीला—रात के समय भेष बदल कर मैं राजा वीरेन्द्रसिंह के लश्कर में गई थी। घूमते-फिरते ऐसी जगह पहुँची, जहाँ से नाहरसिंह का खेमा सामने दिखाई दे रहा था और उस खेमे के दरवाजे पर मशाल हाथ में लिए हुए पहरा देने वाले सिपाहियों की चाल साफ-साफ दिखाई दे रही थी। मैंने देखा कि खेमे के अन्दर से दो नकाबपोश निकले और जहाँ मैं खड़ी थी उसी तरफ आने लगे।

मैं किनारे हट गयी। जब वे मेरे पास से होकर निकले तो उनकी चाल और उनके कद से मुझे निश्चय हो गया कि वे दोनों नकाबपोश वही हैं जो हमारे बाग में आये थे और जिन्होंने धनपत को पकड़ा था।

मायारानी—हाँ !

लीला—जी हाँ !

मायारानी—अफसोस, इसका पता कुछ भी न लगा कि वे दोनों आखिर हैं कौन मगर इसमें कोई सन्देह नहीं कि वे खास बाग के तिलिस्मी भेदों को जानते हैं और इस समय तेरी जबानी सुनने से यह जाना जाता है कि वे दोनों राजा वीरेन्द्रसिंह के पक्षपाती भी हैं।

लीला—इसका निश्चय नहीं हो सकता कि वे दोनों नकाबपोश राजा वीरेन्द्रसिंह के पक्षपाती हैं, शायद वे नाहरसिंह से मदद लेने गये हों।

मायारानी—ठीक है, यह भी हो सकता है। लेकिन बात तो यह है कि मैं सिवाय गोपालसिंह के और किसी से नहीं डरती, न मुझे रिआया के बिगड़ने का कोई डर है न

सिपाहियों या फौज के बागी होने का खौफ न दीवान-मुत्सद्दियों के बिगड़ने का अन्देशा और न कमलिनी और लाड़िली की बेवफाई का रंज—क्योंकि मैं इन सभी को अपनी करामात से नीचा दिखा सकती हूँ, हाँ, यदि गोपालसिंह के बारे में कम्बख्त भूतनाथ ने मुझे धोखा दिया है जैसा कि तू कह चुकी है तो बेशक खौफ की बात है। अगर वह जीता है तो मुझे बुरी तरह हलाल करेगा। वह इस बात से कदापि नहीं डरेगा कि मेरा भेद खुलने से उसकी बदनामी होगी, क्योंकि मैंने उसके साथ बहुत बुरा सलूक किया है। जिस समय कम्बख्त कमलिनी और वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों ने गोपालसिंह को कैद से छुड़ाया था, यदि गोपालसिंह चाहता तो उसी समय मुझे जहन्नुम को भेज सकता था। मगर उसका ऐसा न करना मेरा कलेजा और भी दहला रहा है, शायद मौत से भी बढ़कर कोई सजा उसने मेरे लिए सोच ली है, हाय अफसोस! मैंने तिलिस्मी भेद जानने के लिए उसे क्यों इतने दिनों तक कैद में रख छोड़ा! उसी समय उसे मार डाला होता तो यह बुरा दिन क्यों देखना पड़ता? हाय, अब तो मौत से भी कोई भारी सजा मुझे मिलने वाली है। (रोती है)

लीला—अब रोने का समय नहीं है, किसी तरह जान बचाने की फिक्र करनी चाहिए।

मायारानी—(हिचकी लेकर) क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? किससे मदद माँगूं? ऐसी अवस्था में कौन मेरी सहायता करेगा? हाय, आज तक मैंने किसी के साथ किसी तरह की नेकी नहीं की, किसी को अपना दोस्त न बनाया और किसी पर अहसान का बोझ न डाला। फिर किसी को क्या गरज पड़ी है, जो ऐसी अवस्था में मेरी मदद करे। वीरेन्द्रसिंह के लड़कों के दुश्मनी करना मेरे लिए और भी जहर हो गया।

लीला—खैर, जो हो गया सो हो गया, अब इस समय इन सब बातों का सोच-विचार करना और भी बुरा है। मैं इस मुसीबत में हर तरह तुम्हारा साथ देने के लिए तैयार हूँ और अब भी तुम्हारे पास ऐसी-ऐसी चीजें हैं कि उनसे कठिन-से-कठिन काम निकल सकता है, रुपये-पैसे की तरफ से भी कुछ तकलीफ नहीं हो सकती, क्योंकि सेरों जवाहिरात पास में मौजूद हैं फिर इतनी चिन्ता क्यों कर रही हो?

मायारानी—चिन्ता क्यों न की जाये? एक मनोरमा का मकान छिपकर रहने योग्य था सो वहाँ भी वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों के चरण जा पहुँचे। तू ही कह चुकी है कि किशोरी और कामिनी को ऐयार लोग छुड़ाकर ले गये। नागर को भी उन लोगों ने फँसा लिया होगा। अब सबसे पहला काम तो यह है कि छिपकर रहने के लिए कोई जगह खोजी जाये उसके बाद जो कुछ करना होगा किया जायेगा। हाय, अगर गोपाल-सिंह की मौत हो गई होती तो न मुझे रिआया के बागी होने का डर था और न राजा वीरेन्द्रसिंह की दुश्मनी का।

लीला—छिपकर रहने के लिए मैं जगह का बन्दोबस्त कर चुकी हूँ। यहाँ से थोड़ी ही दूर पर…

लीला इससे ज्यादा कुछ कहने न पाई थी कि पीछे की तरफ से कई आदमियों के दौड़ते हुए आने की आहट मालूम हुई। बात-की-बात में वे लोग, जो वास्तव में चोर

थे, चोरी का माल लिए हुए उस जगह आ पहुँचे जहाँ मायारानी और उसकी लौंडियाँ बैठी बातें कर रही थीं । ये चोर गिनती में पाँच थे और उनके पीछे-पीछे कई सवार भी उनकी गिरफ्तारी के लिए चले आ रहे थे, जिनके घोड़ों की टापों की आवाज बखूबी आ रही थी । जब वे चोर मायारानी के पास पहुँचे, तो यह सोचकर कि पीछा करने वाले सवारों के हाथ से बचना मुश्किल है, वे चोरी का माल उसी जगह पटक कर आगे की तरफ भाग गये और इसके थोड़ी ही देर बाद वे कई सवार भी उसी जगह पर, जहाँ मायारानी थी, आ पहुँचे । उन्होंने देखा कि कई आदमी[1] बैठे हुए हैं, बीच में एक लालटेन जल रही है, और चोरी का माल भी उसी जगह पड़ा हुआ है । उन्हें निश्चय हो गया कि ये चोर हैं अतः उन्होंने मायारानी तथा उसकी लौंडियों को चारों तरफ से घेर लिया ।

9

आधी रात का समय है, चाँदनी खिली हुई है । मौसम में पूरा-पूरा फर्क पड़ गया है । रात की ठंडी-ठंडी हवा अब प्यारी मालूम होती है । ऐसे समय में उस सड़क पर जो काशी से जमानिया की तरफ गई है दो मुसाफिर धीरे-धीरे काशी की तरफ जा रहे हैं । ये दोनों मुसाफिर साधारण नहीं हैं, बल्कि अमीर बहादुर और दिलावर मालूम पड़ते हैं । दोनों की पोशाक बेशकीमत और सिपाहियाना ठाठ की है, तथा दोनों ही की चाल में दिलेरी और लापरवाही मालूम होती है । खंजर, कटार, तलवार, तीर-कमान और कमन्द से दोनों ही सजे हुए हैं और इस समय मस्तानी चाल से धीरे-धीरे टहलते हुए जा रहे हैं । इनके पीछे-पीछे दो आदमी दो घोड़ों की बागडोर थामे हुए जा रहे हैं, मगर ये दोनों साईस नहीं हैं बल्कि सिपाही और सवार मालूम होते हैं ।

दोनों मुसाफिर जाते-जाते ऐसी जगह पहुँचे, जहाँ सड़क से कुछ हटकर पाँच-सात पेड़ों का एक झुण्ड था । दोनों वहाँ खड़े हो गए और उनमें से एक ने जोर से सीटी बजाई जिसकी आवाज सुनते ही पेड़ों की आड़ में से दस आदमी निकल आए और दूसरी सीटी की आवाज के साथ ही वे उन दोनों आदमियों के पास पहुँच हाथ जोड़कर खड़े हो गए । उन सभी की पोशाक उस समय के डाकुओं की-सी थी । जाँघिया पहने हुए, बदन में केवल एक मोटे कपड़े की नीमास्तीन, ढाल-तलवार लगाए और हाथों में एक-एक गँड़ासा लिए हुए थे, और सभी की बगल में एक-एक छोटा बटुआ भी लटक रहा था । इन दसों के आ जाने पर उन दो बहादुरों में से एक ने उनकी तरफ देखा और पूछा, "उसका कुछ पता लगा ?"

एक डाकू—(हाथ जोड़ कर) जी हाँ, बल्कि वह काम भी बखूबी कर आये हैं,

---

1. मायारानी और उसकी लौंडियाँ मर्दाने वेश में थीं ।

जो हम लोगों के सुपुर्द किया गया था और जिसका होना कठिन था।

जवान—उसके साथ और कौन-कौन है ?

डाकू—लाली के अतिरिक्त केवल पाँच लौंडियाँ और थीं।

जवान—उसे तुमने किस इलाके में पाया और क्या किया, सो खुलासा कहो।

डाकू—उसने जमानिया की सरहद को छोड़ दिया और काशी रहने का विचार करके उसी तरफ का रास्ता लिया। जब काशी जी की सरहद में पहुँची, तो गंगापुर नामक एक स्थान के पास वाले जंगल में एक दिन तक उसे अटकना पड़ा क्यों कि वह लीला को हालचाल लेने और कई भेदों का पता लगाने के लिए पीछे छोड़ आई थी। हम लोगों को उसी समय अपना काम करने का मौका मिला। मैं कई आदमियों को साथ लेकर काशीराज की तहसील में जो गंगापुर में है घुस गया और कुछ असबाब चुराकर इस तरह भागा कि पहरे वालों को पता लग गया और कई सवारों ने हम लोगों का पीछा किया। आखिर हम लोग उन सवारों को धोखा देकर घुमाते हुए उसी जंगल में ले गए, जिसमें मायारानी थी। जब हम लोग मायारानी के पास पहुँचे, तो चोरी का माल उसी के पास पटक कर भाग गये और सवारों ने वहाँ पहुँच और चोरी का माल मायारानी के पास देखकर उन्हीं लोगों को चोर या चोरों का साथी समझा और उन्हें चारों तरफ से घेर लिया।

जवान—बहुत अच्छा हुआ ! शाबाश, तुम लोगों ने अपना काम खूबी के साथ पूरा किया। अच्छा इसके बाद क्या हुआ ?

डाकू—इसके बाद की हम लोगों को कुछ भी खबर नहीं है क्योंकि आज्ञानुसार आपके पास हाजिर होने का समय बहुत कम बच गया था इसीलिए फिर उन लोगों का पीछा न किया।

जवान—कोई हर्ज नहीं, हमें इतने ही से मतलब था। अच्छा, अब तुम जाओ, जमानिया के पास गंगा के किनारे जो झाड़ी है उसी में परसों रात को किसी समय हम तुम लोगों से मिलेंगे, कदाचित् कोई काम पड़े। (अपने साथी की तरफ देखकर) कहिए देवीसिंह जी, अब इन दोनों सवारों के लिए क्या आज्ञा होती है जो हम लोगों के साथ आये हैं ?

देवीसिंह—अगर ये लोग जासूसी का काम अंजाम दे सकें, तो इन्हें काशी भेजना चाहिए।

जवान—ठीक है, और इसके बाद जहाँ तक जल्द हो सके, कमलिनीजी से मिलना चाहिए, ताज्जुब नहीं वे कहती हों कि भूतनाथ बड़ा ही बेफिकरा है।

पाठक तो समझ ही गये होंगे कि ये दोनों बहादुर देवीसिंह और भूतनाथ हैं। डाकुओं और दोनों सवारों को विदा करने के बाद दोनों ऐयार लौटे और तेजी के साथ जमानिया की तरफ रवाना हुए। इस जगह से जमानिया केवल चार कोस की दूरी पर था इसलिए ये दोनों ऐयार सवेरा होने के पहले ही उस टीले पर जा पहुँचे, जो दारोगा वाले बँगले के पीछे की तरफ था और जहाँ से दोनों ऐयारों और कुमारों को साथ लिए हुए कमलिनी मायारानी के तिलिस्मी बाग वाले देवमंदिर में गई थी। हम पहले लिख

आये हैं कि इस टीले पर एक कोठरी थी जिसमें पत्थर के चबूतरे पर पत्थर ही का एक शेर बैठा हुआ था। वह चबूतरा और शेर देखने में तो पत्थर का मालूम होता था, मगर वास्तव में किसी मसाले का बना हुआ था। दोनों ऐयार उस शेर के पास जाकर खड़े हो गये और बातचीत करने लगे। भूतनाथ और देवीसिंह को इस समय इस बात का गुमान भी न था कि उनके पीछे-पीछे दो औरतें कुछ दूर से आ रही हैं और इस समय भी कोठरी के बाहर छिपकर खड़ी उन दोनों की बातें सुनने के लिए तैयार हैं। इन दोनों औरतों में से एक तो मायारानी और दूसरी नागर है। पाठकों को शायद ताज्जुब हो कि मायारानी को तो चोरी की इल्जाम में काशिराज के सवारों ने गिरफ्तार कर लिया था, फिर वह यहाँ क्योंकर आई? इसलिए थोड़ा हाल मायारानी का इस जगह लिख देना उचित जान पड़ता है।

जब उन सवारों ने चारों तरफ से मायारानी को घेर लिया तब एक दफे तो वह बहुत ही परेशान हुई मगर तुरत ही सम्हल बैठी और फुर्ती के साथ उसने अपने तिलिस्मी तमंचे से काम लिया। उसने तमंचे में तिलिस्मी गोली भर कर उसी जगह जमीन पर मारी जहाँ आप बैठी हुई थी। एक आवाज हुई और गोली में से बहुत-सा धुआँ निकलकर धीरे-धीरे फैलने लगा मगर सवारों ने इस बात पर कुछ ध्यान न दिया और मायारानी तथा उसकी लौंडियों को गिरफ्तार कर लिया। मायारानी के तमंचा चलाने पर सवारों को क्रोध आ गया था इसलिए कई सवारों ने मायारानी की जूतों और लातों से खातिरदारी भी की, यहाँ तक कि वह बेहाल होकर जमीन पर गिर पड़ी, उसके साथ-ही-साथ लीला तथा और लौंडियों ने भी खूब मार खाई, मगर इस बीच में तिलिस्मी गोली का धुआँ हल्का होकर चारों तरफ फैल गया और सभी के आँख-नाक में घुसकर अपना काम कर गया। मायारानी और लीला को छोड़ बाकी जितने वहाँ थे सबके सब बेहोश हो गये थे। न सवारों को दीन-दुनिया की खबर रही और न मायारानी की लौंडियों को तन-बदन की सुध रही। पाठकों को याद होगा कि बेहोशी का असर न होने के लिए मायारानी ने तिलिस्मी अर्क पी लिया था और वही अर्क लीला को पिलाया था। अभी तक इस अर्क का असर बाकी था जिसने मायारानी और लीला को बेहोश होने से बचाया।

मार के सदमे से आधी घड़ी तक तो मायारानी में उठने की सामर्थ्य न रही, इसके बाद जान के खौफ से वह किसी तरह उठी और लीला को साथ लेकर वहाँ से भागी। बेचारी लौंडियों को, जिन्होंने ऐसे दुःख के समय में भी मायारानी का साथ दिया था, मायारानी ने कुछ भी न पूछा, हाँ लीला का ध्यान उस तरफ जा पड़ा। उसने अपने ऐयारी के बटुए में से लखलखा निकाला और लौंडियों को सुँघाकर होश में लाने के बाद सभी को भाग चलने के लिए कहा।

लौंडियों को साथ लिए हुए लीला और मायारानी वहाँ से भागीं मगर घबराहट के मारे इस बात को न सोच सकीं कि कहाँ छिपकर अपनी जान बचानी चाहिए, अस्तु वे सब सीधे दारोगा वाले बँगले की तरफ रवाना हुईं। उस समय सवेरा होने में कुछ विलम्ब था, वे खौफ के मारे छिपाती-छिपती दिन-भर बराबर चलती गईं और रात को

भी कहीं ठहरने की नौबत न आई। आधी रात से कुछ ज्यादा जा चुकी थी जब वे सब दारोगा वाले बँगले पर जा पहुँचीं। इत्तिफाक से नागर भी रास्ते ही में इन लोगों से मिली जो मायारानी से मिलने के लिए मुश्की घोड़ी पर सवार खास बाग की तरफ जा रही थी। इस नागर ने मायारानी को न पहचाना, मगर लीला ने नागर को पहचान कर आवाज दी। नागर जब मायारानी के पास आई तो उसे ऐसी अवस्था में देखकर ताज्जुब करने लगी। मायारानी ने संक्षेप में अपना हाल नागर से कहा जिसे सुन वह अफसोस करने लगी और बोली, "मुझको भी भूतनाथ पर कुछ-कुछ शक होता है, ताज्जुब नहीं कि उसने धोखा दिया हो, खैर, कोई हर्ज नहीं है मैं बहुत जल्द इस बात का पता लगा लूंगी। आप काशीजी चलकर मेरे मकान में रहिये और देखिये कि मैं भूतनाथ को क्योंकर फँसाती हूँ।"

मायारानी और नागर की बातें पूरी न होने पाई थीं कि सामने से दो आदमियों के आने की आहट मालूम हुई। वे दोनों देवीसिंह और भूतनाथ थे। यद्यपि अँधेरे के कारण मायारानी ने उन दोनों को न पहचाना और पहचानने की उसे कोई आवश्यकता भी न थी, मगर जब वे दोनों टीले की तरफ मुड़े, तब मायारानी को शक पैदा हुआ और उसने धीरे से नागर के कान में कहा—"दोनों टीले पर जा रहे हैं इससे मालूम होता है कि कमलिनी के साथी हैं, क्योंकि उस टीले पर बिना जानकार आदमी के और कोई इस समय कदापि न जायगा।

नागर—हाँ, मुझे भी यही शक होता है कि ये दोनों कमलिनी के साथी या वीरेन्द्रसिंह के ऐयार हैं और ताज्जुब नहीं कि आपके तिलिस्मी बाग में जाने की नीयत से उस टीले पर जा रहे हों, क्योंकि बाबाजी की जुबानी मैं कई दफे सुन चुकी हूँ कि तिलिस्मी बाग में जाने के लिए इस टीले पर से भी एक रास्ता है।

मायारानी—हाँ, यह तो मैं भी जानती हूँ कि इस टीले पर से मेरे तिलिस्मी बाग में जाने का रास्ता है मगर इस राह से क्योंकर जाया जा सकता है, इसकी मुझे खबर नहीं है। ताज्जुब नहीं कि खून से लिखी किताब की बदौलत कमलिनी को इन सब रास्तों का हाल मालूम हो गया हो, क्योंकि वह किताब नानक और भूतनाथ की बदौलत कमलिनी के हाथ पहुँची ही होगी।

नागर—बेशक ऐसा ही है। खैर, चलिए इन दोनों के पीछे-पीछे चलें। ताज्जुब नहीं कि बहुत-सी बातों का पता लग जाय।

इसके बाद मायारानी केवल नागर को साथ लिए भूतनाथ और देवीसिंह के पीछे-पीछे छिपकर टीले पर गई और जब वे दोनों ऐयार कोठरी के अन्दर घुसे तो बाहर छिपकर भूतनाथ तथा देवीसिंह आपस में जो बातें करने लगे, उन्हें सुनने लगी जैसा कि हम ऊपर लिख आए हैं।

उस चबूतरे पर बैठे हुए शेर के पास खड़े होकर भूतनाथ और देवीसिंह नीचे लिखी बातें करने लगे।

भूतनाथ—(शेर के सिर पर हाथ रखकर) तिलिस्म के चौथे दर्जे में जो देव-मन्दिर है उसमें जाने का यही रास्ता है।

देवीसिंह—क्या राजा गोपालसिंह से वहाँ मुलाकात होगी ?

भूतनाथ—अवश्य, बल्कि कमलिनी, लाड़िली और दोनों कुमार भी वहाँ मौजूद होंगे।

देवीसिंह—इस दरवाजे के खोलने की तरकीब राजा गोपालसिंह ने आपको बता दी ?

भूतनाथ—हाँ, राजा गोपालसिंह और कमलिनी ने भी दरवाजे के खोलने की तरकीब बताई थी, मगर यह रास्ता बड़ा ही खतरनाक है। अच्छा, अब मैं दरवाजा खोलता हूँ।

इतना कहकर भूतनाथ ने शेर की बाईं आँख में उँगली डाली। आँख अन्दर की तरफ घुस गई और इसके साथ ही शेर ने मुँह खोल दिया। भूतनाथ ने दूसरा हाथ शेर शेर के मुँह में डाला और कोई पेंच घुमाया जिससे उस चबूतरे के आगेवाला पत्थर हटकर जमीन के साथ सट गया जिस पर शेर बैठा हुआ था और नीचे उतरने के लिए रास्ता मालूम पड़ने लगा। देवीसिंह ने बत्ती जलाने का इरादा किया मगर भूतनाथ ने मना किया और कहा कि नहीं, तुम चुपचाप मेरे पीछे-पीछे चले आओ, नीचे उतर जाने के बाद बत्ती जलावेंगे। आगे-आगे भूतनाथ और पीछे-पीछे देवीसिंह, दोनों ऐयार नीचे उतरे और वहाँ बटुए में से सामान निकालकर भूतनाथ ने मोमबत्ती जलाई। वह एक कोठरी थी जिसमें तीन तरफ तो दीवार थी और एक तरफ की दीवार सुरंग के रास्ते के तौर पर थी अर्थात् उधर से किसी सुरंग में जाने का रास्ता था। कोठरी के बीचोंबीच में लोहे का एक-एक खम्भा था और खम्भे के ऊपर एक गरारीदार पहिया था जिसे भूतनाथ ने घुमाया और देवीसिंह के कहा, "जिस राह से हम आये हैं उसे यहाँ से बन्द करने की यही तरकीब है और (हाथ का इशारा करके) यही सुरंग तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में गई है !" इसके बाद भूतनाथ और देवीसिंह सुरंग में घुसकर आगे की तरफ बढ़े।

इस सुरंग की चौड़ाई चार हाथ से ज्यादा न होगी। यहाँ की जमीन स्याह और सफेद पत्थरों से बनी हुई थी अर्थात् एक पत्थर सफेद तो दूसरा स्याह, इसके बाद सफेद और फिर स्याह, इसी तरह दोनों रंग के पत्थर सिलसिलेवार लगे हुए थे। सुरंग के दोनों तरफ की दीवारें लोहे की थीं और थोड़ी-थोड़ी दूर पर लोहे के बनावटी आदमी दीवार के साथ खड़े थे जो अपने लम्बे हाथ फैलाए हुए थे। भूतनाथ ने देवीसिंह की तरफ देखकर कहा, "इस राह से जाना और अपनी जान पर खेलना एक बराबर है। देखिए बहुत सम्हल कर मेरे पीछे चले आइए और इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखिए कि स्याह पत्थर पर पैर न पड़ने पावे नहीं तो जान न बचेगी। कमलिनी ने मुझे अच्छी तरह समझा कर कहा था कि सुरंग की दीवार के साथ जो लोहे के आदमी हाथ फैलाये खड़े हैं वे उस समय काम करते हैं जब कोई स्याह पत्थर पर पैर रखता है। स्याह पत्थर पर पैर रखते ही वे उसको अपने दोनों हाथों से ऐसा पकड़ लेते हैं कि फिर किसी तरह उनके कब्जे से निकल नहीं सकता। मैं समझता हूँ कि इस सुरंग में कई आदमी धोखे में पड़कर मारे गये होंगे, इसलिए उचित है कि मेरे और तुम्हारे दोनों के हाथ में एक-एक मोमबत्ती रहे।

भूतनाथ की बातें सुनकर देवीसिंह ताज्जुब करने लगे, आखिर लाचार हो कर

एक मोमबत्ती और जलाई और तब बड़ी होशियारी से सफेद पत्थरों पर पैर रखते हुए आगे बढ़े। यह सुरंग एकदम सीधी बनी हुई थी और इसकी जमीन हर तरह से साफ थी, जिसका सबब शायद यह हो कि यहाँ कहीं से गर्द-गुबार के आने की जगह नहीं थी। फिर इस सुरंग में ऐसी कारीगरी भी की गई थी कि किसी-किसी जगह दीवार में में से साफ छनी हुई हवा आती और दूसरी राह से निकल जाती थी जिससे सुरंग की हवा हरदम साफ वनी रहती थी और उसमें जहर का असर पैदा नहीं होने पाता था।

लगभग दो सौ कदम जाने के बाद देखा कि दाहिनी तरफ दीवार के साथ वाले लोहे के एक आदमी के दोनों हाथ सिमटे हुए हैं और उनके बीच में हड्डी का एक ढाँचा फँसा हुआ है। वह ढाँचा मनुष्य के शरीर का था जिसे देखते ही भूतनाथ ने देवीसिंह से कहा, "देखिये यह धोखा खाने का नमूना है। कोई अनजान आदमी सुरंग में आकर जान दे बैठा है, अनजान कैसे कहें क्योंकि यहाँ तक तो आ ही चुका था शायद धोखा खा गया हो।" दोनों ऐयार ताज्जुब से उस पंजर को देखने लगे, पर इसी समय यकायक देवीसिंह की निगाह पीछे की तरफ (जिधर से ये दोनों आये थे) जा पड़ी और एक रोशनी देख देवीसिंह ने ताज्जुब के साथ भूतनाथ से कहा, "देखिये तो वह रोशनी कैसी है ?"

भूतनाथ—(बत्ती के आगे हाथ रखकर और गौर से रोशनी की तरफ देखकर) कोई आ रहा है !

देवीसिंह—दो औरतें मालूम पड़ती हैं।

भूतनाथ—ठीक है, शायद लाड़िली और कमलिनीजी हों, क्योंकि सिवाय जानकार के और कोई तो इस सुरंग में आ नहीं सकता।

देवीसिंह—मुझे तो विश्वास नहीं होता कि वे कमलिनी और लाड़िली होंगी।

भूतनाथ—शक तो मुझे भी होता है, खैर, चलकर देख ही क्यों न लें।

भूतनाथ और देवीसिंह दोनों फिर पीछे की तरफ लौटे, अर्थात् उस रोशनी की तरफ बढ़े जो यकायक दिखाई दी थी। दो ही कदम बढ़े होंगे कि कोई चीज उनके सामने जमीन पर आकर गिरी और पटाके की-सी आवाज हुई, इसके साथ ही उसमें से बेहोशी पैदा करने वाला जहरीला धुआँ निकला। वह तिलिस्मी गोली थी जो मायारानी ने तिलिस्मी तमंचे में भर कर भूतनाथ और देवीसिंह की तरफ चलाई थी। भूतनाथ और देवीसिंह इस गुमान में पीछे की तरफ हटे थे कि शायद वह रोशनी कमलिनी और लाड़िली के साथ हो, मगर वास्तव में ये दोनों मायारानी और नागर थीं जिन्होंने छिप कर भूतनाथ और देवीसिंह की बातें सुनी थीं। जब दोनों ऐयार शेर वाला दरवाजा खोलकर तहखाने में उतर गए थे तो चर्खा चलाकर दरवाजा बन्द करने के पहले ही ये दोनों भी दरवाजे के अन्दर घुस कर दो-चार सीढ़ी नीचे उतर आई थीं और इन्होंने वे बातें भी सुन ली थीं जो नीचे उतर जाने के बाद देवीसिंह और भूतनाथ में हुईं।

10

राजा गोपालसिंह तथा कमलिनी और लाड़िली को हम देवमन्दिर में छोड़ आये हैं। वे तीनों भूतनाथ के आने की उम्मीद में देर तक देवमन्दिर में रहे, मगर जब भूतनाथ न आया तो लाचार होकर कमलिनी ने गोपालसिंह से कहा—

कमलिनी—मालूम होता है कि भूतनाथ किसी काम में फँस गया। खैर, अब हम लोगों को यहाँ व्यर्थ रुकना उचित नहीं क्योंकि अभी बहुत-कुछ काम करना बाकी है।

गोपालसिंह—ठीक है, मगर जहाँ तक मैं समझता हूँ, तुम्हारे करने योग्य इस समय कोई काम नहीं है क्योंकि दोनों कुमार तिलिस्म के अन्दर जा ही चुके हैं, और बिना तिलिस्म तोड़े अब उनका बाहर निकलना कठिन है, हाँ, कम्बख्त मायारानी के विषय में बहुत कुछ करना है सो उसके लिए मैं अकेला काफी हूँ, इसके अतिरिक्त और जो कुछ काम है उसे ऐयार लोग बखूबी कर सकते हैं।

कमलिनी—आपकी बातों से पाया जाता है तो कि मेरे यहाँ रहने की अब कोई आवश्यकता नहीं।

गोपालसिंह—बेशक मेरे कहने का यही मतलब है।

कमलिनी—अच्छा तो मैं लाड़िली को साथ लेकर अपने घर[1] जाती हूँ, उधर ही से रोहतासगढ़ पर ध्यान रक्खूँगी।

गोपालसिंह—हाँ तुम्हें वहाँ अवश्य जाना चाहिए क्योंकि किशोरी और कामिनी भी उसी मकान में पहुँचा दी गई हैं, उनसे जब तक न मिलोगी तब तक वे बेचैन रहेंगी, इसके अतिरिक्त कई कैदियों को भी तुमने वहाँ भिजवाया है, उनकी भी खबर लेनी चाहिए।

कमलिनी—अच्छा, थोड़ी-देर तक भूतनाथ की राह और देख लीजिए।

आधी रात बीत जाने के बाद तीनों आदमी वहाँ से रवाना हुए। वे पहले उस गोल खम्भे के पास आये जो कमरे के बीचोंबीच में था और जिस पर तरह-तरह की मूरतें बनी हुई थीं। राजा गोपालसिंह ने एक मूरत पर हाथ रख कर जोर से दबाया, साथ ही एक छोटी-सी खिड़की अन्दर जाने के लिए दिखाई दी। दोनों सालियों को साथ लिए हुए गोपालसिंह उस खिड़की के अन्दर घुस गये; जहाँ नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। यद्यपि उसके अन्दर एक दम अँधेरा था, मगर तीनों आदमी अन्दाज से उतरते चले गए, जब नीचे एक कोठरी में पहुँचे तो गोपालसिंह ने मोमबत्ती जलाई। मोमबत्ती जलाने का सामान उसी कोठरी में एक आले पर रक्खा हुआ था जिसे अँधेरे में ही गोपालसिंह ने खोज लिया था। वह कोठरी लगभग दस हाथ के चौड़ी और इतनी लम्बी होगी। चारों तरफ दीवार में चार दरवाजे बने हुए थे और छत में जंजीरें लटक रही थीं। गोपालसिंह ने एक जंजीर हाथ से पकड़कर खींची जिससे गोल

---

1. वही तिलिस्मी मकान जो तालाब के अन्दर है।

खम्भे वाला वह दरवाजा बन्द हो गया जिस राह से तीनों नीचे उतरे थे। इसके बाद गोपालसिंह उत्तर तरफ वाली दीवार के पास गये और दरवाजा खोलने का उद्योग करने लगे। उस दरवाजे में ताँबे की सैकड़ों कीलें गड़ी हुई थीं और हर कील के मुँह पर उभड़ा हुआ एक-एक अक्षर बना हुआ था। यह दरवाजा उसी सुरंग में जाने के लिए था जो दारोगा वाले बँगले के पीछे वाले टीले तक पहुँची हुई थी या जिस सुरंग के अन्दर भूतनाथ और देवीसिंह का जाना ऊपर के बयान में हम लिख आये हैं। गोपालसिंह ने दरवाजे में लगी हुई कीलों को दबाना शुरू किया। पहले उस कील को दबाया जिसके सिरे पर 'हे' अक्षर बना हुआ था, इसके बाद 'र' अक्षर की कील को दबाया, फिर 'म' और 'ब' अक्षर की कील को दबाया ही था कि दरवाजा खुल गया और दोनों सालियों को साथ लिए हुए गोपालसिंह उसके अन्दर चले गये तथा भीतर जाकर हाथ के जोर से दरवाजा बन्द कर दिया। इस दरवाजे के पिछली तरफ भी वे ही बातें थीं जो बाहर थीं अर्थात् भीतर से भी उसमें वैसी ही कीलें जड़ी हुई थीं। भीतर चार-पाँच कदम जाने के बाद सुरंग की जमीन स्याह और सफेद पत्थरों से बनी हुई मिली और उसी जगह पहुँचे जहाँ भूतनाथ और देवीसिंह खड़े थे। ये लोग भी ठीक उसी समय वहाँ पहुँचे जब मायारानी की चलाई हुई गोली में से जहरीला धुआँ निकलकर सुरंग में फैल चुका था और दोनों ऐयार बेहोशी के असर से झूम रहे थे। कमलिनी, लाड़िली तथा राजा गोपालसिंह इस धुएँ से बिल्कुल बेखबर थे और उन्हें इस बात का गुमान भी न था कि मायारानी ने इस सुरंग में पहुँच कर तिलिस्मी गोली चलाई है क्योंकि गोली चलाने के बाद तुरन्त ही मायारानी ने अपने हाथ की मोमबत्ती बुझा दी थी।

राजा गोपालसिंह ने वहाँ पहुँचकर भूतनाथ और देवीसिंह को देखा। कमलिनी ने भूतनाथ को पुकारा, मगर बेहोशी का असर हो जाने के कारण उसने कमलिनी की बात का जवाब न दिया बल्कि देखते-देखते भूतनाथ और देवीसिंह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े। कमलिनी, लाड़िली और गोपालसिंह के भी नाक और मुँह में वह धुआँ गया मगर ये उसे पहचान न सके और भूतनाथ तथा देवीसिंह के बेहोश हो जाने के बाद ही ये तीनों भी बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े।

आधी घड़ी तक राह देखने के बाद मायारानी और नागर ने मोमबत्ती जलाई। खुशी-खुशी उन दोनों औरतों ने बेहोशी से बचाने वाली दवा अपने मुँह में रक्खी और स्याह पत्थरों से अपने को बचाती हुई वहाँ पहुँचीं जहाँ कमलिनी, लाड़िली, गोपालसिंह, भूतनाथ और देवीसिंह बेहोश पड़े हुए थे।

अहा, इस समय मायारानी की खुशी का कोई ठिकाना है! इस समय उसकी किस्मत का सितारा फिर से चमक उठा। उसने हँस कर नागर की तरफ देखा और कहा—

माया—क्या अब भी मुझे किसी का डर है?

नागर—आज मालूम हुआ कि आपकी किस्मत बड़ी जबरदस्त है। अब दुनिया में कोई भी आपका मुकाबला नहीं कर सकता। (भूतनाथ की तरफ देखकर) देखिए, इस बेईमान की कमर में वही तिलिस्मी खंजर है जो कमलिनी ने इसे दिया था। अहा,

इससे बढ़कर दुनिया में और क्या अनूठी चीज होगी !

मायारानी—इस कम्बख्त ने मुझसे कहा था कि कमलिनी ने गोपालसिंह को भी एक तिलिस्मी खंजर दिया है। (गोपालसिंह को अच्छी तरह देखकर) हाँ, हाँ, इसकी कमर में भी वही खंजर है ! ताज्जुब नहीं कि कमलिनी और लाड़िली की कमर में भी इसका जोड़ा हो। (कमलिनी, लाड़िली और देवसिंह की तरफ ध्यान देकर) नहीं नहीं, और किसी के पास नहीं है। खैर दो खंजर तो मिले, एक मैं रक्खूंगी और एक तुझे दूँगी। इसमें जो-जो गुण हैं भूतनाथ की जुबानी सुन ही चुकी हूँ, अच्छा भूतनाथ का खंजर तू ले-ले और इसका मैं लेती हूँ।

खुशी-खुशी मायारानी ने पहले गोपालसिंह की उँगली से वह अँगूठी उतारी जो तिलिस्मी खंजर के जोड़ की थी और इसके बाद कमर से खंजर निकालकर अपने कब्जे में किया। नागर ने भी पहले भूतनाथ के हाथ से अँगूठी उतार कर पहन ली और तब खंजर पर कब्जा किया। मायारानी ने हँसकर नागर की तरफ देखा और कहा, "अब इसी खंजर से इन पाँचों दुष्टों को इस दुनिया से उठाकर हमेशा के लिए निश्चिन्त होती हूँ !"

11

मायारानी ने गोपालसिंह को मारने के लिए जैसे ही खंजर उठाया, वैसे ही नागर ने फुर्ती से उसकी कलाई पकड़ ली और कहा—

नागर—ठहरो-ठहरो ! जल्दी न करो, आखिर ये लोग तुम्हारे कब्जे में तो आ ही चुके हैं और अब किसी तरह छूटकर जा नहीं सकते। फिर बिना अच्छी तरह विचार किए जल्दी करने की क्या आवश्यकता है। क्या जाने, सोचने-विचारने से कुछ विशेष लाभ की सूरत ध्यान में आवे।

मायारानी—(रुक कर) तुम्हारा कहना ठीक है, परन्तु यदि दुश्मन कब्जे में आ जाय तो उसके मारने में बिलम्ब करना कदापि उचित नहीं है। इसी (गोपालसिंह) को जब मैंने कैद किया था तो इसके मारने के विषय में सोच-विचार करते-करते वर्षों बिताए और अन्त में इस विलम्ब का क्या नतीजा निकला सो देख ही रही हो, उस विलम्ब ही के कारण आज मैं फकीरिन होकर भी··· (गला भर आने के कारण रुक कर) आज ईश्वर ने मुझ पर कृपा की है और दुश्मनों को मेरे कब्जे में कर दिया है। ताज्जुब नहीं कि इनके मारने में देर तथा सोच-विचार करने का वही नतीजा हो जो पहले हो चुका है।

नागर—ठीक है और मैं भी इसी में प्रसन्न हूँ कि जहाँ तक हो सके ये लोग शीघ्र मार डाले जायँ। अहा, कमलिनी के सहित गोपालसिंह का फँस जाना क्या कम खुशी की बात है, और फिर इन दोनों के साथ ही बेईमान भूतनाथ का भी···

मायारानी—(बात काट कर)—आ फँसना, जिसने मेरे साथ सख्त दगा की थी, कम खुशी की बात नहीं है ।

नागर—बेशक, परन्तु मैं इन कम्बख्तों की जान ले लेने में विशेष विलम्ब करने के लिए नहीं कहती, हाँ इतनी देर तक रुक जाने के लिए अवश्य कहती हूँ जितनी देर में हम लोग इस बात को बखूबी सोच लें कि इन दुष्टों को मारने के बाद इस सुरंग का भेद मालूम न होने पर भी हम लोग यहाँ से निकल जा सकेंगे या नहीं ?

मायारानी—क्यों, क्या हम लोगों को यहाँ से निकल जाने में किसी तरह की रुकावट हो सकती है ? क्या हम लोगों ने भूतनाथ और देवीसिंह की बातें उस समय अच्छी तरह नहीं सुनीं जिस समय दोनों ऐयार सुरंग में उतर चुके थे ? क्या उसी रीति से सुरंग का दरवाजा न खुल सकेगा जिस रीति से बन्द किया गया है ?

नागर—इन बातों का ठीक-ठीक जवाब मैं नहीं दे सकती, बल्कि इन्हीं बातों पर विचार करने के लिए कुछ देर तक ठहरने को कहती हूँ ।

मायारानी—(खंजर म्यान में रखकर और कुछ सोचकर) अच्छा-अच्छा, कुछ देर ठहर जाने में कोई हर्ज नहीं है, इन सभी की बेहोशी यकायक दूर नहीं हो सकती, चलो, पहले उस दरवाजे को खोलकर देखें कि वह खुलता है या नहीं ।

इतना कहकर नागर को साथ लिए हुए मायारानी सुरंग के दरवाजे की तरफ बढ़ी । जब उस लोहे के खम्भे के पास पहुँची जिस पर वह गरारीदार पहिया था जिसे घुमाकर भूतनाथ ने सुरंग का दरवाजा बन्द किया था तो रुकी और नागर की तरफ देखकर बोली, "इसी पहिए को घुमाकर भूतनाथ ने दरवाजा बन्द किया था ।"

नागर—जी हाँ, अब इसी पहिये को उल्टा घुमाकर देखना चाहिए कि दरवाजा खुलता है या नहीं ।

मायारानी—अच्छा, तुम्हीं इस पहिये को घुमाओ ।

नागर ने उस पहिये को कई दफे उल्टा घुमाया और वह बखूबी घूम गया, इसके बाद दोनों औरतें यह देखने के लिए सीढ़ी पर चढ़ीं कि दरवाजा खुला या नहीं, मगर दरवाजा ज्यों-का-त्यों बन्द था । मायारानी को बहुत ताज्जुब हुआ और वह घबरायी-सी होकर नीचे उतर आई और नागर की तरफ देखकर बोली, "तुम्हारा सोचना ठीक निकला ।"

नागर—इसी से मैंने आपको रोका था, यदि आप जोश में आकर इन सभी को मार डालतीं तो फिर हम लोग भी इसी सुरंग में मर मिटते ।

मायारानी—बेशक-बेशक । (कुछ सोचकर) अच्छा, एक बार उधर चलकर देखना चाहिए जिधर से यह (गोपालसिंह) आया है, शायद उधर का दरवाजा खुला हो ।

नागर—चलिए देखिए, शायद कुछ काम निकले । मगर ताज्जुब नहीं कि लौटने तक इन लोगों की बेहोशी जाती रहे ।

मायारानी—हाँ, ऐसा हो सकता है । अच्छा, तो इन लोगों के हाथ-पैर कसकर बाँध देने चाहिए जिसमें यदि बेहोशी जाती भी रहे तो कुछ न कर सकें ।

नागर ने उन सभी को अच्छी तरह गौर से देखा जो उस जगह बेहोश पड़े थे। भूतनाथ और देवीसिंह की कमर में कमन्द मौजूद थे, उन्हें खोल लिया और दोनों ने मिलकर उन्हीं कमन्दों से भूतनाथ, देवीसिंह, कमलिनी, लाड़िली और गोपालसिंह के हाथ-पैर बेरहमी के साथ खूब कसकर बाँध दिए और इसके बाद दोनों औरतें उसी तरफ चलीं जिधर से कमलिनी और लाड़िली को साथ लिए हुए राजा गोपालसिंह आये थे।

मायारानी और नागर मोमबत्ती की रोशनी में स्याह पत्थरों को बचाती हुई उस दरवाजे के पास पहुँचीं जिसे खोलकर राजा गोपालसिंह आए थे। यह वही दरवाजा था जिसमें अक्षरों वाले कील जड़े हुए थे और किसी अनजान आदमी से इसका खुलना बिल्कुल ही असम्भव था। मायारानी ने इसको खोलने का बहुत-कुछ उद्योग किया, मगर कुछ काम न चला। लाचार होकर उसने तरद्दुद और घबराहट की निगाह नागर पर डाली।

नागर—मेरा सोचना बहुत ठीक निकला। यदि वे लोग मार डाले जाते तो निःसन्देह हम दोनों की मौत भी इसी सुरंग में हो जाती।

मायारानी—सच है, मगर अब क्या करना चाहिए ? जहाँ तक मैं सोचती हूँ, इसके जवाब में तुम यही कहोगी कि इनमें से किसी को होश में लाकर जिस तरह बन पड़े, दरवाजा खोलने की तरकीब मालूम करनी चाहिए।

नागर—जी हाँ, क्योंकि सिवाय इसके कोई दूसरी बात ध्यान में नहीं आती।

मायारानी—खैर, यदि ऐसा हो भी जाय अर्थात् इन पाँचों में से किसी को होश में लाने और डराने-धमकाने से दरवाजा खुलने का भेद मालूम हो जाय तो फिर क्या किया जायगा ? मैं समझती हूँ कि तुम यही कहोगी कि दरवाजे का भेद मालूम होने के बाद इन पाँचों को कत्ल कर देना चाहिए।

नागर—नहीं, मेरी यह राय नहीं है, बल्कि मैं इन लोगों को उस समय तक कैद में रखना मुनासिब समझती हूँ जब तक कि रिक्तगन्थ और अजायबघर की ताली, जो तुमने भूतनाथ को दे दी है, अपने कब्जे में न आ जाय।

मायारानी—ओफ ! मैं वास्तव में सैकड़ों आफतों में घिरी हुई हूँ। (कुछ सोच कर) खैर, कोई चिन्ता नहीं है। देखो तो, क्या होता है। मैं इन लोगों को जीता कदापि न छोड़ूँगी। (रुककर) हाँ, जरा ठहरो, इन पाँचों में से किसी को होश में लाने के पहले सभी की तलाशी अच्छी तरह ले लेनी चाहिए। ताज्जुब नहीं कि रिक्तगन्थ और अजायबघर की ताली भी इन लोगों में से किसी के पास हो।

नागर—हाँ, मुमकिन है कि वे दोनों चीजें इन लोगों के पास हों। अच्छा, चलो, सबसे पहले यही काम किया जाय।

नागर को साथ लिए हुए मायारानी फिर उस जगह पहुँची जहाँ गोपालसिंह और भूतनाथ वगैरह बेहोश पड़े थे। हम ऊपर लिख आये हैं कि राजा गोपालसिंह और भूतनाथ के पास जो तिलिस्मी खंजर था, वह मायारानी ले चुकी है। एक खंजर उसने अपने पास रखा और दूसरा नागर को दे दिया। फिर उसने सबसे पहले भूतनाथ के

बटुए की तलाशी ली, मगर उसमें कोई ऐसी चीज न निकली जो मायारानी के काम की होती। यद्यपि तरह-तरह की दवाओं और मसालों से भरी हुई कई खूबसूरत डिबियाएँ नजर आईं, मगर उनका गुण न मालूम होने के कारण मायारानी के लिए वे बिल्कुल ही बेकार थीं। जब बटुए में से अपने मतलब की कोई चीज न पाई तो कमर और कपड़ों की जेबें आदि भी अच्छी तरह टटोलीं, मगर उससे भी कुछ काम न चला। अन्त में उदास होकर वह राजा गोपालसिंह की तरफ लौटी और उनकी तलाशी लेने लगी।

ऊपर का बयान पढ़ने से पाठकों को मालूम हो ही चुका होगा कि अजायबघर की ताली, जो मायारानी ने भूतनाथ को दी थी, वह राजा गोपालसिंह ने भूतनाथ से ले ली थी। इस समय वही अजायबघर की ताली राजा गोपालसिंह के पास थी जो तलाशी लेने के समय मायारानी के हाथ लगी। ताली पाकर वह बहुत खुश हुई और नागर की तरफ देखकर बोली—

मायारानी—लीजिए, अजायबघर की ताली तो मिल गई। अब कोई परवाह नहीं। यद्यपि मुझे मालूम हो चुका है कि मेरी फौज मुझसे बिगड़ गई, मेरा दीवान मुझसे दुश्मनी करने को तैयार है, तुम्हारे मकान का भेद वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों को मालूम हो चुका है और इस सबब से मुझे रहने के लिए कोई ठिकाना नहीं है, मगर अब अजायबघर की ताली मिल जाने से मुझे बहुत-कुछ भरोसा हो गया। मैं अब खुशी से दारोगा वाले बँगले में रहकर अपने दुश्मनों से बदला ले सकती हूँ, फौजी सिपाहियों के दिल से शक दूर करके अपना रुआब जमा सकती हूँ और उन्हें ठीक करके अपने ढर्रे पर ला सकती हूँ। कम्बख्त दीवान को भी सजा देना कोई बड़ी बात नहीं है। इसके सिवाय तिलिस्मी खंजर की बदौलत मुश्किल से मुश्किल काम सहज ही में कर सकूँगी!

नागर—ठीक है, अच्छा देखिये, शायद रिक्तगंथ भी इन लोगों में से किसी के पास हो।

मायारानी ने फिर तलाशी लेना शुरू किया। गोपालसिंह के बाद कमलिनी, लाड़िली और देवीसिंह की भी तलाशी ली, मगर रिक्तगन्थ (खून से लिखी किताब) का पता न लगा और न कोई ऐसी चीज ही मिली जो मायारानी के मतलब की होती। आखिर लाचार होकर यह निश्चय किया कि भूतनाथ को होश में लाकर और डरा-धमका कर दरवाजा खोलने की तरकीब जाननी चाहिए। मायारानी की आज्ञानुसार नागर ने अपने बटुए में से लखलखा निकाला और भूतनाथ को सुँघाने के लिए आगे बढ़ी ही थी कि सुरंग के सिरे पर (जिधर से भूतनाथ और देवीसिंह के पीछे-पीछे मायारानी और नागर आई थीं) रोशनी दिखाई दी। नागर ने भूतनाथ को लखलखा सुँघाने के लिए जो हाथ बढ़ाया था रोक किया, लखलखे की डिबिया जमीन पर रखकर तिलिस्मी खंजर म्यान से निकाल लिया, और अपने हाथ की मोमबत्ती बुझाकर मायारानी से बोली, "देखिये मैंने मोमबत्ती बुझाकर अँधेरा कर दिया, अब आप इधर-उधर मत हटिये, कहीं ऐसा न हो कि स्याह पत्थर पर पैर पड़ जाय। और आप भी तिलिस्मी खंजर अपने हाथ में ले लीजिए, ताज्जुब नहीं कि यह आने वाला हम लोगों का दुश्मन और वीरेन्द्रसिंह का कोई ऐयार हो।"

मायारानी—(तिलिस्मी खंजर के कब्जे पर हाथ रख के) यद्यपि तुमने मोमबत्ती बुझा दी है, मगर उस आने वाले की नजर पहले ही इस रोशनी पड़ चुकी होगी। (गौर से देखकर) मगर मुझे तो मालूम होता है कि यह हमारे दारोगा साहब हैं, जिन्हें हम लोग बाबाजी भी कहते हैं।

नागर—शक तो मुझे भी होता है। (रुककर) हाँ, अब वे कई कदम आगे बढ़ आये हैं। इससे उनकी दाढ़ी और जटा साफ दिखाई दे रही है। ठीक है निःसन्देह यह दारोगा साहब ही हैं! न मालूम राजा वीरेन्द्रसिंह की कैद से ये क्योंकर निकल आये! इनका छूट आना हम लोगों के लिए बहुत अच्छा हुआ!

मायारानी—बेशक, इनके छूटकर चले आने से मुझे खुशी होती, अगर वे इस समय यहाँ न आते, क्योंकि गोपालसिंह के बारे में मैंने लोगों को जो कुछ धोखा दिया है, इनकी खबर इन्हें भी नहीं है, इसलिए ताज्जुब नहीं कि गोपालसिंह को यहाँ देखकर दारोगा साहब जोश में आ जायें और मुझसे थुक्काफजीती करने के लिए तैयार हो जायें, क्योंकि इनके दिल में राजा को बहुत मुहब्बत थी। ओह, इस समय इनका यहाँ आना बहुत ही बुरा हुआ। खैर, तू होशियार रहना। इस तिलिस्मी खंजर का गुण इन्हें मालूम न होने पाये और न गोपालसिंह के बारे में कुछ—

नागर—बहुत अच्छा, मैं कुछ भी न बोलूंगी। लीजिये, अब वे बहुत पास आ गए। बेशक, दारोगा साहब ही हैं। अब अगर हम भी मोमबत्ती जला लें तो कोई हर्ज नहीं।

मायारानी—कोई हर्ज नहीं।

ऊपर लिखी बातें मायारानी और नागर में बहुत चुपके और जल्दी के साथ हुईं। नागर ने मोमबत्ती जलाई और इसके बाद दोनों औरतें आगे अर्थात् दारोगा की तरफ बढ़ीं। दारोगा ने भी इन दोनों को पहचाना और जब वह मायारानी के पास पहुँचा तो हँसकर बोला, "ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए कि मैं राजा वीरेन्द्रसिंह के कब्जे से निकलकर चला आया और तुमको राजी-खुशी अपने सामने देख रहा हूँ।"

मायारानी—(बनावटी हँसी के साथ) आपके छूट आने की मुझे हद से ज्यादा खुशी हुई। इधर थोड़े दिनों से मैं तरह-तरह की मुसीबतों में पड़ी हूँ, जिसकी कुछ भी आशा न थी और यह सब आपके न रहने से ही हुआ।

दारोगा—हाँ, मुझे भी बहुत-सी बातों का पता लगा है। इस समय जब मैं अपने बँगले में पहुँचा तो वहाँ लीला और कई लौंडियों को पाया। बहुत-सा हाल तो वहाँ लीला की जुबानी मालूम हुआ, यह भी उसी से सुना कि टीले पर दो आदमियों को आते देखकर मायारानी और नागर भी उसी तरफ गई हैं। यही सुनकर मैं भी इस सुरंग में आया हूँ, नहीं तो मुझे यहाँ आने की कोई जरूरत न थी।

मायारानी—जी हाँ, मैं वीरेन्द्रसिंह के ऐयार भूतनाथ और देवीसिंह के पीछे-पीछे यहाँ आई। इस सुरंग का भेद मुझे कुछ भी मालूम न था। और आपने भी इस विषय में आज तक कुछ नहीं कहा था, भूतनाथ ने सुरंग का दरवाजा खोला और उसके पीछे-पीछे छिपकर मैं यहाँ तक चली तो आई, मगर यहाँ से किसी तरह निकल नहीं सकती

हूँ। क्योंकि भूतनाथ ने सुरंग के अन्दर आकर दरवाजा बन्द कर दिया था और अब मुझसे वह दरवाजा किसी तरह नहीं खुल रहा है। ईश्वर ने बड़ी कृपा की जो इस समय आपको यहाँ भेज दिया, चलिए पीछे हटिये, पहले मुझे दरवाजा खोलने की तरकीब बता दीजिए, और कुछ बातचीत पीछे होगी ?

दारोगा—(हँसकर) अब तो मैं आ ही चुका हूँ, तुम क्यों घबराती हो ? पहले यह तो बताओ कि वे दोनों ऐयार कहाँ हैं, जिनके पीछे-पीछे तुम यहाँ आई थीं ?

इस समय मायारानी की विचित्र अवस्था थी। वह मुँह से बातें तो कर रही थी मगर दिल में यही सोच रही थी कि किसी तरह राजा गोपालसिंह का भेद छिपाना चाहिए, जिसमें बाबाजी (दारोगा) को यह न मालूम हो कि मैंने वर्षों से गोपालसिंह को कैद कर रखा था, मगर इसके बचाव की कोई सूरत ध्यान में नहीं आती थी। वह अपने उछलते हुए कलेजे को दबाने की कोशिश कर रही थी, मगर वह किसी तरह दम नहीं लेता था। उसके चेहरे पर भी खौफ और तरद्दुद की निशानी पाई जाती थी। जो उस समय और भी ज्यादा हो गयी, जब बाबाजी ने यह कहा—"वे दोनों ऐयार कहाँ हैं जिनके पीछे-पीछे तुम यहाँ आई थीं ?" आखिर लाचार होकर मायारानी ने बातें बनाकर अपना काम निकालना चाहा और अपने को अच्छी तरह सँभालकर बातचीत करने लगी।

मायारानी—(पीछे की तरफ इशारा करके) वे दोनों ऐयार उधर पड़े हुए हैं। मैंने अपनी हिकमत से उन्हें बेहोश करके छोड़ दिया है। केवल वे दोनों ही नहीं, बल्कि कमलिनी और लाड़िली भी मय एक ऐयार के मेरे फन्दे में आ पड़ी हैं जिनसे यकायक इसी सुरंग में मुलाकात हो गई थी।

बाबाजी—(चौंककर) कमलिनी और लाड़िली !

मायारानी—जी हाँ, शायद आपने अभी तक सुना नहीं कि लाड़िली भी कमलिनी से मिल गई।

बाबाजी—ओफ ! यह खबर मुझे वहाँ क्योंकर मिल सकती थी, क्योंकि मैं ऐसे तहखाने में कैद था, जहाँ हवा का भी जाना मुश्किल से हो सकता था। खैर चलो, मैं जरा उन ऐयारों की सूरत तो देखूँ।

अब बाबाजी उधर बढ़े जहाँ राजा गोपालसिंह, कमलिनी, लाड़िली और दोनों ऐयार बेहोश पड़े थे। बाबाजी के पीछे-पीछे मायारानी और नागर भी स्याह पत्थरों को बचाती हुई उसी तरफ बढ़ीं। वहाँ की जमीन में बनस्बित सफेद पत्थरों के स्याह पत्थर की पटरियाँ (सिल्ली) बहुत कम चौड़ी थीं। यद्यपि बाबाजी से मायारानी डरती-दबती और साथ ही इसके उनकी इज्जत और कदर भी करती, परन्तु इस समय उसकी अवस्था में फर्क पड़ गया था। वह धड़कते हुए कलेजे के साथ चुपचाप बाबाजी के पीछे जा रही थी। मगर अपना दाहिना हाथ तिलिस्मी खंजर के कब्जे पर, जो अब उसकी कमर में था, इस तरह रखे हुए थी, जैसे उसे म्यान से निकालकर काम में लाने के लिए तैयार है। शायद इसका सबब यह हो कि वह बाबाजी पर वार करने का इरादा रखती थी। क्योंकि उसे निश्चय था कि राजा गोपालसिंह को देखते ही बाबाजी बिगड़ खड़े होंगे और

एक गुप्त भेद का, जिसकी उन्हें खबर तक न थी, पता लग जाने के कारण उसकी लानत और मलामत करेंगे। साथ ही इसके बाबाजी की चाल भी बेफिक्री की न थी, वह भी कनखियों से पीछे अगल-बगल देखते जाते थे और हर तरह से चौकन्ने मालूम पड़ते थे।

जब बाबाजी उन लोगों के पास आ पहुँचे, तो मोमबत्ती की रोशनी में एक-एक को अच्छी तरह देखने लगे। जब उनकी निगाह राजा गोपालसिंह पर पड़ी तो वे चौंके और मायारानी की तरफ देखकर बोले, "हैं, यह क्या मामला है! मैं अपनी आँखों के सामने किसे बेहोश पड़ा देख रहा हूँ!"

मायारानी—(लड़खड़ाई आवाज से) इसी के बारे में मैंने तो कहा था कि एक ऐयार भी आ फँसा है।

बाबाजी—ओफ, ये तो राजा गोपालसिंह हैं, जिन्हें मरे कई वर्ष हो गये, नहीं-नहीं, मरा हुआ आदमी कभी लौटकर नहीं आता। (कुछ रुककर) यद्यपि दुःख या रंज के सबब से इनकी सूरत में फर्क पड़ गया है, परन्तु मेरे पहचानने में फर्क नहीं है। बेशक यह हमारे मालिक राजा गोपालसिंह ही हैं जिनकी नेकियों ने लोगों को अपना ताबेदार बना लिया था, जिनकी बुद्धिमानी और मिलनसारी प्रसिद्ध थीं, और जिसके सबब से इनकी ताबेदारी में रहना लोग अपनी इज्जत समझते थे। ओफ, तुमने इनके बारे में हम लोगों को धोखा दिया! यद्यपि तुम्हारी बुरी चाल-चलन को मैं खूब जानता था और जानबूझकर कई कारणों से तरह दिये जाता था, मगर मुझे यह खबर न थी कि उस चाल-चलन की हद यहाँ तक पहुँच चुकी है! (गोपालसिंह की नब्ज देखकर) शुक्र है कि मैं अपने मालिक को जीता पाता हूँ।

मायारानी—बाबाजी, आप जल्दी न कीजिए और बिना समझे-बूझे अपनी बातों से मुझे दुःख न दीजिए। जो मैं कहती हूँ, उसे मानिये और विश्वास कीजिए कि यह वीरेन्द्रसिंह का ऐयार है और राजा की सूरत बनाकर कई दिनों से रिआया को भड़का रहा है। इसकी खबर मुझको बहुत पहले लग चुकी थी और मैंने मुनादी भी करा दी थी कि एक ऐयार राजा की सूरत बनाकर लोगों को भड़काने के लिए आया है, जो कोई उसका सिर काटकर मेरे पास लावेगा, उसे एक लाख रुपया इनाम दूंगी। आज इत्तिफाक ही से यह कम्बख्त मेरे पास हाथ आ फँसा है।

बाबाजी—(कुछ सोचकर) शायद ऐसा ही हो, मगर तुमने तो कहा था कि मैं भूतनाथ और देवीसिंह के पीछे-पीछे इस सुरंग में आई हूँ, फिर ये लोग तुम्हें कैसे मिले? क्या ये लोग पहले ही से सुरंग में मौजूद थे?

मायारानी—हाँ, जब मैं सुरंग में आ चुकी और भूतनाथ तथा देवीसिंह को बेहोश कर चुकी, उसके बाद शायद ये लोग (हाथ का इशारा करके) इस तरफ से यहाँ आ पहुँचे। उस समय बेहोशी वाली बारूद से निकला धुआँ यहाँ भरा हुआ था, जिसके सबब से ये लोग भी बेहोश होकर लेट गये।

बाबाजी—बेहोशी वाली बारूद से निकला हुआ धुआँ! क्या तुमने इन लोगों को किसी नई रीति से बेहोश किया है?

मायारानी—जब मैं दुःखी होकर अपने घर से भागी तो (तिलिस्मी तमंचा और

गोली दिखाकर) यह तिलिस्मी तमंचा और गोली निकालकर लेती आई थी। इसी के जरिए से चलाई हुई तिलिस्मी गोली ने अपना काम किया। आप तो इसका हाल जानते ही हैं।

बाबाजी—ठीक है, (राजा गोपालसिंह की तरफ देखकर) मगर मैं कैसे कहूँ कि यह वीरेन्द्रसिंह का ऐयार है ! अच्छा, देखो मैं अभी इसका पता लगाये लेता हूँ।

बाबाजी ने अपने झोले में से एक शीशी निकाली, जिसमें किसी तरह का अर्क था, उस अर्क से अपनी उँगली तर करके राजा गोपालसिंह के गाल में जहाँ एक तिल का दाग था लगाया और कुछ ठहरकर कपड़े से पोंछ डाला तथा फिर गौर करने के बाद बोले—

बाबाजी—नहीं-नहीं, यह वीरेन्द्रसिंह के ऐयार नहीं हैं, इन्होंने अपने चेहरे को रँगा नहीं है और न नकली तिल का दाग ही बनाया है ! अगर ऐसा होता तो इस दवा के लगाने से छूट जाता। ये बेशक राजा गोपालसिंह हैं और तुमने इनके बारे में निःसंदेह हम लोगों को धोखा दिया !

मायारानी—ऐसा न समझिए, वीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग अपने चेहरे पर कच्चा रंग नहीं लगाते। अभी हाल ही में तेजसिंह ने मेरे ऐयार बिहारीसिंह को धोखा दिया, उसने उसका चेहरा एसा रँग दिया था कि हजार उद्योग करने पर भी बिहारीसिंह उसे साफ न कर सका। इसका खुलासा हाल आप सुनेंगे तो ताज्जुब करेंगे। वीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग बड़े धूर्त और चालाक हैं।

बाबाजी—मगर नहीं, मेरी दवा बेकार जाने वाली नहीं है। हाँ, एक बात हो सकती है।

मायारानी—वह क्या ?

बाबाजी—शायद तुमने राजा गोपालसिंह के बारे में हम लोगों को धोखा न दिया हो और खुद ये ही हम लोगों को धोखा देकर कही चले गये हों।

मायारानी—नहीं, यह भी नहीं हो सकता।

बाबाजी—बेशक नहीं हो सकता। अच्छा, मैं इन्हें होश में लाता हूँ, जो कुछ है इनकी बातचीत से आप ही मालूम हो जायगा।

मायारानी—नहीं-नहीं, ऐसा न कीजिए, पहले इन सबों को इसी तरह बेहोश ले जाकर अपने बँगले में कैद कीजिए, फिर जो होगा, देखा जायगा।

बाबाजी—मैं यह बात नहीं मान सकता !

मायारानी—(जोर देकर) जो मैं कहती हूँ वही करना होगा !

बाबाजी—कदापि नहीं, मुझे इस विषय में बहुत-कुछ शक है और राजा साहब के साथ ही साथ मैं कमलिनी और लाड़िली को भी होश में लाऊँगा।

इसे सुनते ही मायारानी की हालत बदल गयी, क्रोध के मारे उसके होंठ काँपने लगे, उसकी आँखें लाल हो गयीं और वह तिलिस्मी खंजर म्यान से निकालकर क्रोध-भरी आवाज में बाबाजी से बोली, "क्या तुम्हें किसी तरह की शेखी हो गई है ? क्या तुम मेरा हुक्म काट सकते हो ? क्या तुम अपने को मुझसे बढ़कर समझते हो ? क्या तुम नहीं जानते कि मैं तिलिस्म की रानी हूँ, जो चाहूँ सो कर सकती हूँ. और तुम मेरा कुछ भी नही

बिगाड़ सकते ? लो, मैं साफ-साफ कहे देती हूँ कि बेशक यह गोपालसिंह हैं। धनपत के साथ सुख भोगने और इनको सताकर तिलिस्म का भेद जानने के लिए मैंने इन्हें कैद कर रखा था, मगर कम्बख्त कमलिनी ने इन्हें कैद से छुड़ा दिया। अब मैं तुम्हारे सामने इन सभी का सिर काटकर अपना गुस्सा मिटाऊँगी और तुम मेरा कुछ भी नहीं कर सकते, अगर ज्यादा सिर उठाओगे तो (खंजर दिखाकर) इसी खंजर से पहले तुम्हारा काम तमाम करूँगी !"

बाबाजी—(हँसकर) बस-बस, बहुत उछल-कूद न करो। यद्यपि मैं बुड्ढा हूँ। तथापि तुम दो औरतों से किसी तरह हार नहीं सकता। मैं वही करूँगा, जो मेरे जी में आवेगा। यदि तुम इस तिलिस्म की रानी हो तो मैं भी तिलिस्म का दारोगा हूँ, मेरे पास भी अनूठी चीजें हैं, इसके अतिरिक्त तुम मुझसे बिगाड़ करके कुछ फायदा भी नहीं उठा सकतीं और अब तो तुमने साफ कबूल ही लिया कि…

मायारानी—(बात काटकर) हाँ-हाँ, कबूल लिया और फिर भी कहती हूँ कि तुम्हारे बिना मेरा कुछ हर्ज नहीं हो सकता। तुम्हें अपने दारोगापन की शेखी है तो देखो, मैं अपनी ताकत तुमको दिखाती हूँ।

इतना कह कर मायारानी ने तिलिस्मी खञ्जर का कब्जा दबाया। उसमें से बिजली की तरह चमक पैदा हुई और जब कब्जा ढीला किया तो चमक बन्द हो गई, मगर बाबाजी पर इसका कुछ असर न हुआ जिससे मायारानी को बड़ा ताज्जुब हुआ। आखिर उसने बेहोश करने की नीयत से तिलिस्मी खञ्जर बाबाजी के बदन से लगाया मगर इससे भी कुछ नतीजा न निकला, बाबाजी ज्यों के त्यों खड़े रह गए। अब तो मायारानी के ताज्जुब का कोई ठिकाना न रहा और वह घबराकर बाबाजी का मुँह देखने लगी। अगर तिलिस्मी खंजर में से चमक न पैदा होती तो उसे शक होता कि यह तिलिस्मी खंजर शायद वह नहीं है जिसकी तारीफ भूतनाथ ने की थी मगर अब वह इस खंजर पर किसी तरह का शक भी नहीं कर सकती थी।

बाबाजी--(हँसकर) कहो मेरा घमण्ड वाजिब है या नहीं ?

मायारानी—(तिलिस्मी खंजर की तरफ देखकर) शायद इसमें कुछ…

बाबाजी—(बात काटकर) नहीं-नहीं, इस खंजर के गुण में किसी तरह का फर्क नहीं पड़ा। मैं इस खंजर को खूब जानता हूँ। यद्यपि तुम्हारे लिए यह एक नई चीज है परन्तु मैं अपने (राजा गोपालसिंह की तरफ इशारा करके) इस मालिक की बदौलत इसी प्रकार और गुण के कई खंजर, कटार, तलवार और नेजे देख चुका हूँ और उनसे काम भी ले चुका हूँ, मगर जब मैं तिलिस्मी कामों में सिद्ध के बराबर हो गया तब मेरे दिल से ऐसी तुच्छ चीजों की कदर और इज्जत जाती रही। तुम देखती हो कि इस खंजर का मुझ पर कुछ भी असर नहीं होता। असल तो यह है कि तुम मेरी ताकत को नहीं जानती हो, तुम्हें नहीं मालूम है कि खाली हाथ रहने पर भी मैं क्या-क्या कर सकता हूँ ! बस मैं अपनी ताकत का हाल खोलना उचित नहीं समझता, परन्तु अफसोस, तुम मुझी को मारने के लिए तैयार हो गईं ! खैर, कोई चिन्ता नहीं, आज तक मैं तुम्हारी इज्जत करता रहा, और तुमने जो कुछ भला-बुरा किया उसे देखकर भी तरह देता गया, मगर

अब देखता हूँ तो तुम···

मायानानी—(बात काटकर) सुनिए-सुनिए, आप जो कुछ कहेंगे मैं समझ गई। मेरी यह नीयत न थी और न है कि आपकी जान लूँ क्योंकि केवल आप ही के भरोसे पर मैं कूद रही हूँ, और आप ही की मदद से बड़े-बड़े बहादुरों को मैं कुछ नहीं समझती। यह तो साफ जाहिर है कि थोड़े ही दिन आप मुझसे अलग रहे और इसी बीच में मेरी सब दुर्दशा हो गयी। मैं आपको पिता के समान मानती हूँ इसलिए आशा है कि (हाथ जोड़ कर) इस समय जो कुछ मुझसे भूल हो गई उसे आप बाल-बच्चों की भूल के समान मानकर क्षमा करेंगे, मगर इस कसूर से मेरा असल मतलब सिर्फ इतना ही था कि किसी तरह राजा गोपालसिंह के मारने पर आपको राजी करूँ।

बाबाजी पर तिलिस्मी खंजर का कुछ भी असर न होते देख मायारानी का कलेजा धड़कने लगा, वह बहुत डरी और उसे विश्वास हो गया कि तिलिस्मी कारखाने में जितना बाबाजी का दखल और जानकारी है उसका सोलहवाँ हिस्सा भी उसकी नहीं है और उसी के साथ तिलिस्मी चीजों से बाबाजी ने बहुत कुछ फायदा भी उठाया है। यह भी उसी फायदा का असर है कि राजा वीरेन्द्रसिंह की कैद से सहज ही में छूट आए और ऐसे अद्भुत तिलिस्मी खंजर को तुच्छ समझते हैं तथा इसका असर इन पर कुछ भी नहीं होता। अब वह इस बात को सोचने लगी कि ऐसे बाबाजी से बिगाड़ करना उचित नहीं बल्कि जिस तरह हो सके उन्हें राजी करना चाहिए, फिर मौका मिलने पर जैसा होगा देखा जाएगा।

ऐसी-ऐसी बहुत-सी बातें मायारानी तेजी के साथ सोच गई और उसी सबब से वह अधीनता के साथ बाबाजी से बात करने लगी। जब वह अपनी बात खत्म करके चुप हो गई तो बाबाजी ने मुस्कुरा दिया और कुछ सोचकर कहा, खैर मैं तुम्हारे इस कसूर को माफ करता हूँ मगर यह नहीं चाहता कि राजा गोपालसिंह को किसी तरह की तकलीफ हो जिन्हें मुद्दत के बाद आज मैं इस अवस्था में देख रहा हूँ।"

मायारानी—तब आपने माफ ही क्या किया? यद्यपि आपको इस बात का रंज है कि मैंने गोपालसिंह के साथ दगा की और यह भेद आपसे छिपा रक्खा मगर आप भी तो जरा पुरानी बातों को याद कीजिए! खास करके उस अँधेरी रात की बात जिसमें मेरी शादी और पुतले की बदलौअल हुई थी! वह सब कर्म तो आप ही का है! आप ही ने मुझे यहाँ पहुँचाया। अब अगर मेरी दुर्दशा होगी तो क्या आप बच जाएँगे? फिर मान लिया जाय कि आप गोपालसिंह को बचा भी लें तो क्या 'लक्ष्मीदेवी' का बच के निकल जाना आपके लिए दुःखदायी न होगा? और जब इस बात की खबर गोपालसिंह को होगी तो क्या वे आपको छोड़ देंगे? बेशक जो कुछ आज तक मैंने किया है सब आप ही का कसूर समझा जायगा। मैंने, इस बात का पता न लग जाय कि दरोगा की करतूत ने लक्ष्मीदेवी की जगह···

इतना कहकर मायारानी चुप हो गई और बड़े गौर से बाबाजी की सूरत देखने लगी, मानो इस बात का पता लगाना चाहती है कि बाबाजी के दिल पर उसकी बातों का क्या असर हुआ। दरोगा साहब भी मायारानी की बातें सुनकर तरद्दुद में पड़ गए

और न मालूम क्या सोचने लगे। थोड़ी देर बाद दरोगा ने सिर उठाया और मायारानी की तरफ देख कर कहा, "अच्छा, अब विशेष बातों की कोई जरूरत नहीं है। मैं वादा करता हूँ कि गोपालसिंह के बारे में तुम पर किसी तरह का दबाव न डालूँगा और इससे ज्यादा कुछ न कहूँगा कि इनके मारने का विचार न करके थोड़े दिनों तक इन्हें कैद ही में रखना आवश्यक है, बल्कि कमलिनी, लाड़िली, भूतनाथ और देवीसिंह को भी कैद ही में रखना चाहिए। हाँ जब मैं उन आफतों को दूर कर लूँ जिनके कारण तुम्हें अपना राज्य छोड़ना पड़ा और तुम्हें फिर उसी दर्जे पर पहुँचा दूँ तब जो तुम्हारे जी में आवे करना। बस-बस, इसमें दखल मत दो और जो मैंने कहा है उसे करो नहीं तो तुम्हें पूरा सुख कदापि न मिलेगा!"

मायारानी—खैर ऐसा ही सही, मगर यह तो कहिए कि इन लोगों को कैद कहाँ कीजिएगा?

बाबाजी—इसके लिए मेरा बँगला बहुत मुनासिब है।

मायारानी—और मेरे रहने के लिए कौन-सा ठिकाना सोच रक्खा है?

बाबाजी—वाह, क्या तुम समझती हो कि तुम्हें बहुत दिनों तक अपने राज्य से अलग रहना पड़ेगा? नहीं, दो ही तीन दिन में मैं उन सभी का मुँह काला करूँगा जो तुम्हारे नौकर होकर तुमसे खिलाफ हो रहे हैं और तुम्हें फिर उसी दर्जे पर बिठाऊँगा जिस पर मेरे सामने तुम थीं, हाँ, एक चीज के बिना हर्ज जरूर होगा।

मायारानी—वह क्या? शायद आपका मतलब अजायबघर की ताली से है!

बाबाजी—हाँ, मेरा मतलब अजायबघर की ताली से ही है, क्या तुम उसे अपने महल ही में छोड़ आई हो?

मायारानी—जी नहीं, यह मेरे पास है, जब मैं लाचार होकर अपने घर से भागी तो एक यही चीज थी जिसे मैं अपने साथ ला सकी।

बाबाजी—वाह-वाह, यह बड़ी खुशी की बात तुमने कही। अच्छा वह ताली मेरे हवाले करो तो और कुछ बातें होंगी।

मायारानी—(अजायबघर की ताली बाबाजी को देकर) लीजिए तैयार है, अब जहाँ तक जल्द हो सके यहाँ से निकल चलना चाहिए।

बाबाजी—हाँ-हाँ, मैं भी यही चाहता हूँ, भला यह तो कहो कि यह तिलिस्मी खंजर तुमने कहाँ से पाया?

मायारानी—यह तिलिस्मी खंजर कमलिनी ने भूतनाथ और गोपालसिंह को दिया था जो इस समय इन सभी के बेहोश हो जाने पर मुझे मिला। एक तो मैंने ले लिया और दूसरा नागर को दे दिया है। मैंने सुना है कि इसी तरह के और भी कई खंजर कमलिनी ने अपने साथियों को बाँटे हैं मगर मालूम नहीं इस समय वे कहाँ हैं।

बाबाजी—ठीक है, खैर यह काम तुमने बहुत ही अच्छा किया कि अजायबघर की ताली अपने साथ लेती आईं, नहीं तो बड़ा हर्ज होता।

मायारानी—जी हाँ।

मायारानी अजायबघर की ताली के बारे में भी दरोगा से झूठ बोली। यद्यपि

उसने यह ताली भूतनाथ को दे दी और इस समय गोपालसिंह के पास से पाई थी परन्तु भूतनाथ का नाम लेना उसने उचित न जाना क्योंकि उसने यह ताली भूतनाथ को राजा गोपालसिंह की जान लेने के बदले में दी थी और यह बात बाबाजी से कहना उसे मंजूर न था इसीसे वह इस समय बहाना कर गई ।

मायारानी और नागर को साथ लिए हुए बाबाजी वहाँ से रवाना हुए और उस खम्भे के पास पहुँचे जिस पर गरारीदार पहिया लगा हुआ था । अब मायारानी बड़ी उत्कण्ठा से देखने लगी कि बाबाजी किस तरह से दरवाजा खोलते हैं और इसलिए जब बाबाजी ने गरारीदार पहिये को घुमा कर सुरंग का दरवाजा खोला तो मायारानी को बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि इसी पहिये को वह कई दफे उलट फेर कर घुमा चुकी थी मगर दरवाजा नहीं खुला था । मायारानी ने अब बड़े आग्रह से इसका सबब बाबाजी से पूछा और कहा कि "इसी पहिये को मैं पहले कई दफे घुमा चुकी थी मगर दरवाजा न खुला, इस समय क्योंकर खुल गया ?" इसके जवाब में बाबाजी हँसकर बोले, "इसका सबब किसी दूसरे वक्त तुमसे कहूँगा क्योंकि समझाने में बहुत देर लगेगी और पहले उन कामों को बहुत जल्द कर लेना चाहिए जिनका करना आवश्यक है !"

यह जवाब सुनकर मायारानी चुप हो गई और यह सोच लिया कि खैर किसी दूसरे समय इसका पता लग जाएगा क्योंकि इस समय वह बाबाजी से बहुत ही दबी हुई थी और किसी बात में जिद करना उचित नहीं समझती थी । उधर बाबाजी ने दरवाजा खोलने का भेद जानबूझ कर मायारानी से छिपा रखा था, क्योंकि उसका भेद खोलना उन्हें मंजूर न था । यद्यपि मायारानी को उसका भेद मालूम न हुआ मगर हम अपने पाठकों को दरवाजा खोलने का भेद बताए देते हैं । लोहे के खम्भे पर जो गरारीदार पहिया था उसके घूमने से दरवाजा बन्द हो जाता था । परन्तु खोलने के समय उसे एक बँधे हुए अन्दाज से घुमाना पड़ता था । उस पहिये को इक्कीस दफे बाईं तरफ, इसके बाद बारह दफे दाहिनी तरफ और नौ दफे बाईं तरफ घुमाने से दरवाजा खुलता था । अगर इससे कुछ भी कम या ज्यादा पहिया घूम जाय तो दरवाजा नहीं खुलता था । दरवाजा खोलते समय बाबाजी ने बड़ी तेजी के साथ गिन कर पहिया घुमाया किन्तु मायारानी का उसकी गिनती की तरफ कुछ भी ध्यान न था, इसीलिए वह इस बात को समझ न सकी ।

मायारानी और नागर को साथ लिये हुए जब बाबाजी सुरंग के बाहर निकले तो सवेरा हो चुका था, मगर सूर्य अभी नहीं निकला था । टीले पर से देखा तो चारों तरफ मैदान में सन्नाटा था इसलिए राय हुई कि इसी समय गोपालसिंह, भूतनाथ, देवीसिंह कमलिनी और लाड़िली को निकाल कर बँगले में पहुँचा देना चाहिए । नागर दौड़ी हुई चली गई और लीला तथा लौंडियों को बुला लाई और इसके बाद सभी ने मिलकर पाँचों कैदियों को सुरंग से निकाल कर दारोगा वाले बँगले में पहुँचाया ।

अब यह विचार होने लगा कि पाँचों कैदियों को किस जगह कैद करना चाहिए,

बाबाजी की राय हुई कि पाँचों कैदियों को अजायबघर की ड्योढ़ी[1] में बन्द करना चाहिए मगर मायारानी ने कुछ सोच-विचार कर कहा कि इन सब लोगों को मैगजीन के बगल वाले तहखाने में कैद करना चाहिए। मायारानी की बात सुनकर बाबाजी के होठ फड़कने लगे और माथे पर दो एक बल पड़ गये, जिससे मालूम होता था कि उनको क्रोध चढ़ आया है मगर उन्होंने बहाने के साथ दूसरी तरफ देखकर बहुत जल्द अपने को सम्हाला जिसमें सूरत देखकर मायारानी को उनके दिल का हाल कुछ मालूम न हो। बाबाजी को चुप देखकर मायारानी ने फिर टोका और कहा कि कैदियों को मैगजीन के बगल वाले तहखाने में बन्द करना उचित होगा, जिस पर बाबाजी ने हँसकर जवाब दिया, "बहुत अच्छा, जो तुम कहती हो वही होगा।"

हम ऊपर लिख आये हैं कि इस मकान के चारों कोनों में चार कोठरियाँ और चारों तरफ चार दालान हैं। बँगले में जाने के लिए जो सदर दरवाजा है, उसके बाईं तरफ वाली कोठरी के नीचे दो तहखाने हैं। एक तो मैगजीन के नाम से पुकारा जाता हैं और उसमें बारूद तथा छोटी-छोटी कई तोपें रखी हुई हैं, और उसी के साथ सटा हुआ जो दूसरा तहखाना है उसमें बाबाजी का खजाना रहता है। उसी खजाने वाले तहखाने में कैदियों को कैद करने की राय मायारानी ने दी थी और बाबाजी ने भी यह बात मंजूर कर ली।

बाबाजी उस कोठरी के अन्दर गये। वहाँ दोनों तरफ की दीवारों में लोहे के दो दरवाजे थे जिन्हें दोनों तहखानों का दरवाजा कहना चाहिए। दाहिनी तरफ के दरवाजे को किसी गुप्त रीति से बाबाजी ने खोला और नागर, लीला तथा लौंडियों की मदद से पाँचों कैदियों को उनके ऐयारी के बटुए सहित तहखाने में पहुँचा कर बाहर निकल आये और दरवाजा बन्द कर दिया। बाहर निकलते समय तहखाने से ताँबे का एक घड़ा भी लेते आये और मायारानी की तरफ देखकर बोले, "अब कैदियों के लिए कुछ खाने-पीने का सामान भी कर देना चाहिए, इसी घड़े में भरकर जल और थोड़े से जंगली फल वहाँ रखवा देता हूँ, जो तीन दिन के लिए काफी होगा, फिर देखा जायेगा।" (लौंडियों की तरफ देखकर) "जाओ तुम लोग थोड़े से फल बहुत जल्द तोड़ लाओ।" आज्ञानुसार लौंडियाँ चारों तरफ चली गईं और बात-की-बात में बहुत से फल तोड़ कर ले आईं। एक कपड़े में बाँध कर वही फल और जल से भरा हुआ घड़ा हाथ में लिए हुए बाबाजी फिर उसी तहखाने में उतरे मगर अबकी दफे किसी को साथ न ले गये, बल्कि अन्दर जाती दफे दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया और आधी घड़ी से ज्यादा देर के बाद तहखाने से बाहर निकले। मायारानी ने ताज्जुब में आकर पूछा कि "आपको तहखाने में इतनी देर क्यों लगी?" इसके जवाब में बाबाजी ने कहा—"कैदियों के बटुओं की तलाशी

1. अजायबघर की ड्योढ़ी उसी कोठरी से मुराद है जिसमें धनपत और मायारानी को भूतनाथ उस समय ले गया था जब राजा गोपालसिंह को मारने का वादा किया था। उसी कोठरी में राजा गोपालसिंह की नकली लाश दिखाई गई थी। देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति, आठवाँ भाग, ग्यारहवाँ बयान।

ले रहा था मगर कोई चीज मेरे मतलब की न निकली।"

इस समय मायारानी का चेहरा फतहमन्दी की खुशी से दमक रहा था। उसे केवल इसी बात की खुशी न थी कि उसने राजा गोपालसिंह और अपनी दोनों बहिनों तथा ऐयारों को कैद कर लिया था बल्कि उसकी खुशी का सबब कुछ और भी था। थोड़ी ही देर पहले उसे इस बात का रंज था कि कम्बख्त दारोगा ने यकायक पहुँच कर हमारे काम में विघ्न डाल दिया नहीं तो गोपालसिंह तथा कमलिनी और लाड़िली को मारकर मैं हमेशा के लिए निश्चिन्त हो जाती मगर अब उसे इन बातों का रंज नहीं है और यह उसकी मुस्कुराहट से साफ जाहिर हो रहा है।

12

शाम होने में कुछ भी बिलम्ब नहीं है। सूर्य भगवान अस्त हो गये केवल उनकी लालिमा आसमान के पश्चिम तरफ दिखाई दे रही है। दारोगा वाले बँगले में रहने वालों के लिए यह अच्छा समय है परन्तु आज उस बँगले में जितने आदमी दिखाई दे रहे हैं वे सब इस योग्य नहीं हैं कि बेफिक्री के साथ इधर-उधर घूमें और इस अनूठे समय का आनन्द लें। यद्यपि राजा गोपालसिंह, कमलिनी और लाड़िली की तरफ से मायारानी निश्चिन्त हो गई बल्कि उनके साथ ही साथ दो ऐयारों को भी उसने गिरफ्तार कर लिया है मगर अभी तक उसका जी ठिकाने नहीं हुआ। वह नहर के किनारे बैठी हुई बाबाजी से बातें कर रही है और इस फिक्र में है कि कोई ऐसी तरकीब निकल आवे कि जमानिया की गद्दी पर बैठ कर उसी शान के साथ हुकूमत करे, जैसा कि आज के कुछ दिन पहले कर रही थी। उसके पास केवल नागर बैठी हुई दोनों की बातें सुन रही है।

मायारानी—जिस दिन से आपको वीरेन्द्रसिंह ने गिरफ्तार कर लिया उसी दिन से मेरी किस्मत ने ऐसा पलटा खाया कि जिसका कोई हदहिसाब नहीं, मानो मेरे लिए जमाना ही और हो गया। एक दिन भी सुख के साथ सोना नसीब न हुआ। मुझ पर मुसीबतें आईं और तिलिस्मी बाग के अन्दर जो-जो अनहोनी बातें हुईं उनका खुलासा हाल आज मैं आपसे कह चुकी हूँ। इस समय यद्यपि राजा गोपालसिंह, कमलिनी और लाड़िली की तरफ से निश्चिन्त हूँ मगर फिर भी अपनी अमलदारी में या तिलिस्मी बाग के अन्दर जाकर रहने का हौसला नहीं पड़ता, क्योंकि तिलिस्मी बाग के अन्दर दोनों नकाबपोशों के आने और धनतपत का भेद खुल जाने से हमारे सिपाहियों की हालत बिल्कुल ही बदल गई है और मुझे उनके हाथों से दुःख भोगने के सिवाय और किसी तरह की उम्मीद नहीं है। यह भी सुनने में आया है कि दीवान साहब मुझे गिरफ्तार करने की फिक्र में पड़े हुए हैं।

बाबा—दीवान जो कुछ कर रहा है उससे मालूम होता है कि या तो उसे राजा गोपालसिंह का असल-असल हाल मालूम हो गया है और वह उन्हें फिर जमानिया की

गद्दी पर बैठाना चाहता है, या वह स्वयं राजा साहब के बारे में धोखा खा रहा है और चाहता है कि तुम्हें गिरफ्तार कर राजा वीरेन्द्रसिंह के हवाले करे और उनकी मेहरबानी के भरोसे पर स्वयं जमानिया का राजा बन बैठे। तुम कह चुकी हो कि राजा वीरेन्द्रसिंह की बीस हजार फौज मुकाबले में आ चुकी है जिसका अफसर नाहरसिंह है। अब सोचना चाहिए कि नाहरसिंह के मुकाबले में आ जाने पर भी चुपचाप बैठे रहना बेसबब नहीं है और···

मायारानी—शायद इसका सबब यह हो कि दीवान ने मुझको गिरफ्तार करके वीरेन्द्रसिंह के हवाले कर देने की शर्त पर उनसे सुलह कर ली हो ?

बाबा—ताज्जुब नहीं, ऐसा ही हो, मगर घबराओ नहीं मैं दीवान के पास जाऊँगा और देखूंगा कि वह किस ढंग पर चलने का इरादा करता है। अगर बदमाशी करने पर उतारू है तो मैं उसे ठीक करूँगा। हाँ यह तो बताओ कि दीवान को तुम्हारी तिलिस्मी बातों या तिलिस्मी कारखाने का भेद तो किसी ने नहीं दिया ?

मायारानी—जहाँ तक मैं समझती हूँ उसे तिलिस्मी कारखाने में कुछ दखल नहीं है, मगर इस बात को मैं जोर देकर नहीं कह सकती क्योंकि वे दोनों नकाबपोश हमारे तिलिस्मी बाग के भेदों से बखूबी वाफिक हैं जिनका हाल मैं आपसे कह चुकी हूँ, बल्कि ऐसा कहना चाहिए कि बनिस्बत मेरे वे ज्यादा जानकार हैं क्योंकि अगर ऐसा न होता तो वे मेरी उन तरकीबों को रद्द न कर सकते, जो उनके फँसाने के लिए की गई थीं। ताज्जुब नहीं कि उन दोनों ने दीवान से मिलकर तिलिस्म का कुछ हाल भी उससे कहा हो।

बाबा—खैर कोई हर्ज नहीं, देखा जायेगा। मैं कल जरूर वहाँ जाऊँगा और दीवान से मिलूंगा।

मायारानी—नहीं, बल्कि आप आज ही जाइये और जहाँ तक जल्दी हो सके, कुछ बन्दोबस्त कीजिये, क्योंकि अगर दीवान के भेजे हुए सौ-पचास आदमी मुझे ढूँढ़ते हुए यहाँ आ जायेंगे, तो सख्त मुश्किल होगी। यद्यपि यह तिलिस्मी खंजर मुझे मिल गया है और तिलिस्मी गोली से भी मैं सैकड़ों की जान ले सकती हूँ मगर उस समय मेरे किए कुछ भी न होगा जब किसी ऐसे से मुकाबला हो जाये जिसके पास कमलिनी का दिया हुआ इसी प्रकार का खंजर मौजूद होगा।

बाबा—तथापि इस बँगले में आकर तुम्हें कोई सता नहीं सकता।

मायारानी—ठीक है मगर मैं कब तक इसके अन्दर छिप कर बैठी रहूँगी ? आखिर भूख-प्यास भी तो कोई चीज है !

बाबा—मगर ऐसा होना बहुत मुश्किल है !

मायारानी—तो हर्ज ही क्या है अगर आप इसी समय दीवान के पास जायें ? मैं खूब जानती हूँ कि वह आपकी सूरत देखते ही डर जायेगा।

बाबा—क्या तुम्हारी यही मर्जी है कि मैं इसी समय जाऊँ ?

मायारानी—हाँ, जाइए और अवश्य जाइए।

बाबा—अच्छा यही सही, मैं जाता हूँ।

बाबाजी उसी समय उठ खड़े हुए और जमानिया की तरफ रवाना हो गए। मायारानी तब तक बराबर देखती रही जब तक कि वे पेड़ों की आड़ में होकर नजरों से गायब न हो गये। इसके बाद हँसकर नागर की तरफ देखा और कहा—

मायारानी—तुम समझती हो कि बाबाजी को मैंने जिद करके इसी समय यहाँ से क्यों धता बतायी[1] ?

नागर—जाहिर में जो कुछ तुमने बाबाजी से कहा है और जिस काम के लिए उन्हें भेजा है यदि उसके सिवाय और कोई मतलब है तो मैं कह सकती हूँ कि मेरी समझ में कुछ न आया।

मायारानी—(हँस कर) अच्छा तो अब मैं समझा देती हूँ। बाबाजी के सामने मैंने अपने को जितना बताया वास्तव में मेरे दिल में उतना दुःख और रंज नहीं है, क्योंकि जिसका डर था, जिसके निकल जाने से मैं परेशान थी, जिसका प्रकट होना मेरे लिए मौत का सबब था और जो मुझसे बदला लिए बिना मानने वाला न था, अर्थात् गोपालसिंह, वह मेरे कब्जे में आ चुका। अब अगर दुःख है तो इतना ही कि कम्बख्त दारोगा ने उसे मारने न दिया। मगर मैं बिना उसकी जान लिए कब मानने वाली हूँ, इसलिए मैंने किसी तरह बाबाजी को यहाँ से धता बतायी।

नागर—तो क्या तुम्हारा मतलब यह था कि बाबाजी यहाँ से बिदा हो जायें तो अपने कैदियों को मार डालो ?

मायारानी—बेशक इसी मतलब से मैंने बाबाजी को यहाँ से निकाल बाहर किया क्योंकि अगर वह रहता तो कैदियों को मारने न देता और उसमें जो कुछ करामात है सो तुम देख ही चुकी हो। अगर ऐसा न होता तो मैं सुरंग ही में उन सभी को मारकर निश्चिन्त हो जाती।

नागर—मगर बाबाजी ने उस कोठरी की ताली तो तुम्हें दी नहीं जिसमें कैदियों को रखा है।

मायारानी—ठीक है बाबाजी इस एक बात में चालाकी कर गए। कैदखाने की कोठरी क्योंकर खुलती है सो मुझे नहीं बताया और न कोई ताली वहाँ की मुझे दी, मगर यह मैं पहले ही समझे हुई थी कि बाबाजी कैदियों को जरूर किसी ऐसी जगह रखेंगे, जहाँ मैं जा नहीं सकती, इसलिए तो बाबाजी से मैंने कहा कि कैदियों को मैगजीन के बगल वाली कोठरी में कैद करो। बाबाबाजी मेरा मतलब नहीं समझ सके और धोखे में आ गये।

नागर—इस से तो यही जाहिर होता है कि उस कोठरी में तुम जा सकती हो।

मायारानी—नहीं, उस कोठरी में मैं नहीं जा सकती, मगर मैगजीन की कोठरी तक जा सकती हूँ।

नागर—(जोर से हंसकर) अहा हा, अब मैं समझी ! तुम्हारा मतलब यह कि मैगजीन में जहाँ बारूद रखा है वहाँ जाओ और उसमें आग लगाकर इस···

1. अर्थात् बिदा किया।

मायारानी—बस-बस यही है, कैदी और कैदखाने की क्या बात इस बँगले का ही सत्यानाश कर दूँगी। कैदियों की हड्डी तक का तो पता लगेगा ही नहीं ! अच्छा अब इस काम में विलम्ब न करना चाहिए, उठो और मेरे साथ चलकर उस कोठरी में अर्थात् मैगजीन में कोई ऐसी चीज रखो जो उस वक्त बारूद में आग लगावे, जब हम लोग यहाँ से निकल कर कुछ दूर चली जायें।

नागर—ऐसा ही होगा, यह कोई मुश्किल बात नहीं है।

13

कल शाम को बाबाजी जमानिया गए थे और आज शाम होने के दो घंटे पहले ही लौट आये। दूर ही से अपने बँगले की हालत देख सिर हिलाकर बोले, 'मैं उसी समय समझ गया था जब मायारानी ने कहा था कि कैदियों को मैगजीन के बगल वाले तहखाने में कैद करना चाहिए।"

बाबाजी का बँगला जो बहुत ही खूबसूरत और शौकीनों के रहने के लायक था, बिल्कुल बर्बाद हो गया था, बल्कि यों कहना चाहिए कि उसकी एक-एक ईंट अलग हो गई थी। बाबाजी धीरे-धीरे उसके पास पहुँचे और कुछ देर तक गौर से देखने के बाद यह कहते हुए घूम पड़े कि 'जो हो मगर अजायबघर किसी तरह बर्बाद नहीं हो सकता।'

बाबाजी के बँगले के बर्बाद होने का सबब पाठक समझ ही गये होंगे, क्योंकि ऊपर के बयान में मायारानी और नागर की बातचीत से वह भेद साफ-साफ खुल चुका है। अब बाबाजी इस विचार में पड़े कि मायारानी को ढूँढ़कर उससे दो-दो बातें करनी चाहिए।

ऐसा करने में बाबाजी को विशेष तकलीफ नहीं उठानी पड़ी, क्योंकि थोड़ी ही दूर पर उन्हें उन लौंडियों में से एक लौंडी मिली जो उस समय मायारानी के साथ थी, जब बाबाजी कैदियों को तहखाने में बन्द करके दीवान से मिलने के लिए जमानिया की तरफ रवाना हुए थे। बाबाजी ने उस लौंडी से केवल इतना ही पूछा, "मायारानी कहाँ हैं ?"

लौंडी—जब आप जमानिया की तरफ चले गये तो मायारानी हम लोगों को साथ लेकर दिल बहलाने के लिए इस जंगल में टहलने लगीं और धीरे-धीरे यहाँ से कुछ दूर चली गईं। ईश्वर ने बड़ी कृपा की कि रानी साहिबा के दिल में यह बात पैदा हुई नहीं तो हम लोग भी टुकड़े-टुकड़े होकर उड़ गए होते, क्योंकि थोड़ी ही देर बाद भयानक आवाज सुनने में आई, और जब हम लोग इस बँगले के पास आये तो मिट्टी और गर्द के सबब अन्धकार हो रहा था। हम लोग डर कर पीछे की तरफ हट गये और अन्त में इस बँगले की ऐसी अवस्था देखने में आई जो आप देख रहे हैं। लाचार मायारानी ने यहाँ ठहरना उचित न समझा और नागर के साथ काशीजी की तरफ रवाना हो गईं।

बाबा—और तुझे इसलिए यहाँ छोड़ गई कि जब मैं आऊँ तो बातें बनाकर मेरे क्रोध को बढ़ावे !

लौंडी—जी ई ई ई···

बाबा—जी ई ई ई क्या ? बेशक यही बात है ! खैर, अब तू भी यहाँ से वहीं चली जा और कम्बख्त मायारानी से जाकर कह दे कि जो कुछ तूने किया, बहुत अच्छा किया, मगर इस बात को खूब याद रखना कि नेकी का नतीजा नेक है और बद को कभी सुख की नींद सोना नसीब नहीं होता । अच्छा ठहर, मैं एक चिट्ठी लिख देता हूँ सो लेती जा और जहाँ तक जल्द हो सके, मिलकर मायारानी के हाथ दे दे ।

इतना कहकर बाबाजी बैठ गए और अपने बटुए से सामान निकालकर चिट्ठी लिखने लगे, जब चिट्ठी लिख चुके तो उसे लौंडी के हाथ में दे दिया और आप उत्तर तरफ रवाना हो गये ।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह लौंडी बाबाजी की चिट्ठी लिए हुए काशीजी जायेगी और मायारानी से मिलकर चिट्ठी उसके हाथ में देगी, मगर हम आपको अपने साथ लिए हुए पहले ही काशीजी पहुँचते हैं और देखते हैं कि मायारानी किस धुन में कहाँ बैठी है या क्या कर रही है ।

रात पहर से ज्यादा जा चुकी है । काशी में मनोरमा वाले मकान के अन्दर एक सजे हुए कमरे में मायारानी नागर के साथ बैठी हुई कुछ बात कर रही है । इस समय कमरे में सिवाय नागर और मायारानी के और कोई नहीं है । कमरे में यद्यपि बहुत से बेशकीमती शीशे करीने के साथ लगे हुए हैं, मगर रोशनी दो दीवारगीरों में और एक सब्ज कंवल वाले शमादान में, जो मायारानी के सामने गद्दी के नीचे रखा हुआ है, हो रही है । मायारानी सब्ज मखमल की गद्दी पर गाव-तकिये के सहारे बैठी है । इस समय उसका खूबसूरत चेहरा, जो आज से तीन-चार दिन पहले उदासी और बदहवासी के कारण बेरौनक हो रहा था, खुशी और फतहमन्दी की निशानियों के साथ दमक रहा है और वह किसी सवाल का इच्छानुसार जवाब पाने की आशा में मुस्कुराती हुई नागर की तरफ देख रही है ।

नागर—इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि एक भारी बला आपके सिर से टली है, परन्तु यह न समझना चाहिए कि अब आपको किसी आफत का सामना न करना पड़ेगा ।

मायारानी—इस बात को मैं जानती हूँ कि जमानिया की गद्दी पर बैठने के लिए अब भी बहुत-कुछ उद्योग करना पड़ेगा, मगर मैं यह कह रही हूँ कि सबसे भारी बला जो थी, वह टल गई । कम्बखत कमलिनी ने भी बड़ा ही ऊधम मचा रखा था, अगर वह वीरेन्द्रसिंह की पक्षपाती न होती, तो मैं कभी का दोनों कुमारों को मौत की नींद सुला चुकी होती ।

नागर—बेशक ! बेशक !

मायारानी—और भूतनाथ का मारा जाना भी बहुत अच्छा हुआ, क्योंकि उसे इस मकान का बहुत-कुछ भेद मालूम हो चुका था और इस सबब से इस मकान के रहने वाले भी बेफिक्र नहीं रह सकते थे । मगर देखो तो सही, हरामजादे दीवान को क्या हो

गया जो मुझसे एकदम ही फिर गया, बल्कि मुझको गिरफ्तार करने का उद्योग भी करने लगा।

नागर—जरूर यह बात भी उन्हीं नकाबपोशों की बदौलत हुई है।

मायारानी—ठीक है, पहले तो मैं बेशक ताज्जुब में थी कि न मालूम वे दोनों नकाबपोश कौन थे और कहाँ से आये थे और आज दीवान तथा सिपाहियों के बिगड़ने का सबब केवल यही ध्यान में आता है कि धनपत का भेद खुल जाने से उन लोगों ने मुझे बदकार समझ लिया, मगर अब मुझे निश्चय हो गया कि उन दोनों नकाबपोशों में से एक तो गोपालसिंह था।

नागर—मेरा भी यही निश्चय है, बल्कि मैं अभी यही बात अपने मुँह से निकालने वाली थी। उसके सिवाय और कोई ऐसा नहीं हो सकता कि केवल सूरत दिखाकर लोगों को अपने वश में कर ले। सिपाहियों और दीवान को जरूर इस बात का निश्चय हो गया कि गोपालसिंह को तुमने कैद कर रखा था। खैर, जो होना था सो हो गया। अब तो राजा गोपालसिंह का नाम-निशान ही न रहा, जो फिर जाकर अपना मुँह उन लोगों को दिखावेंगे, अब थोड़े ही दिनों में उन लोगों को निश्चय करा दिया जायेगा कि वह राजा वीरेन्द्रसिंह का कोई ऐयार था।

मायारानी—तुम्हारा कहना बहुत ठीक है और मेरे नजदीक अब यह कोई बड़ी बात नहीं है कि बेईमान दीवान को गिरफ्तार कर लूं या मार डालूँ, मगर एक बात का खुटका जरूर है।

नागर—वह क्या ?

मायारानी—केवल इतना ही कि दीवान को मारने या गिरफ्तार करने के साथ ही साथ राजा वीरेन्द्रसिंह की उस फौज का भी मुकाबला करना पड़ेगा जो सरहद पर आ चुकी है।

नागर—इसमें तो कुछ भी सन्देह नहीं है और इस बात का भी विश्वास नहीं हो सकता कि तुम्हारी फौज तुम्हारा पक्ष लेकर लड़ने के लिए तैयार हो जायगी। फौजी सिपाहियों के दिल से गोपालसिंह का ध्यान दूर होना दो-एक दिन का काम नहीं है !

मायारानी—(कुछ सोचकर) तो क्या मैं अकेली राजा वीरेन्द्रसिंह की फौज को नहीं हटा सकती ?

नागर—सो तो तुम्हीं जानो।

मायारानी—बेशक मैं ऐसा बड़ा काम कर सकती हूँ मगर अफसोस, मेरा प्यारा धनपत···

धनपत का नाम लेते ही मायारानी की आँखें डबडबा आईं। नागर ने अपने आँचल से उसकी आँखें पोंछीं और बहुत-कुछ धीरज दिया। इसी समय दरवाजे के बाहर से चुटकी बजाने की आवाज आई, जिसे सुनकर नागर समझ गई कि कोई लौंडी यहाँ आना चाहती है। नागर ने पुकार कर कहा, "कौन है, चले आओ !"

वही लौंडी भीतर आती हुई दिखाई पड़ी जो बर्बाद हुए बँगले के पास बाबा जी से मिली थी और जिसके हाथ बाबाजी ने मायारानी के पास चिट्ठी भेजी थी।

उसको देखते ही मायारानी चैतन्य हो बैठी और बोली, "कहो, दारोगा से मुलाकात हुई थी ?"

लौंडी—जी हाँ।

मायारानी—(मुस्कुरा कर) वह तो बहुत ही बिगड़ा होगा।

लौंडी—हाँ, बहुत झुंझलाये और उछले-कूदे, आपकी शान में कड़ी-कड़ी बातें कहने लगे, मगर मैं चुपचाप खड़ी सुनती रही। अन्त में बोले, "अच्छा, मैं एक चिट्ठी लिखकर देता हूँ, इसे ले जाकर अपनी मायारानी को दे देना।"

मायारानी—तो क्या उसने चिट्ठी लिखकर दी है ?

लौंडी—जी हाँ, यह मौजूद है, लीजिए।

लौंडी ने चिट्ठी मायारानी के हाथ में दे दी और मायारानी ने यह कहकर चिट्ठी ले ली कि 'देखना चाहिए इसमें दारोगा साहब क्या रंग लाये हैं !' इसके बाद वह चिट्ठी नागर के हाथ में देकर बोली, "लो, इसे तुम ही पढ़ो !"

नागर चिट्ठी खोलकर पढ़ने लगी। उस समय मायारानी की निगाह नागर के चेहरे पर थी। आधी चिट्ठी पढ़ने के बाद नागर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं और डर के मारे उसका हाथ काँपने लगा। मायारानी ने घबराकर पूछा, "क्यों क्या हाल है ? कुछ कहो तो !"

इसके जवाब में नागर ने लम्बी साँस लेकर चिट्ठी मायारानी के सामने रख दी और बोली, "ओह, मेरी सामर्थ्य नहीं कि इस चिट्ठी को आखीर तक पढ़ सकूँ। हाय, निःसन्देह वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों का मुकाबला करना पूरा-पूरा पागलपन है।"

मायारानी ने घबराकर चिट्ठी उठा ली और स्वयं पढ़ने लगी, पर वह भी उस चिट्ठी को आधे से ज्यादा न पढ़ सकी। पसीना छूटने लगा, शरीर काँपने लगा, दिमाग में चक्कर आने लगे, यहाँ तक कि अपने को किसी तरह सँभाल न सकी और बदहवास होकर जमीन पर गिर पड़ी।

चन्द्रकान्ता सन्तति

दसवाँ भाग

1

अब हम थोड़ा सा हाल तिलिस्म का लिखना उचित समझते हैं। पाठकों को याद होगा कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह कमलिनी के हाथ से तिलिस्मी खंजर लेकर उस गड़हे या कुएँ में कूद पड़े जिसमें अपने छोटे भाई आनन्दसिंह को देखना चाहते थे। जिस समय कुमार ने तिलिस्मी खंजर कुएँ के अन्दर किया और उसका कब्जा दबाया तो उसकी रोशनी से कुएँ के अन्दर की पूरी-पूरी कैफियत दिखाई देने लगी। उन्होंने देखा कि कुएँ की गहराई बहुत ज्यादा नहीं है, बनिवस्त ऊपर के नीचे की जमीन बहुत चौड़ी मालूम पड़ी, और किनारे की तरफ एक आदमी किसी को अपने नीचे दबाये हुए बैठा उसके गले पर खंजर फेरना ही चाहता है।

कुँअर इन्द्रजीतसिंह को यकायक खयाल गुजरा कि यह जुल्म कहीं कुँअर आनन्दसिंह पर ही न हो रहा हो! छोटे भाई की सच्ची मुहब्बत ने ऐसा जोश मारा कि वह अपने को एक पल के लिए भी रोक न सके क्योंकि साथ ही इस बात का भी गुमान था कि देर होने से कहीं उसका काम तमाम न हो जाय, इसलिए बिना कुछ सोचे और बिना किसी से कहे-सुने इन्द्रजीतसिंह उस गड़हे में कूद पड़े। मालूम हुआ कि वह किसी धातु की चादर पर जो जमीन की तरह से मालूम होती थी गिरे हैं क्योंकि उनके गिरने के साथ ही वह जमीन दो-तीन दफे लचकी और एक प्रकार की आवाज भी हुई। चमकता हुआ एक तिलिस्मी खंजर उनके हाथ में था जिसकी रोशनी में और टटोलने से मालूम हुआ कि वे दोनों आदमी वास्तव में पत्थर के बने हुए हैं जिन्हें देखकर वे गड़हे के अन्दर कूदे थे। इसके बाद कुमार ने इस विचार से ऊपर की तरफ देखा कि कमलिनी या राजा गोपालसिंह को पुकार कर यहाँ का कुछ हाल कहें मगर गड़हे का मुँह बन्द पाकर लाचार हो रहे। ऊँचाई पर ध्यान देने से मालूम हुआ कि इस गड़हे का ऊपर वाला मुँह बन्द नहीं हुआ, बल्कि बीच में कोई चीज ऐसी आ गई, जिससे रास्ता बन्द हो गया है।

कुमार ने तिलिस्मी खंजर का कब्जा इसलिए ढीला किया कि वह रोशनी बन्द हो जाय जो उसमें से निकल रही है और मालूम हो कि इस जगह बिल्कुल अँधेरा ही है

या कहीं से कुछ चमक या रोशनी भी आती है, पर वहाँ पूरा अन्धकार था, हाथ को हाथ दिखाई नहीं देता था, अस्तु लाचार होकर कुमार ने फिर तिलिस्मी खंजर का कब्जा दबाया और उसमें से बिजली की तरह चमक पैदा हुई। उसी रोशनी में कुमार ने चारों तरफ इस आशा से देखना शुरू किया कि किसी तरफ आनन्दसिंह की सूरत दिखाई पड़े मगर सिवाय एक चाँदी के सन्दूक के जो उसी जगह पड़ा हुआ था और कुछ दिखाई न दिया। यहाँ तीन तरफ पक्की दीवार थी जिसमें छोटे-छोटे दरवाजे और एक तरफ जाने का रास्ता इस ढंग का था जिसे हर तौर पर सुरंग कह सकते हैं। कुमार उसी सुरंग की राह आगे की तरफ बढ़े मगर ज्यों-ज्यों आगे जाते थे सुरंग पतली होती जाती थी और मालूम होता था कि हम ऊँची जमीन पर चढ़े चले जा रहे हैं। लगभग सौ कदम जाने के बाद सुरंग खतम हुई और अन्त में एक दरवाजा मिला जो जंजीर से बन्द था और कुंडे में एक ताला लगा हुआ था। कुमार ने खंजर मार के जंजीर काट डाली और धक्का देकर दरवाजा खोला तो सामने उजाला नजर आया। अब तिलिस्मी खंजर की कोई आवश्यकता न थी इसलिए उसका कब्जा ढीला किया और दरवाजा लाँघ कर दूसरी तरफ चले गये। कुमार ने अपने को एक हरे-भरे बाग में पाया और देखा कि वह बाग मामूली तौर का नहीं है बल्कि उसकी बनावट विचित्र ढंग की है, फूलों के पेड़ बिल्कुल न थे पर तरह-तरह के मेवों के पेड़ लगे हुए थे। हरएक पेड़ के चारों ओर दो-दो हाथ ऊँची दीवार घिरी हुई थी और बीच में मिट्टी भरने के कारण खासा चबूतरा मालूम पड़ता था। इसके अतिरिक्त अर्थात् पेड़ों के चबूतरों को छोड़कर बाकी जितनी जमीन उस बाग में थी सब पर संगमरमर का फर्श था। पूरब तरफ से एक नहर बाग के अन्दर आई हुई थी और पन्द्रह-बीस हाथ के बाद छोटी-छोटी शाखों में फैल गई थी। जो नहर बाग के अन्दर आई थी उसकी चौड़ाई ढाई हाथ से कम न थी, मगर बाग के अन्दर संगमरमर की छोटी-छोटी सैकड़ों नालियों में उसका जल फैल गया था। उन नालियों के दोनों तरफ की दीवार तो संगमरमर की थी मगर बीच की जमीन पक्की न थी और इसी सबब से यहाँ की जमीन बहुत तर थी और पेड़ सूखने नहीं पाते थे। बाग के चारों तरफ ऊँची दीवार तथा पूरब तरफ एक दालान और कोठरियाँ थीं, पश्चिम तरफ की दीवार के पास एक संगीन कुआँ था और बाग के बीचोंबीच में एक मन्दिर था।

कुमार ने पेड़ों से कई फल तोड़ के खाए और चश्मे का पानी पीकर भूख-प्यास की शान्ति की और इसके बाद घूम-घूम कर देखने लगे। उन्हें कुँअर आनन्दसिंह के विषय में चिन्ता थी और चाहते थे कि किसी तरह शीघ्र उनसे मुलाकात हो।

चारों तरफ घूम-फिर कर देखने के बाद कुमार उस मन्दिर में पहुँचे जो बाग के बीचोंबीच में था। वह मन्दिर बहुत छोटा था और उसके आगे का सभामंडप भी चार-पाँच आदमियों से ज्यादा के बैठने के लायक न था। मन्दिर में प्रतिमा या शिवलिंग की जगह एक छोटा-सा चबूतरा था और इसके ऊपर एक भेड़िए की मूरत बैठाई हुई थी। कुमार उसे अच्छी तरह देखभाल कर बाहर निकल आए और सभामंडप में बैठकर खून से लिखी हुई किताब पढ़ने लगे। अब उन्हें उस किताब का मतलब साफ-साफ समझ में आता था। जब तक बखूबी अँधेरा नहीं हुआ और निगाह ने काम दिया तब तक वे उस

किताब को पढ़ते रहे, इसके बाद किताब सँभाल कर उसी जगह लेट गए और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए।

उस बाग में कुंअर इन्द्रजीतसिंह को दो दिन बीत गए। इस बीच में वे कोई ऐसा काम न कर सके जिससे अपने भाई कुँअर आनन्दसिंह को खोज निकालते या बाग से बाहर निकल जाते या तिलिस्म तोड़ने में ही हाथ लगाते, हाँ, इन दो दिन के अन्दर वे खून से लिखी हुई तिलिस्मी किताब को अच्छी तरह पढ़ और समझ गये बल्कि उसके मतलब को इस तरह दिल में बैठा लिया कि अब उस किताब की उन्हें कोई जरूरत न रही। ऐसा होने से तिलिस्म का पूरा-पूरा हाल उन्हें मालूम हो गया और वे अपने को तिलिस्म तोड़ने लायक समझने लगे। खाने-पीने के लिए उस बाग में मेवों और पानी की कुछ कमी न थी।

तीसरे दिन दोपहर दिन चढ़े बाद कुछ कार्रवाई करने के लिए कुमार फिर उस भेड़िये की मूरत के पास गए जो मन्दिर में चबूतरे के ऊपर बैठाई हुई थी। वहाँ कुमार को अपनी कुल ताकत खर्च करनी पड़ी। उन्होंने दोनों हाथ लगाकर भेड़िये को बाईं तरफ इस तरह घुमाया जैसे कोई पेंच घुमाया जाता है। तीन चक्कर घूमने के बाद वह भेड़िया चबूतरे से अलग हो गया और जमीन के अन्दर से घरघराहट की आवाज आने लगी। कुमार उस भेड़िये को एक किनारे रखकर बाहर निकल आए और राह देखने लगे कि अब क्या होता है। घण्टे भर तक बराबर वह आवाज आती रही और फिर धीरे-धीरे कम होकर बन्द हो गई। कुमार फिर उस मन्दिर के अन्दर गए और देखा कि वह चबूतरा जिस पर भेड़िया बैठा हुआ था, जमीन के अन्दर धँस गया और नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ दिखाई दे रही हैं। कुमार बेधड़क नीचे उतर गए। वहाँ पूरा अन्धकार था इसलिए तिलिस्मी खंजर से चाँदनी करके चारों तरफ देखने लगे। यह एक कोठरी थी जिसकी चौड़ाई बीस हाथ और लम्बाई पच्चीस हाथ से ज्यादा न होगी। चारों तरफ की दीवारों में छोटे-छोटे कई दरवाजे थे जो इस समय बन्द थे। कोठरी के चारों कोनों में पत्थर की चार मूरतें एक ही रंग-ढंग की और एक ही ठाठ से खड़ी थीं, सूरत-शक्ल में कुछ भी फर्क न था, या था भी तो केवल इतना ही कि एक मूरत के हाथ में खंजर और बाकी तीन मूरतों के हाथ में कुछ भी न था।

कुमार पहले उसी मूरत के पास गए जिसके हाथ में खंजर था। पहले उसकी उँगलियों की तरफ ध्यान दिया। बाएँ हाथ की उँगली में अँगूठी थी जिसे निकाल कर पहिन लेने के बाद खंजर ले लिया और कमर में लगाकर धीरे से बोले, "इस तिलिस्म में ऐसे तिलिस्मी खंजर के बिना वास्तव में काम नहीं चल सकता, अब आनन्दसिंह मिल जाय तो यह खंजर उसे दे दिया जाय।"

पाठक समझ ही गये होंगे कि मूरत के हाथ से जो खंजर कुमार ने लिया, वह उसी प्रकार का तिलिस्मी खंजर था जैसा कि पहले से एक कमलिनी की बदौलत कुमार के पास था। इस समय कुँअर इन्द्रजीतसिंह जो कुछ कार्रवाई कर रहे हैं बल्कि खून से लिखी हुई तिलिस्मी किताब के मतलब को समझ अपनी विमल बुद्धि से जाँच और ठीक करके करते हैं, तथा आगे के लिए भी पाठकों को ऐसा ही समझना चाहिए।

अब कुमार उन दरवाजों की तरफ गौर से देखने लगे जो चारों तरफ की दीवारों में दिखाई दे रहे थे। उन दरवाजों में केवल चार दरवाजे चार तरफ असली थे और बाकी के दरवाजे नकली थे अर्थात् चार दरवाजों को छोड़ कर बाकी दरवाजों के केवल निशान दीवारों में थे मगर ये निशान भी ऐसे थे कि जिन्हें देखने से आदमी पूरा-पूरा धोखा खा जाय।

कुमार पूरब तरफ की दीवार की ओर गये और उस तरफ जो दरवाजा था उसे जोर से लात मार कर खोल डाला, इसमें बाद बाएँ तरफ के कोने में जो मूरत थी उसे बगल में दाब उठाना चाहा मगर वह उठ न सकी क्योंकि उनके दाहिने हाथ में वह चमकता हुआ तिलिस्मी खंजर था, आखिर कुमार ने खंजर कमर में रख लिया। यद्यपि ऐसा करने से वहाँ पूर्ण रूप से अन्धकार हो गया मगर कुमार ने इसका कुछ विचार न करके अँधेरे ही में दोनों हाथ उस मूरत की कमर में फँसा कर जोर किया और उसे जमीन से उखाड़ कर धीरे-धीरे उस दरवाजे के पास लाए जिसे लात मार कर खोला था। जब चौखट के पास पहुँचे तो उस मूरत को जहाँ तक जोर से बन पड़ा दरवाजे के अन्दर फेंक दिया और फुर्ती से तिलिस्मी खंजर हाथ में ले रोशनी करके सीढ़ी की राह कोठरी के बाहर निकल आये अर्थात् फिर उसी बाग में चले आये और मन्दिर से कुछ दूर हट कर खड़े हो गये।

थोड़ी देर तो कुमार को ऐसा मालूम हुआ कि जमीन कांप रही है और उसके अन्दर बहुत-सी गाड़ियाँ दौड़ रही हैं। आखिर धीरे-धीरे कम होकर ये दोनों बातें जाती रहीं। इसके बाद कुमार फिर मन्दिर के अन्दर हो गए और सीढ़ियों की राह उस तहखाने में उतर गए जहाँ पहले गए थे। इस समय वहाँ तिलिस्मी खंजर की रोशनी की कोई आवश्यकता न थी क्योंकि इस समय कई छोटे-छोटे सूराखों में से रोशनी बखूबी आ रही थी जिसका पहले नाम-निशान भी न था। कुमार चारों तरफ देखने लगे मगर पहले की बनिस्बत कोई नई बात दिखाई न दी। आखिर पूरब तरफ की दीवार के पास गए और उस दरवाजे के अन्दर झांक के देखा जिसे लात मार कर खोला था या जिसके अन्दर मूरत को जोर से फेंका था। इस समय इस कोठरी के अन्दर भी चाँदना था और वहाँ की हर एक चीज दिखाई दे रही थी। यह कोठरी बहुत लम्बी-चौड़ी न थी मगर दीवारों में छोटे-छोटे कई खुले दरवाजे दिखाई दे रहे थे, जिससे मालूम होता था कि यहाँ से कई तरफ जाने के लिए सुरंग या रास्ता है। कुमार ने उस मूरत को गौर से देखा जिसे उस कोठरी के अन्दर फेंका था। उस मूरत की अवस्था ठीक वैसी हो रही थी जैसी कि चूने की कली की उस समय होती है जब थोड़ा-सा पानी उस पर छोड़ा जाता है, अर्थात् टूट-फूट के वह बिल्कुल ही बर्बाद हो चुकी थी। उसके पेट में एक चमकती हुई चीज दिखाई दे रही थी जो पहले तो उसके पेट के अन्दर रही होगी मगर अब पेट फट जाने के कारण बाहर हो रही थी। कुमार ने वह चमकती हुई चीज उठा ली और तहखाने के बाहर निकल मन्दिर के मण्डप में बैठ कर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए।

थोड़ी ही देर बाद धमधमाहट की आवाज से मालूम हुआ कि मन्दिर के अन्दर

तहखाने वाली सीढ़ियों पर कोई चढ़ रहा है। कुमार उसी तरफ देखने लगे। यकायक कुँअर आनन्दसिंह आते हुए दिखाई पड़े। बड़े कुमार खुशी के मारे उठ खड़े हुए और आँखों में प्रेमाश्रु की दो-तीन बूँदें दिखाई देने लगीं। आनन्दसिंह दौड़ कर अपने बड़े भाई के पैरों पर गिर पड़े। इन्द्रजीतसिंह ने झट से उठा कर गले लगा लिया। जब दोनों भाई खुशी-खुशी उस जगह बैठ गए तब इन्द्रजीतसिंह ने पूछा, "कहो, तुम किस आफत में फँस गए थे और क्योंकर छूटे ?" कुँअर आनन्दसिंह ने अपने फँस जाने और तकलीफ उठाने का हाल अपने बड़े भाई के सामने कहना शुरू किया।

तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में कुँअर आनन्दसिंह जिस तरह अपने बड़े भाई से बिदा होकर खूँटियों वाले तिलिस्मी मकान के अन्दर गए थे और चाँदी वाले सन्दूक में हाथ डालने के कारण फँस गये थे, उसका इस जगह दोहराना पाठकों का समय नष्ट करना है, हाँ वह हाल कहने के बाद फिर जो कुछ हुआ और कुमार ने अपने बड़े भाई से बयान किया उसका लिखना आवश्यक है।

छोटे कुमार ने कहा—"जब मेरा हाथ सन्दूक में फँस गया तो मैंने छुड़ाने के लिए बहुत कुछ उद्योग किया मगर कुछ न हुआ और घण्टों तक फँसा रहा। इसके बाद एक आदमी चेहरे पर नकाब डाले हुए मेरे पास आया और बोला, "घबराइए मत, थोड़ी देर और सब्र कीजिए, मैं आपको छुड़ाने का बन्दोबस्त करता हूँ।" इस बीच में वह जमीन हिलने लगी जहाँ मैं था, बल्कि तमाम मकान तरह-तरह के शब्दों से गूँज उठा। ऐसा मालूम होता था मानो जमीन के नीचे सैकड़ों गाड़ियाँ दौड़ रही हैं। वह आदमी जो मेरे पास आया था, यह कहता हुआ ऊपर की तरफ चला गया कि "मालूम होता है कुमार और कमलिनी ने इस मकान के दरवाजे पर बखेड़ा मचाया है, मगर यह काम अच्छा नहीं किया।" थोड़ी ही देर बाद वह नकाबपोश नीचे उतरा और बराबर नीचे चला गया, मैं समझता हूँ कि दरवाजा खोलकर आपसे मिलने गया होगा अगर वास्तव में आप ही दरवाजे पर होंगे।"

इन्द्रजीतसिंह—हाँ दरवाजे पर उस समय मैं ही था और मेरे साथ कमलिनी और लाड़िली भी थीं, अच्छा, तब क्या हुआ ?

आनन्दसिंह—तो क्या आपने कोई कार्रवाई की थी ?

इन्द्रजीतसिंह—की थी, उसका हाल पीछे कहूँगा, पहले तुम अपना हाल कहो।

आनन्दसिंह ने फिर कहना शुरू किया—

"उस आदमी को नीचे गये हुए चौथाई घड़ी भी न हुई होगी कि जमीन यकायक जोर से हिली और मुझे लिए हुए सन्दूक जमीन के अन्दर घुस गया, उसी समय मेरा हाथ छूट गया और सन्दूक से अलग होकर इधर-उधर मैं टटोलने लगा क्योंकि वहाँ बिल्कुल ही अंधकार था, यह भी न मालूम होता था कि किधर दीवार है और किधर जाने का रास्ता है। ऊपर की तरफ, जहाँ सन्दूक धँस जाने से गड्ढा हो गया था देखने से भी कुछ मालूम न होता था, लाचार मैंने एक तरफ का रास्ता लिया और बराबर ही चलते जाने का विचार किया परन्तु सीधा रास्ता न मिला, कभी ठोकर खाता, कभी दीवार में अड़ता, कभी दीवार थामे घूम कर चलना पड़ता। जब दुःखी हो जाता तो

पीछे की तरफ लौटना चाहता था, मगर लौट न सकता था क्योंकि लौटते समय तबीयत और भी घबराती और गर्मी मालूम होती थी, लाचार आगे की तरफ बढ़ना पड़ता। इस बात को खूब समझता था कि मैं आगे ही की तरफ बढ़ता हुआ बहुत दूर नहीं जा रहा हूँ बल्कि चक्कर खा रहा हूँ, मगर क्या करूँ लाचार था, अक्ल कुछ काम न करती थी। इस बात का पता लगाना बिल्कुल ही असम्भव था कि दिन है कि रात, सुबह है या शाम, बल्कि वही दिन है या कि दूसरा दिन, मगर जहाँ तक मैं सोच सकता हूँ कि इस खराबी में आठ-दस पहर बीत गये होंगे। कभी तो मैं जीवन से निराश हो जाता, कभी यह सोच कर कुछ ढाढ़स होती कि आप मेरे छुड़ाने का जरूर कुछ उद्योग करेंगे। इसी बीच में मुझे कई खुले हुए दरवाजों के अन्दर पैर रखने और फिर उसी या दूसरे दरवाजे की राह से बाहर निकलने की नौबत आई, मगर छुटकारे की कोई सूरत नजर न आई। अन्त में एक कोठरी के अन्दर पहुँच कर बदहवास हो जमीन पर गिर पड़ा क्योंकि भूख-प्यास के मारे दम निकला जाता था। इस अवस्था में भी कई पहर बीत गये, आखिर इस समय से घण्टे भर पहले मेरे कान में आवाज आई जिससे मालूम हुआ कि इस कोठरी के बगल वाली कोठरी का दरवाजा किसी ने खोला है। मुझे यकायक आपका खयाल हुआ। थोड़ी ही देर बाद जमीन हिलने लगी और तरह-तरह के शब्द होने लगे। आखिर यकायक उजाला हो गया, तब मेरी जान-में-जान आई, बड़ी मुश्किल से मैं उठा, सामने का दरवाजा खुला हुआ पाया, निकल के दूसरी कोठरी में पहुँचा जहाँ दरवाजे के पास ही देखा कि पत्थर का एक आदमी पड़ा है जिसका शरीर पानी में पड़े हुए चूने की कली की तरह फूला-फटा हुआ है। इसके बाद मैं तीसरी कोठरी में गया और फिर सीढ़ियाँ चढ़ कर आपके पास पहुँचा।"

कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने अपने छोटे भाई के हाल पर बहुत अफसोस किया और कहा—"यहाँ मेवों की और पानी की कोई कमी नहीं है, पहले तुम कुछ खा-पी लो, फिर मैं अपना हाल तुमसे कहूँगा।"

दोनों भाई वहाँ से उठे और खुशी-खुशी मेवेदार पेड़ों के पास जाकर पके हुए और स्वादिष्ट मेवे खाने लगे। छोटे कुमार बहुत भूखे और सुस्त हो रहे थे, मेवे खाने और पानी पीने से उनका जी ठिकाने हुआ और फिर दोनों भाई उसी मंदिर के सभा-मण्डप में आ बैठे तथा बातचीत करने लगे। कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने अपना पूरा-पूरा हाल अर्थात् जिस तरह यहाँ आये थे और जो कुछ किया था आनन्दसिंह से कह सुनाया और इसके बाद कहा, "खून से लिखी इस किताब को अच्छी तरह पढ़ जाने से मुझे बहुत फायदा हुआ। यदि तुम भी इसे इसी तरह पढ़ जाओ और याद कर जाओ तो फिर इसकी आवश्यकता न रहे और दोनों भाई शीघ्र ही इस तिलिस्म को तोड़ के नाम और दौलत पैदा करें। साथ ही इसके यह बात भी समझ लो कि बाग में आकर तुम्हारा पता लगाने की नीयत से जो कुछ मैंने किया, उससे इतना नुकसान अवश्य हुआ कि अब बिना तिलिस्म तोड़े हम लोग यहाँ से निकल नहीं सकते।"

आनन्दसिंह—(कुछ सोच कर) यदि ऐसा ही है और आपको निश्चय है कि इस रिक्तगंथ के पढ़ जाने से हम लोग अवश्य तिलिस्म तोड़ सकेंगे तो मैं इसी समय इसका

पढ़ना आरम्भ करता हूँ, परन्तु इसमें बहुत से शब्द ऐसे हैं जिनका मतलब समझ में नहीं आता…

इन्द्रजीतसिंह—ठीक है, मगर मैं अभी कह चुका हूँ कि तुम्हें खोजता हुआ जब मैं खूँटियों वाले मकान के पास पहुँचा तो राजा गोपालसिंह ने…

आनन्दसिंह—(बात काट कर) जी हाँ, मुझे बखूबी याद है, आपने कहा था कि राजा गोपालसिंह ने कोई ऐसी तरकीब आपको बताई है कि जिससे केवल रिक्तगंथ ही नहीं बल्कि हर एक तिलिस्मी किताब को पढ़कर उसका मतलब आप बखूबी समझ सकेंगे, अस्तु, मेरे कहने का मतलब यह था कि जब तक आप वह मुझे न बताएँगे तब तक…

इन्द्रजीतसिंह—(हँस कर) इतनी उलझन डालने की क्या जरूरत थी! मैं तो स्वयं ही वह भेद तुमसे कहने को तैयार हूँ, अच्छा सुनो।

कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने तिलिस्मी किताबों को पढ़ कर समझने का भेद जो राजा गोपालसिंह से सुना था, आनन्दसिंह को बताया। इतने ही में मन्दिर के पीछे की तरफ चिल्लाने की आवाज आई, तो दोनों भाइयों का ध्यान एकदम उस तरफ चला गया और और तब यह आवाज सुनाई पड़ी, "अच्छा-अच्छा, तू मेरा सिर काट ले। मैं भी यही चाहती हूँ कि अपनी जिन्दगी में इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को दुःखी न देखूँ। हाय इन्द्रजीतसिंह, अफसोस, इस समय तुम्हें मेरी कुछ भी खबर न होगी!"

इस आवाज को सुनकर इन्द्रजीतसिंह बेचैन हो गये और जल्दी से आनन्दसिंह से यह कहते हुए कि 'कमलिनी की आवाज मालूम पड़ती है!' मन्दिर के पीछे की तरफ झपटे और आनन्दसिंह भी उनके पीछे-पीछे चले।

2

अब हम फिर मायारानी की तरफ लौटते हैं और उसका हाल लिख कई गुप्त भेदों को लिखते हैं। मायारानी भी उस चिट्ठी को पूरा-पूरा पढ़ न सकी और बदहवास होकर जमीन पर गिर पड़ी। नागर तुरत उठी और भंडरिये में से एक सुराही निकाल लाई जिसमें बेदमुश्क का अर्क था। वह अर्क मायारानी के मुँह पर छिड़का जिससे थोड़ी देर बाद वह होश में आई और नागर की तरफ देखकर बोली, "हाय अफसोस, क्या सोचा था और क्या हो गया।"

नागर—खैर, जो होना था सो हो गया, अब इस तरह बदहवास होने से काम नहीं चलेगा। उठो और अपने को सम्हालो, सोचो-विचारो और निश्चय करो कि अब क्या करना चाहिए।

मायारानी—अफसोस, उस कम्बख्त ऐयार ने तो बड़ा भारी धोखा दिया, और मुझसे भी बड़ी भारी भूल हुई कि लक्ष्मीदेवी वाला भेद उसके सामने ज़ुबान से निकाल

बैठी ! यद्यपि उस इशारे से वह कुछ समझ न सकेगा परन्तु जिस समय गोपालसिंह के सामने लक्ष्मीदेवी का नाम लेगा और वे बातें कहेगा जो मैंने उस दारोगा रूपधारी ऐयार से कही थीं तो वह बखूबी समझ जायगा और मेरे विषय में उसका क्रोध सौगुना हो जायगा। यदि मेरे बारे में वह किसी तरह की बदनामी समझता भी था, तो अब न समझेगा। हाय, अब जिन्दगी की कोई आशा न रही।

नागर—लक्ष्मीदेवी का नाम ले के जो कुछ तुमने कहा, उससे मुझे भी शक हो गया है। क्या असल में···

मायारानी—ओफ, यह भेद सिवाय असली दारोगा के किसी को भी मालूम नहीं। आज—(कुछ रुक कर) नहीं, अब भी मैं उस भेद को छिपाने का उद्योग करूँगी और तुझसे कुछ भी न कहूँगी, बस अब लक्ष्मीदेवी का नाम तुम मेरे सामने मत लो। (चिट्ठी की तरफ इशारा करके) अच्छा इस चिट्ठी को तुम एक दफा फिर से पढ़ जाओ।

नागर ने वह चिट्ठी उठा ली जिसके पढ़ने से मायारानी की वह हालत हुई थी और पुनः उसे पढ़ने लगी—

चिट्ठी—

"बुरे कामों का करने वाला कदापि सुख नहीं भोग सकता। तू समझती होगी कि मैं राजा गोपालसिंह, देवीसिंह, भूतनाथ, कमलिनी और लाड़िली को मारके निश्चिन्त हो गई, अब मुझे सताने वाला कोई भी न रहा। इस बात का तो तुझे गुमान भी न होगा कि मैं सुरंग में असली दारोगा से नहीं मिली, बल्कि ऐयारों के गुरू-घंटाल तेजसिंह से मिली जो दारोगा के भेष में था, और यह बात भी तुझे सूझी न होगी कि दारोगा वाले मकान के उड़ जाने से कैदियों को कुछ भी हानि नहीं हुई बल्कि वे लोग अजायबघर की चाबी की बदौलत जो सुरंग में मैंने तुझसे ले ली थी और भोजन तथा जल पहुँचाने के समय कैदियों को होश में लाकर दे दी थी, निकल गये। अहा, परमात्मा, तू धन्य है ! तेरी अदालत बहुत सच्ची है। ऐ कम्बख्त मायारानी, अब तू सब कुछ इसी से समझ जा कि मैं वास्तव में तेजसिंह हूँ।

तेरा

जो कुछ तू समझे—तेजसिंह"

इस चिट्ठी को सुनते ही मायारानी का सिर घूमने लगा और वह डर के मारे थर-थर काँपने लगी। थोड़ी देर चुप रहने के बाद वह उठ बैठी और नागर की तरफ देख कर बोली—

मायारानी—यह तेजसिंह भी बड़ा ही शैतान है। इसने दो दफा भारी धोखा दिया। अफसोस, अजायबघर की ताली हाथ में आकर फिर निकल गई, केवल ये दोनों तिलिस्मी खंजर मेरे हाथ में रह गये, मगर इनसे मेरी जान नहीं बच सकती। सबसे ज्यादा अफसोस तो इस बात का है कि लक्ष्मीदेवी वाला भेद अब खुल गया और यह बात मेरे लिए बहुत ही बुरी हुई। (कुछ सोच कर) हाय, अब मैं समझी कि इस तिलिस्मी खंजर का असर तेजसिंह पर इसलिए नहीं हुआ कि उसके पास भी जरूर इसी तरह का

खंजर और ऐसी ही अँगूठी होगी ।

नागर—बेशक यही बात है । खैर, अब यह बहुत जल्द सोचना चाहिए कि हम लोगों की जान कैसे बच सकती है ।

मायारानी इसका कुछ जवाब दिया ही चाहती थी कि सामने का दरवाजा खुला और मायारानी के दारोगा साहब अन्दर आते हुए दिखाई पड़े । उन्हें देखते ही मायारानी क्रोध के मारे लाल हो गई और कड़क कर बोली, "तुझ कम्बख्त को यहाँ किसने आने दिया ! खैर, अच्छा ही हुआ जो तू आ गया । मुझे मालूम हो गया कि तेरी मौत तुझे यहाँ पर लाई है, हाँ अगर तेरी चिट्ठी मुझे न मिली रहती तो मैं फिर धोखे में आ जाती । कम्बख्त, नालायक, तूने मुझे बड़ा भारी धोखा दिया ! अब तू मेरे हाथ से बच कर नहीं जा सकता !"

दारोगा—तू अपने होश में भी है या नहीं ? क्या अपने को बिल्कुल भूल गई ! क्या तू नहीं जानती कि किससे क्या कह रही है ? मेरी मौत नहीं बल्कि तेरी मौत आई है जो तू जुबान सम्हाल कर नहीं बोलती ।

मायारानी—(खड़ी होकर और तिलिस्मी खंजर को हाथ में लेकर) हाँ, ठीक है, यदि मैं अपने होश में रहती तो तुझ कम्बख्त के फेर में पड़ती ही क्यों ? बेईमान कहीं का, तूने मुझे बड़ा भारी धोखा दिया, देख अब मैं तेरी क्या दुर्गति करती हूँ ।

नागर—ताज्जुब है कि इतनी बड़ी बदमाशी करने पर भी तू निडर होकर यहाँ कैसे चला आया ! मालूम होता है अपनी जान से हाथ धो बैठा । कोई हर्ज नहीं, अगर तिलिस्मी खंजर का असर तुझ पर नहीं होता, तो मैं दूसरी तरह से तेरी खबर लूँगी ।

इस समय मायारानी की फुर्ती देखने ही योग्य थी । वह बाघिन की तरह झपट कर दारोगा के पास पहुँची । इस समय उसकी उँगली में एक जहरीली अँगूठी उसी तरह की थी जैसी नागर के हाथ में उस समय थी जब उसने सुनसान जंगल में भूतनाथ को अँगूठी गाल में रगड़ कर बेहोश किया था । इस समय मायारानी ने भी वही काम किया, अर्थात् वह अँगूठी जिस पर जहरीला नोकदार नगीना जड़ा हुआ था, दारोगा के गाल में इस फुर्ती और चालाकी से रगड़ दी कि वह बेचारा कुछ भी न कर सका । उस नगीने की रगड़ से गाल जरा-सा ही छिला था मगर जहर का असर पल भर में अपना काम कर गया । दारोगा चक्कर खाकर जमीन पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया । मायारानी ने नागर की तरफ देखा और कहा, "अब इसके हाथ-पैर जकड़ के बाँध दो और तब होश में लाकर पूछो कि 'कहिए तेजसिंह, अब आपका मिजाज कैसा है ?' इसके जवाब में नागर ने कहा—"केवल हाथ-पैर ही बाँध कर के नहीं छोड़ दो, बल्कि थोड़ी-नाक काट लो और नकली दाढ़ी उखाड़ कर फेंक दो और तब होश में लाकर पूछो कि 'कहिए ऐयारों के गुरू-घंटाल तेजसिंह, आपका मिजाज कैसा है ?"

इस समय मायारानी यही समझ रही थी कि यह दारोगा वास्तव में वही तेजसिंह है जिसने उसे अनूठी रीति से धोखा दिया था, बल्कि वह उसके शक पर बगीचे में घूमने के समय हर एक पत्ते से डरती फिरे तो ताज्जुब नहीं । परन्तु हमारे पाठक जरूर समझते होंगे कि तेजसिंह ऐसे बेवकूफ नहीं हैं जो मायारानी को धोखा देकर

बल्कि अपने धोखे का परिचय देकर फिर उसके सामने उसी सूरत में आवें जिस सूरत में उन्होंने धोखा दिया था, और वास्तव में बात भी ऐसी ही है। यह तेजसिंह नहीं थे, बल्कि मायारानी के असली दारोगा साहब थे। मगर अफसोस, इस समय उनकी दाढ़ी नोंचने तथा नाक काटने के लिए वही तैयार हैं जिनके वे पक्षपाती हैं।

नागर ने जो कुछ कहा मायारानी ने स्वीकार किया। नागर ने पहले तिलिस्मी खंजर से दारोगा साहब की नाक काट ली और फिर दाढ़ी नोंचने के लिए तैयार हुई। मगर यह दाढ़ी नकली नहीं थी जो एक ही झटके में अलग हो जाती, इसलिए इसके नोंचने में बेचारी नागर को विशेष तकलीफ उठानी पड़ी। नागर दाढ़ी नोंचती जाती थी और यह कहती जाती थी—"तेजसिंह बड़े मजबूत मसाले से बाल जमाता है!"

आधी दाढ़ी नुचते-नुचते दारोगा का चेहरा खून से लालोलाल हो गया। उस समय मायारानी ने चौंक कर नागर से कहा, "ठहर-ठहर, बेशक धोखा हुआ, यह तेजसिंह नहीं, वास्तव में बेचारा दारोगा है।"

नागर—(रुककर) हाँ, ठीक तो जान पड़ता है। हाय, बहुत बुरी भूल हो गई।

मायारानी—भूल क्या, गजब हो गया! इस बेचारे ने तो सिवाय नेकी के मेरे साथ बुराई कभी नहीं की, अब यह जहर के मारे मरा जा रहा है, पहले जहर दूर करने की फिक्र करनी चाहिए।

नागर—जहर तो बात-की-बात में दूर हो जायगा मगर अब हम लोग इसे अपना मुँह कैसे दिखाएँगे!

मायारानी—मैंने तो केवल दाढ़ी नोंचने की राय दी थी, तू ही ने नाक काटने के लिए कहा और अपने हाथ से बेचारे की नाक काट भी ली।

नागर—क्या खूब? इसे गालियाँ भी मैंने ही दी थीं। क्या तुम्हारी आज्ञा के बिना मैंने इनकी नाक काट ली? अब कसूर मेरे सिर पर थोप आप अलग होना चाहती हो? तुम्हें लोग सच ही बदनाम करते हैं। तुम्हारी दोस्ती पर भरोसा करना बेशक मूर्खता है, जब मेरे सामने तुम्हारा यह हाल है तो पीछे न मालूम तुम क्या करतीं! खैर, क्या हर्ज है, जैसी खुदगर्ज हो मैं जान गई।

इतना कह कर नागर वहाँ से गई और जहर दूर करने वाली दवा की शीशी ले आई। थोड़ी-सी दवा उस जगह लगाई जहाँ अँगूठी के सबब से छिल गया था। दवा लगाने के थोड़ी देर बाद उस जगह छाला पड़ गया और उस छाले को नागर ने फोड़ दिया। पानी निकल जाने के साथ ही दारोगा होश में आकर उठ बैठा और अपनी हालत देखकर अफसोस करने लगा। यद्यपि वह कुछ भी नहीं जानता था कि मायारानी ने उसके साथ ऐसा सलूक क्यों किया तथापि उसे इतना क्रोध चढ़ा हुआ था कि मायारानी से कुछ भी न पूछकर वह चुपचाप उसका मुँह देखता रहा।

मायारानी—(दारोगा से) माफ कीजियेगा, मैंने केवल यह जानने के लिए आपको बेहोश किया था कि यह वीरेन्द्रसिंह का कोई ऐयार तो नहीं है, इसके सिवाय और जो कुछ किया नागर ने किया।

नागर—ठीक है, बाबाजी इस बात को बखूबी समझते हैं। मैंने ही तो जहरीली

अंगूठी से इनकी जान लेने का इरादा किया था ! (बाबाजी की तरफ देखकर) मायारानी की दोस्ती पर भरोसा करना बड़ी भारी भूल है। जब इसने अपने पति ही को कैद करके वर्षों तक दुःख दिया तो हमारी आपकी क्या बात है। इसने लक्ष्मीदेवी वाला भेद भी तेजसिंह से कह दिया और साथ ही इसके यह भी कह दिया कि सब काम दारोगा साहब ने किया है।

मायारानी—(क्रोध से नागर की तरफ देखकर)क्यों री, तू मुझे नाहक बदनाम करती है !

नागर—जब तुम झूठमूठ मुझे बदनाम करती हो और बाबाजी की नाक काटने का कसूर मुझ पर थोपती हो तो क्या मैं सच्ची बात कहने से भी गई ! आँखें क्या दिखाती हो ? मैं तुमसे डरने वाली नहीं हूँ और तुम मेरा कुछ कर भी नहीं सकती हो। पहले तुम अपनी जान तो बचा लो !

मायारानी, जिसने इसके पहले कभी आधी बात भी किसी की नहीं सुनी थी, आज नागर की इतनी बड़ी बात कब बर्दाश्त कर सकती थी ? उसने दाँत पीसकर नागर की तरफ देखा। इस बीच में बाबाजी भी बोल उठे, "बेशक सब कसूर मायारानी का है, नागर की जुबान से लक्ष्मीदेवी का शब्द निकलना ही इसका पूरा-पूरा सबूत है।"

बाबाजी की बात सुनकर मायारानी का गुस्सा और भी भड़क उठा। वह तिलिस्मी खंजर हाथ में लेकर नागर पर झपटी। नागर ने बगल में होकर अपने को बचा लिया और आप भी तिलिस्मी खंजर हाथ में लेकर मायारानी पर वार किया। दोनों में लड़ाई होने लगी। वे दोनों कोई फेकैत या उस्ताद तो थीं ही नहीं कि गुँथ जातीं या हिकमत के साथ लड़तीं। हाँ, दाँव-घात बेशक होने लगे। कायदे की बात है कि तलवार या खंजर जो भी हाथ में हो, लड़ते समय उसका कब्जा जोर से दबाना ही पड़ता है। दबाने के सबब दोनों खंजरों में से बिजली की सी चमक पैदा हुई और इस सबब से बेचारे बाबाजी ने घबराकर अपनी आँखें बन्द कर लीं, बल्कि भागने का बन्दोबस्त करने लगे। वह लौंडी, जो तेजसिंह की चिट्ठी लाई थी, चिल्लाती हुई बाहर चली गई और उसने सब लौंडियों को इस लड़ाई की खबर कर दी। बात की बात में सब लौंडियाँ वहाँ पहुँचीं और लड़ाई बन्द कराने का उद्योग करने लगीं।

जब आदमी के पास दौलत होती है या जब आदमी अपने दर्जे या ओहदे पर कायम रहता है, तब तो सभी कोई उसकी इज्जत करते हैं, मगर रुपया निकल जाने या दर्जा टूट जाने पर फिर कोई भी नहीं पूछता, संगी-साथी सब दुम दबाकर भाग जाते हैं, भले आदमी उससे बात करना अपनी बेइज्जती समझते हैं, चाचा कहने वाले भतीजा कह के भी पुकारना पसन्द नहीं करते, दोस्त साहब-सलामत तक छोड़ देते हैं, बल्कि दुश्मनी करने पर उतारू हो जाते हैं, और नौकर-चाकर केवल सामना ही नहीं करते बल्कि खुद मालिक की तरफ आँखें दिखाते हैं।

ठीक यही हालत इस समय मायारानी की है। जब वह रानी थी, सौ ऐब होने पर भी लोग उसकी कदर करते थे, उससे डरते थे, और उसका हुक्म मानना, चाहे कैसे ही बुरे काम के लिए वह क्यों न कहे, अपना फर्ज समझते थे। आज वह रानी की पदवी

पर नहीं है, स्वयं उसे अपना राज्य छोड़ना बल्कि मुँह छिपाकर भागना पड़ा, धन-दौलत रहते भी कंगाल होना पड़ा, वह कल रानी थी, आज उसके पास एक पैसा नहीं है, कल तक उससे लाखों आदमी डरते थे, आज उससे एक लौंडी भी नहीं डरती, कल सैकड़ों आदमियों की जान उसके हुक्म से ले ली जा सकती थी, मगर आज वह खुद एक लौंडी का कुछ नहीं कर सकती। यह उसके बुरे कर्मों का फल था। इसके सिवाय और क्या कहा जाय?

मनोरमा मायारानी की सखी थी, और यह नागर मनोरमा की मुँह-लगी और मायारानी की लौंडी समझी जाती थी। मायारानी के हाथ से मनोरमा और नागर ने लाखों रुपये पाये। यह मकान, रुआब और दबदबा मनोरमा और नागर का मायारानी ही की बदौलत था। यही नागर मायारानी की सैकड़ों गालियाँ बर्दाश्त करती थी, भला या बुरा जो कुछ मायारानी उसे कहती थी, मानना पड़ता था, मगर आज जब मायारानी किसी योग्य न रही, जब मायारानी धन-दौलत से खाली हो गई, जब मायारानी की ताकत न रही, तो वही नागर बकरी से बाघिन हो गयी, बल्कि नागर की लौंडियों की नजरों में भी मायारानी की इज्जत न रही। अब नागर को मायारानी से कुछ पाने की आशा तो रही ही नहीं, बल्कि यह मौका आ गया कि नागर खुद रुपये से मायारानी की मदद करे, इसलिए झट नागर की आँख बदल गई और वह बात का बतंगड़ बनाकर जान लेने के लिए तैयार हो गई। नागर की लौंडियाँ जो इस लड़ाई का हाल सुनकर आ पहुँची थीं, नागर का दिया हुआ खाती थीं, और इस समय मायारानी को भी अच्छी निगाह से नहीं देखती थीं। इसलिए ये सब सिवाय नागर और किसी की मदद करना नहीं चाहती थीं, मगर तिलिस्मी खंजरों के सबब से इस लड़ाई के बीच में पड़ने से लाचार थीं। हाँ, जब दोनों लड़ाकियाँ ठहर जातीं और खंजर का कब्जा ढीला पड़ने के कारण चमक बन्द हो जाती तो वे लौंडियाँ नागर की मदद करने को जरूर तैयार हो जातीं।

आखिर नागर ने मायारानी से ललकार के कहा, "देख मायारानी, तू इस समय मुझसे लड़कर नहीं जीत सकती। यदि मैं तेरे सामने से भाग भी जाऊँ और काशीराज के पास जाकर तेरा सब हाल कह दूँ तो तुझे इसी समय गिरफ्तार करके राजा वीरेन्द्रसिंह के पास भेज देंगे और तुझसे कुछ भी करते-धरते न बन पड़ेगा। तू इस समय यहाँ छिपकर बैठी हुई है, किसी को भी तेरे हाल की खबर होगी तो तेरे लिए अच्छा न होगा। मगर मैं पुरानी दोस्ती पर ध्यान देकर तुझे माफ करती हूँ और साथ ही इसके आज्ञा देती हूँ कि इसी समय यहाँ से भाग जा और जिस तरह अपनी जान बचा सके बचा।"

नागर की बातें सुनकर मायारानी रुक गई और थोड़ी देर तक कुछ सोचती रही, अंत में तिलिस्मी खंजर कमर में रख शीघ्रता से कमरे के बाहर होते से निकल गई। और न मालूम कहाँ चली गई। नागर ने इधर-उधर देखा तो दारोगा को भी न पाया। आखिर मालूम हुआ कि वह भी मौका देखकर भाग निकला, और न जाने कहाँ चला गया।

3

अब जरा उन कैदियों की सुध लेनी चाहिए, जिन्हें नकली दारोगा ने दारोगा वाले बँगले में मैगजीन की बगल वाली कोठरी में वन्द किया था। वास्तव में वह तेजसिंह ही थे, जो दारोगा की सूरत बनाकर मायारानी से मिलने और उसके दिल का भेद लेने जा रहे थे, मगर जब दारोगा वाले बँगले पर पहुँचे तो मायारानी की लौंडियों तथा लाली की जुबानी मालूम हुआ कि दो आदमियों के पीछे-पीछे मायारानी और नागर टीले पर गई हैं। तेजसिंह उस टीले का हाल बखूबी जानते थे और सुरंग की राह बाग के चौथे दरजे में आने-जाने का भेद भी उन्हें बता दिया गया था, इसलिए उन्हें शक हुआ और वे सोचने लगे कि मायारानी जिन दो आदमियों के पीछे-पीछे टीले पर गई है, कहीं वे दोनों हमारी तरफ के ऐयार ही न हों जो बाग के चौथे दर्जे में जाने का इरादा रखते हों, यदि वास्तव में ऐसा हो तो निःसन्देह मायारानी के हाथ से उन्हें कष्ट पहुँचेगा। यह सोचते ही तेजसिंह भी उसी टीले की तरफ रवाना हुए और यही सबब था कि सुरंग में दारोगा की शक्ल बने हुए तेजसिंह की मायारानी से मुलाकात हुई थी और उसके बाद जो कुछ हुआ ऊपर लिखा ही जा चुका है।

मैगजीन की बगल वाली कोठरी में कैदियों को कैद करने के बाद जब खाने-पीने का सामान लेकर तेजसिंह उस तहखाने में गये तो कैदियों को होश में लाकर संक्षेप में सब हाल कह दिया था और अजायबघर की ताली जो मायारानी से वापस ली थी, राजा गोपालसिंह को देकर कहा कि इस ताली की मदद से जहाँ तक हो सके आप लोग यहाँ से जल्द निकल जाइये। गोपालसिंह ने जवाब दिया था कि "यदि यह ताली न मिलती तो भी हम लोग यहाँ से निकल जाते क्योंकि मुझे यहाँ का पूरा-पूरा हाल मालूम है और अब आप हम लोगों की तरफ से निश्चिन्त रहिये, मगर चौबीस घण्टे के अन्दर माया-रानी का साथ न छोड़िये और न उसे कोई काम इस बीच में करने दीजिये, इसके बाद हम लोग स्वयं आपको ढूंढ़ लेंगे।"

इस दारोगा वाले बँगले का हाल केवल तेजसिंह को ही नहीं, बल्कि हमारे और भी कई ऐयारों को मालूम था। क्योंकि कमलिनी ने, जो कुछ भी वह जानती थी, सभी को बता दिया था।

अब जब तेजसिंह दारोगा वाले बँगले से चले तो राजा गोपालसिंह और कमलिनी इत्यादि को ढूंढ़ने के लिए उत्तर की तरफ रवाना हुए। वे जानते थे कि मैगजीन की बगल वाली कोठरी से निकलकर वे लोग उत्तर की तरफ ही किसी ठिकाने बाहर होंगे।

तेजसिंह कोस भर से ज्यादा नहीं गये होंगे कि रात की पहली अँधेरी ने चारों तरफ अपना दखल जमा लिया। जिसके सबब से वे उन लोगों को बखूबी ढूंढ़ न सकते थे और न उन लोगों का ठीक पता ही था, तथापि उन्हें विशेष कष्ट न उठाना पड़ा क्योंकि थोड़ी ही दूर जाने के बाद देवीसिंह से मुलाकात हो गई, जो इन्हीं को ढूंढ़ने के लिए जा

रहे। देवीसिंह के साथ चलकर तेजसिंह थोड़ी ही देर में वहाँ जा पहुँचे, जहाँ गोपालसिंह इत्यादि घने जंगल में एक पेड़ के नीचे बैठे इनके आने की राह देख रहे थे। तेजसिंह को देखते ही सब लोग उठ खड़े हुए और खातिर की तौर पर दो-चार कदम आगे बढ़ आये।

देवीसिंह—देखिए, इन्हें कितना जल्द ढूंढ़ लाया हूँ।

गोपालसिंह—(तेजसिंह से) आइये-आइये।

तेजसिंह—इतनी दूर आये तो क्या दो-चार कदम के लिए रुके रहेंगे?

गोपालसिंह—(हँस के और तेजसिंह का हाथ पकड़ के) आज आप ही की बदौलत हम लोग जीते-जागते यहाँ दिखाई दे रहे हैं।

तेजसिंह—यह सब तो भगवती की कृपा से हुआ और उन्हीं की कृपा से इस समय मैं इसके लिए अच्छी तरह तैयार भी हो रहा हूँ कि मेरी जितनी तारीफ आपके किये हो सके कीजिये और मैं फूला नहीं समाता हुआ चुपचाप बैठा सुनता रहूँ और घण्टों बीत जायें, मगर तिस पर भी आपकी की हुई तारीफ को उस काम के बदले में न समझूँ, जिसकी वजह से आप लोग छूट गये, बल्कि एक दूसरे ही काम के बदले में समझूँ, जिसका पता खुद आप ही की जुबान से लगेगा और यह भी जाना जायगा कि मैं कौन-सा अनूठा काम करके आया हूँ, जिसे खुद नहीं जानता, मगर जिसके बदले में तारीफों की बौछार सहने को चुप्पी का छाता लगाये पहले ही से तैयार था। साथ ही इसके यह भी कह देना अनुचित न होगा कि मैं केवल आप ही को तारीफ करने के लिए मजबूर न करूँगा, बल्कि आपसे ज्यादा कमलिनी और लाड़िली को मेरी तारीफ करनी पड़ेगी।

गोपालसिंह—(कुछ सोचकर और हँसी के ढंग से) अगर गुस्ताखी और बेअदबी में न गिनिये तो मैं पूछ लूँ कि आज आपने भंग के बदले में ताड़ी तो नहीं छानी है?

यद्यपि यह जंगल बहुत ही घना और अंधकारमय हो रहा था, मगर तेजसिंह को साथ लिए देवीसिंह के आने की आहट पाते ही भूतनाथ ने बटुए में से एक छोटी-सी अबरख की लालटेन जो मोड़माड़ के बहुत छोटी और चिपटी कर ली जाती थी, निकाल ली थी और रोशनी के लिए तैयार बैठा था। देवीसिंह की आवाज पाते ही उसने बत्ती बाल कर उजाला कर दिया था, जिससे सभी की सूरत साफ-साफ दिखाई दे रही थी। तेजसिंह की इज्जत के लिए सब कोई उठकर दो-चार कदम आगे बढ़ गये थे, और इसके बाद मायारानी का समाचार जानने की नीयत से सभी ने उन्हें घेर लिया था। तेजसिंह के चेहरे पर खुशी की निशानियाँ मामूली से ज्यादा दिखाई दे रही थीं, इसलिए गोपालसिंह इत्यादि किसी भारी खुशखबरी के सुनने की लालसा मिटाने का उद्योग करना चाहते थे। मगर तेजसिंह की रेशम की गुत्थी की तरह उलझी हुई बातों को सुनकर गोपालसिंह भौचक से हो गये और सोचने लगे कि वह कैसी खुशखबरी है कि जिसे तेजसिंह स्वयं नहीं जानते, बल्कि मुझसे ही सुनकर मुझी को सुनाने और खुश करके तारीफों की बौछार सहने के लिए तैयार हैं, और यही सबब था कि राजा गोपालसिंह ने दिल्लगी के साथ तेजसिंह पर भंग के बदले में ताड़ी पीने की आवाज कसी।

तेजसिंह—(हँसकर) ताड़ी और शराब पीना तो आप लोगों का काम है जिन्ह

अपने-बेगाने की कुछ खबर ही नहीं रहती ! मैं यह बात दिल्लगी से नहीं कहता, बल्कि साबित कर दूँ कि आप भी उन्हीं में अपनी गिनती करा चुके हैं । सच तो यों है कि इस समय आपके पेट में चूहे कूदते होंगे, और यह जानने के लिए आप बहुत ही बेताब होंगे कि मैं आपसे क्या पूछूंगा और क्या कहूँगा । अच्छा आप यह बताइये कि 'लक्ष्मीदेवी' किसका नाम है ?

गोपालसिंह—क्या आप नहीं जानते ? यह तो उसी कम्बख्त मायारानी का नाम है ।

तेजसिंह—बस-बस-बस ! अब आपकी जुबानी मुझे उस बात का पता लग गया जिसे मैं एक भारी खुशखबरी समझता हूँ । अब आप सुनिये, (कुछ रुककर) मगर नहीं, पहले आपसे इनाम पाने का इकरार तो करा ही लेना चाहिए, क्योंकि खाली तारीफों की बौछार से काम न चलेगा ।

गोपालसिंह—मैं आपको कुछ इनाम देने योग्य तो हूँ नहीं, पर यदि आप मुझे इस योग्य समझते ही हैं तो इनाम का निश्चय भी आप ही कर लीजिए, मुझे जी-जान से उसे पूरा करने के लिए तैयार पाइएगा ।

तेजसिंह—(हाथ फैलाकर) अच्छा, तो आप हाथ पर हाथ मारिये, मैं अपना इनाम जब चाहूंगा, माँग लूंगा और आप उस समय उसे देने योग्य होंगे ।

गोपालसिंह—(तेजसिंह के हाथ पर हाथ मार के) लीजिए अब तो कहिए, आप तो हम लोगों की बेचैनी बढ़ाते ही जा रहे हैं ।

तेजसिंह—हाँ-हाँ, सुनिये । (कमलिनी और लाड़िली से) तुम दोनों भी जरा पास आ जाओ और ध्यान देकर सुनो कि मैं क्या कहता हूँ । (हँसकर) आप लोग बड़े खुश होंगे । हाँ, अब आप सब बैठ जाइये ।

गोपालसिंह— (बैठकर) तो आप कहते क्यों नहीं, इतना नखरा-तिल्ला क्यों कर रहे हैं ?

तेजसिंह—इसलिए कि खुशी के बाद आप लोगों को रंज भी होगा और आप लोग एक तरद्दुद में फँस जायेंगे ।

गोपालसिंह—आप तो उलझन पर उलझन डाले जाते हैं और कुछ कहते भी नहीं ।

तेजसिंह—कहता तो हूँ, सुनिए—यह जो मायारानी है वह असल में आपकी स्त्री लक्ष्मीदेवी नहीं है ।

इतना सुनते ही राजा गोपालसिंह, कमलिनी और लाड़िली को हद से ज्यादा खुशी हुई, यहाँ तक कि दम रुकने लगा और थोड़ी देर तक कुछ कहने की सामर्थ्य न रह गयी । इसके बाद अपनी अवस्था ठीक करके कमलिनी ने कहा ।

कमलिनी—ओफ, आज मेरे सिर से बड़े भारी कलंक का टीका मिटा । मैं इस ताने के सोच में मरी जाती थी कि तुम्हारी बहिन जब इतनी दुष्ट है तो तुम न जाने कैसी होगी !

गोपालसिंह—मैं जिस खयाल से लोगों को अपना मुँह दिखाने से हिचकिचाता

था आज वह जाता रहा। अब मैं खुशी से जमानिया के राजकर्मचारियों के सामने मायारानी का इजहार लूंगा, मगर यह तो कहिए कि इस बात का निश्चय आपको क्योंकर हुआ ?

तेजसिंह—मैं संक्षेप में आपसे यह कह चुका हूँ कि जब मैं दारोगा की सूरत में सुरंग के अन्दर पहुँचा और मायारानी से मुलाकात हुई, तो आपको होश में लाने के लिए मायारानी से खूब हुज्जत हुई।

गोपालसिंह—हाँ, यह आप कह चुके हैं।

तेजसिंह—उस समय जो-जो बातें मायारानी से हुईं वह तो पीछे कहूँगा, मगर मायारानी की थोड़ी-सी बात, जिसे मैंने इस तरह अक्षर-अक्षर खूब याद कर रखा है जैसे पाठशाला के लड़के अपना पाठ याद कर रखते हैं, आप लोगों से कहता हूँ, उसी से आप लोग उस भेद का मतलब निकाल लेंगे। मायारानी ने मुझे समझाने की रीति से कहा था कि—

"यद्यपि आपको इस बात का रंज है कि मैंने गोपालसिंह के साथ दगा की और यह भेद आपसे छिपा रखा, मगर आप भी तो जरा पुरानी बातों को याद कीजिए ! खास करके उस अंधेरी रात की बात, जिसमें मेरी शादी और पुतले की बदलौअल हुई थी ! आप ही ने तो मुझे यहाँ तक पहुँचाया ! अब अगर मेरी दुर्दशा होगी तो क्या आप बच जायेंगे ? मान लिया जाय कि अगर गोपालसिंह को बचा लें तो लक्ष्मीदेवी का बच के निकल जाना आपके लिए दुःखदायी न होगा ? और जब इस बात की खबर गोपालसिंह को लगेगी, तो क्या वह आपको छोड़ देगा ? बेशक जो कुछ आज तक मैंने किया है, सब आप ही का कसूर समझा जायेगा। मैंने इसे इस लिए कैद किया था कि लक्ष्मीदेवी वाला भेद इसे मालूम न होने पावे या इसे इस बात का पता न लग जाय कि दारोगा की करतूत ने लक्ष्मीदेवी की जगह..."

बस इतना कहकर वह चुप हो गई और मैंने भी इस भेद को सोचते हुए यह समझकर, कि कहीं बात-ही-बात में मेरा अनजानपन न झलक जावे और मायारानी को यह न मालूम हो जाय कि मैं वास्तव में दारोगा नहीं हूँ, इन बातों का कुछ जवाब देना उचित न जाना और चुप हो रहा।

गोपालसिंह—बस-बस ! मायारानी के मुँह से निकली हुई इतनी ही बातें सबूत के लिए काफी हैं और बेशक वह कम्बख्त मेरी स्त्री नहीं है। अब मुझे ब्याह के दिन की कुछ बातें धीरे-धीरे याद आ रही हैं जो इस बात को और भी मजबूत कर रही हैं और इसमें भी कोई शक नहीं कि हरामखोर दारोगा ही सारे सब फसादों की जड़ है।

कमलिनी—मगर उस हरामजादी की बातों से, जैसा कि आपने अभी कहा, यह भी साबित होता है कि दारोगा की मदद से अपना काम पूरा करने के बाद वह मेरी बहिन लक्ष्मीदेवी की जान लेना चाहती थी, मगर वह किसी तरह बच के निकल गई।

तेजसिंह—बेशक ऐसा ही है और मेरा दिल गवाही देता है कि लक्ष्मीदेवी अभी तक जीती है। यदि उसकी खोज की जाय तो वह अवश्य मिलेगी।

गोपालसिंह—मेरा भी दिल यही गवाही देता है, मगर अफ़सोस की बात है कि उसने मुझ तक पहुँचने या इस भेद को खोलने के लिए कुछ उद्योग न किया।

कमलिनी—यह आप कैसे कह सकते हैं कि उसने कोई उद्योग न किया होगा? कदाचित् उसका उद्योग सफल न हुआ हो? इसके अतिरिक्त मायारानी की और दारोगा की चालाकी कुछ इतनी कच्ची न थी कि किसी की कलई चल सकती, फिर उस बेचारी का क्या कसूर? जब मैं उसकी सगी बहिन होकर धोखे में फँस गई और इतने दिनों तक उसके साथ रही तो दूसरे की क्या बात है? उसके ब्याह के चार वर्ष बाद जब मैं माता-पिता के मर जाने के कारण लाड़िली को साथ ले कर आपके घर आई तो मायारानी की सूरत देखते ही मुझे कुछ शक पड़ा, परन्तु इस खयाल ने उस शक को जमने न दिया कि कदाचित् चार वर्ष के अन्तर ने उसकी सूरत-शक्ल में इतना फर्क डाल दिया हो और यह आश्चर्य की बात है भी नहीं, बहुतेरी कुँआरी लड़कियों की सूरत-शक्ल ब्याह होने के तीन या चार वर्ष बाद ही ऐसी बदल जाती है कि पहचानना कठिन होता है।

तेजसिंह—प्राय: ऐसा होता है, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है!

कमलिनी—और कम्बख्त ने हम दोनों बहिनों की उतनी ही खातिर की जितनी कोई बहिन किसी बहिन की कर सकती है। मगर यह बात भी तभी तक रही जब तक उसने (गोपालसिंह की तरफ इशारा करके) इनको कैद नहीं कर लिया।

गोपालसिंह—मेरे साथ तो रस्म और रिवाज ने दगा की! ब्याह के पहले मैंने उसे देखा ही न था, फिर पहचानता क्योंकर?

कमलिनी—बेशक बड़ी चालाकी खेली गई। हाय, अब मैं बहिन लक्ष्मीदेवी को कहाँ ढूँढ़ूँ और कैसे पाऊँ?

तेजसिंह—जिस ढंग से मायारानी ने मुझे समझाया था, उससे तो मालूम होता है कि यह चालाकी करने के साथ ही दारोगा ने लक्ष्मीदेवी को कैद करके किसी गुप्त स्थान में रख दिया था, मगर कुछ दिनों के बाद वह किसी ढंग से छूट के निकल गई। शायद इसी सबब से वह कमलिनी या लाड़िली से न मिल सकी हो।

गोपालसिंह—बिना दारोगा को सताये इसका पूरा हाल मालूम नहीं होगा।

तेजसिंह—दारोगा तो रोहतासगढ़ में ही कैद है।

इतने ही में एक तरफ से आवाज आई, "दारोगा अब रोहतासगढ़ में कैद नहीं है, निकल भागा।" तेजसिंह ने घूमकर देखा तो भैरोंसिह पर निगाह पड़ी। भैरोंसिह ने पिता के चरण छूए और राजा गोपालसिंह को भी प्रणाम किया; इसके बाद आज्ञा पाकर बैठ गया।

तेजसिंह—(भैरोंसिह से) क्या तुम बड़ी देर से खड़े-खड़े हम लोगों की बातें सुन रहे थे? हम लोग बातों में इतना डूबे हुए थे कि तुम्हारा आना जरा भी मालूम न हुआ।

भैरोंसिह—जी नहीं, मैं अभी-अभी चला आ रहा हूँ और सिवाय इस आखिरी बात के, जिसका जवाब दिया है, आप लोगों की और कोई बात मैंने नहीं सुनी।

तेजसिंह—तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ कि हम लोग यहाँ हैं?

भैरोंसिह—मैं तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में जा रहा था, मगर जब दारोगा वाले बँगले के पास पहुँचा तो उसकी बिगड़ी हुई अवस्था देखकर जी व्याकुल हो गया, क्योंकि इस बात का विश्वास करने में किसी तरह का शक नहीं हो सकता था कि उस बँगले की बरबादी का सबब बारूद और सुरंग है और यह कार्रवाई बेशक हमारे दुश्मनों की है। अस्तु, तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में जाने के पहले इस मामले का असल हाल जानने की इच्छा हुई और किसी से मिलने की आशा में मैं इस जंगल में घूमने लगा। मगर इस लालटेन की रोशनी ने, जो यहाँ बल रही है, मुझे ज्यादा देर तक नहीं भटकने दिया। अब सबसे पहले मैं उस बँगले की बरबादी का सबब जानना चाहता हूँ। यदि आपको मालूम हो तो कहिये।

तेजसिंह—मैं भी यही चाहता हूँ कि राजा वीरेन्द्रसिंह का कुशल-क्षेम पूछने के बाद जो कुछ कहना है, सो तुमसे कहूँ और उस बँगले की कायापलट का सबब तुमसे बयान करूँ, क्योंकि इस समय एक बड़ा ही कठिन काम तुम्हारे सुपुर्द किया जायेगा जो कितना जरूरी है सो उस बँगले का हाल सुनते ही तुम्हें मालूम हो जायगा।

भैरोंसिह—राजा वीरेन्द्रसिंह बहुत अच्छी तरह हैं। इधर का हाल सुनकर उन्हें बहुत क्रोध आता है और चुपचाप बैठे रहने की इच्छा नहीं होती, परन्तु आपकी वह बात उन्हें बराबर याद आती रहती है जो उनसे बिदा होने के समय अपनी कसम का बोझ देकर आप कह आये थे। निःसन्देह वे आपको सच्चे दिल से चाहते हैं और यही सबब है कि बहुत कुछ कर सकने की शक्ति रखकर भी कुछ नहीं कर रहे हैं।

तेजसिंह—हाँ, मैं उनसे यह ताकीद कर आया था कि चुपचाप चुनार जाकर बैठिए और देखिए कि हम लोग क्या करते हैं। तो क्या राजा वीरेन्द्रसिंह चुनार गये?

भैरोंसिह—जी हाँ, वे चुनार गये और मैं अबकी दफे चुनार ही से चला आ रहा हूँ। रोहतासगढ़ में केवल ज्योतिषीजी हैं और उन्हें राज्य-सम्बन्धी कार्यों से बहुत कम फुरसत मिलती है। इसी सबब से दारोगा धोखा देकर न मालूम किस तरह कैद से निकल भागा। जब यह खबर चुनार पहुँची तो यह सोचकर, कि भविष्य में कोई गड़बड़ न होने पाये, चुन्नीलाल ऐयार रोहतासगढ़ भेजे गये और जब तक कोई दूसरा हुक्म न पहुँचे, उन्हें बराबर रोहतासगढ़ ही में रहने की आज्ञा हुई और मैं इधर का हालचाल लेने के लिए भेजा गया।

तेजसिंह—अच्छा, तो मैं दारोगा वाले बँगले की बरबादी का सबब बयान करता हूँ।

इसके बाद तेजसिंह ने सब हाल अर्थात् अपना सुरंग मे जाना, मायारानी से मुलाकात और बातचीत, राजा गोपालसिंह और कमलिनी इत्यादि का गिरफ्तार होना और फिर उन्हें छुड़ाना, तथा दारोगा वाले बँगले के उड़ने का सबब और इसके बाद का पूरा-पूरा हाल कह सुनाया जिसे भैरोंसिह बड़े गौर से सुनता रहा और जब बातें पूरी हो गयीं तो बोला—

भैरोंसिह – यह एक विचित्र बात मालूम हुई कि मायारानी वास्तव में कमलिनी की बहिन नहीं है। (कुछ सोचकर) मगर मैं समझता हूँ कि असल बातों का पूरा-पूरा

पता लगाने के लिए उसे बहुत जल्द गिरफ्तार करना चाहिए, केवल उसी को नहीं बल्कि कम्बख्त दारोगा को भी ढूंढ़ निकालना चाहिए।

गोपालसिंह—बेशक ऐसा ही होना चाहिए, और अब मैं भी अपने को गुप्त रखना नहीं चाहता जैसा कि आज के पहले सोचे हुए था।

तेजसिंह—सबसे पहले यह तय कर लेना चाहिए कि अब हम लोगों को करना क्या है! (गोपालसिंह से) आप अपनी राय दीजिए।

गोपालसिंह—राय और बहस में तो घण्टों बीत जायँगे, इसलिए यह काम भी आप ही की मर्जी पर छोड़ा, जो कहिए वही किया जाय।

तेजसिंह—(कुछ सोचकर) अच्छा तो फिर आप कमलिनी और लाड़िली को लेकर जमानिया जाइए और तिलिस्मी बाग में पहुँचकर अपने को प्रकट कर दीजिए, मैं समझता हूँ कि वहाँ आपका विपक्षी (खिलाफ) कोई भी न होगा।

गोपालसिंह—आप खिलाफ कह रहे हैं! मेरे नौकरों को मुझसे मिलने की खुशी है, अपने नौकरों में मैं अपने को प्रकट भी कर चुका हूँ!

तेजसिंह—(ताज्जुब से) यह कब? मैं तो इसका हाल कुछ भी नहीं जानता!

गोपालसिंह—इधर आपसे मुलाकात ही कब हुई जो आप जानते? कमलिनी, लाड़िली, भूतनाथ और देवीसिंह को यह मालूम है।

तेजसिंह—खैर, कह तो जाइए कि क्या हुआ?

गोपालसिंह—बड़ा ही मजा हुआ। मैं आपसे खुलासा कह दूँ सुनिये। एक दिन रात के समय मैं भूतनाथ को साथ लिए गुप्त राह से तिलिस्मी बाग के उस दर्जे में पहुँचा जिसमें मायारानी सो रही थी। हम दोनों नकाब डाले हुए थे। उस समय इसके सिवाय और कोई काम न कर सके कि कुछ रुपये देकर एक मालिन को इस बात पर राजी करें कि कल रात के समय तू चुपके से चोर दरवाजा खोल दीजो क्योंकि कमलिनी इस बाग में आना चाहती हैं। यह काम इस मतलब से नहीं किया गया कि वास्तव में कमलिनी वहाँ जाने वाली थी बल्कि इस मतलब से था कि किसी तरह से कमलिनी के जाने की झूठी खबर मायारानी को मालूम हो जाय और वह कमलिनी को गिरफ्तार करने के लिए पहले से तैयार रहे जिसके बदले में हम और भूतनाथ जाने वाले थे, क्योंकि आगे जो कुछ मैं कहूँगा उससे मालूम होगा कि वह मालिन तो इस भेद को छिपाया चाहती थी और हम लोग हर तरह से प्रकट करके अपने को गिरफ्तार कराया चाहते थे। इसी सबब से दूसरे दिन आधी रात के समय हम दोनों फिर उस बाग में उसी राह से पहुँचे जिसका हाल मेरे सिवाय और कोई भी नहीं जानता—बाग ही में नहीं, बल्कि उस कमरे में पहुँचे जिसमें मायारानी अकेली सो रही थी। उस समय वहाँ केवल एक हांडी जल रही थी जिसे जाते ही मैंने बुझा दिया और इसके बाद दरवाजे में ताला लगा दिया जो अपने साथ ले गया था। यद्यपि दरवाजे पर पहरा पड़ रहा था मगर मैं दरवाजे की राह से नहीं गया था बल्कि एक सुरंग की राह से गया था जिसका सिरा उसी कोठरी में निकलता था। उस कोठरी की दीवार आबनूसी लकड़ी की थी और इस बात का गुमान भी नहीं हो सकता था कि दीवार में कोई दरवाजा है। यह दरवाजा केवल एक तख्ते

के हट जाने से खुलता है और तख्ता एक कमानी के सहारे पर है। खैर ताला बन्द कर देने के बाद मैंने जानबूझ कर एक शीशा जमीन पर गिरा दिया जिसकी आवाज से मायारानी चौंक उठी। अँधेरे के कारण सूरत तो दिखाई नहीं देती थी इसलिए मैं नहीं कह सकता कि उसने क्या-क्या किया मगर इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह बहुत ही घबराई होगी और वह घबराहट उसकी उस समय और भी बढ़ गई होगी, जब दरवाजे के पास पहुँच कर उसने देखा होगा कि वहाँ ताला बन्द है। मैं पैर पटक-पटककर कमरे में घूमने लगा। थोड़ी देर में टटोलता हुआ मायारानी के पास पहुँचकर मैंने उसकी कलाई पकड़ ली और जब वह चिल्लाई तो एक तमाचा जड़ के अलग हो गया। तब मैंने एक एक चोर लालटेन जलाई जो मेरे पास थी। उस समय तक मायारानी डर और मार खाने के कारण बेहोश हो चुकी थी। मैंने दरवाजे का ताला खोल दिया और उसे उठा कर चारपाई पर लिटा देने के बाद वहाँ से चलता बना। यह कार्रवाई इसलिए की गई थी कि मायारानी घबराकर बाहर निकले और उसकी लौंडियाँ इस घटना का पता लगाने के लिए चारों तरफ घूमें जिससे आगे हम लोग जो कुछ करेंगे उसकी खबर माया-रानी को लग जाय। इसके बाद मैं और भूतनाथ एक नियत स्थान पर उस मालिन से जाकर मिले और उससे बोले कि आज तो कमलिनी नहीं आ सकी मगर कल आधी रात को जरूर आवेगी, चोर दरवाजा खुला रखियो! बेशक इस बात की खबर माया-रानी को लग गई जैसा कि हम लोग चाहते थे, क्योंकि दूसरे दिन जब हम लोग चोर दरवाजे की राह बाग में पहुँचे तो हम लोगों को गिरफ्तार करने के लिए कई आदमी मुस्तैद थे।

ऊपर लिखे हुए बयान से पाठक इतना तो जरूर समझ गये होंगे कि मायारानी के बाग में पहुँचने वाले दोनों नकाबपोश जिनका हाल सन्तति के नौवें भाग के चौथे और सातवें बयान में लिख गया है ये ही राजा गोपालसिंह और भूतनाथ थे, इसलिए उन दोनों ने और जो कुछ काम किया उसे इस जगह दोहरा कर लिखना हम इसलिए उचित नहीं समझते कि वह हाल पाठकगण पढ़ ही चुके हैं और उन्हें याद होगा। अस्तु यहाँ केवल इतना ही कह देना काफी है कि ये दोनों गोपालसिंह और भूतनाथ थे और राजा गोपाल-सिंह ने ही कोठरी के अन्दर बारी-बारी से पाँच-पाँच आदमियों को बुलाकर अपनी सूरत दिखाई और कुछ थोड़ा-सा हाल भी कहा था।

राजा गोपालसिंह ने यह सब पूरा-पूरा हाल तेजसिंह और भैरोसिंह से कहा और देर तक वे सुन-सुनकर हँसते रहे। इसके बाद देवीसिंह और भूतनाथ ने भी अपनी कार्रवाई का हाल कहा और फिर इस विषय में बातचीत होने लगी कि अब क्या करना चाहिए।

तेजसिंह—(गोपालसिंह से) अब आप खुले दिल से अपने महल में जाकर राज्य का काम कर सकते हैं इसलिए अब जो कुछ आपको करना है, हुकूमत के साथ कीजिए। ईश्वर की कृपा से अब आपको किसी तरह की चिन्ता न रही इसलिए इधर-उधर…

गोपालसिंह—यह आप नहीं कह सकते कि अब मुझे किसी तरह की चिन्ता नहीं, मगर हाँ बहुत-सी बातें जिनके सबब से मैं अपने महल में जाने से हिचकता था जाती

रहीं इसलिए मेरी भी राय है कि कमलिनी और लाड़िली को साथ लेकर मैं अपने घर जाऊँ और वहाँ से दोनों कुमारों को मदद पहुंचाने का उद्योग करूँ जो इस समय तिलिस्म के अन्दर जा पहुँचे हैं, क्योंकि यद्यपि तिलिस्म का फैसला उन दोनों के हाथों होना ब्रह्मा की लकीर-सा अटल हो रहा है तथापि मेरी मदद पहुँचने से उन्हें विशेष कष्ट न उठाना पड़ेगा। इसके साथ मैं यह भी चाहता हूँ कि किशोरी और कामिनी को भी अपने तिलिस्मी बाग ही में बुलाकर रक्खूं···

कमलिनी—जी नहीं, मैं तिलिस्मी बाग में तब तक नहीं जाऊँगी जब तक कम्बख्त मायारानी से अपना बदला न ले लूँगी और अपनी बहिन को, यदि वह अभी तक इस दुनिया में है, न ढूंढ़ निकालूंगी। किशोरी और कामिनी का भी आपके यहाँ रहना उचित नहीं है इसे आप अच्छी तरह गौर करके सोच लें। उनकी तरफ से आप निश्चिन्त रहें, तालाब वाले मकान में जो आज कल मेरे दखल में है, उन्हें किसी तरह की तकलीफ न होगी। मैं हाथ जोड़ के प्रार्थना करती हूँ कि आप मेरी प्रार्थना स्वीकार करें और मुझे अपनी राय पर छोड़ दें।

गोपालसिंह—(कुछ सोचकर) तुम्हारी बातों का बहुत-सा हिस्सा सही और वाजिब है मगर बेइज्जती के साथ तुम्हारा इधर-उधर मारे-मारे फिरना मुझे पसन्द नहीं। यद्यपि तुम्हें ऐयारी का शौक है और तुम इस फन को अच्छी तरह जानती हो मगर मेरी और इसी के साथ किसी और की इज्जत पर भी ध्यान देना उचित है। यह बात मैं तुम्हारी गुप्त इच्छा को अच्छी तरह समझकर कहता हूँ। मैं तुम्हारी अभिलाषा में बाधक नहीं होता बल्कि उसे उत्तम और योग्य समझता हूँ ··

कमलिनी—(कुछ शर्मा कर) उस दिन आप जो चाहें मुझे सजा दें जिस दिन किसी की जुबानी, जो ऐयार या उन लोगों में से न हो जिनके सामने मैं हो सकती हूँ; आप यह सुन पावें कि कमलिनी या लाड़िली की सूरत किसी ने देख ली या दोनों ने कोई ऐसा काम किया जो बेइज्जती या बदनामी से सम्बन्ध रखता है।

गोपालसिंह—(तेजसिंह से) आपकी क्या राय है ?

तेजसिंह—मैं इस विषय में कुछ भी न बोलूंगा, हाँ, इतना अवश्य कहूँगा कि यदि आप कमलिनी की प्रार्थना स्वीकार कर लेंगे तो मैं अपने दो ऐयारों को इनकी हिफाजत के लिए छोड़ दूंगा।

गोपालसिंह—जब आप ऐसा कहते हैं तो मुझे कमलिनी की बात माननी पड़ी। खैर, थोड़े से सिपाही इनकी मदद के लिए मैं भी मुकर्रर कर दूंगा।

कमलिनी—मुझे उससे ज्यादा आदमियों की जरूरत नहीं है जितने मेरे पास थे, हाँ आप उन लोगों को एक चिट्ठी मेरे जाने के बाद अवश्य लिख दें कि 'हम इस बात से खुश हैं कि तुम इतने दिनों से कमलिनी के साथ रहे और रहोगे।' हाँ इसके साथ एक काम और भी चाहती हूँ।

गोपालसिंह—वह क्या ?

कमलिनी—जब मैंने अपना किस्सा आपसे बयान किया था तो यह भी कहा था कि मायारानी ने तिलिस्मी मकान के जरिए से कुमार और उनके ऐयारों के साथ-ही-

साथ कई बहादुर सिपाहियों को गिरफ्तार कर लिया था ।

गोपालसिंह—हाँ, मुझे याद है, जिस मकान में बारी-बारी हँसकर वे लोग कूद गये थे ।

कमलिनी—जी हाँ, कुमार और उनके ऐयार तो छूट गये, मगर मेरे सिपाहियों का अभी तक पता नहीं है, बेशक वे भी तिलिस्मी बाग में किसी ठिकाने कैद होंगे, जिसका पता आप लगा सकते हैं। मुझे आज तक यह न मालूम हुआ कि उनके हँसने और कूद पड़ने का क्या कारण था । इस विषय में कुमार से भी कुछ पूछने का मौका न मिला ।

गोपालसिंह—मैं वादा करता हूँ कि उन आदमियों को यदि वे मारे नहीं गए हैं तो अवश्य ढूंढ़ निकालूंगा, और इसका कारण कि वे लोग हँसते-हँसते उस मकान के अन्दर क्यों कूद पड़े सो तुम इसी समय देवीसिंह से भी पूछ सकती हो जो यहाँ मौजूद हैं और उन हँसते-हँसते कूद पड़ने वालों में शरीक थे ।

देवीसिंह—माफ कीजिए, मैं उस विषय में तब तक कुछ भी न कहूँगा जब तक इन्द्रजीतसिंह मेरे सामने मौजूद न होंगे, क्योंकि उन्होंने उस बात को छिपाने के लिए मुझे सख्त ताकीद की है बल्कि कसम दे रखी है ।

कमलिनी—यह और भी आश्चर्य की बात है, खैर, जाने दीजिए, फिर देखा जायेगा । हाँ, आपने मेरी प्रार्थना स्वीकार की ? लाड़िली मेरे साथ रहेगी ?

गोपालसिंह—हाँ, स्वीकार की । मगर देखना, जो कुछ करना होशियारी ही से करना और मुझे बराबर खबर देती रहना ।

तेजसिंह—मैं प्रतिज्ञानुसार अपने दो ऐयार तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ । जिन्हें तुम चाहो अपनी मदद के लिए ले लो ।

कमलिनी—अच्छा, तो आप कृपाकर भूतनाथ और देवीसिंह को दे दीजिए ।

तेजसिंह—भूतनाथ तो तुम्हारा ही ऐयार है उस पर अभी मेरा कोई अख्तियार नहीं है, वह अवश्य तुम्हारे साथ रहेगा, उसके अतिरिक्त दो ऐयार तुम और ले लो ।

कमलिनी—निःसन्देह आपका मुझ पर बड़ा अनुग्रह है, मगर मुझे ज्यादा ऐयारों की आवश्यकता नहीं है ।

तेजसिंह—खैर, यही सही फिर देखा जायेगा । (देवीसिंह से) अच्छा, तो तुम कमलिनी का काम करो और इनके साथ रहो ।

देवीसिंह—बहुत अच्छा ।

तेजसिंह—खैर, तो अब सभा विसर्जित होनी चाहिए, देखिये आसमान का रंग बदल गया । कमलिनी और लाड़िली के लिए सवारी का क्या इन्तजाम होगा ?

कमलिनी—थोड़ी दूर जाकर मैं रास्ते में इसका इन्तजाम कर लूंगी आप बेफिक्र रहिये ।

थोड़ी-सी और बातचीत के बाद सब कोई उठ खड़े हुए । कमलिनी, लाड़िली भूतनाथ तथा देवीसिंह ने दक्खिन का रास्ता पकड़ा और कुछ दूर जाने के बाद सूर्य भगवान की लालिमा दिखाई देने के पहले ही एक जंगल में गायब हो गये ।

4

रात पहर भर से ज्यादा जा चुकी है। आज की रात मामूली से ज्यादा अँधेरी मालूम होती है क्योंकि आबोताब से चमक लेकर पाँचों सवारों में गिनती करने वाले तारों की थोड़ी रोशनी को दिन भर तेजी के साथ चले हुए हवा के झपेटों की सहायता से ऊपर की तरफ उठे हुए गर्द-गुबार ने अपना गँदला शामियाना खींचकर जमीन तक आने से रोक रखा है। दिन भर के काम-काज से थके और आँधी के झोंकों तथा गर्द-गुबार से दुःखी आदमी इस समय सड़कों पर घूमना पसन्द न करके अपने-अपने झोंपड़ों, मकानों और महलों में आराम कर रहे हैं इसलिए काशीपुरी के बाहरी प्रान्त की सड़कों पर कुछ विचित्र-सा सन्नाटा छाया हुआ है। केवल एक आदमी शहर की हद पर बहने वाली बर्ना नदी पार करके त्रिलोचन महादेव की तरफ तेजी के साथ बढ़ा चला जाता है और उसे टोकने या देखने वाला कोई भी नहीं। यह आदमी आधी रात के पहले ही मनोरमा के मकान के पास जा पहुँचा, जिसमें इस समय केवल नागर रहती थी। यहाँ पहुँच वह सीधे फाटक की तरफ चला गया। देखा कि फाटक बन्द है मगर उसकी छोटी खिड़की अभी तक खुली हुई है और उस राह से झाँक कर देखने से मालूम होता है कि भीतर की तरफ दो आदमी टहल-टहल कर पहरा दे रहे हैं।

वह आदमी बेधड़क छोटी खिड़की की राह से भीतर घुस गया और दोनों पहरा देनेवालों से बिना साहब-सलामत किये या बिना कुछ कहे अपनी जेब टटोलने लगा। एक पहरे वाले ने ताज्जुब में आकर उससे पूछा, "तुम कौन हो और क्या चाहते हो?" इसके जवाब में आगन्तुक ने एक चिट्ठी उसके हाथ पर रखकर कहा, "यह चिट्ठी बहुत जल्द उसके हाथ में दो, जो इस मकान में सबका सरदार मौजूद हो।"

सिपाही—पहले तुम अपना नाम बताओ और यह कहो कि तुम किसके भेजे हुए आये हो और इस चिट्ठी का मतलब क्या है?

आगन्तुक—तुम अपनी बातों का जवाब मुझसे नहीं पा सकते और न इस चिट्ठी के पहुँचाने में विलम्ब कर सकते हो, ताज्जुब नहीं कि तुम सफाई के साथ यह कहो कि मकान मालिक इस समय आराम के साथ खर्राटे ले रहा है और हम उसे जगा नहीं सकते मगर याद रखो कि यह समय बड़ा ही नाजुक बीत रहा है और एक पल भी व्यर्थ जाने देने लायक नही है, अगर तुम मुझसे कुछ पूछताछ करोगे तो मैं बिना कुछ जवाब दिये यहाँ से चला जाऊँगा और इसका नतीज़ा बहुत बुरा होगा, क्योंकि सवेरा होने से पहले इस मकान में रहने वाले जितने हैं सब-के-सब यमलोक को सिधार जायेंगे और सब कसूर तुम्हारा ही समझा जायेगा। खैर मुझे इन बातों से क्या मतलब, लो मैं जाता हूँ।

सिपाही—सुनो-सुनो, लौटे क्यों जाते हो, मैं यह चिट्ठी अभी अपने मालिक के पास पहुँचाए देता हूँ, मगर यह तो बताओ कि ऐसी कौन-सी आफत आने वाली है और उसका क्या सबब है?

आगन्तुक—मैं पहले ही कह चुका हूँ कि तुम्हारी बातों का कुछ जवाब नहीं

दिया जायेगा, तुमने पुनः पूछने में जितना समय नष्ट किया, समझ रखो कि उतने समय में दो आदमियों का बेड़ा पार हो गया। बस मैं फिर कहता हूँ कि अभी चले जाओ, मैं जो कुछ कहता हूँ तुम लोगों के भले ही के लिए कहता हूँ।

इस आये हुए आदमी की धमकी लिए हुए जल्दबाजी ने उस पहरे वाले को बल्कि और सिपाहियों को भी जो उस समय वहाँ मौजूद थे और उसकी बातें सुन रहे थे बदहवास कर दिया—फिर उससे कुछ पूछने की हिम्मत किसी की न पड़ी। वह सिपाही जिसके हाथ में चिट्ठी दी गई थी कुछ सोचता-विचारता बाग के अन्दर वाले मकान की तरफ रवाना हुआ और नजरों से गायब होकर आधे घण्टे तक न आया। तब तक वह आदमी जो चिट्ठी देने आया था फाटक ही में एक किनारे चुपचाप खड़ा रहा। सिपाहियों ने कुछ पूछना चाहा, मगर उसने किसी की बात का जवाब न दिया और सिर नीचा किये इस ढंग से जमीन को देखता रहा जैसे बड़े गौर और फिक्र में कुछ विचार कर रहा हो।

आधे घण्टे के बाद जब वह सिपाही लौट कर आया तो उसने आगन्तुक से कहा, "चलिए आपको नागर जी बुला रही हैं।"

आगन्तुक—(ताज्जुब से) नागरजी ! क्या इस समय इस मकान में वही मालिक की तौर पर हैं ? मैं तो मायारानी से मिलने की आशा रखता था !

सिपाही—इस समय नागरजी के सिवाय यहाँ और मालिक लोग नहीं हैं। क्या तुम्हारी चिट्ठी इस लायक न थी कि नागरजी के हाथ में दी जाती ? क्योंकि मैंने देखा कि चिट्ठी पढ़ने के साथ ही फिक्र और तरद्दुद ने उनकी सूरत बदल दी।

आगन्तुक—नहीं कोई विशेष हानि नहीं है, खैर चलो मैं चलता हूँ।

वह आगन्तुक सिपाही के पीछे-पीछे उस मकान की तरफ रवाना हुआ, जो इस बाग के बीचोंबीच में था और क्यारियों के बीच बनी हुई बारीक सड़कों पर घूमता हुआ मकान के पिछली तरफ जा पहुँचा। इस जगह मकान के दोनों तरफ दो कोठरियाँ थीं, दाहिनी तरफ वाली कोठरी तो बन्द थी मगर बायीं तरफ वाली कोठरी का दरवाजा खुला हुआ था और भीतर चिराग जल रहा था। दोनों आदमी उस कोठरी के भीतर गये। वहाँ ऊपर की छत पर जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी थीं, उसी राह से दोनों ऊपर की छत पर चले गये और एक कमरे में पहुँचे जहाँ सिवाय सफेद फर्श के और कोई सामान जमीन पर न था। सामने की दीवार में दो जोड़ी दीवारगीरों की थीं जिनमें मोटी-मोटी मोमबत्तियाँ जल रही थीं और उनकी रोशनी से इस कमरे में अच्छी तरह उजाला हो रहा था। इस कमरे में बायीं तरफ एक कोठरी थी जिसके दरवाजे पर लाल साटन का पर्दा पड़ा हुआ था। वह आदमी उसी पर्दे की तरफ मुँह करके खड़ा हो गया, क्योंकि इस कमरे में सिवाय इन दो आदमियों के और कोई भी न था।

इन दोनों आदमियों को बहुत थोड़ी देर तक वहाँ खड़े रहना पड़ा और इसी बीच में उस आदमी को जो चिट्ठी लाया था मालूम हो गया कि पर्दे के अन्दर से किसी ने उसे अच्छी तरह देखा है। थोड़ी देर में पर्दे के अन्दर से दो लौंड़ियाँ चुस्त और साफ पोशाक पहने हाथ में नंगी तलवार लिए बाहर निकलीं और इसके बाद उसी तरह की बेशकीमत पोशाक पहने नागर भी पर्दे के बाहर आई। उसकी कमर में वही तिलिस्मी

खंजर था और उँगली में उसके जोड़ की अँगूठी मौजूद थी। नागर ने उस आये हुए आदमी की तरफ देखकर कहा—"तुम किसके भेजे हुए आये हो और तुम्हारा क्या नाम है? मुझे खयाल आता है कि मैंने तुम्हें कहीं देखा है मगर याद नहीं पड़ता कि कब और कहाँ!"

इस आदमी की उम्र लगभग चालीस या पैंतालीस वर्ष के होगी। इसका कद लम्बा और शरीर दुबला मगर गठीला, रंग गोरा, चेहरा खूबसूरत और रोबीला था। बड़ी-बड़ी मूंछें दोनों किनारों से ऐंठी और घूमी हुई थीं। आँखें बड़ी और इस समय कुछ लाल थीं। पोशाक यद्यपि बेशकीमत न थी मगर साफ और अच्छे ढंग की थी। चुस्त पायजामा घुटने के चार अंगुल नीचे तक का, चपकन और उस पर से एक ढीला चोगा पहने और सिर पर भारी मुँड़ासा बाँधे हुए था। सरसरी निगाह से देखने पर वह कोई छोटा या बदरोब आदमी नहीं कहा जा सकता था।

नागर की बात सुन कर वह आदमी कुछ मुस्कराया और बोला, "केवल इतना ही नहीं, आप अभी बहुत कुछ मुझसे पूछेंगी मगर मैं किसी के सामने आपकी बातों का जवाब नहीं दिया चाहता, क्योंकि मैं एक नाजुक काम के लिए आया हूँ। यदि किसी तरह का खौफ न हो तो (सिपाही और लौंडियों की तरफ इशारा करके) इनको हट जाने के लिए कहिए और फिर जो कुछ चाहे पूछिए, मैं साफ जवाब दूंगा।"

उस आदमी की बात सुन कर नागर ने अपने तिलिस्मी खंजर की तरफ देखा जो कमर से लटक रहा था, मानो उस खंजरपर उसे बहुत भरोसा है और इसके बाद सिपाही तथा लौंडियों को वहाँ से हट जाने का इशारा करके बोली, "नहीं-नहीं, मुझे तुमसे खौफ खाने का कोई सबब मालूम नहीं होता।"

आदमी—(सिपाही और लौंडियों के हट जाने के बाद) हाँ, अब जो कुछ आपको पूछना हो पूछिए, मैं जवाब दूंगा।

नागर—मैं फिर पूछती हूँ कि तुम किसके भेजे हुए आये हो और तुम्हारा नाम क्या है? मैंने तुम्हें कहीं-न-कहीं अवश्य देखा है।

आदमी—मेरा नाम श्यामलाल है और तुमने मुझे उस समय देखा होगा जब तुम्हारा नाम 'मोतीजान' था और तुम बाजार में कोठे के ऊपर बैठ कर अपने कटाक्षों से सैकड़ों को घायल किया करती थीं। रंडियों के लिए यह मामूली बात है कि जब विशेष दौलत हो जाती है, तब वे उन दोस्तों को भूल जाती हैं, जिनसे किसी जमाने में थोड़ी रकम पाई हो, चाहे वह उस समय कितना ही गाढ़ा मुलाकाती क्यों न रह चुका हो। मैं यह ताने के ढंग पर नहीं कहता, बल्कि इस उम्मीद पर कहता हूँ कि पुरानी मुलाकात की याद कर मुझे माफ करोगी क्योंकि इस समय तुम एक ऊँचे दर्जे पर हो।

नागर—(नाक-भौं सिकोड़ कर, जिससे मालूम होता था कि श्यामलाल की बातों से वह कुछ चिढ़ गई है) हाँ खैर, मैंने तुम्हें पहचाना। अच्छा अब बताओ कि तुम क्या चाहते हो?

श्यामलाल—(मुस्करा कर) बस यही चाहता हूँ कि तुम मुझे विदा करो और चुपचाप यहाँ से चले जाने दो।

नागर—नहीं-नहीं, मेरा यह मतलब नहीं है । मैं उस चिट्ठी का भेद जानना चाहती हूँ, जो मेरे सिपाही के हाथ तुमने भेजी है और जिसमें केवल इतना ही लिखा है कि 'लक्ष्मीदेवी के प्रकट हो जाने से अनर्थ हो गया, अब मायारानी और उसके पक्षपातियों को एक दम भाग कर अपनी जान बचाना उचित है ।' (चिट्ठी दिखा कर) देखो, यही है न !

श्यामलाल—हाँ, यही है, मगर इसमें यह भी लिखा है कि 'नहीं तो बारह घंटे के बाद फिर कुछ करते-धरते न बन पड़ेगा ।'

नागर—हाँ ठीक है, यह भी लिखा है । मगर यह बताओ कि लक्ष्मीदेवी कौन है और उसके प्रकट हो जाने से हमारा क्या नुकसान है ?

श्यामलाल—(ताज्जुब से नागर का मुँह देख कर) क्या तुम लक्ष्मीदेवी वाला भेद नहीं जानती हो ? क्या यह भेद मायारानी ने तुमसे छिपा रखा है ? खैर, अगर यह बात है, तो मैं भी इस भेद को खोलना उचित नहीं समझता । अच्छा, यह तो बताओ मायारानी कहाँ है, मैं उससे कुछ कहना चाहता हूँ ।

नागर—क्या मायारानी तुम्हारे सामने हो सकती है ? क्या तुम नहीं जानते कि उनका दर्जा कितना बड़ा है, और उन्हें कोई गैर मर्द नहीं देख सकता !

श्यामलाल—मैं सब कुछ जानता हूँ और यह भी जानता हूँ कि वह मुझसे पर्दा न करेगी ।

नागर—शायद ऐसा ही हो, लेकिन इस समय वह किसी काम से गई हैं, और यहाँ नहीं हैं ।

श्यामलाल—अगर ऐसा ही है, तो मैं भी जाता हूँ और तुमसे कहे जाता हूँ कि जहाँ तक हो सके जल्द भाग कर अपनी जान बचाओ ।

यह कह कर श्यामलाल पीछे की तरफ लौटा मगर नागर ने उसे रोक कर कहा, "सुनो तुम अभी कह चुके हो कि हमारे पुराने दोस्त हो, तो क्या तुम मुझ पर कृपा करके और पुरानी दोस्ती को याद करके लक्ष्मीदेवी वाला भेद मुझे नहीं बता सकते ? क्या तुम साफ-साफ नहीं कह सकते कि हम लोगों पर क्या आफत आने वाली है ?"

श्यामलाल—बेशक मैं तुम्हारी दोस्ती का इकरार कर चुका हूँ और अब भी यह कहता हूँ कि अभी तक तुम्हारी मुहब्बत ने मेरा साथ नहीं छोड़ा है मगर (कुछ सोच कर) अच्छा लो, मैं एक चिट्ठी देता हूँ, इसके पढ़ने से तुम्हें सब हाल मालूम हो जायगा मगर कोठरी के दरवाजे पर पड़े हुए परदे की तरफ देख कर) मुझे शक है कि इस परदे के अन्दर से कोई लौंडी छिप कर न देखती हो ।

नागर—नहीं-नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता । लो, मैं तुम्हारा शक दूर किये देती हूँ ।

यह कह कर नागर ने आगे बढ़कर वह पर्दा किनारे कर दिया और कोठरी का दरवाजा बन्द कर लिया । श्यामलाल ने नागर की तरफ चिट्ठी बढ़ा कर कहा, "देखो, मैं निश्चय करके आया था कि यह चिट्ठी सिवाय मायारानी के और किसी के हाथ में न दूंगा, क्योंकि उसे मैं दिल से चाहता हूँ और उसी की खातिर इतना कष्ट उठा कर

आया भी हूँ, सच तो यह है कि वह भी मुझे जी-जान से मानती और प्यार करती है।"

नागर—अफसोस और ताज्जुब की बात यह है कि तुम मायारानी की शान में ऐसी बात कह रहे हो। निःसन्देह तुम झूठे और दगाबाज हो। मायारानी को क्या पड़ी है कि वह तुमसे मुहब्बत करें? क्या वह भी मेरी तरह से गन्धर्व कुल को रौनक देने वाली हैं?

श्यामलाल—(हँस कर और चिट्ठी वाला हाथ अपनी तरफ खींच कर) हः-हः-हः, जब तुम असल बातों को जानती ही नहीं हो तो मेरी बातें क्योंकर समझ सकती हो? तुम मायारानी की सखी कहलाने का दावा रखती हो, मगर मैं देखता हूँ कि मायारानी तुम्हें एक लौंडी के बराबर भी नहीं समझती। यही सबब है कि उसने अपना असली हाल तुमसे कुछ भी नहीं कहा। अफसोस, तुम्हें इतनी खबर भी नहीं है कि मायारानी मेरी सगी साली है।

नागर—(चौंक कर) मायारानी तुम्हारी साली हैं! और लक्ष्मीदेवी?

श्यामलाल—लक्ष्मीदेवी वह है जिसकी जगह मायारानी मेरी और दारोगा की मदद···मगर नहीं, ओफ, मैं भूलता हूँ, जब मायारानी ने ही खुद अपना हाल तुमसे छिपाया, तो मैं क्यों कहूँ? अच्छा, मायारानी आवे तो कह देना कि श्यामलाल आया था और कह गया है कि मैंने लक्ष्मीदेवी और गोपालसिंह का बन्दोबस्त कर लिया है। अब तू बेफिक्र होकर बैठ और जहाँ तक हो सके, मुझसे जल्द मिल। लेकिन अफसोस तो यह है कि इस मकान में रहने वाले आज गिरफ्तार कर लिए जायेंगे और मायारानी को यहाँ आने का मौका ही न मिलेगा। तब मैं यह सब बातें तुमसे क्यों कह रहा हूँ। अच्छा खैर, जाने दो, जहाँ तक हो जल्द भाग कर तुम अपनी जान बचाओ और जो कुछ दौलत यहाँ से निकाल कर ले जा सको, लेती जाओ। लो, अब मैं जाता हूँ।

नागर—सुनो-सुनो, वह चिट्ठी जो तुम मुझे दिखाना चाहते थे, सो तो दिखा दो, और इसके बाद मेरी एक बात का जवाब देकर तब जाओ।

श्यामलाल—(कुछ सोच कर और नागर की तरफ चिट्ठी बढ़ा कर) खैर, लो, तुम ही पढ़ लो, देखो तो सही अपनी साली की खातिर से कैसे खुशबूदार अतरों से बसी हुई चिट्ठी तैयार करके मैं लाया था। अच्छा कोई हर्ज नहीं, किसी जमाने में तुम भी मुझे खुश कर चुकी हो। इसके पढ़ने से आने वाली आफत का पूरा-पूरा हाल मिल जायगा। मैं यह चिट्ठी इसलिए लिख लाया था कि शायद किसी सबब से मैं स्वयं मायारानी से न मिल सकूँगा, तो यह चिट्ठी भेज कर उसे आने वाली आफत से होशियार कर दूँगा और फिर वह स्वयं मुझसे मिल लेगी, मगर अफसोस! उससे तो मुलाकात ही न हुई। खैर, इस चिट्ठी को पढ़ो, मगर बैठ जाओ और मुझे भी बैठने के लिए कहो, क्योंकि मैं खड़ा-खड़ा थक गया हूँ।

नागर ने अपने हाथ में चिट्ठी लेकर श्यामलाल को बैठने के लिए कहा और खुद भी उसी जगह बैठ कर लिफाफा खोला। लिफाफे और चिट्ठी का कागज खुशबूदार चीजों से ऐसा बसा हुआ था कि लिफाफा हाथ में लेने और खोलने के साथ ही नागर का जी खुश हो गया। ऐसी मीठी और भली खुशबू उसके दिमाग में शायद आज तक न

पहुँची होगी। चिट्ठी पढ़ने के पहले ही उसने कई दफे उसे सूँघा और आँखें बन्द करके 'वाह-वाह' कहने लगी। मगर उस खुशबू का काम केवल इतना ही न था कि दिल और दिमाग को खुश करे बल्कि उसमें मजेदार और आनन्द देने वाली बेहोशी पैदा करने का भी गुण था, इसलिए चिट्ठी पढ़ने के पहले ही नागर के दिमाग की ताकत जिससे चेतना और विचार शक्ति का सम्बन्ध है बिल्कुल जाती रही और वह बेहोश होकर दीवार के साथ उठँग गई। उसकी हालत देख कर श्यामलाल आगे बढ़ा और पास जाकर बिना कुछ सोचे-विचारे उसकी उँगली से वह अँगूठी निकाल ली जो तिलिस्मी खंजर के जोड़ की और मामूली तौर की बिल्कुल सादी थी। अँगूठी लेकर श्यामलाल ने मुँह में रख ली और उसी रंग की दूसरी अँगूठी अपनी जेब से निकाल कर नागर की उँगली में पहना दी। इसके बाद अपनी कमर से एक खंजर निकाला जो चपकन और अबा के अन्दर छिपा हुआ था। यह खंजर नागर की कमर में खोंसा और उसकी कमर से तिलिस्मी खंजर लेकर अपनी कमर में चपकन के अन्दर छिपा लिया। श्यामलाल ये दोनों चीजें निःसन्देह इसी काम के लिए तैयार करके ले आया था, क्योंकि वह खंजर और अँगूठी ठीक तिलिस्मी खंजर और अँगूठी के रंग-ढंग के ही थे, बहुत गौर करने पर भी किसी तरह का शक नहीं हो सकता था।

खंजर और अँगूठी बदल लेने के बाद श्यामलाल ने वह खुशबूदार चिट्ठी भी नागर के हाथ से ले ली और उसके बदले में उसी तरह की दूसरी चिट्ठी उसके हाथ में रख दी। इस चिट्ठी में से भी उसी तरह की खुशबू आ रही थी। फर्क सिर्फ इतना ही था कि उसकी खुशबू बेहोशी पैदा करने वाली थी और इसकी खुशबू बेहोशी दूर करने की ताकत रखती थी अर्थात् लखलखे का काम देती थी।

इस काम से छुट्टी पाकर श्यामलाल पीछे हटा और अपने ठिकाने बैठ कर नागर के चैतन्य होने की राह देखने लगा। थोड़ी ही देर में नागर चैतन्य हो गई और आँखें खोल कर श्यामलाल की तरफ देख और उस चिट्ठी को पुनः सूँघ कर बोली, "बेशक खुशबू बहुत ही अच्छी और प्रिय मालूम होती है, मगर मुझे क्या हो गया था! क्या मैं बेहोश हो गई थी?"

श्यामलाल—(हँस कर) वाह क्या खूब! केवल एक दफे आँख बन्द करके खोल देने का ही अर्थ अगर बेहोशी है, तो बस हो चुका, क्योंकि मेरी समझ में तुमने चार पल से ज्यादे देर तक आँख बन्द नहीं की, सो भी इस खुशबू से पैदा हुई मस्ती के सबब था।

नागर—(मुस्करा कर) अगर तुम मायारानी के बहनोई न होते तो मैं कुछ कह बैठती, क्योंकि ऐसे समय में जब कि जान बचाने की फिक्र पड़ रही है जैसा कि तुम स्वयं कह रहे हो तो इस तरह की दिल्लगी अच्छी नहीं मालूम पड़ती। अच्छा, अब मैं इस चिट्ठी को पढ़ कर देखती हूँ कि तुमने क्या लिखा है। (चिट्ठी को पढ़ कर) वाह-वाह, इसका मतलब तो मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता, मालूम होता है कि बहुत-सी पहेलियाँ लिख कर रखी हुई हैं!

श्यामलाल—बस-बस, अब मुझे और भी निश्चय हो गया कि मायारानी तुम लोगों से मुँह-देखी मुहब्बत रखती है क्योंकि अगर वह तुम लोगों की कदर करती तो

अपना भेद जरूर कहती और अपना भेद कहती तो इस चिट्ठी का मतलब भी तुम जरूर समझ जातीं—मगर उसने अदना से अदना भेद भी छिपा रखा जिसके बताने में कोई हानि न थी ।

नागर—ठीक है, मुझे भी यही विश्वास होता है । मगर जब मुझ पर दया करके यह कह रहे हो कि जल्दी यहाँ से भाग कर अपनी जान बचाओ, तो कृपा कर इसका सबब भी बता दो, क्योंकि मुझे कुछ भी नहीं सूझता कि मैं भाग कर कहाँ जाऊँ और इस जायदाद के बचाने का क्या उद्योग करूँ ?

श्यामलाल—इसका जवाब मैं कुछ भी नहीं दे सकता, क्योंकि मैं अगर तुम्हें कोई तरकीब बताऊँ या अपने साथ चलने के लिए कहूँगा तो तुम्हें मुझ पर अविश्वास होगा क्योंकि तुम बहुत दिनों के बाद मुझे आज देख रही हो सो भी ऐसे समय में जब तुम्हारा दिल राजकीय विषयों की उलझन में हद से ज्यादा उलझा हुआ है, परन्तु इतना कह देने में मेरी कोई हानि भी नहीं है कि राजा गोपालसिंह के लिखे बमूजिम काशिराज इस मकान को अपने कब्जे में कर लेने के बाद यहाँ के रहने वालों को कैद कर लेंगे । गोपालसिंह ने सुना था कि मायारानी इस मकान में टिकी हुई है । इसलिए यह कार्रवाई और भी जोर के साथ की गई, मगर इतनी खैरियत है कि अभी तक वह आदमी इस शहर में नहीं पहुँचा जिसे राजा गोपालसिंह ने चिट्ठी देकर काशिराज के पास भेजा है । हाँ आशा है कि सवेरा होते-होते वह शहर में आ पहुँचेगा । (कुछ सोच कर) क्या करें, आज तुम्हें देख कर तुम्हारी मुहब्बत फिर से नई हो गई । खैर, अगर तुम चाहोगी तो मैं तुम्हारी कुछ मदद इस समय भी कर सकूँगा ।

नागर—अगर इस समय तुम मेरी सहायता करोगे तो मैं जन्म भर तुम्हारा अहसान न भूलूँगी । मैं कसम खाकर कहती हूँ कि मैं तुम्हारी हो जाऊँगी और जो कुछ तुम कहोगे वही करूँगी ।

श्यामलाल—अच्छा तो अब मैं बयान करता हूँ, कि इस समय तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ । सुनो और अच्छी तरह ध्यान देकर सुनो । मैं उस आदमी को अच्छी तरह पहचानता हूँ, जो गोपालसिंह की चिट्ठी लेकर काशिराज के पास आ रहा है, मुझसे उसकी बहुत दिनों की जान-पहचान है । मैं उम्मीद करता हूँ कि सवेरा होते ही वह आदमी बरना के किनारे आ पहुँचेगा । यदि वह किसी तरह गिरफ्तार कर लिया जाय तो बेशक कई दिनों तक तुम्हें सोचने-विचारने का मौका मिलेगा क्योंकि राजा गोपालसिंह कई दिनों तक बैठे राह देखेंगे कि हमारा आदमी पत्र का जवाब लेकर अब आता होगा ।

नागर—बात तो बहुत अच्छी है । क्या तुम उसे गिरफ्तार नहीं कर सकते ?

श्यामलाल—(हँसकर) वाह, वाह, वाह, कहते शर्म तो नहीं आती ! हाँ, इतना कर सकता हूँ कि तुम थोड़े-से सिपाही अपने साथ लेकर इस समय मेरे साथ चलो, और शहर के बाहर होकर रास्ता रोक बैठो, जब वह आदमी आवेगा तो मैं इशारे से बता दूँगा कि यही है, फिर जो तुम्हारे जी में आवे करना । मगर, मैं उसका सामना न करूँगा, क्योंकि अभी कह चुका हूँ कि मेरी उसकी जान-पहचान बहुत पुरानी है ।

नागर—जब तुम मुझ पर कृपा करके इतना काम कर सकते हो तो मेरे जाने की क्या जरूरत है ? मैं थोड़े से सिपाही तुम्हारे साथ कर देती हूँ, समय पड़ने पर तुम···

श्यामलाल—बस बस बस, अब मत बोलो, मैं समझ गया कि तुम्हारी नीयत साफ नहीं है । मैं खुदगर्जों का साथ देना उचित नहीं समझता, केवल तुम्हारे ही बारे में नहीं बल्कि मायारानी के बारे में भी जो मेरी साली होती है मेरा यही खयाल है कि वह परले सिरे की खुदगर्ज है, दूसरे को फँसा कर अपना काम निकालना और आप अलग रहना खूब जानती है, मगर मैं क्या करूँ अपनी स्त्री से लाचार हूँ जो मुझसे भी ज्यादा मायारानी के साथ मुहब्बत रखती है और मैं उसे जाने से ज्यादा चाहता हूँ ।

श्यामलाल की बातचीत कुछ अजब ढंग की थी जिसमें हर जगह से सचाई की बू पाई जाती थी । बात करने के समय वह अपने चेहरे के उतार-चढ़ाव को ऐसा दुरुस्त रखता था कि होशियार से होशियार आदमी को भी उस पर किसी तरह का शक नहीं हो सकता था । नागर को उसकी बातों पर पूरा विश्वास हो गया और वह इस उम्मीद पर कि राजा गोपालसिंह के भेजे हुए आदमी को अवश्य गिरफ्तार कर लेगी, अपने साथ केवल थोड़े सिपाहियों को लेकर जाने के लिए तैयार हो गई । इसके बाद उसने अपनी कमर से लटकते हुए तिलिस्मी खंजर पर पुनः गम्भीर निगाह डाली, मानो अपने सिपाहियों से ज्यादे उस खंजर पर भरोसा रखती है मगर उसे इस बात का गुमान भी न था कि वह खंजर बड़ी खूबी के साथ बदल दिया गया है ।

नागर ने अपनी समझ में श्यामलाल को बहुत कुछ कह-सुनकर मदद के लिए राजी किया और आप उसके साथ जाने के लिए तैयार हो गई । उसने श्यामलाल से आधी घड़ी की छुट्टी ली और उस कोठरी के अन्दर चली गई जिसके दरवाजे पर पर्दा पड़ा हुआ था । आधी घड़ी के बाद वह बाहर आई और श्यामलाल से बोली, "अब मैं हर तरह से तैयार हो गई, आप चलिए ।" इस समय भी नागर उसी पोशाक में थी जिसमें घड़ी भर पहले देखी गयी थी, फर्क इतना ही था कि एक चादर उसके हाथ में थी जिसे फाटक के बाहर होते ही अपने को सिर से पैर तक ढाँक लेने की नीयत से वह अपने साथ लाई थी ।

श्यामलाल को साथ लिए हुए नागर नीचे उतरी और चक्कर खाती हुई सदर फाटक के पास पहुँची । यहाँ उसने स्याह चादर में अपने को छिपा लिया और फाटक के बाहर रवाना हुई ! श्यामलाल ने इस समय मामूली पहरा देने वाले सिपाहियों के अतिरिक्त आठ सिपाही हर्बों से दुरुस्त वहाँ मौजूद पाये जो फाटक के बाहर होते ही नागर और श्यामलाल के पीछे-पीछे रवाना हुए, नागर को इसके लिए कुछ कहने की जरूरत न पड़ी जिससे श्यामलाल समझ गया कि आधी घड़ी की छुट्टी में नागर ने यह इन्तजाम किया है ।

ये दसों आदमी गंगा के किनारे उतरे और वहाँ से तेजी के साथ काशी के छोर पर बहने वाली बरना नदी की तरफ रवाना होकर आधे घण्टे से कुछ ज्यादा देर में वहाँ जा पहुँचे । इस समय रात आधी से ज्यादा जा चुकी थी और चन्द्रदेव उदय हो रहे थे । बरना नदी पार करने के लिए नदी से बीस गज ऊँचा एक मजबूत पुल बना हुआ था ।

इस पुल के दोनों बगल मुसाफिरों के आराम के लिए बारह दालान बने हुए थे और उसी जगह से पुल के नीचे उतरने के लिए छोटी-छोटी सीढ़ियाँ भी बनी हुई थीं। ये दसों आदमी जब उस पर पहुँचे तो नागर ने श्यामलाल से पूछा, "कहिये इसी पार ठहरने का इरादा है या उस पार चल कर ?" जिसके जवाब में श्यामलाल ने कहा, "बिना उस पार गये ठीक न होगा।"

अब ये लोग पुल के उस पार रवाना हुए, मगर आधी दूर से ज्यादे न गये होंगे कि सामने से आते हुए दो घोड़ों की आहट मिलने लगी जिसे सुनते ही श्यामलाल ने कहा, "लीजिए, हम लोगों को ज्यादे ठहरना न पड़ा। निःसन्देह ये वे ही सवार हैं जिन्हें हम लोग गिरफ्तार किया चाहते हैं। बस अब जल्दी करना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि ये लोग तेजी के साथ निकल जायँ क्योंकि ये घोड़ों पर सवार हैं और हम लोग पैदल।"

नागर ने अपनी कमर से खंजर निकाल लिया जिसे वह तिलिस्मी समझे हुए थी और इसके बाद अपने आदमियों की तरफ देख के बोली, "देखो ये सवार जाने न पावें, इन्हीं को गिरफ्तार करने के लिए हम लोग आये हैं!"

बात की बात में वे दोनों सवार पास आ गये। नागर के सिपाही म्यान से तलवार निकाल कर खड़े हो गए और ललकार कर बोले, "खबरदार, आगे मत बढ़ना!" मगर इतने में ही मालूम हुआ कि पीछे की तरफ से भी कई आदमी दौड़े आ रहे हैं। उस समय नागर घबड़ा गई और उसे निश्चय हो गया कि अब यहाँ से बच कर निकल जाना मुश्किल है क्योंकि हमलोग दोनों तरफ से घिर गये, हाँ तिलिस्मी खंजर की बदौलत अलबत्ते बच सकते हैं। नागर ने तिलिस्मी खंजर का (जो वास्तव में असली न था) कब्जा दबाया मगर किसी तरह की चमक पैदा न हुई। तब उसने फिर कर श्यामलाल की तरफ देखा मगर उसे कहीं न पाया। अब उसके ताज्जुब की हद न रही और घबराहट के मारे वह ऐसी बौखला गई कि थोड़ी देर तक तन-बदन की भी सुध जाती रही। इस बीच में वे आदमी भी जो पीछे से आ रहे थे आ पहुँचे और नागर के सिपाहियों पर टूट पड़े। वे लोग भी गिनती में उतने ही थे जितने नागर के सिपाही थे, मगर नागर के सिपाही इतने दिलावर और मजबूत न थे कि उन आठों के मुकाबले में ठहर सकते। नागर डर के मारे चिल्ला कर एक किनारे हट गई और भागना चाहती थी मगर मौका न मिला। वे दोनों सवार नागर की आवाज सुन कर पहचान गये कि वह औरत है। एक ने घोड़े से उतर कर उसे गोद में उठा लिया और उसके हाथ से खंजर छीन कर उसे दूसरे सवार के आगे बैठा दिया। इसके बाद खुद भी अपने घोड़े पर सवार होकर उसने ऊँची आवाज में न मालूम किससे पूछा—"यहाँ केवल एक नागर ही औरत है या और भी कोई औरत है ?" इसके जवाब में किसी ने कुछ दूर से पुकार कर कहा, "अगर कोई औरत हाथ आ गई तो ले भागो और समझो कि यही नागर है।" इस जवाब को नागर ने भी सुना और पहचान गई कि यह श्यामलाल की आवाज है। अपने सवाल का जवाब पाते ही वे सवार उत्तर की तरफ रवाना हो गये।

इस समय चन्द्रदेव पूरी तरह से निकल कर अपनी सुफेद चाँदनी चारों तरफ फैला रहे थे। नागर के सिपाहियों को जब मालूम हुआ कि नागर गिरफ्तार कर ली गई तो उनकी ताकत और भी जाती रही। दो सिपाही तो जख्मी होकर जमीन पर गिर पड़े और बाकी छह अपनी जान लेकर भागे। उस समय श्यामलाल भी आकर उन आठों वहादुरों के पास खड़ा हो गया और उन लोगों की तरफ देख के बोला, "शाबाश, तुम लोगों ने अपना काम वड़ी खूबी के साथ पूरा किया, मैं बहुत खुश हूँ, अब बताओ, मेरे लिए घोड़ा कहाँ है ?"

श्यामलाल को देखते ही उन लोगों ने हाथ जोड़ कर सिर झुकाया और एक यह कह कर उत्तर की तरफ बढ़ा कि 'ठहरिये, मैं घोड़ा लेकर अभी आता हूँ।' थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा और जब वह आदमी घोड़ा लेकर आ गया तो श्यामलाल घोड़े पर सवार हो गया तथा उन आठों से बोला, "अच्छा अब तुम लोग रमापुर जाओ, मैं अपना काम करके तुमसे मिलूँगा।"

श्यामलाल भी उत्तर की तरफ रवाना हुआ और पुल के पार होकर उसने अपने घोड़े को तेज किया। जब लगभग एक कोस के गया तो देखा कि वे दोनों सवार, जो नागर को उठा लाये थे, सड़क पर खड़े हैं। उन लोगों को देखकर श्यामलाल ने कहा, "शाबाश मेरे दोस्तो, तुम लोगों की जितनी तारीफ की जाय थोड़ी है। अच्छा, अब यहाँ ठहरने का मौका नहीं है, चले चलो।"

5

अब हम अपने पाठकों को उस तिलिस्मी मकान की तरफ ले चलते हैं जो कमलिनी के अधिकार में है अर्थात् वह तालाब के बीचोंबीच वाला मकान जिसमें कुछ दिन तक कुँअर इन्द्रजीतसिंह को कमलिनी के बस में रहना पड़ा था।

आजकल इस मकान में कमलिनी की प्यारी सखी तारा रहती है। नौकर, मजदूर प्यादे, सिपाही सब उसी के अधीन हैं क्योंकि वे लोग इस बात को बखूबी जानते हैं कि कमलिनी तारा को अपनी सगी बहिन से बढ़ कर मानती है और तारा के कहे को टालना कदापि पसन्द नहीं करती। कमलिनी के कहे अनुसार तारा कुछ दिनों तक कमलिनी ही की सूरत बनाकर उस मकान में रही और इस बीच में वहाँ के नौकर-चाकरों को इसका गुमान भी न हुआ कि कमलिनी कहीं बाहर गई और यह तारा है, बल्कि उन लोगों को यही विश्वास था कि तारा को कमलिनी ने किसी काम के लिए भेजा है, मगर उस दिन से जब से कमलिनी ने मनोरमा को गिरफ्तार किया था और अपने तिलिस्मी मकान में भिजवा दिया था, तारा अपनी असली सूरत में ही रहती है और समय-समय पर कमलिनी के हाल-चाल की खबर भी उसे मिला करती है।

देवीसिंह और भूतनाथ को साथ लिए हुए राजा गोपालसिंह ने जब किशोरी

और कामिनी को कैद से छुड़ाया था तो उन दोनों को भी कमलिनी की इच्छानुसार इसी तिलिस्मी मकान में पहुँचा दिया था। पहुँचाते समय देवीसिंह और भूतनाथ को साथ लिए हुए स्वयं राजा गोपालसिंह किशोरी तथा कामिनी के संग आये थे। उस समय का थोड़ा-सा हाल यहाँ लिखना उचित जान पड़ता है।

किशोरी और कामिनी को लिए हुए जब राजा गोपालसिंह उस मकान के पास पहुँचे तो खबर करने के लिए भूतनाथ को तारा के पास भेजा। उस समय तारा किसी काम के लिए तालाब के बाहर आई हुई थी जब उसकी भूतनाथ से मुलाकात हुई। भूतनाथ को देखकर तारा खुश हुई और उससे कमलिनी का समाचार पूछा जिसके जवाब में भूतनाथ ने उस दिन से जिस दिन कमलिनी तारा से आखिरी मर्तबे जुदा हुई थी आज तक का हाल कह सुनाया जिसमें राजा गोपालसिंह का भी हाल था और अन्त में यह भी कहा कि "किशोरी और कामिनी को कैद से छुड़ा कर कमलिनी की इच्छानुसार उन दोनों को यहाँ पहुँचा देने के लिए स्वयं राजा गोपालसिंह आये हैं, थोड़ी ही दूर पर हैं और तुमसे मिलना चाहते हैं।"

तारा को इसका गुमान भी न था कि राजा गोपालसिंह अभी तक जीते हैं या मायारानी के कैदखाने में हैं। आज भूतनाथ की जुबानी यह हाल सुनकर खुशी के मारे तारा की अजब हालत हो गई। भूतनाथ ने उसके चेहरे की तरफ देखकर गौर किया तो मालूम हुआ कि राजा गोपालसिंह के छूटने की खुशी बनिस्बत कमलिनी के तारा को बहुत ज्यादा हुई, बल्कि वह सोचने लगा कि ताज्जुब नहीं कि खुशी के मारे तारा की जान निकल जाय, और वास्तव में यही बात थी भी। तारा के खूबसूरत भोले चेहरे पर हँसी तो साफ दिखाई दे रही थी, मगर साथ ही हँसी के गला फँस जाने के कारण उसकी आवाज रुक-सी गई थी, वह भूतनाथ से कुछ कहना चाहती थी, मगर कह नहीं सकती थी। आँखों से आँसुओं की बूँदें गिर रही थीं और बदन में पल-पल भर में हलकी कँपकँपी हो रही थी।

जब भूतनाथ ने तारा की यह हालत देखी तो उसे बड़ा ही ताज्जुब हुआ, मगर यह सोचकर उसने अपने ताज्जुब को दूर किया कि अक्सर ऐसा भी हुआ करता है कि अगर घर के स्वामी पर आई हुई कोई बला टल जाती है तो बनिस्बत सगे रिश्तेदारों के ताबेदारों को विशेष खुशी होती है। मगर इतना सोचने पर भी भूतनाथ की यह इच्छा हुई कि तारा की इस बढ़ी हुई खुशी को किसी तरह कम कर देना चाहिए, नहीं तो ताज्जुब नहीं कि इसे किसी तरह का शारीरिक कष्ट उठाना पड़े। इसी विचार से भूतनाथ ने तारा की तरफ देख के कहा—

भूतनाथ—राजा गोपालसिंह छूट गये सही, मगर अभी उनकी जिन्दगी का भरोसा न करना चाहिए।

तारा—(चौंककर) सो क्यों? सो क्यों?

भूतनाथ—यह बात मैं इस विचार से कहता हूँ कि मायारानी कुछ न कुछ बखेड़ा जरूर मचावेगी और इसके अतिरिक्त तमाम रिआया को राजा गोपालसिंह के मरने का विश्वास हो चुका है, जिसे कई वर्ष बीत चुके हैं, अब देखना चाहिए उन लोगों

के दिल में क्या बात पैदा होती है। खैर, जो होगा देखा जाएगा, अब तुम विलम्ब न करो, वे राह देख रहे होंगे।

भूतनाथ की बातों का जवाब देने का तारा को मौका न मिला और वह बिना कुछ कहे भूतनाथ के साथ रवाना हुई। राजा गोपालसिंह बहुत दूर न थे। इसलिए आधी घड़ी से कम ही देर में तारा वहाँ पहुँच गई और उसने अपनी आँखों से गोपालसिंह, किशोरी, कामिनी और देवीसिंह को देखा। तारा के दिल में खुशी का दरिया जोश के साथ लहरें ले रहा था। निःसन्देह उसके दिल में इतनी ज्यादा खुशी थी कि उसके समाने की जगह अन्दर न थी और बहुतायत के कारण रोमांच द्वारा तारा के एक-एक रोंगटे से खुशी बाहर हो रही थी। तारा के दिल में तरह-तरह के खयाल पैदा हो रहे थे और वह अपने को बहुत सम्हाल रही थी। तिस पर भी राजा गोपालसिंह के पास पहुँचते ही वह उनके कदमों पर गिर पड़ी।

गोपालसिंह—(तारा को जल्दी से उठाकर) तारा, मैं जानता हूँ, तुम्हें मेरे छूटने की हद से ज्यादा खुशी हुई है, मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ खासकर इस सबब से कि तुमने कमलिनी का साथ बड़ी नेकनीयती और मुहब्बत के साथ दिया और कमलिनी के ही सबब से मेरी जान बची, नहीं तो मैं मर ही चुका था, बल्कि यों कहना चाहिए कि मुझे मरे हुए पाँच वर्ष बीत चुके थे। (लम्बी साँस लेकर) ईश्वर की भी विचित्र माया है। अच्छा, अब जो मैं कहता हूँ, उसे सुनो। क्योंकि मैं यहाँ ज्यादा देर तक नहीं ठहर सकता।

तारा—(ताज्जुब के साथ) तो क्या आप अभी यहाँ से चले जायेंगे? मकान में न चलेंगे?

गोपालसिंह—नहीं, मुझे इतना समय नहीं। मैं बहुत जल्द कुँअर इन्द्रजीतसिंह, आनन्दसिंह और कमलिनी के पास पहुँचना चाहता हूँ।

तारासिंह—क्या वे लोग अभी निश्चिन्त नहीं हुए?

गोपालसिंह—हुए, मगर वैसे नहीं, जैसे होने चाहिए।

गोपालसिंह की बात सुनकर तारा गौर में पड़ गई और देर तक कुछ सोचती रही। इसके बाद उसने सिर उठाया और कहा, "अच्छा कहिये, क्या आज्ञा होती है? (किशोरी और कामिनी की तरफ इशारा करके) इनके छूटने की मुझे बहुत खुशी हुई, इनके लिए मुद्दत तक मुझे रोहतासगढ़ में छिपकर रहना पड़ा था, अब तो कुछ दिन तक यहाँ रहेंगी न?"

गोपालसिंह—हाँ, बेशक रहेंगी। इन्हीं दोनों को पहुँचाने के लिए मैं आया हूँ। इन दोनों को मैं तुम्हारे हवाले करता हूँ और ताकीद के साथ कहता हूँ कि कमलिनी के लौट आने तक इन्हें बड़ी खातिर के साथ रखना, देखो, किसी तरह की तकलीफ न होने पावे। आशा है कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह, आनन्दसिंह और कमलिनी को साथ लिए हुए मैं बहुत जल्द यहाँ आऊँगा।

तारा—मैं इन दोनों को अपनी जान से ज्यादा मानूँगी। क्या मजाल कि मेरी जान रहते इन्हें किसी तरह की तकलीफ हो।

गोपालसिंह—बस यही चाहिए। हाँ, एक बात और भी कहनी है !

तारा—वह क्या ?

गोपालसिंह—मेरा हाल अभी तुम किसी से न कहना, क्योंकि अभी मैं गुप्त रह कर कई काम करना चाहता हूँ, इसी सबब से मैं तुम्हारे मकान में न आया, तुम्हें यहाँ बुलाकर जो कुछ कहना था कहा।

ताला—बहुत अच्छा, जैसा आपने कहा है वैसा ही होगा।

गोपालसिंह—अच्छा तो अब हम लोग जाते हैं।

किशोरी और कामिनी को तारा उस तिलिस्मी मकान में लिवा लाई। भूतनाथ और देवीसिंह पहुँचाने के लिए साथ आये और फिर चले गये।

तारा ने किशोरी और कामिनी को बड़ी इज्जत और खातिरदारी के साथ रखा। इन बेचारियों को अपनी जिन्दगी में तरह-तरह की तकलीफें उठानी पड़ीं, इसलिए बहुत दुबली, दुःखी और कमजोर हो रही थीं। तरह-तरह की चिन्ताओं ने उन्हें अधमरा कर डाला था। अब मुद्दत के बाद यह दिन नसीब हुआ कि वे दोनों बेफिक्री के साथ अपनी हालत पर गौर करें और तारा को उसके मोहब्बताने बर्ताव पर धन्यवाद दें।

किशोरी पर कामिनी का और कामिनी पर किशोरी का बड़ा ही स्नेह था, इस समय दोनों एक साथ हैं और यह भी सुन चुकी हैं कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनंदसिंह मायारानी की कैद से छूट गये और अब कुशलपूर्वक हैं, इसलिए एक प्रकार की प्रसन्नता ने उनकी जिन्दगी की मुर्झाई हुई लता पर आशा रूपी पानी के दो-चार छींटे डाल दिये थे और अब उन्हें ईश्वर की कृपा पर बहुत-कुछ भरोसा हो चला था, परन्तु यह जानने के लिए दोनों ही का जी बेचैन हो रहा था कि मायारानी को हम लोगों से इतनी दुश्मनी क्यों है और वह स्वयं कौन है, क्योंकि कैद के बाद देवीसिंह से यह बात न पूछ सकी थी, और न इसका मौका ही मिला था।

उस तिलिस्मी मकान में दो दिन और रात आराम से रहने के बाद तीसरे दिन संध्या के समय जब किशोरी और कामिनी को मकान की छत पर ले जाकर तारा दिलासा और तसल्ली देने के साथ ही साथ चारों तरफ की छटा दिखा रही थी, किशोरी को मायारानी का हाल पूछने का मौका मिला और इस बात की भी उम्मीद हुई कि तारा सब बात अवश्य सच-सच कह देगी। अस्तु, किशोरी ने तारा की तरफ देखा और कहा—

किशोरी—बहिन तारा, निःसन्देह तुमने हमारी बड़ी खातिर और इज्जत की, तुम्हारी बदौलत हम लोग यहाँ बड़े चैन और आराम से हैं जिसकी अपनी भौंडी किस्मत से कदापि आशा न थी। और ईश्वर की कृपा से कुछ-कुछ यह भी आशा हो गई है कि हम लोगों के दिन अब शीघ्र ही फिरेंगे। इस समय मेरे दिल में बहुत-सी बातें ऐसी हैं, जिनका असल भेद मालूम न होने के कारण जी बेचैन हो रहा है, अगर तुम कुछ बताओ तो···

तारा—वे कौन-सी बातें हैं, कहिये, जो कुछ मैं जानती हूँ अवश्य बताऊँगी।

किशोरी—पहले यह बताओ कि मायारानी कौन है और हम लोगों के साथ दुश्मनी क्यों करती है ?

तारा – मायारानी जमानिया की रानी है, जमानिया में एक भारी तिलिस्म है। जिसके विषय में जाना गया है कि वह कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के हाथों से टूटेगा; मगर मायारानी चाहती है कि वह तिलिस्म न टूटने पावे, इसी सबब से वह इतना बखेड़ा मचा रही है।

किशोरी—और कमलिनी कौन हैं ? मैं उनका नाम कई दफे सुन चुकी हूँ और यह भी मानती हूँ कि वह हम लोगों की मदद कर रही हैं।

तारा—मायारानी की दो बहिनें और हैं ! (ऊँची साँस लेकर) एक तो ये कमलिनी हैं, जिनके मकान में आप इस समय बैठी हैं, अब मायारानी की चाल-चलन से रंज होकर उससे अलग हो गयीं और दोनों कुमारों की मदद कर रही हैं। और दूसरी सबसे छोटी बहन लाड़िली है जो मायारानी के साथ रहती है। मगर अब सुनने में आया है कि वह भी मायारानी से अलग होकर कमलिनी का साथ दे रही है।

किशोरी—और ये राजा गोपालसिंह और भूतनाथ कौन हैं ?

तारा—भूतनाथ कमलिनी का ऐयार है और राजा गोपालसिंह जमानिया के राजा हैं, मायारानी इन्हीं की स्त्री है। पाँच वर्ष हुए जब यह बात मशहूर हुई थी कि राजा गोपालसिंह का देहान्त हो गया, यहाँ तक कि कमलिनी को भी इस बात में शक न रहा, क्योंकि उनके देखते राजा गोपालसिंह की दाह-क्रिया की गई थी। हाँ लोगों को अगर किसी तरह का कुछ शक था तो केवल इतना कि राजा गोपालसिंह को मायारानी ने जहर दे दिया। खैर, जमाने से राजा गोपालसिंह की जगह मायारानी जमानिया का राज्य कर रही है। इधर जब मायारानी ने दोनों कुमारों को कैद कर लिया तो कमलिनी उन्हें छुड़ाने के लिए जमानिया गई। उस समय कमलिनी को किसी तरह मालूम हुआ कि राजा गोपालसिंह के विषय में मायारानी ने धोखा दिया था और वे मरे नहीं, बल्कि मायारानी ने उन्हें कैद कर रखा है। तब कमलिनी ने बड़े उद्योग से गोपालसिंह जी को कैद से छुड़ाया, मगर राजा साहब की यह राय हुई कि हमारे छूटने का हाल अभी किसी को मालूम न होना चाहिए, किसी मौके पर हम अपने को जाहिर करेंगे। मैंने यह जो कुछ आपसे कहा, बहुत ही मुख्तसिर में कहा है नहीं तो इस बीच में ऐसे-ऐसे काम हुए हैं कि सुनने से आश्चर्य होता है। मैंने जब भूतनाथ की जुबानी सब हाल सुना तो आश्चर्य और हँसी से मेरी अजब हालत थी।

किशोरी—तो तुम खुलासा क्यों नहीं कहतीं ? क्या कहीं जाना है या कोई जरूरी काम है ?

तारा—(हँसकर) जाना कहाँ है और काम ही क्या है ? अच्छा, मैं कहती हूँ सुनिये।

तारा ने भूतनाथ का खुलासा हाल कह सुनाया। वह किसी तरह नागर और मायारानी को धोखा देकर उनसे मिल गया और जिस खूबसूरती से किशोरी और कामिनी को नागर की कैद से छुड़ा लाया, उसके कहने के बाद यह भी कहा कि भूतनाथ

मायारानी को और भी धोखा देगा। वह मायारानी से वादा कर आया है कि राजा गोपालसिंह को जो तुम्हारी कैद से छूट गये हैं बहुत जल्द गिरफ्तार करके तुम्हारे पास ले आऊंगा तुम उन्हें अपने हाथ से मार कर निश्चिन्त हो जाना। निःसन्देह बड़ी ही दिल्लगी होगी जब मायारानी को विश्वास हो जायगा कि कैद से छूट जाने पर भी राजा गोपाल-सिंह जीते न बचे।

तारा की जुबानी भूतनाथ का हाल सुनकर किशोरी और कामिनी को बड़ा ताज्जुब हुआ और उसके विषय में देर तक तीनों में बातचीत होती रही। अन्त में किशोरी ने तारा से पूछा, "जब तुम राजा गोपालसिंह के पास गई थीं और उन्होंने मुझे तुम्हारे सुपुर्द किया था उस समय तुमने मेरी तरफ देखकर यह कहा था कि 'इनके लिए मुझे मुद्दत तक छिपकर रोहतासगढ़ के किले में रहना पड़ा था' तो क्या वास्तव में तुम रोहतासगढ़ के किले में उस समय थीं जब मैं वहाँ बदकिस्मती के दिन काट रही थी? अगर तुम वहाँ थीं तो लाली और कुन्दन का हाल भी तुम्हें जरूर मालूम होगा।"

किशोरी की बातों का तारा कुछ जवाब देना ही चाहती थी कि एक प्रकार की आवाज सुनकर चौंक पड़ी और घबरा कर उस पुतली की तरफ देखने लगी जो वहाँ छत पर एक छोटे से चबूतरे के ऊपर सिर नीचे और पैर ऊपर किये खड़ी थी।

पाठक इस मकान की अवस्था को भूल न गये होंगे, क्योंकि इस मकान और पुतलियों का हाल हम सन्तति के तीसरे भाग में लिख चुके हैं। इस समय जब तारा ने इस पुतली को तेजी के साथ नाचते हुए पाया तो घबरा गई, बदहवास होकर उठ खड़ी हुई और कहने लगी—"हाय बड़ा अनर्थ हुआ, अब हम लोगों की जान बचती नजर नहीं आती! हाय-हाय, बहिन कमलिनी, न जाने इस समय तू कहाँ है। हाय, अब मैं क्या करूं!"

6

हम ऊपर के किसी बयान में लिख आए हैं कि तिलिस्मी दारोगा की बदौलत जब नागर और मायारानी में लड़ाई हो गई तो उसी समय मौका पाकर कम्बख्त दारोगा वहाँ से निकल भागा और उसके थोड़ी ही देर बाद मायारानी भी नागर के धमकाने से डर कर वहाँ से चली गई।

यद्यपि दारोगा और मायारानी में लड़ाई हो गई थी मगर मेल होने में भी कुछ देर न लगी। कायदे की बात है कि चोर-बदमाश, बेईमान आदि जितने बुरे कर्म करने वाले हैं, प्रकृत्यनुसार कभी-कभी आपस में लड़ भी जाते हैं और लड़ाई यहाँ तक बढ़ जाती है कि एक के खून का दूसरा प्यासा हो जाता हो जाता है बल्कि जान का नुकसान भी हो जाता है, मगर थोड़े ही अरसे के बाद फिर आपस में मेल-मिलाप हो जाता है। इसका असल सबब यही है कि बुरे मनुष्यों के हृदय में लज्जा, शान, मान और आन की

जगह नहीं होती। उन्हें इस बात का ध्यान नहीं होता है कि फलाँ ने मुझे ताना मारा था या फलाँ ने मेरी किसी प्रकार बेइज्जती की थी, अतएव कदापि उसके सामने न जाना चाहिए या किसी तरह उसे अवश्य नीचा दिखाना चाहिए, क्योंकि बुरे मनुष्य तो नीच होते ही हैं, उन्हें अपने नीच कर्मों या अपने साथियों के ताने या लड़ाई से शर्म ही क्यों आने लगी ? और यही सबब है कि उनकी लड़ाई बहुत दिनों के लिए मजबूत नहीं होती। अगर ऐसा होता तो फूट और तकरार के कारण स्वयं बदमाशों का नाश हो जाता और भले आदमियों को बुरे मनुष्यों से दुःख पाने का दिन नसीब न होता। परमेश्वर की इस विचित्र माया ही ने मायारानी और दारोगा में फिर से मेल करा दिया और राजा वीरेन्द्रसिंह तथा उनके खानदान की बदनसीबी के वृक्ष में पुनः फल लगने लगे जिसका हाल आगे चलकर मायारानी और दारोगा की बातचीत से मालूम होगा।

जिस समय नागर की धमकी से डर कर कुछ सोचती-विचारती मायारानी सदर फाटक के बाहर निकली और गंगा के किनारे की तरफ चली, तो थोड़ी ही दूर जाने के बाद तिलिस्मी दारोगा से, जो नाक कटाकर अपनी बदकिस्मती पर रोता-कलपता धीरे-धीरे गंगाजी की तरफ जा रहा था उसकी मुलाकात हुई, जब अपने पीछे किसी के आने की आहट पा दारोगा ने फिर कर देखा तो मायारानी पर निगाह पड़ी। यद्यपि उस समय वहाँ पर अँधेरा था परन्तु बहुत दिनों तक साथ रहने के कारण एक ने दूसरे को बखूबी पहचान लिया। मायारानी तुरन्त दारोगा के पैरों पर गिर पड़ी और आँसुओं से उसके नापाक पैरों को भिगोती हुई बोली—

"दारोगा साहब, निःसन्देह इस समय आपकी बड़ी बेइज्जती हुई और आप मुझसे रंज हो गये, परन्तु मैं कसम खाकर कहती हूँ कि इसमें मेरा कसूर नहीं है। थोड़ी-सी बात जो मैं आपसे कहना चाहती हूँ आप कृपा करके सुन लीजिए। इसके बाद यदि आपका दिल गवाही दे कि बेशक मायारानी का दोष है तो आप बेखटके अपने हाथ से मेरा सिर काट डालिए, मुझे कोई उज्र न होगा, बल्कि मैं प्रतिज्ञापूर्वक कहती हूँ कि मैं उस समय अपने हाथ से कलेजे में खंजर मार कर मर जाऊँगी जब मेरी बात सुनने के बाद आप अपने मुँह से कह देंगे कि बेशक कसूर तेरा है, क्योंकि आपको रंज करके मैं इस दुनिया में रहना नहीं चाहती। आप खूब जानते हैं कि इस दुनिया में मेरा सहायक सिवाय आपके दूसरा नहीं, अतएव जब आप ही मुझसे अलग हो जायेंगे तो दुश्मनों के हाथों सिसक-सिसककर मरने की अपेक्षा अपने हाथ से आप ही जान दे देना मैं उत्तम समझती हूँ।"

दारोगा—यद्यपि अभी तक मेरा दिल यही गवाही देता है कि आज तू ही ने मेरी बेइज्जती की और तू ही ने मेरी नाक काटी, परन्तु जब तू मेरे पैरों पर गिरकर साबित किया चाहती है कि इसमें तेरा कोई कसूर नहीं है, तो मुझे भी उचित है कि तेरी बातें सुन लूँ और इसके बाद जिसका कसूर हो उसे दण्ड दूँ।

माया—(खड़ी होकर और हाथ जोड़कर) बस-बस-बस, मैं इतना ही चाहती हूँ।

दारोगा—अच्छा, तो इस जगह खड़े होकर बातें करना उचित नहीं। किसी तरह शहर के बाहर निकल चलना चाहिए बल्कि उत्तम तो यह होगा कि गंगा के पार

हो जाना चाहिए फिर एकान्त में जो कुछ कहोगी मैं सुनूंगा ।

दोनों वहाँ से रवाना होकर बात-की-बात में गंगा के किनारे जा पहुँचे। वहाँ दारोगा ने खूब अच्छी तरह अपनी नाक धोकर मरहम की पट्टी बाँधी जो उसके बटुए में मौजूद थी और इसके बाद मल्लाह को कुछ देकर मायारानी को साथ लिए दारोगा साहब गंगा पार हो गये। दारोगा ने वहाँ भी दम न लिया और लगभग आध कोस के सीधे जाकर एक गाँव में पहुँचे जहाँ घोड़ों के सौदागर लोग रहा करते थे और उनके पास हर प्रकार के कमकीमत और बेशकीमत घोड़े मौजूद रहा करते थे। यहाँ पहुँच कर दारोगा ने मायारानी ने कहा कि "तेरे पास कुछ रुपया-अशर्फी है या नहीं ?" इसके जवाब में मायारानी ने कहा कि 'रुपये तो नहीं हैं मगर अशर्फियाँ हैं और जवाहरात का एक डिब्बा भी जो तिलिस्मी बाग से भागते समय साथ लाई थी, मौजूद है।"

आसमान पर सुबह की सफेदी अच्छी तरह फैली न थी। गाँव में बहुत कम आदमी जागे थे। मायारानी से पचास अशर्फी लेकर और उसे एक पेड़ के नीचे बैठाकर दारोगा साहब सराय में गये और थोड़ी ही देर में दो घोड़े मय साज के खरीद लाए। मायारानी और दारोगा दोनों घोड़ों पर सवार होकर दक्खिन की तरफ इस तेजी के साथ रवाना हुए कि जिससे जाना जाता था कि इन दोनों को अपने घोड़ों के मरने की कोई परवाह नहीं है, इसके बाद जब एक जंगल में पहुँचे तो दोनों ने अपने-अपने घोड़ों की चाल कम की और बातचीत करते हुए जाने लगे।

दारोगा—अब हम लोग ऐसी जगह आ पहुँचे हैं जहाँ किसी तरह का डर नहीं है, अब तुम्हें जो कुछ कहना हो कहो।

मायारानी—इसके पहले कि आपके छूटने का हाल आपसे पूछूँ, जिस दिन से आप मुझसे अलग हुए हैं उस दिन से लेकर आज तक का अपना किस्सा मैं आपसे कहना चाहती हूँ जिसके सुनने से आपको पूरा-पूरा हाल मालूम हो जायगा और आप स्वयं कहेंगे कि मैं हर तरह से बेकसूर हूँ।

दारोगा—ठीक है, जितने विस्तार के साथ तुम कहना चाहो कहो, मैं सुनने के लिए तैयार हूँ।

मायारानी ने ब्यौरेवार अपना हाल दारोगा से कहना शुरू किया जिसमें तेजसिंह का पागल बन के तिलिस्मी बाग में आना, चंडूल का पहुँचना, राजा गोपालसिंह का कैद से छूटना, लाड़िली का मायारानी से अलग होना, धनपत की गिरफ्तारी, अपना भागना, तिलिस्म का हाल. सुरंग में राजा गोपालसिंह, कमलिनी लाड़िली, भूतनाथ और देवीसिंह का आना, नकली दारोगा का पहुँचना और उससे बातचीत करके धोखा खाना इत्यादि जो कुछ हुआ था सच-सच दारोगा से कह सुनाया, इसके बाद दारोगा की चिट्ठी पढ़ना और फिर असली दारोगा के विषय में धोखा खाना भी कुछ बनावट के साथ बयान किया जिसे बड़े गौर से दारोगा साहब सुनते रहे और जब मायारानी अपनी बात खतम कर चुकी तो बोले—

दारोगा—अब मुझे मालूम हुआ कि जो कुछ किया हरामजादी नागर ने किया और तू बेकसूर है, या अगर तुझसे किसी तरह का कसूर हुआ भी तो धोखे में हुआ,

मगर तेरी जुबानी सब हाल सुनकर मुझे इस बात का बहुत रंज हुआ कि तूने राजा गोपालसिंह के बारे में मुझे पूरा धोखा दिया।

मायारानी—बेशक यह मेरा कसूर है मगर वह कसूर पुराना हो गया और धोखे में लक्ष्मीदेवी का भेद खुल जाने पर तो अब वह क्षमा के योग्य भी हो गया। अगर आप उस कसूर को भूल कर बचने का उद्योग न करेंगे तो बेशक मेरी और आपकी दोनों की जान दुर्गति के साथ जायगी, क्योंकि मैं फिर भी ढिठाई के साथ कहती हूँ कि उस विषय में मेरा और आपका कसूर बराबर है

दारोगा—बेशक ऐसा ही है, खैर, मैं तेरा कसूर माफ करता हूँ क्योंकि तूने इस समय उसे साफ-साफ कह दिया और यह भी निश्चय हो गया कि आज केवल नागर हरामजादी ने···

मायारानी—(अपने घोड़े को पास ले जाकर और दारोगा का पैर छूकर) केवल माफ ही नहीं बल्कि उद्योग करना चाहिए जिसमें राजा गोपालसिंह, वीरेन्द्रसिंह, उनके दोनों लड़के और ऐयार गिरफ्तार हो जायँ या दुनिया से उठा दिए जायँ।

दारोगा—ऐसा ही होगा और शीघ्र ही इसके लिए मैं उत्तम उद्योग करूँगा। (कुछ सोचकर) मगर मैं देखता हूँ कि इस काम के लिए रुपये की बहुत जरूरत है।

मायारानी—रुपये-पैसे की किसी तरह कमी नहीं हो सकती, मेरे पास लाखों रुपये के जवाहरात हैं बल्कि देवगढ़ी का खजाना ऐसा गुप्त है कि सिवा मेरे कोई दूसरा पा ही नहीं सकता क्योंकि गोपालसिंह को उसकी कुछ भी खबर नहीं है।

दारोगा—(ताज्जुब से) देवगढ़ी का खजाना कैसा? मैं भी उस विषय में कुछ नहीं जानता।

मायारानी—वाह, आप क्यों नहीं जानते! वह मकान आप ही ने तो धनपत को दिया था।

दारोगा—ओह देवगढ़ी क्यों कहती हो, शिवगढ़ी कहो!

मायारानी—हाँ,-हाँ, शिवगढ़ी, शिवगढ़ी, मैं भूल गई थी, नाम में गलती हुई। उसमें बड़ी दौलत है। जो कुछ मैंने धनपत को दिया सब उसी में मौजूद है, धनपत बेचारा कैद ही हो गया, फिर निकालता कौन?

दारोगा—बेशक वहाँ दौलत होगी। इसके सिवाय मुझे भी तुम दौलत से खाली न समझना, अस्तु कोई चिन्ता नहीं, देखा जायगा।

मायारानी—मगर अभी तक यह न मालूम हुआ कि आप कहाँ जा रहे हैं? घोड़े बहुत थक गये हैं, अब यह ज्यादा नहीं चल सकते।

दारोगा—हमें भी अब बहुत दूर नहीं जाना है, (उँगली के इशारे से बताकर) वह देखो सामने जो पहाड़ी है उसी पर मेरा गुरुभाई इन्द्रदेव रहता है, इस समय हम लोग उसी के मेहमान होंगे।

मायारानी—ओहो, अब याद आया, इन्हीं का जिक्र आप अक्सर किया करते थे और कहते थे कि बड़े चालाक और प्रतापी हैं। आपने एक दफे यह भी कहा था कि इन्द्रदेव भी किसी तिलिस्म के दारोगा हैं।

दारोगा—बेशक ऐसा ही है और मैं उसका बहुत भरोसा रखता हूँ। उसकी बदौलत मैं अपने को राजा से भी बढ़ के अमीर समझता हूँ और वीरेन्द्रसिंह की कैद से छूटकर आजादी के साथ घूमने का दिन भी मुझे उसी के उद्योग से मिला है जिसका हाल मैं तुमसे फिर कहूँगा। वह बड़ा ही धूर्त एवं बुद्धिमान और साथ ही इसके ऐयाश भी है।

मायारानी—उम्र में आपसे बड़े हैं या छोटे ?

दारोगा—ओह, मुझसे बहुत छोटा है बल्कि यों कहना चाहिए कि अभी नौजवान है, बदन में ताकत भी खूब है, रहने का स्थान भी बहुत ही उत्तम और रमणीक है, मेरी तरह फकीरी भेष में नहीं रहता बल्कि अमीराना ठाठ के साथ रहता है।

दारोगा की बात सुनकर मायारानी के दिल में एक प्रकार की उम्मीद और खुशी पैदा हुई, आँखों में विचित्र चमक और गालों पर सुर्खी दिखाई देने लगी जो क्षणभर के लिए थी, इसके बाद फिर मायारानी ने कहा—

मायारानी—यह आपकी कृपा है कि ऐसी बुरी अवस्था तक पहुँचने पर भी मैं किसी तरह निराश नहीं हो सकती।

दारोगा—जब तक मैं जीता और तुझसे खुश हूँ तब तक तो तू किसी तरह निराश कभी भी नहीं हो सकती मगर अफसोस अभी तीन-चार दिन ही हुए हैं कि इसके पास से तेरी खोज में गया था, आज मेरी नाक कटी देखेगा तो क्या कहेगा ?

मायारानी—बेशक उन्हें बड़ा क्रोध आवेगा जब आपकी जबानी यह सुनेंगे कि नागर ने आपकी यह दशा की।

दारोगा—क्रोध ! अरे तू देखेगी कि नागर को पकड़वा मंगायेगा और बड़ी दुर्दशा से उसकी जान लेगा। उसके आगे यह कोई बड़ी बात नहीं है ! लो, अब हम लोग ठिकाने आ पहुँचे, अब घोड़े से उतरना चाहिए।

इस जगह पर एक छोटी-सी पहाड़ी थी जिसके पीछे की तरफ और दाहिने बाएँ कुछ चक्कर खाता हुआ पहाड़ियों का सिलसिला दूर तक दिखाई दे रहा था। जब ये दोनों आदमी उस पहाड़ी के नीचे पहुँचे तो घोड़े से उतर पड़े क्योंकि पहाड़ी के ऊपर घोड़ा ले जाने का मौका न था और इन दोनों को पहाड़ी के ऊपर जाना था। दोनों घोड़े लम्बी-लम्बी बागडोरों के सहारे एक पेड़ के साथ बाँध दिए गए और इसके बाद मायारानी को साथ लिए हुए दारोगा ने उस पहाड़ी के ऊपर चढ़ना शुरू किया। उस पहाड़ी पर चढ़ने के लिए केवल एक पगडण्डी का रास्ता था और वह भी बहुत पथरीला और ऐसा ऊबड़-खाबड़ था कि जाने वाले को बहुत सम्हल कर चढ़ना पड़ता था। यद्यपि पहाड़ी बहुत ऊँची न थी, मगर रास्ते की कठिनाई के कारण इन दोनों को ऊपर पहुँचने में पूरा एक घण्टा लग गया।

जब दोनों पहाड़ी के ऊपर पहुँचे तो मायारानी ने एक पेड़ के नीचे खड़े होकर देखा कि सामने की तरफ जहाँ तक निगाह काम करती है, पहाड़-ही-पहाड़ दिखाई दे रहे हैं, जिनकी अवस्था आसाढ़ के उठते हुए बादलों-सी जान पड़ती है। टीले पर टीला, पहाड़ पर पहाड़, क्रमशः बराबर ऊँचा ही होता गया है। यह वही विंध्य की

पहाड़ी है जिसका फैलाव सैकड़ों कोस तक चला गया है। इस जगह से जहाँ इस समय मायारानी खड़ी होकर पहाड़ी के दिलचस्प सिलसिले को बड़े गौर से देख रही है राजा वीरेन्द्रसिंह की राजधानी नौगढ़ बहुत दूर नहीं है परन्तु यह जगह नौगढ़ की हद से बिल्कुल बाहर है।

धूप बहुत तेज थी और भूख-प्यास ने भी सता रक्खा था, इसलिए दारोगा ने मायारानी से कहा, "मैं समझता हूँ कि इस पहाड़ पर चढ़ने की थकावट अब मिट गई होगी, यहाँ देर तक खड़े रहने से काम न चलेगा क्योंकि अभी हम लोगों को कुछ दूर और चलना है और भूख-प्यास से जी बेचैन हो रहा है।"

मायारानी—क्या अभी हम लोगों को और आगे जाना पड़ेगा ? आपने तो इसी पहाड़ी पर इन्द्रदेव का घर बताया था ?

दारोगा—ठीक है मगर उसका मतलब यह न था कि पहाड़ पर चढ़ने के साथ ही कोई मकान मिल जायगा।

मायारानी—खैर, चलिए। अब कितनी देर में ठिकाने पर पहुँचने की आशा कर सकती हूँ ?

दारोगा—अगर तेजी के साथ चलें तो घण्टे-भर में।

मायारानी—ओफ !

आगे-आगे दारोगा और पीछे-पीछे मायारानी दोनों आगे की तरफ बढ़े। ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जाते थे, जमीन ऊँची मिलती जाती थी और चढ़ाव चढ़ने के कारण मायारानी का दम फूल रहा था। वह थोड़ी-थोड़ी दूर पर खड़ी होकर दम लेती थी और फिर दारोगा के पीछे-पीछे चल पड़ती थी, यहाँ तक कि दोनों एक गुफा के मुँह पर जा पहुँचे जिसके अन्दर खड़े होकर बराबर दो आदमी बखूबी जा सकते थे। बाबाजी ने मायारानी से कहा कि "क्या हर्ज है, मैं चलने को तैयार हूँ मगर जरा दम ले लूं।"

गुफा के दोनों तरफ चौड़े-चौड़े दो पत्थर थे जिनमें से एक पर दारोगा और दूसरे पर मायारानी बैठ गई। इन दोनों को बैठे अभी ज्यादा देर नहीं हुई थी कि गुफा के अन्दर से एक आदमी निकला जिसने पहली निगाह में मायारानी को और दूसरी निगाह में दारोगा को देखा। मायारानी को देखकर उसे ताज्जुब हुआ मगर जब दारोगा को देखा तो झपट कर उसके पैरों पर गिर पड़ा और बोला, "आश्चर्य है कि आज मायारानी को लेकर आप यहाँ आये हैं !"

दारोगा—हाँ, एक भारी आवश्यकता पड़ जाने के कारण ऐसा करना पड़ा। कहो, तुम अच्छे तो हो ? बहुत दिन पर दिखाई दिए।

आदमी—जी, आपकी कृपा से बहुत अच्छा हूँ, हाल ही में जब आप यहाँ आये थे तो मैं एक जरूरी काम के लिए भेजा गया था इसी से आपके दर्शन न कर सका, कल जब मैं लौटकर आया तो मालूम हुआ कि बाबाजी आये थे, पर एक ही दिन रहकर चले गये (आश्चर्य के ढंग से) मगर यह नाक पर पट्टी कैसे बँधी है ?

दारोगा—कल लड़ाई में एक आदमी ने बेकसूर मुझे जख्मी किया, इसी से पट्टी बाँधने की आवश्यकता हुई !

आदमी—(क्रोध में आकर) किसकी मौत आई है जिसने हम लोगों के होते आपके साथ ऐसा किया ! जरा नाम तो बताइये !

दारोगा—अब आया हूँ तो अवश्य सब-कुछ कहूँगा, पहले यह बताओ कि इस समय तुम जाते कहाँ हो ?

आदमी—एक काम के लिए महाराज ने भेजा है, संध्या होने के पहले ही लौट आऊंगा, यदि आज्ञा हो तो महाराज के पास जाकर आपके आने का संवाद दूं ?

दारोगा—नहीं-नहीं, इसकी आवश्यकता नहीं है, मैं चला जाऊँगा, तुम जाओ, जब लौटो तो रात को बातचीत होगी।

आदमी—जो आज्ञा।

दारोगा का पैर छूकर वह आदमी वहाँ से तेजी के साथ चला गया और इसके बाद मायारानी ने दारोगा से कहा, "अफसोस, यहाँ तक नौबत आ पहुँची, कि अब हर एक आदमी बारह परदे के अन्दर रहने वाली मायारानी को खुल्लमखुल्ला देख सकता है जैसा कि अभी इस गैर आदमी ने देखा।"

दारोगा—तुझे इस बात का अफसोस न करना चाहिए। समय ने जब तुझे अपने घर से बाहर कर दिया, रिआया से बदतर बना दिया, हुकूमत छीन कर बेकार कर दिया बल्कि यों कहना चाहिए कि वास्तव में छिपकर जान बचाने लायक कर दिया, तो पर्दे और इज्जत का खयाल कैसा ! किस जात-बिरादरी के वास्ते ? क्या तुझे आशा है कि राजा गोपालसिंह अब तुझे अपनी बनाकर रखेगा ? कभी नहीं। फिर लज्जा का ढकोसला क्यों ? हाँ समय ने अगर तेरा नसीब चमकाया और तू हम लोगों की मदद से गोपालसिंह वीरेन्द्रसिंह तथा उसके लड़कों पर फतह पाकर पुनः तिलिस्म की रानी हो गई तो तुझे उस समय आज की निर्लज्जता की परवाह न रहेगी क्योंकि रुपये वालों का ऐब जमाना नहीं देखता, रुपये वाले की खातिर में कमी नहीं होती, रुपये वाले को कोई दोष नहीं लगता, और रुपये वालों की पहली अवस्था पर कोई ध्यान नहीं देता। फिर इसके लिए सोचने-विचारने से क्या फायदा ? तू आज से अपने को मर्द समझ ले और मर्दों की ही तरह जो कुछ मैं सलाह दूं वह कर।

मायारानी—बात तो आपने ठीक कही, वास्तव में ऐसा ही है ! अब आज से मैं ऐसी तुच्छ बातों पर ध्यान न दूंगी। अच्छा, जहाँ चलना हो चलिए, मैं बखूबी आराम कर चुकी, हाँ यह तो बताइये कि वह आदमी कौन था और उसने मुझे पहचाना कैसे ?

दारोगा—वह इन्द्रदेव का ऐयार है, मुझसे मिलने के लिए बराबर आया करता था, यही सबब है कि तुझे पहचानता है, और फिर ऐयारों से यह बात कुछ दूर नहीं है कि तुझ-सी मशहूर को पहचान लिया।

इसके बाद दारोगा उठ खड़ा हुआ और मायारानी को अपने)पीछे-पीछे आने के लिए कहकर गुफा के अन्दर रवाना हुआ।

7

मायारानी इस गुफा को साधारण और मामूली समझे हुए थी, मगर ऐसा न था। थोड़ी दूर जाने के बाद पूरा अंधकार मिला, जिससे वह घबड़ा गई, मगर दारोगा के ढाढ़स देने से उसका कपड़ा पकड़े हुए धीरे-धीरे रवाना हुई। लगभग सौ कदम जाने के बाद दारोगा रुका और बाईं तरफ घूम कर चलने लगा। अब मायारानी पहले की बनिस्बत ज्यादा डरी और उसने घबड़ाकर दारोगा से पूछा, "क्या हम लोग चाँदनी में न पहुँचेंगे ? कही ऐसा न हो कि कोई दरिन्दा जानवर मिल जाये और हम लोगों को फाड़ खाये।"

दारोगा—(जोर से हँस कर) क्या इतने ही में तेरी हिम्मत ने जवाब दे दिया ? तिलिस्म की रानी होकर इतना छोटा दिल, आश्चर्य है !

मायारानी—(अपने डरे हुए दिल को सम्हाल कर) नहीं-नहीं, मैं डरी और घबराई नहीं हूँ, हाँ भूख-प्यास और थकावट के कारण बेहाल हो रही हूँ इसी से मैंने पूछा कि यह गुफा जिसे सुरंग कहना चाहिए, किसी तरह समाप्त भी होगी या नहीं ?

दारोगा—घबरा मत, अब हम लोग बहुत जल्द इस अँधेरे से निकल कर ऐसे दिलचस्प मैदान में पहुँचेंगे, जिसे देखकर तू बहुत ही खुश होगी।

मायारानी—इन्द्रदेव के मकान में जाने के लिए यही एक राह है या और भी कोई ?

दारोगा—बस इस रास्ते के सिवाय और रास्ता नहीं है।

मायारानी—अगर ऐसा है तो मालूम होता है कि आपके इन्द्रदेव बहुत से दुश्मन रखते हैं जिनके डर से उन्हें इस तरह छिप कर रहना पड़ता है।

दारोगा—(हँसकर) नहीं-नहीं, ऐसा नहीं है, इन्द्रदेव इस योग्य हैं कि अपने दुश्मनों को बात-की-बात में बर्बाद कर दे। वह इस स्थान में जान कर नहीं रहता बल्कि मजबूर होकर उसे यहाँ रहना पड़ता है क्योंकि जिस तिलिस्म का वह दारोगा है, वह तिलिस्म भी इसी स्थान में है।

मायारानी—ठीक है, तो क्या इस तिलिस्म का कोई राजा नहीं है ?

दारोगा—नहीं, जिस समय यह तिलिस्म तैयार हुआ था, उसी समय इसके मालिक ने इस बात का प्रबन्ध किया था कि उसके खानदान में जो कोई हो वह तिलिस्म का राजा नहीं बने बल्कि दारोगा की तरह रहे। उसी के खानदान में यह इन्द्रदेव है। इसे तिलिस्म की हिफाजत करने के सिवाय और किसी तरह का अधिकार तिलिस्म पर नहीं, मगर दौलत की इसे किसी तरह की कमी नहीं है।

मायारानी—अगर पुराने प्रबन्ध को तोड़कर वह तिलिस्मी चीजों पर अपना दखल जमावे तो उसे कौन रोक सकता है ?

मेंारोगा—रोकने वाला तो कोई नहीं है, मगर वह तिलिस्म का भेद कुछ भी नहीं जानता, न मालूम यह तिलिस्म इतना गुप्त किसलिए रखा गया है।

मायारानी—मैं तो अपने तिलिस्म से बहुत फायदा उठाती थी ।

दारोगा—बेशक ऐसा ही है, मगर उस तिलिस्म में भी जो खास-खास अलभ्य वस्तुएँ हैं, उनका मालिक तिलिस्म तोड़ने वाले के सिवाय और कोई नहीं हो सकता। अच्छा, अब ठहर जा, हम लोग ठिकाने पहुँच गये हैं, यहाँ एक दरवाजा है जिसे खोलकर आगे चलना होगा।

दारोगा की बात सुनकर मायारानी रुक गई, मगर अँधेरे में उसे यह न मालूम हुआ कि बाबाजी क्या कर रहे हैं। दस-बारह पल से ज्यादा देर न लगी होगी कि एक आवाज ठीक उसी प्रकार की आई जैसी लोहे का हल्का दरवाजा खुलने के समय आती है। बाबाजी ने मायारानी का हाथ पकड़ के उसे दो-तीन कदम आगे कर दिया तथा स्वयं पीछे रह गये और फिर उस दरवाजे के बन्द होने की आवाज आई, इसके बाद बाबाजी ने मोमबत्ती जलाई, जिसका सामान दरवाजे के पास ही किसी ठिकाने पर था।

बहुत देर तक अँधेरे में रहने के कारण मायारानी बहुत घबड़ा गई थी। अब रोशनी हो जाने से वह चैतन्य हो गई और आँखें फाड़ कर चारों तरफ देखने लगी। केवल उधर की तरफ जिधर से वह आई थी, लोहे का एक तख्ता दिखलाई दिया, जिसमें दरवाजे का कोई आकार न था, इसके अतिरिक्त सब तरफ पत्थर ही दिखाई पड़ता था और साफ मालूम होता था कि मानवीय उद्योग से पहाड़ काट कर यह रास्ता या सुरंग तैयार की गई है, मगर यह सुरंग इसी जगह पर नहीं समाप्त हुई थी बल्कि बाईं तरफ तीन-चार सीढ़ियाँ नीचे उतर के और भी कुछ दूर तक गई हुई थी। मायारानी ने आश्चर्य से चारों तरफ देखने के बाद बाबाजी से कहा, "यह लोहे की दीवार जो सामने दिखाई पड़ती है निःसन्देह दरवाजा है परन्तु इसमें दरवाजे का कोई आकार मालूम नहीं पड़ता, आपने इसे किस तरकीब से खोला या बन्द किया था?" इसके जवाब में दारोगा ने कहा, "इस दरवाजे को खोलने और बंद करने की तरकीब नियमानुसार इन्द्रदेव की आज्ञा बिना मैं नहीं बता सकता और यह मोमबत्ती भी मैंने इसलिए जलाई है कि (सीढ़ियों की तरफ इशारा करके) इन सीढ़ियों को तू अच्छी तरह देख ले जिसमें उतरने के समय ठोकर न लगे।" इतना कहते ही दारोगा ने मोमबत्ती बुझाकर उसे उसी ठिकाने रख दिया और मायारानी का हाथ पकड़ के सीढ़ियों के नीचे उतरा। मायारानी को अपनी बातों का जवाब न पाने से रंज हुआ, मगर वह कर ही क्या सकती थी, क्योंकि इस समय वह हर तरह से दारोगा के आधीन थी।

सीढ़ियाँ उतरने के साथ ही सामने की तरफ थोड़ी दूर पर उजाला दिखाई दिया और मालूम हुआ कि उस ठिकाने सुरंग समाप्त हुई है। आश्चर्य, डर, चिन्ता और आशा के साथ मायारानी ने यह रास्ता भी तै किया और सुरंग के आखिरी दरवाजे के बाहर कदम रखने के साथ ही एक रमणीक स्थान की छटा देखने लगी।

इस समय मायारानी की आँखों के सामने पहाड़ी गुलबूटों से हरा-भरा एक चौखूटा मैदान था, जिसकी लम्बाई चार सौ गज और चौड़ाई साढ़े तीन सौ गज से ज्यादा न होगी। यह मैदान चारों तरफ से ढलवाँ और सरसब्ज पहाड़ी से घिरा हुआ था जिस पर के पेड़ों और सुन्दर-सुन्दर लताओं के बीच से निकल कर नीरोग हवा के नर्म-नर्म

झपेटे आ रहे थे। सामने की तरफ पहाड़ी की आधी ऊंचाई से झरना गिर रहा था, जिसका बिल्लौर की तरह साफ जल नीचे आकर बारीक और पेचीली नालियों का सा आनन्द दिखलाता हुआ रमने के खुशनुमा कोमल और सुन्दर फूल-पत्तों वाले पौधों को तरी पहुँचा रहा था। खुशनुमा और मीठी बोलियों से दिल लुभा लेने वाली छोटी-छोटी चिड़ियों की सुरीली आवाजों में दबी हुई रसीले फूलों पर घूम-घूमकर बलाएँ लेते हुए मस्त भौंरों के परों की आवाज कमजोर उदास और मुरझाए दिल को ताकत और खुशी देने के साथ चैतन्य कर रही थी। इस स्थान के आधे हिस्से पर इस समय अपना दखल जमाए हुए सूर्य भगवान की कृपा ने धूप-छाँह की हुबाबी चादर इस ढंग से बिछा रखी थी कि तरह-तरह की चिन्ताओं और खुटकों से विकल मायारानी कोलाचार होकर मस्ती और मदहोशी के कारण थोड़ी देर के लिए अपने को भुला देना पड़ा और जब वह कुछ होश में आई तो सोचने लगी कि ऐसे अनूठे स्थान का अपूर्व आनन्द लेने वाला भी कोई यहाँ है या नहीं। इस विचार के साथ ही दाहिनी तरफ पहाड़ी पर बने हुए एक खुशनुमा बँगले पर उसकी निगाह जा पड़ी मगर उसे अच्छी तरह देखने भी न पाई थी कि दारोगा साहब हँस कर बोल उठे, "अब यहाँ कब तक खड़ी रहोगी, चलो आगे बढ़ो!"

जिस जगह मायारानी खड़ी थी उसकी ऊँचाई जमीन से लगभग बीस-पचीस गज के होगी। नीचे उतरने के लिए छोटी-छोटी सीढ़ियाँ बनी हुई थीं जिन पर पहले दारोगा ने अपना मनहूस (अमंगल) कदम रखा और उसके पीछे-पीछे मायारानी रवाना हुई।

ये दोनों उस खुशनुमा जमीन की कुदरती क्यारियों पर घूमते हुए उस पहाड़ी के नीचे पहुँचे, जिस पर वह खूबसूरत बंगला बना हुआ था और उसी समय दो आदमियों को पहाड़ी से नीचे उतरते हुए देखा। बात-की-बात में ये दोनों आदमी दारोगा के पास आ पहुँचे और दण्ड-प्रणाम के बाद बोले, "इन्द्रदेवजी ने आपको दूर ही से देखकर पहचान लिया, मगर मायारानी को न पहचान सके जो इस समय आपके साथ हैं।"

यह जानकर मायारानी को आश्चर्य हुआ कि यहाँ का हर एक आदमी उसे अच्छी तरह जानता और पहचानता है मगर इस विषय में कुछ पूछने का मौका न समझ कर वह चुप हो रही। बाबाजी ने दोनों ऐयारों से पूछा, "कहो कुशल तो है? इन्द्रदेव अच्छे हैं?"

एक—जी हाँ, बहुत अच्छे हैं। मगर यह तो कहिये आपने नाक पर यह पट्टी क्यों बाँधी हुई है?

दारोगा—इसका हाल इन्द्रदेव के सामने कहूँगा, उसी समय तुम भी सुन लेना। चलो जल्द चलें, भूख-प्यास और थकावट से जी बेचैन हो रहा है।

ये चारों आदमी पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगे। यद्यपि इन सभी को बहुत ऊँचे नहीं चढ़ना था परन्तु मायारानी बहुत थकी और सुस्त हो रही थी। इसलिए बड़ी कठिनाई के साथ चढ़ी और ऊपर पहुँचने तक मामूली से बहुत ज्यादा देर लगी। ऊपर पहुँच कर मायारानी ने देखा कि वह बँगला छोटा और साधारण नहीं है बल्कि बहुत बड़ा और अच्छे ढंग का बना हुआ है मगर यहाँ पर इस मकान की बनावट तथा उसके सुन्दर-सुन्दर

कमरों की सजावट का हाल न लिखकर मतलब की बातें लिखना उचित जान पड़ता है।

उस समय इन्द्रदेव अगवानी के लिए स्वयं बाहर निकल आया जब ये दोनों आदमी उस कमरे के पास पहुँचे, जिसमें वह रहता था। वह इन दोनों से बड़े तपाक से मिला और खातिर के साथ अन्दर ले जाकर बैठाया।

इन्द्रदेव—(दारोगा से) आपके और मायारानी के कष्ट करने का सबब पूछने के पहले मैं जानना चाहता हूँ कि आपने नाक पर पट्टी क्यों बाँध रखी है ?

दारोगा—तुमसे विदा होकर मैंने जो कुछ तकलीफें उठाई हैं यह उसी का नमूना है। जब मैं जरा दम लेने के बाद अपना किस्सा तुमसे कहूँगा, तब सब हाल मालूम हो जायगा, इस समय भूख-प्यास और थकावट से जी बेचैन हो रहा है।

दारोगा का जवाब सुनकर इन्द्रदेव चुप हो रहा और फिर कुछ बातचीत न हुई। दारोगा और मायारानी के खाने-पीने का उत्तम प्रबन्ध कर दिया गया और उन दोनों ने कई घण्टे तक आराम करके अपनी थकावट दूर की। जब संध्या होने में थोड़ी देर बाकी थी तब इन्द्रदेव स्वयं उस कमरे में आया जिसमें दारोगा का डेरा पड़ा हुआ था। वह कमरा इन्द्रदेव के कमरे के बगल ही में था और उसमें जाने के लिए केवल एक मामूली दरवाजा था। उस समय मायारानी दारोगा के पास बैठी अपना दुखड़ा रो रही थी। इन्द्रदेव के आते ही वह चुप हो गई और बाबाजी ने खातिर के साथ इन्द्रदेव को अपनी बगल में बैठाया।

इन्द्रदेव—मैं समझता हूँ कि इस समय आप अपना हाल बखूबी कह सकेंगे, जिसके सुनने के लिए मेरा जी बेचैन हो रहा है।

दारोगा—वह कहने के लिए इस समय मैं स्वयं ही तुम्हारे पास आने वाला था, अच्छा हुआ कि तुम आ गये।

दारोगा ने अपना और मायारानी का हाल जो कुछ हम ऊपर लिख आये हैं, इन्द्रदेव से पूरा-पूरा बयान किया। इन्द्रदेव चुपचाप सुनता रहा, पर अन्त में जब नागर द्वारा बाबाजी की नाक काटने का हाल सुना तो उसे यकायक क्रोध चढ़ आया। उसका चेहरा लाल हो गया, होंठ हिलने लगे, और वह बिना कुछ कहे बाबाजी के पास से उठ कर चला गया। यह हाल देखकर मायारानी को ताज्जुब मालूम हुआ और उसने दारोगा से पूछा, "क्या आप कह सकते हैं कि इन्द्रदेव आपकी बातों का कोई जवाब दिये बिना ही क्यों चला गया ?"

दारोगा—मालूम होता है कि मेरा हाल सुनकर उसे हद से ज्यादा क्रोध चढ़ आया और वह कोई कार्रवाई करने के लिए चला गया है।

मायारानी—इन्द्रदेव नागर को जानता है ?

दारोगा—बहुत अच्छी तरह, बल्कि नागर का जितना भेद इन्द्रदेव को मालूम है उतना तुमको भी मालूम न होगा।

मायारानी—सो कैसे ?

दारोगा—जिस जमाने में नागर रण्डियों की तरह बाजार में बैठती थी और मोतीजान के नाम से मशहूर थी उस जमाने में इन्द्रदेव भी कभी-कभी उसके पास भेष बदल

कर गाना सुनने की नीयत से जाया करता था और उसकी हर एक बात की इसे खबर थी, मगर इन्द्रदेव का ठीक-ठीक हाल बहुत दिनों तक सोहबत करने पर भी नागर को मालूम न हुआ, वह इन्द्रदेव को केवल एक सरदार और रुपये वाला ही जानती थी।

आधे घण्टे तक इसी किस्म की बातें होती रहीं और इसके बाद इन्द्रदेव के ऐयार सूर्यसिंह ने कमरे के अन्दर आकर कहा, "इन्द्रदेवजी आपको बुलाते हैं, आप अकेले जाइये और नजरबाग में मिलिये जहाँ वह भी अकेले टहल रहे हैं।"

इस सन्देश को सुनकर दारोगा उठ खड़ा हुआ और मायारानी को अपने कमरे में जाने के लिए कह इन्द्रदेव के पास चला गया।

इस मकान के पीछे की तरफ एक छोटा-सा नजरबाग था जो अपनी खुशनुमा क्यारियों और गुलबूटों की बदौलत बहुत ही भला मालूम पड़ता था। जब दारोगा वहाँ पहुँचा तो उसने इन्द्रदेव को उसी जगह टहलते हुए पाया।

इन्द्रदेव—भाई साहब, आज आपकी जुबान से मैंने वह बात सुनी है जिसके सुनने की कदापि आशा न थी।

दारोगा—बेशक नागर की बदमाशी का हाल सुनकर आपको बहुत ही रंज हुआ होगा।

इन्द्रदेव—नहीं, मेरा इशारा नागर की तरफ नहीं है। इसमें तो कोई सन्देह नहीं नागर ने आपके साथ जो किया बहुत बुरा किया और मैं उसे गिरफ्तार कर लेने के लिए एक ऐयार और कई सिपाही रवाना भी कर चुका हूँ मगर मैं उन बातों की तरफ इशारा कर रहा हूँ जो राजा गोपालसिंह से सम्बन्ध रखती हैं। मुझे इस बात का गुमान भी न था कि राजा गोपालसिंह अभी तक जीते हैं! मुझे स्वप्न में भी इस बात का ध्यान नहीं आ सकता था कि मायारानी वास्तव में गोपालसिंह की स्त्री नहीं है और आपकी कृपा से लक्ष्मीदेवी की गद्दी पर जा बैठी है! ओफ ओह, दुनिया भी अजब चीज है, और उसमें विहार करने वाले दुनियादार भी कैसे-कैसे मनसूबे गाँठते हैं?

इन्द्रदेव की बातें सुनकर दारोगा चौंक पड़ा और उसे विश्वास हो गया कि हमारी आशालता में अब कोई नये ढंग का फूल खिलना चाहता है। उसने घबरा कर इन्द्रदेव की तरफ देखा जिसका जमीन की तरफ झुका हुआ चेहरा इस समय बहुत ही उदास हो रहा था।

दारोगा—बेशक मायारानी को लक्ष्मीदेवी बनाने में मेरा कसूर था और मगर राजा गोपालसिंह के बारे मैं निर्दोष हूँ। मुझे इस बात का गुमान भी न था कि राजा साहब को मायारानी ने कैद कर रक्खा है, मैं वास्तव में उन्हें मरा हुआ समझता था।

इन्द्रदेव—(इस ढंग से जैसे दारोगा की बात उसने सुनी ही नहीं, क्या आप कह सकते हैं कि राजा गोपालसिंह ने आपके साथ कोई बुराई की थी?

दारोगा—नहीं-नहीं, उस बेचारे ने मेरे साथ कोई बुराई नहीं की।

इन्द्रदेव—क्या आप कह सकते हैं कि गोपालसिंह के बाद आप विशेष धनी हो गए हैं?

दारोगा—नहीं।

इन्द्रदेव—क्या आप इतना भी कह सकते हैं कि राजा साहब के समय की बनिस्बत आज ज्यादा प्रसन्न हैं ?

दारोगा—(ऊँची साँस लेकर) हाय, प्रसन्नता तो मानो मेरे लिए सिरजी ही नहीं गई !

इन्द्रदेव—नहीं-नहीं, आप ऐसा कदापि नहीं कह सकते, बल्कि ऐसा कहिये कि ईश्वर की दी हुई प्रसन्नता को आपने लात मार कर घर से निकाल दिया।

दारोगा—बेशक ऐसा ही है।

इन्द्रदेव—(जोर देकर) और आज नाक कटा कर भी दुनिया में मुँह दिखाने के लिए आप तैयार हैं और पिछली बातों पर जरा भी अफसोस नहीं करते ! जिस कम्बख्त मायारानी ने अपना धर्म नष्ट कर दिया, जो मायारानी लोक-लाज को एकदम तिलांजलि दे बैठी, जिस दुष्टा ने अपने सिरताज राजा गोपालसिंह के साथ ऐसा घात किया, जिस पिशाचिनी ने अपने माता-पिता की जान ली, जिसकी बदौलत आपको कारागार (कैदखाने) का मजा चखना पड़ा और जिसके सतसंग से आप अपनी नाक कटा बैठे, आज पुनः उसी की सहायता करने के लिए आप तैयार हुए हैं और इस पाप में मुझसे सहायता लेकर मुझे भी नष्ट करना चाहते हैं ! वाह भाई साहब वाह, आपने गुरु का अच्छा नाम रोशन किया और मुझे भी अच्छा उपदेश कर रहे हैं ! बड़े अफसोस की बात है कि आप सा एक अदना आदमी, जो एक रण्डी के हाथ से अपनी नाक नहीं बचा सका, राजा वीरेन्द्रसिंह ऐसे प्रतापी राजा का नामो-निशान मिटाने के लिए तैयार हो जाय ! मैंने तो राजा वीरेन्द्रसिंह का केवल इतना ही कसूर किया कि आपको उनके कैदखाने से निकाल लाया और अब इसी अपराध को क्षमा कराने के उद्योग में लगा हूँ, मगर आप, जिनकी दौलत मैं अपराधी हुआ हूँ, अब फिर···

इतना कहते-कहते इन्द्रदेव रुक गया क्योंकि पल-पल भर में बढ़ते जानेवाले क्रोध ने उसका कंठ बन्द कर दिया। उसका चेहरा लाल हो रहा था और होंठ काँप रहे थे।

दारोगा का चेहरा जर्द पड़ गया, पिछले पापों ने उसके सामने आकर अपनी भयानक मूर्ति दिखाके डराना शुरू किया और वह दोनों हाथों से अपना मुँह ढाँककर रोने लगा।

थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा इसके बाद इन्द्रदेव ने फिर कहना शुरू किया—

इन्द्रदेव—हाय, मुझे रह-रह कर वह जमाना याद आता है जिस जमाने में दयावान और धर्मात्मा राजा गोपालसिंह की बदौलत आपकी कदर और इज्जत होती थी। जब कोई सौगात उनके पास आती थी तब वह 'लीजिए बड़े भाई' कह कर आपके सामने रखते थे। जब कोई नया काम करना होता था तो 'कहिए बड़े भाई, आप क्या आज्ञा देते हैं ?' कह कर आपसे राय लेते थे, और जब उन्हें क्रोध चढ़ता था और उनके सामने जाने की किसी की हिम्मत नहीं पड़ती थी तब आप की सूरत देखते ही सिर झुका लेते थे और बड़े उद्योग से अपने क्रोध को दबा कर हँस देते थे। क्या कोई कह सकता है कि आपसे डर कर या दब कर वे ऐसा करते थे ? नहीं, कदापि नहीं, इसका सबब केवल प्रेम था। वे आपको चाहते थे और आप पर विश्वास रखते थे कि स्वामीजी

ने (जिनके आप शिष्य हैं) आपको अच्छी दीक्षा और शिक्षा दी होगी । उन्हें यह मालूम न था कि आप इतने बड़े विश्वासघाती हैं ! हाय उनके साथ आपका ऐसा बर्ताव ! छिः-छिः, धिक्कार है ऐसी जिन्दगी पर ! किसके लिए ? किस दुनिया में मुंह दिखाने के लिए ? क्या आप नहीं जानते कि ईश्वर भी कोई वस्तु है ! खैर जाइये, इस समय मैं विशेष वात नहीं कर सकता । आप यह न समझिये कि मैं अपने घर में से चले जाने के लिए आपसे कहता हूँ बल्कि यह कहता हूँ कि अपने कमरे में जाकर आराम कीजिये । आपको चार दिन की मोहलत दी जाती है इस बीच में अच्छी तरह सोच लीजिये कि किस तरह से आपकी भलाई हो सकती है और आपको किस रास्ते पर चलना उचित है, मगर खबरदार, इस समय जो कुछ बातें हुई हैं, उनका जिक्र मायारानी से न कीजिएगा और इस चार दिन के अन्दर मुझसे मिलने की भी आशा न रखिएगा ।

8

दारोगा जिस समय इन्द्रदेव के सामने से उठा तो बिना इधर-उधर देखे सीधा अपने कमरे में चला गया और चादर से मुँह ढांप कर पलंग पर सो रहा । घण्टे भर रात गई होगी जब मायारानी यह पूछने के लिए कि इन्द्रदेव ने आपको क्यों बुलाया था बाबाजी के कमरे में आई, मगर जब बाबाजी को चादर से मुँह छिपाए पड़े देखा तो उसे आश्चर्य हुआ । वह उनके पास गई और चादर हटा कर देखा तो बाबाजी को जागते पाया । इस समय बाबाजी का चेहरा जर्द हो रहा था और ऐसा मालूम पड़ता था कि उनके शरीर में खून का नाम भी नहीं है या महीनों से बीमार हैं ।

बाबाजी की ऐसी अवस्था देख कर मायारानी सन्न हो गई और बाबाजी का मुँह देखने लगी ।

दारोगा—इस समय जाओ सो रहो, मेरी तबीयत ठीक नहीं है ।

मायारानी—मैं केवल इतना ही पूछने के लिए आई थी कि इन्द्रदेव ने आपको क्यों बुलाया था और क्या कहा ?

दारोगा—कुछ नहीं, उसने केवल धीरज दिया और कहा कि चार-पांच दिन ठहरो मैं तुम लोगों का बन्दोबस्त कर देता हूँ । तब तक नागर भी गिरफ्तार होकर आ जाती है, लोग उसे पकड़ने के लिए गये हैं ।

मायारानी—मगर आपकी अवस्था तो कुछ और कह रही है ।

दारोगा—बस, इस समय और कुछ न पूछो । मैं अभी कह चुका हूँ कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है, मैं इस समय बात भी मुश्किल से कर सकता हूँ ।

मायारानी और कुछ भी न पूछ सकी, उलटे पैर कर अपने कमरे में चली गई और पलंग पर लेट के सोचने-विचारने लगी, मगर थकावट, माँदगी और चिन्ता ने उसे अधिक देर तक चैतन्य न रहने दिया और शीघ्र ही वह नींद की गोद में जाकर खर्राटे लेने लगी ।

रात बीत गई। सवेरा होने पर दारोगा ने दरियाफ्त किया तो मालूम हुआ कि इन्द्रदेव यहाँ नहीं हैं। एक आदमी ने कहा कि तीन-चार दिन के बाद आने का वादा करके कहीं चले गये हैं और यह कह गए हैं कि आप और मायारानी तब तक यहाँ से जाने का इरादा न करें। अब बाबाजी को मालूम हुआ कि दुनिया में उनका साथी कोई भी नहीं है और उनके बुरे कर्मों पर ध्यान देकर कोई भी उनकी मदद नहीं कर सकता। उन्हें अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना ही होगा।

9

दारोगा साहब को मकान में बैठ कर झक मारते हुए चार दिन बड़ी मुश्किल से बीते और आज पाँचवाँ दिन है। जैसे ही बाबाजी अपनी चारपाई पर से उठ कर बाहर निकले वैसे ही एक आदमी ने आकर संदेश दिया कि "इन्द्रदेवजी आपको बुलाते हैं, मायारानी को साथ लेकर नजरबाग में जाइये।" यह सुनते ही बाबाजी लौट कर माया-रानी के कमरे में गए और मायारानी को साथ लिये हुए उसी नजरबाग में पहुँचे, जहाँ पहले दिन उनकी नसीहत की गई थी। बाबाजी और मायारानी ने देखा कि इन्द्रदेव एक कुर्सी पर बैठा हुआ है और उसके बगल में दो कुर्सियाँ खाली पड़ी हैं, उसके सामने दो आदमी नागर के दोनों बाजू पकड़े खड़े हैं। नागर का हाथ पीठ के पीछे मजबूती के साथ बँधा हुआ है। इन्द्रदेव ने दारोगा और मायारानी को बैठने का इशारा किया और वे उन कुर्सियों पर बैठ गए जो इन्द्रदेव के बगल में खाली पड़ी हुई थीं।

बाबाजी की अवस्था देख कर मायारानी को निश्चय हो गया था कि इन्द्रदेव ने मदद से साफ-साफ इनकार कर दिया है और इसी से बाबाजी उदास और बेचैन हैं, मगर इस समय नागर को अपने सामने बेबस खड़ी देख कर मायारानी को कुछ ढाढ़स हुई और उसने सोचा कि बाबाजी की उदासी का कोई दूसरा ही कारण होगा, इन्द्रदेव हम लोगों की मदद अवश्य करेगा।

पाठक महाशय समझ ही गए होंगे कि नागर को गिरफ्तार कराने वाला इन्द्रदेव ही है जिसका हाल ऊपर एक बयान में लिख चुके हैं, और जिस श्यामलाल ने नागर को गिरफ्तार किया था वह इन्द्रदेव का कोई ऐयार होगा या स्वयं इन्द्रदेव ही होगा।

इन्द्रदेव के बगल में जब मायारानी और दारोगा बैठ गए तो इन्द्रदेव ने नागर से पूछा, "क्या बाबाजी की नाक तूने ही काटी?"

नागर—जी हाँ, मैंने मायारानी की आज्ञा पाकर इनकी नाक काटी है।

इन्द्रदेव—(अपने आदमी से) अच्छा, अब तुम इस कम्बख्त नागर की नाक और उसके साथ कान भी काट लो और यदि कुछ बोले तो जुबान भी काट लो!

हुक्म की देर थी, नौकर मानो पहले ही से नाक काटने के लिए तैयार था, अस्तु इस समय जो कुछ होना था हो गया और इसके बाद नागर कैदखाने में भेज दी गई।

मायारानी भी इन्द्रदेव की आज्ञानुसार अपने कमरे में चली गई और इन्द्रदेव तथा दारोगा अकेले ही रह गए।

इन्द्रदेव—आप देखते हैं कि जिसने आप के साथ बिना कारण के बुराई की थी उसे उस बुराई का बदला ईश्वर ने कुछ विशेषता के साथ दे दिया। आपको भी इसी तरह विचारना चाहिए कि क्या राजा वीरेन्द्रसिंह और राजा गोपालसिंह के साथ, जो बड़े नेक और बिल्कुल बेकसूर हैं, बुराई करने वाला अपनी सजा को न पहुँचेगा?

दारोगा—निःसन्देह आपका कहना ठीक है, परन्तु…

दारोगा 'परन्तु' से आगे कहने भी न पाया था कि इन्द्रदेव फिर जोश में आ गया और कड़ी निगाह से बाबाजी की तरफ देख के बोला—

इन्द्रदेव—मैं इतना बक गया मगर अभी तक 'परन्तु' का डेरा आपके दिल से न निकला। वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों से उलझने की इच्छा आपकी अभी तक बनी ही है। खैर जो आपके जी में आवे कीजिए मगर मुझसे इस बारे में किसी तरह की आशा न रखिए। आप चाहे मुझे कोई भारी वस्तु समझे बैठे हों परन्तु मैं अपने को उन लोगों के मुकाबले में एक भुनगे के बराबर भी नहीं समझता। मुझे अच्छी तरह विश्वास है कि जहाँ हवा भी नहीं घुस सकती वहाँ वीरेन्द्रसिंह के ऐयार पहुँचते हैं। (बगल से एक चिट्ठी निकाल कर और दारोगा की तरफ बढ़ाकर) लीजिये पढ़िए और सुनकर चौंक जाइए कि प्रातः-काल जब मैं सोकर उठा तो इस पत्र को अपने गले के साथ ताबीज की तरह बँधा हुआ देखा। ओफ, जिसके ऐसे-ऐसे ऐयार ताबेदार हैं उसके साथ उलझने की नीयत रखने वाला पागल या यमराज का मेहमान नहीं तो और क्या समझा जायगा!

बाबाजी ने डरते-डरते वह पत्र इन्द्रदेव के हाथ से ले लिया और पढ़ा, यह लिखा हुआ था—

"इन्द्रदेव—

"तुम यह मत समझो कि ऐसे गुप्त स्थान में रहकर हम लोगों की नजरों से भी छिपे हुए हो। नहीं-नहीं, ऐसा नहीं। हम लोग तुम्हें अच्छी तरह जानते हैं और हमें यह भी मालूम है कि तुम अच्छे ऐयार, बुद्धिमान और वीर पुरुष हो, परन्तु बुराई करना तो दूर रहा, हम लोग बिना कारण या बिना बुलाए किसी के सामने भी कभी नहीं जाते। इसी से हमारा और तुम्हारा सामना अभी तक नहीं हुआ। तुम यह मत समझो कि तुम बिल्कुल बेकसूर हो, कम्बख्त दारोगा को रोहतासगढ़ के कैदखाने से निकाल लाने का कसूर तुम्हारी गर्दन पर है, मगर तुमने यह बड़ी बुद्धिमानी की कि हमारे किसी आदमी को दुःख नहीं दिया और इसी से तुम अभी तक बचे हुए हो। हम तुम्हें मुबारकबाद देते हैं कि श्री तेजसिंहजी ने तुम्हारा कसूर जो हरामखोर और विश्वासघाती दारोगा को कैद से छुड़ाने के विषय में था माफ किया। इसका कारण यही था कि वह तुम्हारा गुरु-भाई है, अतएव उसकी कुछ न कुछ मदद करना तुम्हें उचित ही था, चाहे वह नमक-हराम तुम्हारा गुरुभाई कहलाने योग्य नहीं है। खैर, तुमने जो कुछ किया अच्छा किया, मगर इस समय तुम्हें चेताया जाता है कि आज से मायारानी, दारोगा या और किसी

भी हमारे दुश्मन का यदि तुम साथ दोगे, पक्ष करोगे, हमारी कैद से निकाल ले जाने का उद्योग करोगे या केवल राय देकर भी सहायता करोगे, तो तुम्हारे लिए अच्छा न होगा। तुम चुनारगढ़ के तहखाने में अपने को हथकड़ी-बेड़ी से जकड़े हुए पाओगे, बल्कि आश्चर्य नहीं कि इससे भी बढ़कर तुम्हारी दुर्दशा की जाय। हाँ, यदि तुम दुनिया में नेकी, ईमानदारी और योग्यता के साथ रहोगे तो ईश्वर भी तुम्हारा भला करेगा। हम लोग ईमानदार नेक और योग्य पुरुष का साथ देने के लिए हरदम कमर कसे तैयार रहते हैं। इसके सिवाय एक बात और कहनी है सो भी सुन लो। दो अदद तिलिस्मी खंजर, जो हम लोगों की मिलकियत हैं, मायारानी और नागर के कब्जे में चले गये हैं। इस समय दारोगा को साथ लेकर मायारानी तुम्हारे यहाँ मदद माँगने लिए आई है। सो खैर, उससे तो कुछ मत कहो, उसके पास जो हमारे खंजर हैं, हम ले लेंगे, कोई चिन्ता नहीं, मगर नागर के पास जो तिलिस्मी खंजर था, वह तुम्हारे एक ऐयार के पास है। जो श्यामलाल बनकर नागर को गिरफ्तार करने गया था और उसे गिरफ्तार कर लाया है। बेशक वह खंजर तुम्हारे पास दाखिल किया जायगा, मगर तुम्हें मुनासिब है कि उसे तुरत हमारे हवाले करो। कल ठीक दोपहर के समय हम खोह के मुहाने पर मिलने के लिए तैयार रहेंगे जो तुम्हारे इस मकान में आने के पहले दरवाजे के समान है। यदि उस समय तिलिस्मी खंजर लिए तुम हमसे न मिलोगे तो हम समझेंगे कि तुम मायारानी और दारोगा का साथ देने के लिए तैयार हो गये, फिर जो-कुछ होगा देखा जायगा।

मिती 13 प्रथम ऋतु। तुमको होशियार करने वाला
संवत् 412 कु०। एक बालक—
भैरोंसिंह ऐयार"

पत्र पढ़कर दारोगा ने फिर इन्द्रदेव के हाथ में दे दिया। उस समय दारोगा का चेहरा डर, चिन्ता और निराशा के कारण पीला पड़ गया था और भविष्य पर ध्यान देने ही से वह अधमरा हो गया था। भैरोंसिंह के पत्र में तिलिस्मी खंजर का जिक्र था इसलिए दारोगा ने इन्द्रदेव की उँगलियों पर निगाह दौड़ा कर उसी समय देख लिया था कि तिलिस्मी खंजर के जोड़ की अँगूठी उसकी उँगली में मौजूद है, अतएव उसे निश्चय हो गया कि भैरोंसिंह से कोई बात छिपी नहीं है, इन्द्रदेव सहायता करते दिखाई नहीं देते और अपना भविष्य बुरा नजर आता है, दारोगा इसी विचार में सिर झुकाये हुए कुछ देर तक खड़ा रहा और इन्द्रदेव उसके चेहरे के उतार-चढ़ाव को गौर से देखता रहा। आखिर इन्द्रदेव ने कहा—"मैं समझता हूँ कि इस चिट्ठी के प्रत्येक शब्द पर आपने गौर किया होगा और मतलब पूरा-पूरा समझ गये होंगे ?"

दारोगा—जी हाँ।

इन्द्रदेव—खैर, तो अब मुझे इतना ही कहना है कि यदि इस समय आपके बदले में कोई दूसरा आदमी मेरे सामने होता तो उसे तुरन्त ही निकलवा देता, परन्तु आप मेरे गुरुभाई हैं। इसलिए तीन दिन की मोहलत देता हूँ, इस बीच में आप यहाँ रहकर अपने भले-बुरे को अच्छी तरह सोच लें और फिर जो कुछ करने का इरादा हो

मुझसे कहें, साथ ही इसके इस बात पर भी ध्यान रहे कि यदि आपकी नीयत अच्छी रही तो आपका कसूर क्षमा कराने के लिए मैं उद्योग करूँगा, नहीं तो राजा वीरेन्द्रसिंह के विषय में मुझसे मदद पाने की आशा आप कदापि न रखें !

दारोगा—क्या आप भैरोंसिंह से मिलकर तिलिस्मी खंजर उसके हवाले करेंगे ?

इन्द्रदेव—क्या आपको इसमें शक है ? अफसोस !

दारोगा ने फिर कुछ न पूछा और चुपचाप वहाँ से उठकर अपने कमरे में चला गया । मायारानी यह जानने के लिए कि इन्द्रदेव में और दारोगा में क्या बातें हुईं, पहले ही से दारोगा के कमरे में बैठी हुई थी । जब दारोगा लम्बी साँस लेकर बैठ गया तो उसने पूछा—

मायारानी—कहिए, क्या हुआ ? कम्बख्त नागर से तो खूब बदला लिया गया ।

दारोगा—ठीक है, मगर इससे यह न समझना चाहिए कि इन्द्रदेव हमारी मदद करेगा ।

मायारानी—(चौंककर) तो क्या उसने इशारे में कुछ इनकार किया ?

दारोगा—इशारे में नहीं बल्कि साफ-साफ जवाब दे दिया ।

मायारानी—तब तो वह बड़ा ही डरपोक निकला ! अच्छा, कहिये तो क्या-क्या बातें हुईं ?

इन्द्रदेव और दारोगा में जो कुछ बातें हुई थीं, इस समय उसने मायारानी से साफ-साफ कह दीं और भैरोंसिंह की चिट्ठी का हाल भी सुना दिया ।

मायारानी—(ऊँची साँस लेकर और यह सोचकर कि इन्द्रदेव की बातों में पड़ कर दारोगा कहीं मेरा भी साथ न छोड़ दे) अफसोस, इन्द्रदेव कुछ भी न निकला ! वह निरा डरपोक और कम-हिम्मत है, घर बैठे-बैठे खाना-पीना और सो रहना जानता है, उद्योग की कदर कुछ भी नहीं जानता । ऐसा मनुष्या दुनिया में क्या खाक नाम और इज्जत पैदा कर सकता है ? मगर हम लोग ऐसे सुस्त और भौंडी किस्मत पर भरोसा करके चुप बैठे रहने वाले नहीं हैं । हम लोग उनमें से हैं जो गरीब और लाचार होकर भी और चक्रवर्ती होने के लिए कृतकार्य न होने पर भी उद्योग किये ही जाते हैं और अन्त में सफल-मनोरथ होकर ही पीछा छोड़ते हैं । जरा गौर तो कीजिये और सोचिये तो सही कि मैं कौन थी और उद्योग ने मुझे कहाँ पहुँचा दिया ? तो क्या ऐसे समय में जब किसी कारण से दुश्मन हम पर बलवान हो गया, उद्योग को तिलांजलि दे बैठना उचित होगा ? नहीं, कदापि नहीं ! क्या हुआ यदि इन्द्रदेव डरपोक और कम-हिम्मत निकला, मैं तो हिम्मत हारने वाली नहीं हूँ और न आप ऐसे हैं । देखिए तो सही, मैं क्या हिम्मत करती हूँ और दुश्मनों को कैसा नाच नचाती हूँ । आप मेरी और अपनी हिम्मत पर भरोसा करें और इन्द्रदेव की आशा छोड़ मौका देखकर चुपचाप यहाँ से निकल चलें ।

अफसोस ! दुनिया में अच्छी नसीहत का असर बहुत कम होता है और बुरी सोहबत की बुरी शिक्षा शीघ्र अपना असर करके मनुष्य को बुराई के शिकंजे में फँसा-कर उनका सत्यानाश कर डालती है । मगर यह बात उन लोगों के लिए नहीं है जिनके दिमाग में सोचने-समझने और गौर करने की ताकत है । सन्तति के इस बयान में दोनों

रंग के पात्र मौजूद हैं, अतएव पाठकों को आश्चर्य न करना चाहिए ।

दूसरे दिन इन्द्रदेव ने अपने दोनों मेहमानों दारोगा और मायारानी को अपने घर में न पाया और पता लगाने से मालूम हुआ कि वे दोनों रात ही को किसी समय मौका पाकर वहाँ से निकल भागे ।

10

दोपहर की कड़ाके की धूप से व्याकुल होकर कुछ आराम पाने की इच्छा से दो आदमी एक नहर के किनारे, जिसके दोनों तरफ घने और गुंजान जंगली पेड़ों ने छाया कर रखी है, बैठकर आपस में धीरे-धीरे कुछ बातें कर रहे हैं। इनमें से एक तो बुड्ढा नकटा दारोगा है और दूसरी किस्मत से मुकावला करने वाली कम्बख्त मायारानी जो इस अवस्था को पहुँचकर भी हिम्मत हारने की इच्छा नहीं करती । ये दोनों इन्द्रदेव के मकान से चुपचाप भाग निकले हैं और बड़े-बड़े मनसूबे गाँठ रहे हैं। इनके साथ ही वे इन्द्रदेव को भी बिगाड़ने की तरकीब सोच रहे हैं, यह भी कोई आश्चर्य की बात नहीं हैं। बुरे मनुष्य जब किसी भले आदमी से मदद माँगने जाते हैं और बेचारा बुरे कामों का नतीजा सोचकर बुराई में उनका साथ देने से इन्कार करता है तो वे दुष्ट उसके भी दुश्मन हो जाते हैं ।

मायारानी—क्या हर्ज है ? जरा मुझे बन्दोबस्त कर लेने दीजिए, फिर मैं इन्द्रदेव से समझे बिना न रहूँगी ।

दारोगा—बेशक, मुझे भी इन्द्रदेव पर बड़ा ही क्रोध है। नालायक ने ऐसे नाजुक समय में साथ देने से इन्कार कर दिया। खैर, देखा जायगा, इस समय तो इस बात पर विचार करना चाहिए कि वीरेन्द्रसिंह के दुश्मन कौन-कौन हैं और उन लोगों को किस तरह अपना साथी बनाना चाहिए, क्योंकि हम लोगों का पहला काम यही है कि अपनी मण्डली को बढ़ावें ।

मायारानी—बेशक, ऐसा ही है। अच्छा, आप उन लोगों का नाम तो जरा ले जायें जो हम लोगों का साथ दे सकते हैं और यह भी कह जायें कि इस समय वे लोग कहाँ हैं।

दारोगा—(सोचता हुआ) महाराज शिवदत्त, भीमसेन और उनके साथी एक, माधवी दो, दिग्विजयसिंह का लड़का कल्याणसिंह तीन, शेरअलीखाँ जिसकी लड़की को वीरेन्द्रसिंह ने कैद रखा है चार, और उसके पक्षपाती लोग जिनका कुछ हिसाब नहीं।

मायारानी—बेशक, इन लोगों का साथ हो जाने से हम लोग वीरेन्द्रसिंह और उनके पक्षपातियों को तहस-नहस कर सकते हैं और ये लोग खुशी से हमारा साथ देंगे भी, मगर अफसोस यह है कि शेरअलीखाँ को छोड़कर बाकी के सभी लोग कैद में हैं। हाँ, यह तो कहिए कि महाराज शिवदत्त को किसने गिरफ्तार किया था और अब वह कहाँ हैं ?

दारोगा—मुझे ठीक-ठीक पता लग चुका है कि भूतनाथ ने 'रूहा' बनकर शिवदत्त को धोखा दिया और अब शिवदत्त कमलिनी के तालाब वाले मकान में कैद है, माधवी और मनोरमा भी उसी मकान में कैद हैं।

मायारानी—उस मकान में से उन लोगों को छुड़ाना जरा मुश्किल है, वह भी ऐसे समय में जब कि हमारे पास कोई ऐयार नहीं।

दारोगा—(यकायक कोई बाद याद आने से चौंककर) हाँ, मैं यह पूछना तो भूल ही गया कि तुम्हारे ऐयार बिहारीसिंह और हरनामसिंह कहाँ हैं? मालूम होता है कि तुम्हारी इस अवस्था का हाल उन लोगों को मालूम नहीं है। मगर नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। जमानिया में इतना फसाद मच जाना और तुम्हारा निकल भागना कोई साधारण बात नहीं है, जिसकी खबर तुम्हारे ऐयारों को न होती। शायद इसका कोई और सबब हो!

अब मायारानी इस सोच में पड़ गई कि दारोगा की बातों का क्या जवाब दिया जाय। उसने और सब हाल तो दारोगा से कह दिया था, मगर उन दोनों ऐयारों की जान लेने का हाल अब तक नहीं कहा था। उसने सोचा कि यदि दारोगा को यह मालूम हो जायगा कि मैंने दोनों ऐयारों को मार डाला तो उसे बड़ा ही रंज होगा, क्योंकि ऐयारों का मारना बहुत बुरा होता है। तिस पर अपने खास ऐयारों की जान लेना और सो भी बिना कसूर! लेकिन फिर क्या कहा जाय? क्या उनके मारने का हाल ठीक-ठीक न कहकर कुछ बहाना कर देना उचित होगा? नहीं, बहाना करने और छिपा जाने से काम नहीं चलेगा, अन्त में यह बात प्रकट हो ही जायगी, क्योंकि लीला को यह बात मालूम हो चुकी है और कम्बख्त लीला भी इस समय मेरा साथ छोड़कर अलग हो गई है। इसलिए आश्चर्य नहीं कि वह मेरा भंडा फोड़ दे और सभी के साथ बाबाजी को भी उन बातों का पता लग जाय। मगर नहीं, उस समय जो होगा देखा जायगा, अभी तो छिपाना ही उचित है।

मायारानी सिर झुकाये हुए इन बातों को सोच रही थी और दारोगा इस आश्चर्य में था कि मायारानी ने मेरी बात का जवाब क्यों नहीं दिया या यह क्या सोच रही है। आखिर दारोगा चुपचाप रह न सका और उसने पुनः मायारानी से कहा—

दारोगा—तुम क्या सोच रही हो, मेरी बात का जवाब क्यों नहीं देतीं?

तायारानी—मैं यही सोच रही हूँ कि आपकी बात का क्या जवाब दूं जब कि मैं स्वयं नहीं जानती कि मेरे ऐयारों ने ऐसे समय में मेरा साथ क्यों छोड़ दिया और कहाँ चले गये!

दारोगा—अस्तु, मालूम हुआ कि उन दोनों ने स्वयं तुम्हारा साथ छोड़ दिया।

मायारानी—बेशक, ऐसा ही कहना चाहिए। अच्छा अब विशेष समय नष्ट न करना चाहिए। अब आप जल्दी यह सोचिए कि हम कहाँ जाकर ठहरें और क्या करें!

दारोगा—अव जहाँ तक मैं समझता हूँ, यही उचित जान पड़ता है कि शेरअलीखाँ के पास चलें और उससे मदद लें। यह तो सब कोई जानते हैं कि शेरअलीखाँ बड़ा जबर्दस्त लड़ाका है, मगर उसके पास दौलत नहीं है।

मायारानी—ठीक है, मगर जब मैं दौलत से उसका घर भर दूँगी तो वह बहुत ही खुश होगा और एक जबर्दस्त फौज तैयार करके हमारा साथ देगा। मैं आपसे कह चुकी हूँ कि इस अवस्था में भी दौलत की मुझे कमी नहीं है।

दारोगा—हाँ, मुझे याद है, तुमने शिवगढ़ी के बारे में कहा था, अच्छा तो अब विलम्ब करने की आवश्लकता ही क्या है ? (चौंककर) हैं, यह क्या ! (हाथ का इशारा करके) वह कौन है जो सामने की झाड़ी में से निकलकर इसी तरफ आ रहा है ! शिवदत्त की तरह मालूम पड़ता है ! (कुछ रुककर) बेशक, शिवदत्त ही तो है ! हाँ देखो तो, वह अकेला नहीं है, उसके पीछे उसी झाड़ी में से और भी कई आदमी निकल रहे हैं।

मायारानी ने भी चौंककर उस तरफ देखा और हँसती हुई उठ खड़ी हुई।

चन्द्रकान्ता सन्तति

ग्यारहवां भाग

1

अब हम अपने पाठकों को पुनः कमलिनी के तिलिस्मी मकान की तरफ ले चलते हैं जहाँ बेचारी तारा को बदहवास और घबराई हुई छोड़ आये हैं ।

हम उस बयान में लिख चुके हैं कि छत के ऊपर जो पुतली थी उसे तेजी के साथ नाचते हुए देखकर तारा घबरा गई और बदहवास होकर कमलिनी को याद करने लगी, इसका सबब यह था कि यद्यपि बेचारी तारा उस तिलिस्मी मकान का पूरा-पूरा हाल नहीं जानती थी मगर फिर भी बहुत से भेद उसे मालूम थे और कमलिनी से सुन चुकी थी कि जब इस मकान पर कोई आफत आने वाली होगी तब वह पुतली (जिसके नाचने का हाल लिखा जा चुका है) तेजी के साथ घूमने लगेगी, उस समय समझना चाहिए कि इस मकान में रहने वालों की कुशल नहीं है । यही सबब था कि तारा बदहवास होकर इधर-उधर देखने लगी और उसकी अवस्था देखकर किशोरी और कामिनी को भी निश्चय हो गया कि बदकिस्मती ने अभी तक हम लोगों का पीछा नहीं छोड़ा और अब यहाँ भी कोई नया गुल खिलना चाहता है ।

जिस समय तारा घबरा कर इधर-उधर देख रही थी, उसकी निगाह यकायक पूरब की तरफ जा पड़ी जिधर दूर तक साफ मैदान था । तारा ने देखा कि लगभग आध कोस की दूरी पर सैकड़ों आदमी दिखाई दे रहे हैं और वे लोग तेजी के साथ तारा के इसी मकान की ओर बढ़े चले आ रहे हैं । इसी के साथ ही साथ तारा की तेज निगाह ने यह भी बता दिया कि वे लोग जिनकी गिनती चार सौ से कम न होगी, या तो फौजी सिपाही हैं या लड़ाई के फन में होशियार लुटेरों का कोई गिरोह है जो दुश्मनी के साथ थोड़ी ही देर में इस मकान को घेर कर उपद्रव मचाना चाहता है । इसके बाद तारा की निगाह तालाब पर पड़ी जिस पर उसे पूरा-पूरा भरोसा था और जानती थी कि इस जल को तैर कर कोई भी इस मकान में घुस आने का दावा नहीं कर सकता, मगर अफसोस इस समय तालाब की अवस्था भी बदली हुई थी अर्थात् उसमें का जल तेजी के साथ कम हो रहा था और लोहे की जालियाँ, जाल या फन्दे, जो जल के अन्दर छिपे हुए थे, अब

जल कम होते जाने के कारण धीरे-धीरे उसके ऊपर निकलते चले आ रहे थे। इन्हीं जालियों और फन्दों के कारण कोई आदमी उस तालाब में घुसकर अपनी जान नहीं बचा सकता था और इनका खुलासा हाल हम पहले लिख चुके हैं।

तारा ने जब तालाब का जल घटते और जालों को जल के बाहर निकलते देखा तो उसकी बची-बचाई आशा भी जाती रही, मगर उसने अपने दिल को सम्हाल कर इस आने वाली आफत से किशोरी और कामिनी को होशियार कर देना उचित जाना। उस ने किशोरी और कामिनी की तरफ देखकर कहा—"बहिन, अब मुझे एक आफत का हाल तो मालूम हो गया जो हम लोगों पर आना चाहती है। (उन फौजी आदमियों की तरफ इशारा करके, जो दूर से इसी तरफ आते हुए दिखाई दे रहे थे) वे लोग हमारे दुश्मन जान पड़ते हैं जो शीघ्र ही यहाँ आकर हम लोगों को गिरफ्तार कर लेंगे। मुझे पूरा-पूरा भरोसा था कि इस तालाब में तैर कर या घरनाई अथवा डोंगी के सहारे कोई इस मकान तक नहीं आ सकता क्योंकि जल के अन्दर लोहे के जाल इस ढंग से बिछे हुए हैं कि इसमें तैरने वाली चीज बिना फँसे और उलझे नहीं रह सकती, मगर वह बात भी जाती रही। देखो तालाब का जल कितनी तेजी के साथ घट रहा है, और जब सब जल निकल जायगा तो इस बीच वाले जाल को तोड़ या बिगाड़ कर यहाँ तक चले आने में कुछ भी कठिनता न रहेगी। मालूम होता है कि दुश्मनों ने इसका बन्दोबस्त पहले ही से कर रक्खा था अर्थात् सुरंग खोदकर जल निकालने और तालाब सुखाने का बन्दोबस्त किया गया है और निःसन्देह वे अपने काम में कृतकार्य हुए। (कुछ सोचकर) बड़ी कठिनाई हुई। (आसमान की तरफ देख के) माँ जगदम्बे, सिवाय तेरे हम अबलाओं की रक्षा करने वाला कोई भी नहीं, और तेरी शरण आए हुए को दुःख देने वाला भी जगत में कोई नहीं। मैं इतना दुःख भोग कर आज तक केवल तेरे ही भरोसे जी रही हूँ और जब इस की प्रसन्नता हुई कि आज तक तेरा ध्यान धर के जान बचाये रहना वृथा न हुआ तो अब यह बात? यह क्या? क्यों? किसके साथ? क्या उसके साथ जो तुम पर भरोसा रक्खे? नहीं-नहीं, इसमें भी आवश्य तेरी कुछ माया है!"

भगवती की प्रार्थना करते-करते तारा की आँखें बन्द हो गईं। मगर इसके बाद तुरत ही वह चौंकी तथा किशोरी और कामिनी की तरफ देख के बोली, "निःसन्देह महामाया हम अबलाओं की रक्षा करेंगी। हमें हताश न होना चाहिए, उन्हीं की कृपा से इस समय जो कुछ करना चाहिए वह भी सूझ गया। शुक्र है कि इस समय दो एक को छोड़ कर बाकी सब आदमी मेरे घर के अन्दर ही हैं। अच्छा देखो तो सही कि मैं क्या करती हूँ।" यह कहती हुई तारा छत के नीचे उतर गई।

हमारे पाठकों को याद होगा कि यह मकान किस ढंग का बना हुआ था। वे भूले न होंगे कि इस मकान के चारों तरफ जो छोटा-सा सहन है, उसके चारों कोनों में चार पुतलियाँ हाथों में तीर-कमान लिए इस ढंग से खड़ी हैं मानो अभी तीर छोड़ा ही चाहती हैं। इस समय बेचारी तारा छत पर से उतर कर उन्हीं पुतलियों में से एक पुतली के पास आई। उसने इस पुतली का सिर पकड़ कर पीठ की तरफ झुकाया और पुतली बिना परिश्रम झुकती चली गई यहाँ तक कि जमीन के साथ लग गई। इस समय

तालाब का जल करीब चौथाई के सूख चुका था, पुतली झुकने के साथ ही जल में खलबली पैदा हुई। उस समय तारा ने प्रसन्न हो पीछे की तरफ फिर कर देखा तो किशोरी और कामिनी पर निगाह पड़ी जो तारा के साथ ही साथ नीचे उतर आई थीं और उसके पीछे खड़ी यह कार्रवाई देख रही थीं। कई लौंडियाँ भी पीछे की तरफ नजर पड़ीं जो इत्तिफाक से इस समय मकान के अन्दर ही थीं। तारा ने कहा, "कोई हर्ज नहीं दुश्मन हमारे पास नहीं आ सकते।"

किशोरी—मेरी समझ में कुछ भी नहीं आया कि तुम क्या कर रही हो और इस पुतली के झुकाने से जल में खलबली क्यों पैदा हुई ?

तारा—ये पुतलियाँ इसी काम के लिए बनी हैं कि जब दुश्मन किसी तरकीब से इस तालाब को सुखा डाले और इस मकान में आने का इरादा करे तो इन चारों पुतलियों से काम लिया जाय। इस मकान की कुरसी गोल है और इसमें चार चक्र लगे हुए हैं जिनकी धार तलवार की तरह और चौड़ाई सात हाथ से कुछ ज्यादा होगी, हाथ भर की चौड़ाई तो मकान की दीवार में चारों तरफ घुसी हुई है जिसका सम्बन्ध किसी कल-पुर्जे से है और छह हाथ की चौड़ाई मकान की दीवार से बाहर की तरफ निकली हुई है। ये चारों चक्र जल के अन्दर छिपे हुए हैं और इस मकान को इस तरह घेरे हुए हैं जैसे छल्ला या सादी अँगूठी उँगली को। जब इन चारों पुतलियों में से एक पुतली झुका कर जमीन के साथ सटा दी जायगी तो एक चक्र तेजी के साथ घूमने लगेगा, इसी तरह दूसरी पुतली झुकने से दूसरा, तीसरी पुतली झुकने से तीसरा और चौथी पुतली झुकने से चौथा चक्र भी घूमने लगेगा। उस समय किसी की मजाल नहीं कि इस मकान के पास फटक जाय, जो आवेगा उसके चार टुकड़े हो जायेंगे। मैंने जो इस पुतली को झुका दिया है इस सबब से एक चक्र घूमने लगा है और उसी की तेजी से जल में खलबली पैदा हो गई है। पहले मुझे यह हाल मालूम न था, कमलिनी के बताने से मालूम हुआ है। विशेष कहने की कोई आवश्यकता नहीं है, तुम स्वयं देखती हो कि जल किस तेजी के साथ कम हो रहा है। हाथ भर जल कम होने दो फिर स्वयं देख लेना कि कैसा चक्र है और किस तेजी के साथ घूम रहा है।

किशोरी—(आश्चर्य से) मकान की पूरी हिफाजत के लिए अच्छी तरकीब निकाली है।

तारा—इन चक्रों के अतिरिक्त इस मकान की हिफाजत के लिए और भी कई चीजें हैं मगर उनका हाल मुझे मालूम नहीं है।

किशोरी ने गौर से जल की तरफ देखा जो चक्र के घूमने की तेजी से मकान के पास की तरफ खलबला रहा था और उसमें पैदा हुई लहरें किनारे तक जा-जा कर टक्कर खा रही थीं। जल बहुत ही साफ था इसलिए शीघ्र ही कोई चमकती हुई चीज भी दिखाई देने लगी। जैसे-जैसे जल कम होता जाता था, वह चक्र साफ-साफ दिखाई देता था। थोड़े ही देर बाद जल विशेष घट जाने के कारण चक्र साफ निकल आया जो बहुत ही तेजी के साथ घूम रहा था। किशोरी ने ताज्जुब में आकर कहा, "बेशक अगर इसके पास लोहे का आदमी भी आवेगा तो कट कर दो टुकड़े हो जायगा!" वह बड़े

गौर से उस चक्र को देख रही थी कि आदमियों के शोरगुल की आवाजें आने लगीं। तारा समझ गई कि दुश्मन पास आ गये। उसने किशोरी और कामिनी की तरफ देखके कहा, "बहिनो, अब तीन पुतलियाँ और रह गई हैं, हमें उन्हें भी झटपट झुका देना चाहिए क्योंकि दुश्मन आ पहुँचे। एक पुतली को तो मैं झुकाती हूँ और दो पुतलियों को तुम दोनों झुका दो, फिर छत पर चल कर देखो तो सही ईश्वर क्या करता है और इन दुश्मनों की क्या अवस्था होती है।

तीनों पुतलियों का झुकाना थोड़ी देर का काम था जो किशोरी, कामिनी और तारा ने कर दिया और इसके बाद तीनों छत के ऊपर चढ़ गईं। तारा ने एक और काम किया अर्थात् कमान और बहुत से तीर भी अपने साथ छत के ऊपर लेती गईं।

चारों पुतलियों के झुक जाने से जल में बहुत ज्यादा खलबली पैदा हुई, मालूम होता था कि जल तेजी के साथ मथा जा रहा है जिससे झाग और फेन पैदा हो रहा था।

अपने यहाँ की लौंडियों और नौकरों को कुछ समझाकर कामिनी तथा किशोरी को साथ लिए हुए तारा छत के ऊपर चढ़ गई और वहाँ से जब दुश्मनों की तरफ देखा तो मालूम हुआ कि वे लोग, जो गिनती में चार सौ से किसी तरह कम न होंगे, तालाब के पास पहुँच गये हैं और तालाब के खौलते हुए जल तथा उस एक चक्र को, जो इस समय जल के बाहर निकला हुआ तेजी के साथ घूम रहा था, हैरत की निगाह से देख रहे हैं।

तारा—किशोरी बहिन देखो, अगर इस समय उन चारों पुतलियों का हाल मालूम न होता तो हम लोगों की तबाही में कुछ बाकी न था!

किशोरी—बेशक इस समय तो उन चारों चक्रों ही ने हम लोगों की जान बचा ली। दुश्मन लोग इस समय उन चक्रों को आश्चर्य से ही देख रहे हैं और इस तरफ कदम बढ़ाने की हिम्मत नहीं करते।

कामिनी—मगर हम लोग कब तक इस अवस्था में रह सकते हैं? क्या वे चारों चक्र इसी तरह बहुत दिनों तक घूमते रह सकते हैं?

तारा—हाँ, अगर हम लोग स्वयं न रोक दें तो एक महीने तक बराबर घूमते रहेंगे, इसके बाद इन चक्रों के घुमाने के लिए कोई दूसरी तरकीब करनी होगी जो मुझे मालूम नहीं।

किशोरी—अगर ऐसा है तो महीने भर तक हम लोग बेखौफ रह सकते हैं, और क्या इस बीच में हमारी मदद करने वाला कोई भी नहीं पहुँचेगा?

तारा—क्यों नहीं पहुँचेगा! मान लिया जाय कि हमारा साथी इस बीच में कोई न आवे तो भी रोहतासगढ़ से मदद जरूर आवेगी, क्योंकि यह जमीन रोहतासगढ़ की अमलदारी में है और रोहतासगढ़ यहाँ से बहुत दूर भी नहीं है, अस्तु ऐसा नहीं हो सकता कि राजा की अमलदारी में इतने आदमी मिलकर उपद्रव मचावें और राजा को कुछ खबर न हो।

कामिनी—ठीक है मगर यह तो कहो कि बहुत दिनों तक काम चलाने के लिए गल्ला इस मकान में है?

तारा—ओह, गल्ले की क्या कमी है, साल-भर से ज्यादा दिन तक काम चलाने के लिए गल्ला मौजूद है !

कामिनी—और जल के लिए क्या बन्दोबस्त होगा ! क्योंकि जितनी तेजी के साथ इस तालाब का जल निकल रहा है उससे तो मालूम होता है कि पहर भर के अन्दर तालाब सूख जायगा ।

कामिनी की इस बात ने तारा को चौंका दिया। उसके चेहरे से बेफिक्री की निशानियाँ जो चारों पुतलियों की करामात से पैदा हो गई थीं, जाती रहीं और उसके बदले में घबराहट और परेशानी ने अपना दखल जमा लिया। तारा की यह अवस्था देखकर किशोरी और कामिनी को विश्वास हो गया कि इस तालाब का जल सूख जाने पर बेशक हम लोगों को प्यासे रहकर जान देनी पड़ेगी, क्योंकि अगर ऐसा न होता तो तारा घबराकर चुप न हो जाती, जरूर कुछ जवाब देती। आखिर तारा को चिन्ता में डूबे हुए देखकर कामिनी ने पुनः कुछ कहना चाहा मगर मौका न मिला, क्योंकि तारा यकायक कुछ सोचकर उठ खड़ी हुई, और कामिनी तथा किशोरी को अपने पीछे-पीछे आने का इशारा करके छत के नीचे उतर कमरों में घूमती-फिरती उस कोठरी में पहुँची जिसमें नहाने के लिए छोटा-सा हौज बना हुआ था, जिसमें एक तरफ से तालाब का जल आता और दूसरी तरफ से निकल जाता था। इस समय तालाब में पानी कम हो जाने के कारण हौज का जल भी कुछ कम हो गया था। तारा ने वहाँ पहुँचने के साथ ही फुर्ती से उन दोनों रास्तों को बन्द कर दिया जिनसे हौज में जल आता और निकल जाता था। इसके बाद एक ऊँची साँस लेकर उसने कामिनी की तरफ देखा, और कहा—

तारा—ओफ, इस समय बड़ा ही गजब हो चला था ! अगर तुम पानी के विषय में याद न दिलातीं तो इस हौज की तरफ से मैं बिल्कुल बेफिक्र थी। इसका ध्यान भी न था कि तालाब का जल कम हो जाने पर यह हौज भी सूख जायगा और तब हम लोगों को प्यासे रह कर जान देनी पड़ेगी।

किशोरी—तो इससे जाना जाता है कि तालाब सूख जाने पर, सिवाय इस छोटे से हौज के और कोई चीज ऐसी नहीं है जो हम लोगों की प्यास बुझा सके ?

कामिनी—और यह हौज तीन-चार दिन से ज्यादा काम नहीं चला सकता, ऐसी अवस्था में उन चक्रों का महीने-भर तक घूमना ही वृथा है, क्योंकि हम लोग प्यास के मारे मौत के मेहमान हो जायंगे। अफसोस, जिस कारीगर ने इस मकान की हिफाजत के लिए ऐसी चीजें बनाईं, और जिसने यह सोचकर कि तालाब का जल सूख जाने पर भी इस मकान में रहने वालों पर मुसीबत न आवे, ये घूमने वाले चक्र बनाये उसने इतना न सोचा कि तालाब सूखने पर यहाँ के रहने वाले जल कहाँ से पीयेंगे। उसे इस मकान में एक कुआँ भी बना देना था।

तारा—ठीक है, मगर जहाँ तक मैं खयाल करती हूँ कि इस मकान के बनाने वाले कारीगर ने इतनी बड़ी भूल न की होगी। उसने कोई कुआँ अवश्य बनाया होगा,

लेकिन मुझे तो उसका पता मालूम ही नहीं। खैर, देखा जायगा, मैं उसका पता अवश्य लगाऊँगी।

कामिनी—मुझे एक बात का खतरा और भी है।

तारा—वह क्या?

कामिनी--वह यह है कि तालाब सूख जाने पर ताज्जुब नहीं कि यहाँ तक पहुँचने के लिए इस मकान के नीचे सुरंग खोदने और दीवार तोड़ने की कोशिश दुश्मन लोग करें।

तारा—ऐसा तो हो ही नहीं सकता, इस मकान की दीवार किसी जगह से किसी तरह टूट नहीं सकती।

इसी बीच तालाब के बाहर से विशेष कोलाहल की आवाज आने लगी, जिसे सुन तारा, किशोरी और कामिनी मकान के ऊपर चली गईं, और छिपकर दुश्मनों का हाल देखने लगीं। वे लोग इस मकान में पहुँचना कठिन जानकर शोरगुल मचा रहे थे और कई आदमी हाथ में तीरकमान लिए इस वास्ते भी तैयार दिखाई दे रहे थे कि कोई आदमी इस मकान के बाहर निकले तो उस पर तीर चलावें। किशोरी ने बड़े गौर से दुश्मनों की तरफ देखकर तारा से कहा, "बहिन तारा, इन दुश्मनों में बहुत से लोग ऐसे हैं, जिनको मैं बखूबी पहचानती हूँ, क्योंकि जब मैं अपने बाप के घर में थी, तो ये लोग मेरे बाप के नौकर थे।

तारा—ठीक है, मैं भी इन लोगों को पहचानती हूँ, बेशक ये लोग तुम्हारे बाप के नौकर हैं और उन्हीं को छुड़ाने के लिए यहाँ आये हैं।

किशोरी—(चौंक कर) तो क्या मेरे पिता इसी मकान में कैद हैं?

तारा—हाँ, वे भी इसी मकान में कैद हैं।

किशोरी को जब यह मालूम हुआ कि उसका बाप इस मकान में कैद है तो उस के दिल पर एक प्रकार की चोट सी बैठी। यद्यपि उसने अपने बाप की बदौलत बहुत तकलीफें उठाई थीं। बल्कि यों कहना चाहिए कि अभी तक अपने बाप की बदौलत दु:ख भोग रहीं है और दर-दर मारी-मारी फिरती है, मगर फिर भी किशोरी का दिल पाक साफ और शीघ्र ही पसीज जाने वाला था। वह अपने बाप का हाल सुनते ही कुछ देर कें लिए वे सब बातें भूल गई जिनकी बदौलत आज तक दुर्दशा की छतरी उसके सिर पर से नहीं हटी थी। इसके साथ ही पल भर के लिए उसकी आँखों के सामने वह खँडहर वाला दृश्य भी घूम गया जहाँ उसके सगे भाई ने खंजर से उसकी जान लेने के लिए वीरता प्रकट की थी।[1] मगर रामशिला वाले साधु के पहुँच जाने से कुछ न कर सका था। वह यह भी जानती थी कि उसका भाई भीमसेन पिता की आज्ञा पाकर मेरी जान लेने के लिए आया था और अब भी अगर पिता का बस चले तो मेरी जान लेने में विलम्ब न करे, मगर फिर भी कोमल-हृदया किशोरी के दिल में बाप को देखने की

---

1. चन्द्रकान्ता सन्तति (दूसरे भाग) के आखिरी बयान में इसका हाल लिखा गया है।

इच्छा प्रकट हुई, और उसने डबडबाई हुई आँखों से तारा की तरफ देखकर गद्गद स्वर से कहा—

किशोरी—बहिन, तुम्हें आश्चर्य होगा कि यदि मैं पिता को देखने की इच्छा प्रकट करूँ, मगर लाचार हूँ, जी नहीं मानता।

तारा—हाँ, यदि कोई दूसरी बेकसूर लड़की ऐसे पिता से मिलने की इच्छा प्रकट करती तो अवश्य आश्चर्य की जगह थी, मगर तेरे लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि मैं तेरे स्वभाव को अच्छी तरह जानती हूँ, परन्तु बहिन किशोरी, मुझे निश्चय है कि तू अपने पिता को देखकर प्रसन्न न होगी, बल्कि तुझे दुःख होगा, वह तुझे देखते ही बेबस रहने पर भी हजारों गालियाँ देगा, और कच्चा ही खा जाने के लिए तैयार हो जायगा।

किशोरी—तुम्हारा कहना ठीक है, परन्तु मैं माता-पिता की गाली को आशीर्वाद समझती हूँ, यदि वे कुछ कहेंगे तो कोई हर्ज नहीं, और मैं ज्यादा देर तक उनके पास ठहरूँगी भी नहीं, केवल एक नजर देखकर पिछले पैर लौट आऊँगी। मुझे विश्वास है कि दुश्मन लोग जो तालाब के बाहर खड़े हैं, इस समय मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकते और यदि तुम्हारी कृपा होगी तो मैं ऐसे समय में भी बेफिकी के साथ अपने पिता को एक नजर देख सकूँगी।

तारा—खैर, जब ऐसा कहती हो तो लाचार मैं तुम्हें कैदखाने में ले चलने के लिए तैयार हूँ, चलकर अपने पिता को देख लो।

कामिनी—क्या मैं भी तुम लोगों के साथ चल सकती हूँ ?

तारा—हाँ-हाँ, कोई हर्ज नहीं, तू भी चल कर अपनी रानी माधवी को एक नजर देख ले।

लौंडियों को बुलाकर हौज के विषय में तथा और भी किसी विषय में समझा-बुझा कर किशोरी और कामिनी को साथ लिए हुए तारा वहाँ से रवाना हुई और एक कोठरी में से लालटेन तथा खंजर ले दूसरी कोठरी में गई जिसमें किसी तरह का सामान न था। इस कोठरी में मजबूत ताला लगा हुआ था जो खोला गया और तीनों कोठरी के अन्दर गईं। कोठरी बहुत छोटी थी और इस योग्य न थी कि वहाँ का कुछ हाल लिखा जाय। इस कोठरी के नीचे एक तहखाना था जिसमें जाने के लिए छोटा-सा मगर लोहे का खूब मजबूत दरवाजा जमीन में दिखाई दे रहा था। तारा ने लालटेन जमीन पर रख कर कमर में से ताली निकाली और तहखाने का दरवाजा खोला। नीचे बिल्कुल अंधकार था इसलिए तारा ने जब लालटेन उठाकर दिखाया तो छोटी-छोटी सीढ़ियाँ नजर पड़ीं। किशोरी, कामिनी को पीछे-पीछे आने का इशारा करके तारा तहखाने में उतर गई मगर जब नीचे पहुँची तो यकायक चौंक कर ताज्जुब भरी निगाहों के साथ इस तरह चारों तरफ देखने लगी जैसे किसी की कोई अनमोल अलभ्य और अनूठी चीज यकायक सामने से गुम हो जाय और वह आश्चर्य से चारों तरफ देखने लगे।

यह तहखाना दस हाथ चौड़ा और पन्द्रह हाथ लम्बा था। इसकी अवस्था कहे देती थी कि यह जगह केवल हथकड़ी-बेड़ी से सुशोभित कैदियों की खातिरदारी के लिए

ही बनाई गई है। बिना चौखट-दरवाजे की छोटी-छोटी दस कोठरियाँ जो एक के साथ दूसरी लगी हुई थीं एक तरफ और उसी ढंग की उतनी ही कोठरियाँ उसके सामने दूसरी तरफ बनी हुई थीं। इतनी कम जमीन में बीस कोठरियों के ध्यान ही से आप समझ सकते हैं कि कैदियों का गुजारा किस तकलीफ से होता होगा।

दोनों तरफ तो कोठरियों की पंक्ति थी और बीच में थोड़ी-सी जगह इस योग्य बची हुई थी कि यदि कैदियों को रोटी-पानी पहुँचाने या देखने के लिए कोई जाय तो अपना काम बखूबी कर सके। इसी बची हुई जमीन के एक सिरे पर तहखाने में आने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। जिस राह से इस समय तारा, किशोरी और कामिनी आई थीं उसी के सामने अर्थात् दूसरे सिरे पर लोहे का एक छोटा मजबूत दरवाजा था जो इस समय खुला था और एक बड़ा सा खुला हुआ ताला उसके पास ही जमीन पर पड़ा हुआ था जो बेशक उसी दरवाजे में उस समय लगा होगा जब वह दरवाजा बन्द होगा। इसी दरवाजे को खुला हुआ और अपने कैदियों को न देखकर तारा चौंकी और घबरा कर चारों तरफ देखने लगी थी।

तारा—बड़े आश्चर्य की बात है कि हथकड़ी-बेड़ी से जकड़े हुए कैदी क्योंकर निकल गये और इस दरवाजे का ताला किसने खोला। निःसन्देह या तो हमारे नौकरों में से किसी ने कैदियों की मदद की या कैदियों का कोई मित्र इस जगह आ पहुँचा। मगर नहीं, इस दरवाजे को दूसरी तरफ से कोई खोल नहीं सकता, परन्तु ···

किशोरी—क्या यह किसी सुरंग का दरवाजा है?

तारा—समय पड़ने पर आने-जाने के लिए यह एक सुरंग है जो यहाँ से बहुत दूर जाकर निकली है। वर्षों हो गये कि इस सुरंग से कोई काम नहीं लिया गया, केवल उस दिन यह सुरंग खोली गई थी जिस दिन तुम्हारे पिता गिरफ्तार हुए थे क्योंकि वे इसी सुरंग की राह से यहाँ लाए गये थे।

कामिनी—मैं समझती हूँ कि इस सुरंग के दरवाजे को बन्द करने में जल्दी करनी चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि इस राह से दुश्मन लोग आ पहुँचें और हमारा बना-बनाया खेल बिगड़ जाय।

किशोरी—मेरी तो यह राय है कि इस सुरंग के अन्दर चलकर देखना चाहिए, शायद कैदियों का कुछ···

तारा—मेरी भी यही राय है, मगर इस तरह खाली हाथ सुरंग के अन्दर जाना उचित न होगा, शायद दुश्मनों का सामना हो जाय, अच्छा ठहरो मैं तिलिस्मी नेजा लेकर आती हूँ।

इतना कह कर तारा तिलिस्मी नेजा लेने के लिए चली मगर अफसोस उसने बड़ी भारी भूल की कि सुरंग के दरवाजे को बिना बन्द किए ही चली आई और इसके लिए उसे बहुत रंज उठाना पड़ा अर्थात् जब वह तिलिस्मी नेजा लेकर लौटी और तहखाने में पहुँची तो वहाँ किशोरी और कामिनी को न पाया, निश्चय हो गया कि उसी सुरंग की राह से जिसका दरवाजा खुला हुआ था दुश्मन आये और किशोरी तथा कामिनी को पकड़ के ले गये।

2

किशोरी और कामिनी के गायब हो जाने का तारा को बड़ा रंज हुआ यहाँ तक कि उसने अपनी जान की कुछ भी परवाह न की और तिलिस्मी नेजा हाथ में लिए हुए बेधड़क उस सुरंग में घुस गई। यह वही तिलिस्मी नेजा था जो कमलिनी ने उसे दिया था और जिस पर तारा को बहुत भरोसा था।

आज के पहले तारा को इस सुरंग के अन्दर जाने का अवसर नहीं पड़ा था इसलिए वह नहीं जानती कि यह सुरंग कैसी है, अस्तु, उसने तिलिस्मी नेजे का कब्जा दबाया, उसमें से बिजली की तरह चमक पैदा हुई और उसी रोशनी में तारा ने दरवाजे के अन्दर कदम रक्खा। दो ही कदम जाने बाद नीचे उतरने के लिए कई सीढ़ियाँ दिखाई दीं और जब तारा नीचे उतर गई तो सीधी सुरंग मिली।

तारा बड़ी तेजी के साथ बल्कि यों कहना चाहिए कि दौड़ती हुई उस सुरंग में रवाना हुई और जब वह थोड़ी दूर चली गई तो उसे कई आदमी दिखाई पड़े जो आगे की तरफ जा रहे थे मगर अपने पीछे तिलिस्मी नेजे की अद्‌भुत चमक देखकर रुक गये थे और ताज्जुब भरी निगाहों से उस चमक को देख रहे थे जो पल भर में पास होकर उनकी आँखों में चकाचौंध पैदा कर रही थी।

ये लोग वे ही थे जो किशोरी और कामिनी को जबर्दस्ती पकड़ के ले गये थे। वे लोग बहुत दूर जाने न पाये थे जब तिलिस्मी नेजा लिए हुए तारा लौट आई थी, इसके अतिरिक्त किशोरी और कामिनी को जबर्दस्ती घसीटते लिए जा रहे थे इसलिए तेज भी नहीं चल सकते थे, यही सबब था कि तारा ने बहुत जल्द उन्हें जा पकड़ा। उन लोगों के साथ एक लालटेन थी मगर नेजे की चमक ने उसे बेकार कर दिया था। जब उन लोगों ने दूर से तारा को देखा तो एक दफे उनकी यह इच्छा हुई कि तारा को भी पकड़ लेना चाहिए परन्तु नेजे की अद्‌भुत करामात ने उनका दिल तोड़ दिया और चमक से उनकी आँखें ऐसी बेकार हुईं कि भागने का भी उद्योग न कर सके।

बात की बात में तारा उन लोगों के पास जा पहुँची जो गिनती में चार थे। यदि तारा के हाथ में तिलिस्मी नेजा न होता तो वे लोग उसे भी अवश्य पकड़ लेते मगर यहाँ तो मामला ही और था। नेजे की चमक से लाचार होकर वे स्वयं दोनों हाथों से अपनी-अपनी आँखें बन्द कर के बैठ गये थे तथा किशोरी और कामिनी की भी यही अवस्था थी।

तारा ने फुर्ती से तिलिस्मी नेजा चारों आदमियों के बदन से लगा दिया जिससे वे लोग काँप कर बात की बात में बेहोश हो गये। अब तारा ने नेजे का मुट्ठा ढीला किया, उसकी चमक बन्द हो गई और उस समय किशोरी और कामिनी ने आँखें खोल कर तारा को देखा।

किशोरी और कामिनी का हाथ रस्सी से बँधा हुआ था जिसे तारा ने तुरत खोल दिया। किशोरी और कामिनी बड़ी मुहब्बत के साथ तारा से लिपट गईं और तीनों की

आँखों से गर्म आँसू गिरने लगे। तारा ने किशोरी और कामिनी से कहा, "बहिन, तुम जरा यहाँ ठहरो, मैं थोड़ी दूर तक आगे बढ़ कर देखती हूँ कि क्या हाल है, अगर कोई दुश्मन न मिला तो भी सुरंग के दूसरे किनारे पर पहुँच कर दरवाजा बन्द कर देना आवश्यक है। मुझे निश्चय है कि बाहरी दुश्मन इस दरवाजे को नहीं खोल सकते, मगर ताज्जुब है कि कैदियों ने क्योंकर ये दरवाजे खोले।"

किशोरी—ठीक है मगर मेरी राय नहीं है कि तुम आगे बढ़ो। कहीं ऐसा न हो कि दुश्मनों का सामना हो जाय। इससे यही उचित होगा कि यहाँ से लौट चलो और सुरंग तथा तहखाने का मजबूत दरवाजा बन्द करके चुपचाप बैठो फिर जो ईश्वर करेगा देखा जायगा।

तारा—(कुछ सोचकर) बेहतर होगा कि तुम दोनों चली जाओ और सुरंग तथा तहखाने का दरवाजा बन्द करके चुपचाप बैठो और मुझे इस सुरंग की राह में इसी समय निकल जाने दो क्योंकि कैदियों का भाग जाना मामूली बात नहीं है, निःसन्देह वे लोग भारी उपद्रव मचावेंगे और मुझे कमलिनी के आगे शर्मिन्दगी उठानी पड़ेगी। यह तो कहो ईश्वर ने बड़ी कृपा की कि तुम दोनों बहिन शीघ्र ही मिल गईं नहीं तो अनर्थ हो ही चुका था और मैं कमलिनी को मुँह दिखाने लायक नहीं रही थी। अब जब तक कैदियों का पता न लगा लूँगी मेरा जी ठिकाने न होगा।

कामिनी—बहिन, तुम यह क्या कह रही हो! जरा सोचो तो सही कि इतने दुश्मनों में तुम्हारा अकेले जाना उचित होगा? और क्या इस बात को हम लोग मान लेंगे?

तारा—(तिलिस्मी नेजे की तरफ इशारा करके) यह एक ऐसी चीज मेरे पास है कि मैं हजार दुश्मनों के बीच में अकेली जाकर फतह के साथ लौट आ सकती हूँ। यद्यपि तुम दोनों ने इस समय इस नेजे की करामात देख ली मगर फिर भी मैं कहती हूँ कि इस नेजे का असल हाल तुम्हें मालूम नहीं है इसी से मुझे रोकती हो।

किशोरी—बेशक इस नेजे की करामात मैं देख चुकी हूँ और यह निःसन्देह एक एक अनूठी चीज है मगर फिर भी मैं तुमको अकेले न जाने दूँगी, अगर जिद करोगी तो हम दोनों भी तुम्हारे साथ चलेंगी।

तारा ने बहुत-कुछ समझाया और जोर मारा मगर किशोरी और कामिनी ने एक न मानी और तारा को मजबूर होकर उन दोनों की बात माननी पड़ी। अन्त में यह निश्चय हुआ कि सुरंग के किनारे पर चल कर उसका दरवाजा बन्द कर देना चाहिए और इन बदमाशों को भी घसीटकर ले चलना चाहिए और सुरंग के बाहर कर देना चाहिए, अपने आदमियों को कैद करने की आवश्यकता नहीं है—आखिर ऐसा ही किया गया।

किशोरी, कामिनी और तारा कैदियों को घसीटते हुए ले गईं और आधे घंटे में सुरंग के दूसरे मुहाने पर पहुँचीं। यह मुहाना पहाड़ी के एक खोह से संबन्ध रखता था और वहाँ लोहे का छोटा सा दरवाजा लगा हुआ था जो इस समय खुला था। तारा ने कैदियों को बाहर फेंक कर दरवाजा बन्द कर दिया और इसके बाद तीनों वहाँ से लौट

पड़ीं। रास्ते में तारा ने तिलिस्मी नेजे और खंजर का पूरा-पूरा हाल किशोरी और कामिनी को समझाया।

तहखाने में पहुँचकर सुरंग का दूसरा दरवाजा बन्द किया गया और फिर ऊपर पहुँच कर तारा ने तहखाने का दरवाजा भी बन्द करके ताला लगा दिया।

इधर तालाब का जल तेजी के साथ सूख रहा था क्योंकि तालाब के ऊपरी हिस्से में लम्बाई-चौड़ाई ज्यादा होने के कारण जल भी ज्यादा अँटता है इसी तरह निचले हिस्से में लम्बाई-चौड़ाई कम होने के कारण जल कम रहता है, इसीलिए बनिस्बत ऊपरी हिस्से के तालाब के निचले हिस्से का जल क्रमशः तेजी के साथ कम होता गया, यहाँ तक कि जब तारा सुरंग और तहखाने से निकल कर मकान की छत पर पहुँची तो उस ने तालाब को सूखा हुआ पाया। मकान के चारों तरफ घूमने वाले लोहे के चक्र तेजी के साथ घूम रहे थे और दुश्मन लोग यह सोचकर कि उन चक्रों की बदौलत मकान तक पहुँचना बहुत कठिन बल्कि असम्भव है उन चक्रों को ताज्जुब के साथ देख और उनको रोकने की तरकीब सोच रहे थे। इधर किशोरी, कामिनी और तारा भी उनकी इस अवस्था को मकान की छत पर से दीवार के उन छेदों की राह देख रही थीं जो दुश्मनों पर तोप के गोले बरसाने के लिए बने हुए थे।

इस समय रात दो घण्टे से ज्यादा जा चुकी थी मगर पहर ही भर तक दर्शन देकर अस्त हो जाने वाले चन्द्रमा की रोशनी दुश्मनों की किसी कार्रवाई को अँधेरे के पर्दे में छिपी रहने नहीं देती थी।

दुश्मनों ने जब देखा कि चक्रों के सबब से मकान तक पहुँचना असम्भव है तो उन्होंने उद्योग का एक मजेदार ढंग निकला जिसे देख तारा, किशोरी और कामिनी के दिल में खौफ पैदा हुआ, अर्थात् दुश्मनों ने तालाब को मिट्टी से पाटना शुरू किया। बेशक यह तरकीब बहुत ही अच्छी थी क्योंकि तालाब पट जाने पर उन चक्रों का घूमना न घूमना बराबर था और आश्चर्य नहीं कि मिट्टी के अन्दर दब जाने के कारण वे रुक भी जाते, मगर इस काम के लिए दुश्मनों को मामूली से बहुत ज्यादा समय नष्ट करना पड़ा क्योंकि उन लोगों के पास जमीन खोदने के लिए फ़ावड़ा या कुदाली की किस्म का कोई औजार न था, खञ्जर, तलवार और नेजों ही से वे लोग जो कुछ कर सकते थे, करने लगे।

दुश्मनों के इस उद्योग को देखकर तारा का कलेजा दहल गया और उसने अफ-सोस के साथ किशोरी की तरफ देख के कहा—

तारा—अहो अब इस उद्योग का क्या जवाब दिया जाय?

किशोरी—यद्यपि वे लोग एक दिन में तालाब नहीं पाट सकते मगर हम लोगों के बचाव के लिए अब कोई तरकीब सोचनी चाहिए क्योंकि तालाब पट जाने पर ये चारों चक्र जमीन के अन्दर हो जायेंगे और उस समय इस मकान में दुश्मनों का घुस आना कुछ कठिन न होगा।

कामिनी—उस सुरंग की राह भाग जाने के सिवाय हम लोग और कुछ भी नही कर सकेंगे।

तारा—क्या दुश्मन लोग सुरंग के उस मुहाने को सूना छोड़ देंगे जिसका पूरा-पूरा हाल उन लोगों को मालूम हो चुका है ?

कामिनी—इसकी आशा भी नहीं हो सकती, बेशक भागना मुश्किल हो जायगा। खैर जो कुछ होगा देखा जायगा। इस समय तो मैं यही मुनासिब समझती हूँ कि तीर मार कर दुश्मनों की गिनती कम करनी चाहिए। वे लोग हम लोगों पर कोई हर्बा नहीं चला सकते।

तारा—हाँ, इस समय तो यही करना मुनासिब होगा इसके बाद जो राय होगी किया जायगा, मगर बहिन, मैं फिर भी कहती हूँ कि तुम मुझे तिलिस्मी नेजा हाथ में लेकर सुरंग की राह से निकल जाने दो, फिर देखो तो सही कि मैं अकेली इतने दुश्मनों को क्योंकर बात की बात में मार गिराती हूँ। तुम्हें इस नेजे का हाल पूरा-पूरा मालूम हो ही चुका है अतएव उस पर भरोसा करके तुम्हें उचित है कि मुझे न रोको, मैं नहीं चाहती कि यह तालाब पट जाय और फिर सफाई कराने के लिए तकलीफ उठानी पड़े।

कामिनी—तुम्हारा कहना ठीक है, इस नेजे की जहाँ तक तारीफ की जाय कम है, और तुम उन सभी को जहन्नुम में पहुँचा सकोगी जो दुश्मनी की नीयत से तुम्हारे पास आयेंगे, मगर उनका तुम क्या बिगाड़ सकोगी जो दूर ही से तुम्हें तीर का निशाना बनावेंगे।

तारा—(कुछ सोचकर) बेशक, यह एक ऐसी बात तुमने कही जिस पर विचार करना चाहिए···अच्छा, खूब याद आया। इस मकान में फौलाद का एक ऐसा कवच है, जो बदन पर ठीक आ सकता है, मैं उसे पहनकर जाऊँगी और तीर की चोट से बेफिक्र रहूँगी। यद्यपि इस पर भी तुम कह सकती हो कि आँख, नाक, कान, मुंह इत्यादि किस-किस जगह की तुम हिफाजत कर सकती हो ? मगर इसके साथ ही यह बात भी सोचना चाहिए कि अगर तालाब पाटकर दुश्मन यहाँ घुस आवेंगे और हम लोगों को पकड़ लेंगे तो क्या होगा ? अपनी बेइज्जती कराना और बेहुर्मती के साथ जान देना अच्छा होगा या बहादुरी के साथ सौ-पचास को मारकर लड़ाई के मैदान में मिट जाना उचित होगा ?

किशोरी—जब ऐसा ही है और तुम प्राण देने के लिए मुस्तैद होकर जाती ही हो तो हम दोनों को क्यों छोड़े जाती हो ? क्या इसलिए कि तुम्हारे बाद हम लोगों की दुर्दशा और बेइज्जती हो ?

इस विषय में किशोरी, कामिनी और तारा में देर तक हुज्जत और बहस होती रही, अन्त में यही निश्चय हुआ कि सूरत बदलने और कवच पहनने के बाद हाथ में तिलिस्मी नेजा लेकर तारा सुरंग की राह से जाय और दुश्मनों का मुकाबला करे, किशोरी और कामिनी दोनों में से एक या दोनों तारा के साथ सुरंग में जायें और जब तारा सुरंग के बाहर हो जाय तो हर एक दरवाजे को बन्द करती हुई लौट आवें। इसके बाद दुश्मनों के भाग जाने पर मकान में तारा का लौट आना कोई मुश्किल न होगा।

यह बात तै पाई गई और तीनों नौजवान औरतें जिनमें आपस में बहिनों से भी बढ़कर मुहब्बत हो गई थी, छत के नीचे उतर आई और एक कोठरी में चली गयीं। तारा ने ऐयारी के मसाले से अपने को रँगा और अपनी ऐसी भयानक सूरत बनाई कि

देखने वाला कैसी ही जीवट का क्यों न हो, मगर एक दफे तो अवश्य ही डर जाय। इसके बाद कवच पहना और तिलिस्मी नेजा लेकर सुरंग में रवाना हुई, हाथ में एक लालटेन लिए किशोरी और कामिनी भी साथ हुईं।

पहले तहखाने वाली कोठरी का दरवाजा खोला गया, फिर सुरंग का दरवाजा खोलकर तीनों मुँहबोली बहिनें सुरंग में दाखिल हो गयीं।

ये तीनों बीस-पच्चीस कदम से ज्यादा न गई होंगी कि पीछे की तरफ से यकायक दरवाजा बन्द कर लेने की आवाज आई, जिसे सुनते ही तीनों चौंक पड़ीं और खड़ी हो गयीं। तारा ने किशोरी और कामिनी की तरफ देखकर कहा—"हैं, यह क्या बात है? मालूम होता है कि हमारा दुश्मन हमारे घर ही में है!" यह कहती हुई किशोरी और कामिनी के साथ तारा पीछे की तरफ लौटी और जब सुरंग के दरवाजे के पास आई तो दरवाजा बन्द पाया। खटखटाया, धक्का दिया, जोर किया, मगर दरवाजा न खुला। इस समय उन तीनों अबलाओं के दिल की क्या हालत हुई होगी सो हमारे बुद्धिमान पाठक स्वयं सोच सकते हैं। कामिनी ने घबराकर तारा से कहा, "तुम्हारा कहना ठीक है, बेशक हमारा दुश्मन हमारे घर ही में है।"

किशोरी—चाहे कोई हमारा नौकर हमारा दुश्मन हो या दुश्मन का कोई ऐयार हमारे नौकर की सूरत में यहाँ आकर टिका हो।

तारा—अब शक दूर हो गया और निश्चय हो गया कि कैदियों को इसी कम्बख्त ने निकाल दिया। मैं ताज्जुब में थी कि यह दरवाजा जो दूसरी तरफ से किसी तरह नहीं खुल सकता क्योंकर खुला और कैदी लोग क्योंकर निकल गये, मगर अब जो कुछ असल बात थी, जाहिर हो गई। अब उस शैतान ने (चाहे वह कोई भी हो) इसलिए यह दरवाजा बन्द कर दिया कि हम लोग पुनः लौटकर घर में न आ पावें। अफसोस, बड़ा ही धोखा हुआ कि इतने पर भी हम लोग उससे बेफिक्र रहे और इस समय भी वह छिपकर हम लोगों के साथ ही साथ कैदखाने में उतरा, मगर कुछ मालूम न हुआ। (कुछ रुककर) हमारे नौकरों और लौंडियों को क्या मालूम हो सकता है कि इस समय हम लोगों के साथ किस दुष्ट ने कैसा बर्ताव किया!

कामिनी—क्या इस तरफ इस दरवाजे को खोलने की कोई तरकीब नहीं है?

तारा—कोई नहीं।

कामिनी—और अगर दुश्मनों ने सुरंग के मुहाने का दरवाजा बाहर से बन्द कर दिया हो तो क्या होगा?

तारा—उस दरवाजे के दूसरी तरफ ऐसी चीज नहीं है जो दरवाजा बन्द करने के काम में आवे, मगर फिर भी दुश्मन होशियार हो तो हर तरह से वह मुहाना बन्द कर सकता है। उस दरवाजे के ऊपर मिट्टी, पत्थर या चूने का ढेर लगा सकता है, ईंट-पत्थर की जुड़ाई कर सकता है, या उस खोह भर को ईंट-पत्थर से बन्द कर सकता है।

किशोरी—हाय, अब हम लोग बेमौत मारे गये! ताज्जुब नहीं कि इस बात का बन्दोबस्त पहले ही से कर लिया गया हो।

कामिनी—बस, अब हम लोगों को यहाँ जरा भी न अटक कर सुरंग के बाहर

निकल चलना चाहिए. शायद उधर का रास्ता अभी बन्द न हुआ हो ।

तारा, किशोरी और कामिनी तेजी के साथ सुरंग के दूसरे मुहाने की तरफ रवाना हुईं और थोड़ी ही देर में वहाँ जा पहुँचीं । इस सुरंग में मकान की तरफ जिस तरह की सीढ़ियाँ बनी हुई थीं, उसी तरह की सीढ़ियाँ सुरंग के दूसरी तरफ भी थीं । जब तारा ने दरवाजे की कुण्डी खोली और उसे धक्का देकर खोलना चाहा तो दरवाजा न खुला, उस समय तारा हाय करके बैठ गई और बोली—"बहिन, बस जो कुछ हम लोगों को शक था वही हुआ । इस समय दुश्मनों की बन पड़ी और हम लोग बेमौत मारे गये । यह दरवाजा भीतर की तरफ हटता होता तो खुल जाता और हमें मालूम हो जाता कि आगे रास्ता किस चीज से बन्द किया गया है, ईंट-पत्थर और चूने से या खाली मिट्टी से, और हम लोग इस तिलिस्मी नेजे से उसमें रास्ता बनाकर निकल जाने का उद्योग करते क्योंकि यह नेजा हरएक चीज में घुस जाने की ताकत रखता है, मगर अफसोस तो येह है कि यह लोहे का मजबूत दरवाजा खुलने के समय बाहर की तरफ खुलता है । यह भी कारीगर की भूल है । भूलों का मजा समय पड़ने पर ही मालूम होता है, अब मुझे मालूम हुआ कि मकान बनाने वाले को दरवाजे की अवस्था पर विशेष ध्यान देना चाहिए, कोई दरवाजा ऐसा न बनाना चाहिए जो खुलते समय बाहर की तरफ खुलता हो, जिसे बाहर वाला मामूली तौर पर मिट्टी का ढेर लगाकर भी बन्द कर सकता है । हाय, अब मैं क्या करूँ ? मुझे अपने मरने का तो कुछ भी रंज नहीं है अगर रंज है तो केवल इतना ही कि तुम दोनों को कमलिनी ने हिफाजत से रखने के लिए के लिए मेरे पास भेजा और मेरी बदौलत तुम्हें यह दिन देखना नसीब हुआ !"

मामूली तौर पर जैसा कि अक्सर मौका पड़ने पर लोग कह दिया करते हैं, इस समय किशोरी और कामिनी यह बात तारा को कह सकती थीं कि 'बहिन, हम लोग तो तुम्हें मना करते थे कि सुरंग की राह से बाहर मत जाओ, मगर तुमने न माना, अगर मानं जातीं तो यह दुःख भोगना क्यों नसीब होता ?'

मगर नहीं, बेचारी किशोरी और कामिनी बड़ी ही नेकदिल थीं, वे जानती थीं कि जो होना था सो तो हो चुका, अब ऐसी बातें कहकर तारा का दिल दुखाना नादानी है और इससे कोई फायदा नहीं, तारा ने जो कुछ किया उसे भला ही समझ के किया । मगर जब ईश्वर की भी ऐसी मर्जी हो तो क्या किया जाय ।

इस सुरंग के दोनों तरफ की दीवार बहुत ही मजबूत थी और उस पर फौलादी मोटी चादर चढ़ी हुई थी । यद्यपि तिलिस्मी नेजा उस फौलादी मोटी चादर में भी घुस सकता था, मगर इसमें कोई फायदा न था । तिलिस्मी नेजा ऐसे स्थान से सुरंग खोदकर रास्ता बनाने का काम नहीं दे सकता था, तिस पर भी तारा ने उद्योग में कोई बात उठा न रखी, मगर नतीजा कुछ भी न निकला ।

3

इस तालाब के बीच वाले तिलिस्मी मकान में कमलिनी दस लौंडियों के साथ रहती थी। नौकर और सिपाही भी उसके साथ बहुत थे मगर उनके रहने के लिए स्थान इस मकान में नहीं था, वे लोग काम-काज किया करते थे और समय पड़ने पर जान देने के लिए इकट्ठे हो जाते थे, मगर कमलिनी और तारा को छोड़ के कोई यह भी नहीं जानता था कि वे लोग कहाँ रहते हैं और क्या करते हैं। उन सिपाहियों में से कई तो मायारानी के कैदी हो गये थे और जो दस-बारह बचे थे सो इधर-उधर घूम-फिरकर कमलिनी का काम कर रहे थे। उन्हीं बचे हुए सिपाहियों में से चार-पाँच सिपाही इस समय मकान में मौजूद थे जो किसी काम के सम्बन्ध में तारा के पास आये थे और दुश्मनों का हंगामा देखकर बाहर न जा सके थे। कमलिनी की लौंडियाँ जितनी थीं, वे सब जमानिया से कमलिनी के साथ उस समय आई थीं जब मायारानी से लड़कर कमलिनी अलग हो गई थी। इन लौंडियों में के एक लौंडी, जिसका नाम भगवानी था, बड़ी ही शैतान और दिल की खोटी थी। यद्यपि वह जाहिर में अपने को बहुत ही बनाये हुए रहती थी और बात-बात में खैरखाही जताती थी, मगर वास्तव में वह ऐसी काली नागिन थी जिसके काटे का कोई मन्त्र ही न था। उसे रुपये की लालच हद से ज्यादा थी। मगर इतने दोष पहने पर भी वह अपनी चालाकी से अपने मालिक तथा तारा को खुश रखती थी और उन दोनों के आगे अपने अवगुण जाहिर नहीं होने देती थी। यही लौंडी प्रायः कैदियों को खाना-पानी भी पहुँचाया करती थी।

कमलिनी के कैदखाने को पहले माधवी और शिवदत्त ने आबाद किया था और उसके बाद मनोरमा इस कैदखाने में आई थी। मायारानी की सखी होने के कारण मनो-रमा भगवानी को बखूबी जानती थी और इसी तरह भगवानी भी उसे अच्छी तरह पहचानती थी। खाना-पानी पहुँचाने के लिए जब भगवानी कैदखाने में जाती थी तो मनोरमा उसे अपनी लच्छेदार बातों में घड़ियों उलझा कर भविष्य के लिए सब्जबाग दिखाती और तरह-तरह की उम्मीदों से ललचाया करती यहाँ तक कि उसे तीन लाख रुपये की लालच दिखाकर उसने अपनी, माधवी और शिवदत्त की मदद पर राजी कर लिया। माधवी दवा-इलाज की बदौलत यहाँ आकर तन्दुरुस्त हो गई थी।

भगवानी इस बात पर राजी हो गई कि मौका मिलने पर कैदियों की मदद करे और जिस तरह हो कैदियों को तहखाने के बाहर निकाल दे। भगवानी ने माधवी, शिवदत्त और मनोरमा से कहा कि तुम लोगों को छुड़ाने के लिए मुझे बहुत कुछ उद्योग करना पड़ेगा और तुम्हारे नौकरों तथा सिपाहियों से मिलने और उनसे कुछ काम लेने की आवश्यकता पड़ेगी, इसलिए उचित होगा कि तुम लोग मुझे एक परवाना लिख दो जिसमें तुम लोगों के आदमी मुझे तुम्हारा मददगार समझें और जो कुछ मैं कहूँ करें और खर्च के लिए आवश्यकतानुसार मुझे दिया भी करें। आखिर तीनों कैदियों ने भगवानी की बात मंजूर कर ली। भगवानी मौका पाकर कलम दवात और कागज छिपाकर तहखाने

में ले गई और तीनों कैदियों से अपने मतलब की बातें लिखवा लीं।

कमलिनी के जाने के बाद केवल तारा की मौजूदगी में भगवानी को अपना काम करने का बहुत अच्छा मौका मिला। उसने गुप्त रीति से कई नौकर रखे और उनके जरिये से माधवी, मनोरमा और शिवदत्त के आदमियों को, जो छितिर-बितिर हो गये थे, इकट्ठा कराया, तथा इस बात से होशियार कर दिया कि तुम्हारे मालिक लोग यहाँ कैद हैं।

धीरे-धीरे बन्दोबस्त करके भगवानी ने सामान दुरुस्त कर लिया और एक दिन सुरंग की राह से तीनों कैदियों को निकाल बाहर किया। आज जो इतने दुश्मन इस मकान को घेरे हुए हैं या जो कुछ वे लोग कर रहे हैं सब भगवानी ही की करामात है। इस समय भगवानी ही ने किशोरी, कामिनी और तारा को सुरंग में बन्द कर दिया है। वह चाहती है कि दुश्मन लोग इस मकान में घुस आवें और मनमानी चीजें लूट ले जायें, मगर कीमती चीजें जवाहिर इत्यादि मैं पहले ही से बटोर कर अलग रख दूं, और जब दुश्मन लोग यहाँ घुस आवें तो उन्हें लेकर चल दूं। शिवदत्त, माधवी और मनोरमा के हाथ का लिखा हुआ परवाना मौजूद ही है अस्तु कमलिनी के दुश्मनों में मुझे कोई भी नहीं रोक सकता। यह भगवानी का थोड़ा-सा हाल इस जगह हमने इसलिए लिख दिया कि बीती बहुत-सी बातें समझने में हमारे पाठकों को कठिनाई न पड़े।

किशोरी, कामिनी और तारा को सुरंग में बन्द करके जब भगवानी कैदखाने के बाहर निकली तो कोठरी में ताला लगा दिया और ताली अपने कब्जे में रखी, इसके बाद हाथ में लालटेन लेकर मकान की छत पर चढ़ गई और लालटेन को घुमा-फिरा-कर दुश्मनों को इशारे ही इशारे में कुछ कहा। मालूम होता है कि पहले ही इस इशारे की बातचीत पक्की हो चुकी थी क्योंकि लालटेन का इशारा पाते ही दुश्मनों ने खुश होकर अपना काम तेजी से करना शुरू किया अर्थात् तालाब पाटने में बहुत फुर्ती दिखाने लगे। एक दफे तो भगवानी के दिल में यह बात पैदा हुई कि चारों पुतलियों को खड़ी करके घूमते हुए चारों चक्रों को रोक दे, जिसमें दुश्मन लोग यहाँ शीघ्र ही आ जायें, मगर तुरन्त ही उसने अपना इरादा बदल दिया। उसे यह बात सूझ गयी कि यदि मैं घूमते हुए चारों चक्रों को रोक दूँगी तो कमलिनी के नौकरों को तुरत मुझ पर शक हो जायगा और फिर बना-बनाया मामला बिगड़ जायगा।

अब कम्बख्त भगवनिया (भगवानी) इस फिक्र में लगी कि दुश्मनों के घर में आने के पहले ही यहाँ से अच्छी-अच्छी कीमती चीजें बटोर ली जायें और जब दुश्मन इस मकान में घुस आवें, तो ले लपेट के चलती बनूँ। शिवदत्त, माधवी और मनोरमा की चिट्ठियों की बदौलत, जो मेरे पास हैं, मुझे कोई भी न रोकेगा।

कमलिनी की लौंडियों और नौकरों को इस बात का गुमान भी न था कि नमक-हराम भगवानी यहाँ वालों को चौपट कर रही है या उसने किशोरी, कामिनी और तारा को सुरंग में बन्द कर दिया है। वे लोग यही जानते थे कि किशोरी और कामिनी को किसी खास काम के लिए तारा अपने साथ लेती गई है।

रात बीत गई, दूसरा दिन समाप्त हो गया, बल्कि दूसरे दिन की रात भी गुजर

गई और तीसरा दिन आ पहुँचा। आज दुश्मनों का मनोरथ पूरा हुआ अर्थात् उन्होंने तालाव को दो तरफ से बखूबी भर दिया और उस मकान में आ पहुँचे।

लौंडिया और नौकरों की इतनी हिम्मत कहाँ कि सैकड़ों दुश्मनों का मुकाबला करते। वे लोग चुपचाप अलग हो गये और अपनी तथा अपने मालिक की बदकिस्मती पर विचार करते रहे, जिस पर भी कई बेचारे दुश्मनों के हाथों से मारे गये। दुश्मनों ने मनमानी लूट मचाई और जिसने जो पाया अपने बाप दादे का माल समझ के हथिया लिया। कम कीमत की चीजें या ऐसी चीजें जो वे लोग अपने साथ ले जाना पसन्द नहीं करते थे तोड़ फोड़ बिगाड़ या जलाकर सत्यानाश कर दी गईं और घण्टे ही भर में ऐसी सफाई कर दी गई मानो उन मकान में कोई बसता ही न था या कोई चीज वहाँ थी ही नहीं। इस काम के बाद किशोरी, कामिनी और तारा की खोज शुरू हुई क्योंकि दुष्टों ने जब उस तीनों को वहाँ न पाया तो उन्हें आश्चर्य हुआ और वे इस फिक्र में हुए कि भगवानी से उन तीनों का हाल पूछना चाहिए मगर भगवानी वहाँ कहाँ, वह तो अपना काम करके निकल भागी और ऐसी गायब हुई कि किसी को कुछ गुमान तक न हुआ। हाय, बेचारी किशोरी, कामिनी और तारा का हाल किसीको भी मालूम नहीं, कोई भी नहीं जानता कि वे बेचारियाँ कहाँ और किस आफत में पड़ी हैं या कई दिनों तक दाना पानी न मिलने के कारण जीती भी हैं या मर गईं। उनकी लौंडियों और नौकरों को भी इसका पता नहीं, इसी से वे लोग अपनी जान लेकर जिस तरफ भाग सके भाग गये और इस तिलिस्मी मकान पर दुश्मनों को पूरा-पूरा कब्जा करने दिया, क्योंकि इतने आदमियों का मुकावला करके जान देना दूसरे उद्योग का भी रास्ता रोकना था।

4

पाठक महाशय, अब आप यह जानना चाहते होंगे कि हरामजादी भगवनिया के मेल से जो दुश्मन लोग इस मकान पर चढ़ आये, वे लोग शिवदत्त, माधवी और मनोरमा को छुड़ाने की नीयत से आये थे या इन तीनों के छूटकर निकल जाने का हाल उन्हें मालूम हो चुका था और वे लोग इस समय केवल किशोरी, कामिनी और तारा को गिरफ्तार करने आये थे ?

नहीं, इस समय दुश्मन यह नहीं जानते थे कि इस मकान में कोई सुरंग है और भगवानी की मदद से उसी सुरंग की राह राजा शिवदत्त वगैरह बाहर हो गये। भगवानी ने जब उन लोगों को खबर पहुँचाई थी तो यही कहा था कि तुम्हारा मालिक इस मकान में कैद है, तुम जिस तरह बने उसे छुड़ा लो और इसके बाद जो कुछ उन लोगों नें किया वह बहुत बुद्धिमानी से किया। तालाब सुखाने के लिए सुरंग खोदने में उन्हें बहुत दिन मेहनत करनी पड़ी, इस बीच में भगवानी भी उन लोगों से मिलती रही मगर उसने यह नहीं कहा कि शिवदत्त को छुड़ाने के लिए मैं भी उद्योग कर रही हूँ,

यदि मौका मिला तो सुरंग की राह निकाल दूंगी, क्योंकि भगवानी को यह आशा न थी कि मैं स्वयं उद्योग करके कैदियों को बाहर कर सकूंगी, उसे कैदियों को छुड़ाने का मौका उस दिन दोपहर के लगभग मिला था जिस दिन संध्या के समय बलवाइयों ने आकर तालाब को घेर लिया था और उनकी बनाई हुई सुरंग की राह से तालाब का जल निकल जा रहा था।

रुपये की लालच ने कम्बख्त भगवानी को ऐसा अन्धा बना दिया था कि उसे भलाई का रास्ता कुछ भी न सूझा। वह इस बात को न सोच सकी कि अगर तारा कैदियों को न देखेगी तो बेशक मुझ पर शक करेगी, क्योंकि कैदखाने और सुरंग की ताली सिवाय मेरे और किसी के हाथ में तारा नहीं देती थी। उसने बेधड़क कैदियों को बाहर कर दिया मगर इसके दो ही घण्टे बाद उसके दिल में हौल पैदा हो गया और वह सोचने लगी कि यदि तारा मुझसे पूछेगी कि कैदखाने की ताली तो सिवाय तेरे मैं और किसी के हाथ में नहीं देती फिर कैदी क्योंकर निकल गये तो मैं क्या जवाब दूंगी ? इस विषय में उसने बहुत कुछ सोच-विचार किया मगर सिवाय भाग जाने के और कोई बात न सूझी। उसने भाग जाने के लिए भी उद्योग किया मगर न हो सका क्योंकि तालाब के बाहर से किसी को इस मकान में लाने या इस मकान से किसी को बाहर करने के लिए रास्ता खोलना या बन्द करना केवल तारा के अधीन था। जब इस बात को दो पहर बीत गए और दुश्मनों ने तालाब को घेर लिया तब उसे यह सूझा कि दुश्मनों को इस बात की खबर न देनी चाहिए कि शिवदत्त को मैंने छुड़ा दिया। ऐसा करने से दुश्मन उद्योग करके इस मकान में जरूर आवेंगे और उस समय मुझे यहाँ से निकल भागने का अच्छा मौका मिलेगा। इस बीच में भगवानी को इस बात का भी मौका मिल गया कि उसने तारा, किशोरी और कामिनी को सुरंग में बंद कर दिया और तब उसके दिल में अपने भाग जाने की पूरी-पूरी आशा हुई। यही कारण हुआ कि दुश्मनों को शिवदत्त के निकल जाने का हाल मालूम न हुआ और उन्होंने उद्योग करके मकान को अपने दखल में कर लिया जिससे भगवानी को भागने का अच्छा मौका मिला।

अब यह प्रश्न हो सकता है कि क्या तारा इतनी बेवकूफ थी कि कैदखाने में कैदियों को न देखकर और सुरंग का दरवाजा खुला हुआ पाकर भी उसे किसी पर कुछ शक न हुआ, सो भी ऐसी अवस्था में जब कि कैदखाने की ताली सिवाय भगवानी के और किसी के हाथ में देती ही न थी ? इस सवाल का जवाब भी इसी जगह दे देना उचित जान पड़ता है।

तारा ने जब कैदियों को कैदखाने में न देखा तो सबके पहले उसके दिल में यही शक पैदा हुआ कि यह काम हमारे ही किसी आदमी का है। थोड़े ही सोच-विचार में उसने भगवानी को दोषी ठहरा लिया क्योंकि सिवाय उसके वह कैदखाने की ताली किसी दूसरे के हाथ में देती न थी यह सब कुछ था परन्तु भगवानी की जाँच करने और उसे सजा देने के विषय में जल्दी करना तारा ने उचित न जाना और इस हो-हल्ले के समय इसका मौका भी न था, तथापि तारा ने इस शक को श्यामसुन्दरसिंह नामी अपने एक विश्वासी खैरख्वाह बहादर से इस दौड़-धप के समय ही जाहिर कर दिया और

यह भी कह दिया कि मुझे इस मकान के बचाव की तरकीब के सिवाय और कोई काम करने की फुरसत नहीं है मगर तुम इस विषय में जो कुछ उचित जान पड़े वह करो।

श्यामसुन्दरसिंह बहुत ही होशियार चालाक, बुद्धिमान और बहादुर आदमी था। यह कमलिनी के कुल सिपाहियों का सरदार था और इसकी अच्छी चाल-चलन तथा बहादुरी की कदर कमलिनी दिल से करती थी तथा यह भी कमलिनी की भलाई के लिए जान तक दे देने को हरदम तैयार रहता था। यद्यपि काम-काज के सबब से श्यामसुन्दर सिंह यहाँ बराबर नहीं रहता था परन्तु जिस समय दुश्मनों ने इस मकान को घेरा था उस समय वह मौजूद था। जब उसने तारा की जुबानी कैदियों के निकल जाने का हाल सुना तो उसने भी अपनी राय वही कायम की जो तारा ने की थी।

श्यामसुन्दरसिंह भगवानी की तरफ से होशियार हो गया और उसके कार्यों को विशेष ध्यान से देखने लगा, मगर इस बात का तो उसको गुमान भी न हुआ कि भगवानी ने किशोरी, कामिनी और तारा को भी सुरंग में बन्द कर दिया है।

श्यामसुन्दरसिंह इस बात को भी तो समझ ही गया था कि अब यह मकान दुश्मनों के हमले से किसी तरह बच नहीं सकता तथापि उसे कुछ-कुछ आशा इस बात की थी कि जिस समय तिलिस्मी नेजा हाथ में लेकर तारा इस झुण्ड में पहुँचेगी तो ताज्जुब नहीं कि दुश्मनों का जी टूट जाय, परन्तु बहुत समय निकल जाने पर भी जब तारा वहाँ तक न पहुँची तो श्यामसुन्दरसिंह को आश्चर्य हुआ और वह तरह-तरह की बातें सोचने लगा।

5

कीमती जवाहरात के चीजों की गठरी लादे हुए मालिक को चौपट करने वाली हरामजादी भगवानी जब भागी तो उसने फिर के देखा भी नहीं कि पीछे क्या हो रहा है या कौन आ रहा है।

रात पहर भर से कुछ ज्यादा जा चुकी थी और चाँदनी खूब निखरी हुई थी जब हाँफती और काँपती हुई भगवानी एक घने जंगल के अन्दर जिसमें चारों तरफ परले सिरे का सन्नाटा छाया हुआ था पहुँचकर एक पत्थर की चट्टान पर बैठी और फिर इस तरह से लेट गई जैसे कोई हताश होकर गिर पड़ता है। वह अपनी बिसात से ज्यादा चल और दौड़ चुकी थी और इसीलिए बहुत सुस्त हो गई थी। इस पत्थर की चट्टान पर पहुँचकर उसने सोचा था कि अब बहुत दूर निकल आये हैं कोई धरने-पकड़ने वाला है नहीं अतएव थोड़ी देर तक बैठ कर आराम कर लेना चाहिए, मगर बैठने के साथ ही पहले जिस पर उसकी निगाह पड़ी, वह श्यामसुन्दरसिंह था जिसे देखते ही उसका कलेजा धक से हो गया और चेहरे पर मुर्दनी छा गई। उसकी तेजी के साथ चलनी साँस दो-चार पल के लिए रुक गयी और वह घबराकर उसका मुँह देखने लगी।

श्यामसुन्दरसिंह—क्यों ? तूने तो समझा होगा कि बस अब मैं बच कर निकल आई और जवाहरात की गठरी नरम चारे की तरह हजम हो गई !

भगवानी—(कुछ सोचकर) नहीं-नहीं, मैं इसमें से तुम्हें आधा बाँट देने के लिए तैयार हूँ। आखिर दुश्मन लोग इसे भी लूट कर ले ही जाते, अगर मैं बचाकर ले आई तो क्या बुरा हुआ ? सो भी बाँट देने के लिए तैयार हूँ।

श्यामसुन्दरसिंह—ठीक है मगर मैं आधा बाँट कर नहीं लिया चाहता बल्कि सब लिया चाहता हूँ।

भगवानी—सो कैसे होगा ? जरा सोचो तो सही कि मैं दुश्मनों के हाथ से कितनी मेहनत करके इसे बचा लाई हूँ, और सब तुम्हीं ले लोगे तो मुझे क्या फायदा होगा ?

श्यामसुन्दरसिंह—तो क्या तू कुछ फायदा उठाना चाहती है ? अगर ऐसा ही है तो मालिक के साथ नमकहरामी या दगा करने और दुश्मनों को बचाकर कैदखाने के बाहर कर देने में जो उचित लाभ होना चाहिए वह तुझे होगा !

भगवानी—(चौंक कर) आपने क्या कहा सो मैं न समझी ! क्या आपको मुझ पर किसी तरह का शक है ?

श्याम—नहीं, शक तो कुछ भी नहीं है या अगर है भी तो केवल दो बातों का—एक तो कैदियों को बचाकर निकाल देने का और दूसरे मालिक के साथ दगा करने का।

भगवानी—नहीं-नहीं, कैदी लोग किसी और ढंग से निकल गये होंगे, मुझे तो उनकी कुछ खबर नहीं और तारा के साथ दगा करने के विषय में जो कुछ आप कहते हैं सो वह काम मेरा न था, बल्कि एक-दूसरी लौंडी का था जिसके सबब से बेचारी तारा मौत···

इतना कहकर भगवानी रुक गई। उसके रंग-ढंग से मालूम होता था कि जल्दी में आकर वह कोई ऐसी बात मुँह से निकाल बैठी है जिसे वह बहुत छिपाती थी। श्याम सुन्दरसिंह को भी उसकी आखिरी बात से निश्चय हो गया कि हरामजादी भगवानी ने दुश्मनों से मिलकर बेचारी तारा को मौत के पंजे में फँसा दिया, अस्तु बिना असल भेद का पता लगाए इसे कदापि न छोड़ना चाहिए।

श्याम—हाँ-हाँ, कहती चल, रुकी क्यों ?

भगवानी—यही कि मैं ने ऐसा कोई काम नहीं किया जिससे मालिक का नुकसान हो।

श्याम—अच्छा यह बता कि कैदियों को निकालने वाला और तारा को फँसाने वाला कौन है ?

भगवानी—यह काम नमकहराम लालन लौंडी का है।

श्याम—यदि मैं इस समय के लिए तेरा ही नाम लालन रख दूँ तो क्या हर्ज है क्योंकि मेरी समझ में बेचारी लालन निर्दोष है जो कुछ किया तू ही ने किया, कैदियों ने तुझी को अपना विश्वासपात्र समझा, तुझी से काम लिया और तेरी ही मदद से निकल भागे, इतने दुश्मनों को भी तू ही बटोर कर लाई है और इतने पर भी संतोष न पाकर बेचारी तारा को भी तू ने ही···

भगवानी—(हाथ जोड़कर) नहीं-नहीं, आप मुझे व्यर्थ दोषी न ठहरायें, भला ऐसे मालिक के साथ मैं विश्वासघात करूँगी जो मुझे दिल से चाहे ?

श्याम—(कमर से एक चिट्ठी निकालकर और भगवानी को दिखाकर) और यह क्या है ? क्या इसमें भी लालन का नाम लिखा है ? कोई हर्ज नहीं, अपने हाथ में लेकर अच्छी तरह देख ले क्योंकि यद्यपि यह रात का समय है, फिर भी चन्द्रदेव ने अपनी किरणों से दिन की तरह बना रक्खा है ।

यह चिट्ठी न तीनों चिट्ठियों में एक थी जो शिवदत्त, माधवी और मनोरमा ने लिखकर भगवानी को दी थी । न मालूम श्यामसुन्दरसिंह के हाथ यह चिट्ठी कैसे लगी । भगवनिया इस चिट्ठी को देखते ही जर्द पड़ गई, कलेजा धकधक करने लगा, मौत की भयानक सूरत सामने दिखाई देने लगी, गला रुक गया, वह कुछ भी जवाब न दे सकी । अब श्यामसुन्दरसिंह बर्दाश्त न कर सका, उसने एक तमाचा भगवानी के मुह पर जमाया और कहा—"कम्बख्त ! अब बोलती क्यों नहीं !"

जब भगवानी ने इस बात का भी जवाब न दिया तब श्यामसुन्दरसिंह ने म्यान से तलवार निकाल ली और हाथ ऊँचा करके कहा, "अब भी अगर साफ-साफ भेद न बतावेगी तो मैं एक ही हाथ में दो टुकड़े कर दूंगा ।"

भगवानी को निश्चय हो गया कि अब जान किसी तरह नहीं बच सकती, इसके अतिरिक्त डर के मारे उसकी अजब हालत हो गई, और कुछ तो न कर सकी, हाँ एक दम जोर से चिल्ला उठी और इसके साथ ही एक तरफ से आवाज आई—"कौन है जो मर्द होकर एक स्त्री की जान लिया चाहता है ?"

श्यामसुन्दरसिंह ने फिर कर देखा तो दाहिनी तरफ थोड़ी ही दूर पर एक नौजवान को हाथ में खंजर लिए मौजूद पाया । उस नौजवान ने श्यामसुन्दरसिंह से पुनः कहा, "यह काम मर्दों का नहीं है जो तुम किया चाहते हो !" जिसके जवाब में श्यामसुन्दरसिंह ने कहा, "बेशक यह काम मर्दों का नहीं मगर लाचार हूँ कि यह नमकहराम मेरी बातों का जवाब नहीं देती और मैं बिना जवाब पाये इसे किसी तरह नहीं छोड़ सकता ।"

यह आदमी, जो श्यामसुन्दरसिंह के पास यकायक आ पहुँचा था, हमारा नामी ऐयार भैरोंसिंह था जो कमलिनी के मकान के दुश्मनों से घिर जाने की खबर पाकर उसी तरफ जा रहा था और इत्तिफाक से यहाँ आ पहुँचा था, मगर वह श्यामसुन्दरसिंह और भगवनिया को नहीं पहचानता था और वे दोनों भी इसे सूरत बदले हुए और रात का समय होने के कारण न पहचान सके । भैरोंसिंह ने पुनः कहा—

भैरोंसिंह—यदि हर्ज न हो तो मुझे बताओ कि यह तुम्हारी किन बातों का जवाब नहीं देती ?

श्याम—बता देने में हर्ज तो कोई नहीं अगर आप उन लोगों में से नहीं हैं जिन्हें हम लोग अपना दुश्मन समझते हैं, क्योंकि यह भेद की बात है और अपना भेद दुश्मनों के सामने प्रकट करना नीति के विरुद्ध है । उत्तम तो यह होगा कि हमारा भेद जानने के पहले आप अपना परिचय दें ।

भैरों—तो तुम्हीं अपना परिचय क्यों नहीं देते ?

श्याम—इसलिए कि ऐयार लोग भेद जानने के लिए समय पड़ने पर उसी पक्ष वाले बन जाते हैं जिससे अपना काम निकालना होता है ।

भैरोंसिंह—ठीक है, मगर बहादुर राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों में से कोई भी ऐसा कमहिम्मत नहीं है जो खुले मैदान में एक औरत और एक मर्द से अपने को छिपाने का उद्योग करे ।

श्याम—(खुश होकर) अहा, अब मालूम हो गया कि आप राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों में से कोई हैं । ऐसी अवस्था में मैं भी यह कहने में विलम्ब न लगाऊँगा कि मैं श्यामसुन्दरसिंह नामी कमलिनीजी का सिपाही हूँ और यह भगवानी नाम की उन्हीं की बेईमान लौंडी है जिसकी नमकहरामी और बेईमानी का यह नतीजा निकला कि दुश्मनों ने तालाब वाले तिलिस्मी मकान पर कब्जा कर लिया और किशोरी, कामिनी तथा तारा का कुछ पता नहीं लगता । अब तक जो मालूम हुआ है उससे जाना जाता है कि इसी कम्बखत ने उन तीनों को भी किसी आफत में फँसा दिया है जिसका खुलासा भेद मैं इससे पूछ रहा था कि आपकी आवाज आई और आपसे बातचीत करने की प्रतिष्ठा प्राप्त हुई ।

भैरोंसिंह—(जोश के साथ) वाह, यह तो एक ऐसा भेद है जिसके जानने का सबसे पहला हकदार मैं हूँ । मैं उन्हीं तीनों से मिलने के लिए जा रहा था जब रास्ते में मुझे यह मालूम हुआ कि उस तिलिस्मी मकान को दुश्मनों ने घेर लिया है इसलिए जल्द पहुँचने की इच्छा से जंगल ही जंगल दौड़ा जा रहा था कि यहाँ तुम लोगों से भेंट हो गई ।

श्याम—यदि ऐसा है तो अब कृपा कर आप अपनी असली सूरत शीघ्र दिखाइये जिससे मैं आपको पहचान कर अपने दिल के बचे-बचाये खुटके को निकाल डालूं क्योंकि राजा वीरेन्द्रसिंह के कुल ऐयारों को मैं पहचानता हूँ ।

श्यामसुन्दरसिंह की बात सुनकर भैरोंसिंह ने बटुए में से सामान निकाल कर बत्ती जलाई और बनावटी बालों को अलग करके अपना चेहरा साफ दिखा दिया । श्यामसुन्दरसिंह यह कहकर कि 'अहा, मैंने बखूबी पहचान लिया कि आप भैरोंसिंह जी हैं' भैरोंसिंह के पैरों पर गिर पड़ा और भैरोंसिंह ने उसे उठा कर गले से लगा लिया । इसके बाद श्यामसुन्दरसिंह ने अपनी तरफ का पूरा-पूरा हाल इस समय तक का कह सुनाया ।

भैरोंसिंह—अफसोस, बात ही बात में यहाँ तक नौबत जा पहुँची । लोग सच कहते हैं कि घर का एक गुलाम बैरी बाहर के बादशाह बैरी से भी जबर्दस्त होता है जिसकी ताबेदारी में हजारों दिलावर पहलवान और ऐयार लोग रहा करते हैं । खैर जो होना था सो तो हो गया, अब इस (भगवनिया की तरफ इशारा करके) कम्बखत से किशोरी, कामिनी और तारा का सच्चा-सच्चा हाल मैं बात की बात में पूछ लेता हूँ । यह औरत है इसलिए मैं खंजर को तो म्यान में कर लेता हूँ और हाथ में उस दुष्टदमन को लेता हूँ जिसके भरोसे ऐसे जंगल में काँटों से निर्भय रहकर चलता रहा, चलता हूँ

और यदि इसकी खातिरदारी से यह बच गया तो चलूंगा ! हाँ एक बात तो मैंने कही ही नहीं।

श्याम—वह क्या ?

भैरोंसिह—वह यह कि मैं यहाँ अकेला नहीं हूँ बल्कि दो ऐयारों को साथ लिए हुए कमलिनी रानी भी इसी जंगल में मौजूद हैं।

श्याम—आहा, यह तो आपने भारी खुशखबरी सुनाई, बताइये वे कहाँ हैं, मैं उनसे मिलना चाहता हूँ।

कम्बख्त भगवनिया अब अपनी मौत अपनी आँखों के सामने देख रही थी। भैरोंसिंह के पहुँचने से उसकी आधी जान तो जा ही चुकी थी, अब यह खबर सुन के कि कमलिनी भी यहाँ मौजूद है वह एकदम मुर्दा सी हो गई। उसे निश्चय हो गया कि अब उसकी जान किसी तरह नहीं बच सकती। भैरोंसिंह ने जोर से जफील बजाई और इसके साथ ही थोड़ी दूर में सूखे पत्तों की खड़खड़ाहट के साथ ही घोड़ों की टापों की आवाज आने लगी और उस आवाज ने क्रमशः नजदीक होकर भूतनाथ तथा देवीसिंह और घोड़ों पर सवार कमलिनी रानी तथा लाड़िली की सूरत पैदा कर दी।

6

दुश्मन जब तालाब वाले तिलिस्मी मकान पर कब्जा कर चुके और लूटपाट से निश्चिन्त हुए तो शिवदत्त, माधवी और मनोरमा को छुड़ाने की फिक्र करने लगे। तमाम मकान छान डाला मगर उनका पता न लगा, तब थोड़े सिपाही जो अपने को होशियार और बुद्धिमान लगाते थे एक जगह जमा होकर सोच-विचार करने लगे। वे लोग इस बात का तो गुमान भी नहीं कर सकते थे कि हमारे मालिक लोग यहाँ कैद नहीं हैं या भगवनिया ने हमलोगों को धोखा दिया क्योंकि भगवनिया द्वारा वे लोग शिवदत्त, माधवी और मनोरमा के हाथ की लिखी चिट्ठी देख चुके थे। अब अगर तरद्दुद था तो यही कि कैदी लोग कहाँ हैं और भगवनिया हम लोगों से बिना कुछ कहे चुपचाप भाग क्यों गई। केवल इतना ही नहीं किशोरी, कामिनी और तारा यकायक कहाँ गायब हो गईं जिनके इस मकान में होने का हम लोगों को पूरा विश्वास था बल्कि दौड़-धूप करते जिन्हें अपनी आँखों से देख चुके हैं।

जब तमाम मकान ढूंढ़ डाला और अपने मालिकों को तथा किशोरी, कामिनी या तारा को न पाया तो उन लोगों को निश्चय हो गया कि इस मकान में कोई तहखाना अवश्य है जहाँ हमारे मालिक लोग कैद हैं और जहाँ अपनी जान बचाने के लिए किशोरी, कामिनी और तारा भी छिपकर बैठ गई हैं।

इस लिखावट से हमारे पाठक अवश्य इस सोच में पड़ जायेंगे कि यदि इन दुश्मनों को इस मकान में तहखाना और सुरंग होने का हाल मालूम न था, तो क्या वे लोग

किसी दूसरे गिरोह के आदमी थे जिन्होंने तहखाने के अन्दर से किशोरी और कामिनी को गिरफ्तार कर लिया था या जिन्होंने सुरंग का दूसरा मुहाना बन्द कर दिया था जिस के सबब से बेचारी किशोरी, कामिनी और तारा को सुरंग के अन्दर बेबसी के साथ पड़ी रहकर अपनी ग्रहदशा का फल भोगना पड़ा ?

बेशक ऐसा ही है। जिस समय भगवानी की कृपा से माधवी, मनोरमा और शिव दत्त ने कैदखाने से छुट्टी पाई और सुरंग की राह से बाहर निकले, तो माधवी के कई आदमी वहाँ मौजूद मिले और वे लोग आज्ञानुसार माधवी के साथ वहाँ से चले गये, उनमें से किसी से भी उन लोगों की मुलाकात नहीं हुई जिन्होंने तालाब वाले मकान पर हमला किया था। ये ही लोग थे जिन्होंने तहखाने में से किशोरी और कामिनी को भी निकाल ले जाने का इरादा किया था परन्तु कृतकार्य न हुए थे और इन्हीं लोगों ने भागते भागते सुरंघ का दूसरा मुहाना ईंट-पत्थरों से बन्द कर दिया था।

उन दुश्मनों में जिन्होंने इस मकान को फतह किया था तीन सिपाही ऐसे थे जो उनमें सरदार गिने जाते थे और सब काम उन्हीं की राय पर होता था, वही तीनों खोज ढूंढ़कर तहखाने का पता लगाने लगे।

बचा हुआ दिन और रात का बहुत बड़ा हिस्सा खोज-ढूंढ़ में बीत गया और सुबह हुआ ही चाहती थी जब हाथ में लालटेन लिए हुए तीनों सिपाही उस कोठरी के दरवाजे पर जा पहुँचे जिसमें से कैदखाने वाले तहखाने के अन्दर जाने का रास्ता था। ताला तोड़ा गया और वे तीनों उस कोठरी के अन्दर पहुँचे। तहखाने के अन्दर जाने वाला रास्ता दिखाई पड़ा जिसका दरवाजा जमीन के साथ सटा हुआ और ताला भी लगा हुआ था। उस जगह खड़े होकर तीनों सिपाही आपस में बातचीत करने लगे।

एक—बेशक इसी तहखाने में महाराज शिवदत्त कैद होंगे, बड़ी मुश्किल से इस का पता लगा।

दूसरा—मगर हम लोग जो यह सोचे हुए थे कि किशोरी, कामिनी और तारा भी इसी तहखाने में छिपकर बैठी होंगी यह बात अब दिल से जाती रही क्योंकि वे भी अगर इसी तहखाने में होतीं तो हम लोगों को ताला न तोड़ना पड़ता।

तीसरा—ठीक है मैं भी यहीं सोचता हूँ कि वे लोग किसी दूसरे गुप्त स्थान में छिपकर बैठी होंगी, खैर पहले अपने मालिक को तो छुड़ाओ फिर उन तीनों को भी ढूंढ़ निकालेंगे, आखिर इस मकान के अन्दर ही तो होंगी।

दूसरा—हाँ जी, देखा जायगा, बस अब इस ताले को भी झटपट तोड़ डालो।

वह ताला भी तोड़ा गया और हाथ में लालटेन लेकर एक आदमी उसके अन्दर उतरा तथा दो उसके पीछे चले। चार-पांच सीढ़ियों से ज्यादा न उतरे होंगे कि कई आदमियों के टहलने और बातचीत करने की आहट मिली जिससे ये तीनों बड़े गौर से नीचे की तरफ देखने लगे मगर जो सिपाही सबसे आगे था उसके सिवाय और किसी को कुछ भी दिखाई न दिया। उसने तहखाने में तीन आदमियों को देखा जो इन सिपाहियों के आने की आहट पाकर और लालटेन की रोशनी देखकर ठिठके हुए ऊपर की तरफ देख रहे थे। इनमें एक मर्द और दो औरतें थीं। तीनों सिपाहियों को निश्चय हो गया

कि बेशक यही तीनों माधवी, मनोरमा और शिवदत्त हैं। इन सिपाहियों ने छठी सीढ़ी पर पैर नहीं रखा था कि नीचे से आवाज आई, "ठहरो, हम लोग खुद ऊपर आते हैं !"

उन सिपाहियों में से एक आदमी जिसका नाम रामचन्दर था शिवदत्त का पुराना खैरख्वाह मुलाजिम था और बाकी के दोनों सिपाही मनोरमा के नौकर थे। आवाज सुनकर तीनों सिपाही ऊपर चले आये और तहखाने के अन्दर वाले तीनों व्यक्ति भी, जिन्हें सिपाहियों ने अपना मालिक समझ रक्खा था, बाहर होकर क्रमशः उस कमरे में पहुँचे जिसमें कमलिनी रहा करती थी और जिसे एक तौर पर दीवानखाना भी कह सकते हैं। यद्यपि लूट-खसोट का दिन था मगर फिर भी वहाँ इस समय रोशनी बखूबी हो रही थी और उस रोशनी में सभी ने बखूबी पहचान लिया कि वे वास्तव में माधवी, मनोरमा और शिवदत्त हैं।

इस समय दुश्मनों की खुशी का अन्दाजा करना बड़ा ही कठिन है क्योंकि जिसे छुड़ाने के लिए उन लोगों ने उद्योग किया था, उसे अपने सामने मौजूद देखते हैं, लाखों रुपये का माल जो लूट में मिला था, अब पूरा-पूरा हलाल समझते हैं, इसके अतिरिक्त इनाम पाने की प्रबल अभिलाषा और भी प्रसन्न किये देती है। चारों तरफ से भीड़ उमड़ी पड़ती है और शिवदत्त के पैरों पर गिरने के लिए सभी उतावले हो रहे हैं। शिवदत्त ने सभी की तरफ देखा और नर्म आवाज में कहा, "शाबाश मेरे बहादुर सिहा-हियो, आज जो काम तुमने किया, वह मुझे जन्म भर याद रहेगा। निःसन्देह तुमने मेरी जान बचाई। देखो इस कैद की सख्ती ने मेरी क्या अवस्था कर दी है, मेरी आवाज कैसी कमजोर हो रही है, मेरा शरीर कैसा दुर्बल और बलहीन हो गया है, मगर खैर, कोई चिन्ता नहीं जान बची है तो ताकत भी हो रहेगी ! यह मत समझो कि मैं इस समय हर तरह से लाचार हो रहा हूँ, अतएव तुम्हारी आज की कार्रवाई के बदले में कुछ इनाम नहीं दे सकूंगा। नहीं-नही, ऐसा कदापि न सोचना। तुम लोग स्वयं देखोगे कि कल जितनी दौलत मैं इनाम में तुम लोगों को दूंगा, वह उस लूट के माल से सौगुना ज्यादा होगी, जो तुमने इस मकान में से पाई होगी। मैं मर्द हूँ और तुम लोग खूब जानते हो कि मर्दों की हिम्मत कभी कम नहीं होती, जिसने हिम्मत तोड़ दी, वह मर्द नहीं औरत है। इसमें तुम इस बात पर भी विश्वास रखना कि मैं अपने पुराने दुश्मन वीरेन्द्रसिंह का पीछा कदापि न छोड़ूँगा, सो भी ऐसी अवस्था में कि जब तुम लोगों ऐसे मर्द दिलावर और नमकहलाल सिपाही मेरे साथी हैं। अच्छा यह सब बातें तो फिर होती रहेंगी, इस समय मैं मकान से बाहर निकल कर अपने वीरों को देखा और उनसे मिला चाहता हूँ क्योंकि यह मकान इतना बड़ा नहीं है कि सब सिपाही इसमें समा जायें और मैं इसी जगह बैठा-बैठा सबसे मिल लूं। चलो, तुम लोग तालाब के पार चलो, मैं भी आता हूँ !"

शिवदत्त की बातें सुनकर ये सिपाही लोग बहुत ही प्रसन्न हुए और जल्दी के साथ उस मकान से निकल कर तालाब के बाहर हो गये, जहाँ और सब सिपाही खड़े बेचैनी के साथ इन लोगों की राह देख रहे थे और यह जानने के लिए उत्सुक थे कि मकान के अन्दर क्या हो रहा है।

सिपाहियों के बाहर हो जाने के बाद शिवदत्त भी मकान से निकला और तालाब

से बाहर हो गया। माधवी और मनोरमा उस मकान के अन्दर ही रह गई।

अब सवेरा हो चुका था। पूरब तरफ आसमान पर भगवान सूर्यदेव का लाल पेशखेमा दिखाई देने लगा। शिवदत्त मैदान में खड़ा हो गया और खुशी के मारे उसकी जयजयकार करते उसके सिपाहियों ने चारों तरफ से उसे घेर लिया तथा यह सुनने के लिए उत्सुक होने लगे कि देखें अब हमारी तारीफ में हमारे राजा साहब क्या कहते हैं।

पर इसी समय पूरब की तरफ से बाजे की आवाज इन लोगों के कानों में पहुँची। सिपाहियों के साथ-साथ शिवदत्त भी चौकन्ना हो गया और गौर के साथ पूरब की तरफ देखता हुआ बोला, "यह तो फौजी बाजे की आवाज है। वह देखो इसकी गत साफ कहे देती है कि राजा वीरेन्द्रसिंह की फौज आ रही है, क्योंकि वीरेन्द्रसिंह जब चुनार की गद्दी पर बैठे थे तो तेजसिंह ने अपने फौजी बाजे वालों के लिए यह खास गत तैयार की थी। तब से उनकी फौज में प्रायः यह गत बजाई जाती है। मैं इसे अच्छी तरह जानता हूँ। देखो वह गर्द भी दिखाई देने लगी, अब क्या करना चाहिए? जहाँ तक मैं समझता हूँ, तुम्हारे हमले की खबर रोहतासगढ़ पहुँची है और यह फौज रोहतासगढ़ से आ रही है, मगर दो-तीन सौ से ज्यादा आदमी न होंगे।"

इसके बाद पश्चिम की तरह से बाजे की आवाज आई और गौर करने पर मालूम हुआ कि पश्चिम तरफ से भी फौज आ रही है।

शिवदत्त के सिपाही बहुत मेहनत कर चुके थे, न भी मेहनत किये हों, तो क्या था, राजा वीरेन्द्रसिंह की फौज की खबर पाकर अपने कलेजे को मजबूत रखना ऐसे सिपाहियों का काम न था जो वर्षों बिना तनखाह के सिर्फ मालिक के नाम पर अपने सिपाहीपन को टेरे जाते हों। उन लोगों ने घबड़ा कर शिवदत्त की तरफ देखा। यद्यपि कैद की सख्ती ने शिवदत्त की सूरत-शक्ल और आवाज में भी फर्क डाल दिया था, मगर इस समय राजा वीरेन्द्रसिंह की फौज के आने से उसके चेहरे पर किसी तरह की घबड़ाहट या उदासी नहीं पाई गई। शिवदत्त ने अपने सिपाहियों की तरफ देखा और हिम्मत दिलाने वाले शब्दों में कहा, "घबराओ मत हिम्मत न हारो, हौसले के साथ भिड़ जाओ और इन सभी का असबाब भी लूट लो, मगर इस बात का खूब ध्यान रखो कि भाग कर इस मकान के अन्दर न घुस जाना, नहीं तो चारों तरफ से घेर कर सहज ही में मार डाले जाओगे। यदि मैदान में डटे रहोगे तो कठिन समय पड़ जाने पर भागने को भी जगह मिलेगी—" इत्यादि।

क्या करें? लड़ें या न लड़ें? रुकें या भाग जायें? इत्यादि सोच-विचार और सलाह में ही बहुत-सा अभूल्य समय निकल गया और धावा करते हुए राजा वीरेन्द्रसिंह के फौजी सिपाहियों ने पूरब और पश्चिम तरफ से आकर दुश्मनों को घेर लिया। यद्यपि शिवदत्त के सिपाही भागने के लिए तैयार थे, मगर शिवदत्त के हिम्मत दिलाने वाले शब्दों की बदौलत जिन्हें वह बार-बार अपने मुँह से निकाल रहा था, थोड़ी देर के लिए अड़ गये और राजा वीरेन्द्रसिंह की फौज से जो गिनती में दो सौ से ज्यादा न होगी, जी तोड़ के लड़ने लगे। उनके अटल रहने और जी तोड़ कर लड़ने का एक यह भी सबब था कि उन लोगों ने राजा वीरेन्द्रसिंह के फौजी सिपाहियों को जो वास्तव में रोहतासगढ़ से

आये थे, गिनती में अपने से बहुत कम पाया था।

यह थोड़ी-सी फौज जो रोहतासगढ़ से आई थी, चुन्नीलाल ऐयार के आधीन थी। चुन्नीलाल ने जासूसों को भेज कर इस बात का पता पहले ही लगा लिया था कि तालाब वाले तिलिस्मी मकान पर हमला करने वाले दुश्मन कितने और किस ढंग के हैं, इसके बाद उसने अपनी फौज को फैला कर दुश्मनों को चारों तरफ से घेर लेने का उद्योग किया था और जो कुछ सोच रखा था वही हुआ।

चुन्नीलाल की मातहत फौज ने दुश्मनों को घेर कर बेतरह मारा। चुन्नीलाल स्वयं तलवार लेकर मैदान में अपनी बहादुरी दिखाता हुआ अपने सिपाहियों की हिम्मत बढ़ा रहा था और जिधर धँस जाता था उधर ही दस-पाँच को खीरे-ककड़ी की तरह काट गिराता था। यह हाल देख दुश्मन बगलें झाँकने लगे, मगर लड़ाई इस ढंग से हो रही थी कि यहाँ से बचकर निकल भागना भी मुश्किल था। दो घंटे की लड़ाई में आधे से भी ज्यादा दुश्मन मारे गये और बाकी भाग कर अपनी जान बचा ले गये। वीरेन्द्रसिंह के केवल बीस बहादुर काम आये। इस घमासान लड़ाई के अन्त में इस बात का कुछ भी पता न लगा कि शिवदत्त बहादुरी के साथ लड़कर मारा गया या मौका मिलने पर निकल भागा।

जब दुश्मनों में से सिवाय उन सभी के जो मौत की गौद में सो चुके थे या जमीन पर पड़े सिसक रहे थे और कोई भी न रहा, सब भाग गये, तब केवल दस-बारह आदमियों को साथ लेकर चुन्नीलाल तिलिस्मी मकान की तरफ बढ़ा मगर मकान में पहुँचने के पहले ही सिपाही सूरत का एक आदमी जो उसी मकान में से निकल कर इनकी तरफ आ रहा था उसे मिला। उसके हाथ में लिफाफे के अन्दर बन्द एक चिट्ठी थी जो उसने चुन्नीलाल के हाथ में दे दी और चुपचाप खड़ा हो गया। चुन्नीलाल ने भी उसी जगह अटक कर लिफाफा खोला और बड़े ध्यान से चिट्ठी पढ़ने लगा। समाप्त होने तक कई दफे चुन्नीलाल के चेहरे पर हँसी दिखाई दी और अन्त में वह बड़े गौर से उस आदमी की सूरत देखने लगा, जिसने चिट्ठी दी थी तथा इसके बाद इशारे से सिर हिलाया मानो उस आदमी को यहाँ से बेफिक्री के साथ चले जाने के लिए कहा. और वह आदमी भी बिना सलाम किये झूमता हुआ वहाँ से चला गया।

चुन्नीलाल कई आदमियों को साथ लेकर तिलिस्मी मकान के अन्दर गया, उसने वहाँ अच्छी तरह घूमकर देखा, मगर किसी को न पाया, तब बाहर निकला और अपने मातहत सिपाहियों को लेकर रोहतासगढ़ की तरफ लौट गया।

7

ऊपर का बयान पढ़कर हमारे प्रेमी पाठक ताज्जुब करते होंगे कि यह क्या हुआ और क्या लिखा गया। और बातों को जाने दीजिये, मगर अन्त में यह क्या अश्चर्य की

बात हो गई कि चुन्नीलाल तिलिस्मी मकान के अन्दर आया और मामूली तौर पर देख-भाल कर चला गया, बेचारी किशोरी, कामिनी और तारा की कुछ सुध न ली । खैर सब्र कीजिये और जरा हमारे साथ फिर उस जगह चलिये, जहाँ श्यामसुन्दर, भगवनिया, भैरोंसिंह, कमलिनी, लाड़िली, देवीसिंह और भूतनाथ को छोड़ आये हैं ।

जिस समय भगवनिया ने कमलिनी को अपने सामने देखा वह बदहवास हो गई, कलेजा काँपने लगा, साँस में रुकावट पैदा हुई और मौत की सी तकलीफ मालूम होने लगी । उसने चाहा कि कमलिनी के पैरों पर गिर कर अपना कसूर माफ करावे, मगर डर के मारे उसके खून की हरकत बिल्कुल बंद हो गई थी इसलिए वह कुछ भी न कर सकी बल्कि क्रमशः बढ़ते ही जाने वाले खौफ के सबब बेदम होकर पीछे की तरफ जमीन पर गिर पड़ी ।

भगवानी की यह अवस्था देखकर कमलिनी को आश्चर्य मालूम हुआ क्योंकि उसने अभी तक श्यामसुन्दरसिंह और भगवानी का हाल कुछ न जाना था । भैरोंसिंह ने भूतनाथ को रोशनी करने के लिए कह कर संक्षेप में वह सब हाल कमलिनी को कह सुनाया जो भगवानी के विषय में श्यामसुन्दरसिंह से सुना था । कमलिनी को हद से ज्यादा क्रोध चढ़ आया मगर वह बुद्धिमान थी और इस बात को खूब समझती थी कि ऐसे मौके पर क्रोध के ऊपर अधिकार न कर लेने से प्रायः तकलीफ और नुकसान हुआ करता है, कहीं ऐसा न हो कि डर के मारे या विशेष धमकाने से भगवानी का दम निकल जाये या वह जिसका दिल और दिमाग बहुत ही कमजोर है पागल हो जाय जैसा कि प्रायः हुआ करता है, तो बड़ी ही मुश्किल होगी और किशोरी कामिनी तथा तारा का कुछ भी पता न लगेगा ।

रोशनी हो जाने पर जब कमलिनी ने भगवानी की सूरत देखी तो मालूम हुआ कि उस पर हद से ज्यादा खौफ पड़ चुका है । आँखें बन्द हैं, चेहरे पर जर्दी छाई हुई है, और बदन काँप रहा है । कमलिनी ने कुछ ऊँची आवाज में कहा, "होश में आ और मेरी बातें सुन, एकदम नाउम्मीद न हो, कदाचित तेरी जान बच जाय !"

इस आवाज ने बेशक अच्छा असर किया जैसा कि कमलिनी ने सोचा था, 'कदाचित् तेरी जान बच जाय' यह सुनकर भगवानी ने आँखें खोल दीं ! कमलिनी ने फिर कहा, "यद्यपि तूने बहुत बड़ा कसूर किया है मगर मैं वादा करती हूँ कि यदि तू झटपट सच्चा-सच्चा हाल कह देगी तो तेरी जान छोड़ दी जायगी ।"

अब भगवानी उठ बैठी और अपने को सँभाल कर हाथ जोड़ के काँपती हुई आवाज के साथ बोली, 'क्या मेरी जान छोड़ दी जायगी ?"

कमलिनी—हां, छोड़ दी जायगी यदि तू सच्चा हाल कहकर अपने दोष को स्वीकार कर लेगी और किशोरी, कामिनी तथा तारा का ठीक-ठीक पता बता देगी ।

भगवानी—(कमलिनी के पैरों पर गिरकर और फिर खड़ी होकर) बेशक मैं कसूरवार हूँ । जो कुछ मैंने किया है मैं साफ कह दूँगी । अफसोस लालच में पड़कर मैंने बहुत बुरा किया था । मुझे शिवदत्त ने धोखा दिया, बिना समझे-बूझे मैं...

कमलिनी—बस-बस, ज्यादा बात बढ़ाने की कोई जरूरत नहीं, जो कुछ कहना है जल्दी में कह दे, विलम्ब होना तेरे लिए अच्छा नहीं है ।

भगवानी ने सब हाल अर्थात् जो कुछ उसने कसूर किया था, सच-सच कह दिया और अन्त में फिर कमलिनी के पैरों पर गिर कर बोली, "मैंने कोई बात नहीं छिपाई, अब अपनी प्रतिज्ञानुसार मुझे छोड़ दीजिए।"

"हाँ, छोड़ दूंगी।" कहकर कमलिनी ने भूतनाथ और श्यामसुन्दरसिंह की तरफ देखा और कहा, "इसकी मुश्कें बाँध लो और जहाँ उचित समझो ले जाकर अपनी हिफाजत में रक्खो। हम लोग मकान की तरफ न जाकर पहले किशोरी, कामिनी और तारा को छुड़ाने का उद्योग करते हैं और इसके बाद जैसा मौका होगा किया जायगा। कल इसी समय इसी जगह हम लोग या हम लोगों में से कोई आवेगा, तुम मौजूद रहना, अगर भगवानी की बात सच निकली तो ठीक है, नहीं तो एक बात भी झूठी निकलने पर कल इसी जगह इसका सिर उतार लिया जायगा। बस अब मैं एक पल भी नहीं रुक सकती।"

भूतनाथ और भगवानी को इसी जगह छोड़ भैरोंसिंह देवीसिंह और लाड़िली को साथ लिए हुए कमलिनी वहाँ से रवाना हुई। इस समय उसके पास तिलिस्मी खंजर मौजूद था, वही तिलिस्मी खंजर जो भैरोंसिंह का पत्र पाकर इन्द्रदेव ने उसे दे दिया था।

वहाँ से थोड़ी दूर पर एक पहाड़ी थी जिससे मिली-जुली छोटी-बड़ी पहाड़ियों का सिलसिला पीछे की तरफ दूर तक चला गया था। कमलिनी अपने साथियों को लिए हुए उसी तरफ रवाना हुई। कमलिनी को अपने मकान के बर्बाद होने और लूटे जाने का इतना रंज न था जितना किशोरी, कामिनी और तारा की अवस्था पर रंज था। वह साथियों से में निम्नलिखित बातें करती हुई तेजी से उस पहाड़ी की तरफ जा रही थी।

कमलिनी—अफसोस, तारा ने बड़ा धोखा खाया! अब देखना चाहिए उन तीनों को मैं जीता पाती हूँ या नहीं!

लाड़िली—किशोरी और कामिनी बेचारी ने न मालूम विधाता का क्या बिगाड़ा है कि सिवा दुःख के सुख तो उन्हें…

कमलिनी—दुःखों ने तो तो पहले ही उन्हें अधमरा कर दिया था, अब देखना चाहिए कि कई दिन की भूख-प्यास ने उन्हें जीता भी छोड़ा है या नहीं? (रोकर) सच तो यह है कि यदि वे जीती-जागती आज मुझे न मिलीं तो मैं दोनों कुमारों को मुंह दिखाने लायक न रहूँगी और जब इस योग्य हो जाऊँगी तो फिर जी कर ही क्या करूँगी! (कुछ सोचकर) निासन्देह अगर ऐसा हुआ तो आज मुझे भी उसी जगह मरकर रह जाना होगा। हे ईश्वर, तेरी सृष्टि में एक-से-एक बढ़कर खूबसूरत गुलबूटे मौजूद हैं, इन दोनों के लिए कमी नहीं है, क्या तू नहीं जानता कि उन कुमारों की जिन्दगी के लिए जिनकी प्रसन्नता पर हमारी प्रसन्नता निर्भर है केवल ये ही दोनों हैं? अफसोस, यद्यपि कम्बख्त भगवानी से मैं खटकी रहती थी मगर यह आशा न थी, कि वह यहाँ तक कर गुजरेगी।

भैरोंसिंह—क्या आप जानती थीं कि भगवानी दिल की खोटी है?

कमलिनी—मुझे इस बात का निश्चय तो न था कि वह खोटी है, मगर उसके बात-बात पर कसम खाने से मैं खटकी रहती थी, क्योंकि मैं खूब जानती हूँ कि जो आदमी

लापरवाही के साथ बात-बात पर कसमें खाया करता है, वह वास्तव में झूठा और खोटा होता है। मायारानी की सुहबत के सबब से यदि वह मेरे इस तिलिस्मी मकान के तहखाने के भेद से अनजान रहती तो मैं स्वयं उसे वह भेद कदापि न बताती। तिस पर भी खुटका बना रहने के कारण मैं स्वयं जब ताला खोलकर उस तहखाने और सुरंग में जाती थी तो ताले को जमीन पर नहीं रख देती थी बल्कि कुण्डी में लगाकर ताली अपने पास रख लेती थी जिससे तहखाने या सुरंग में जाने के बाद पीछे से कोई आदमी ताला बन्द करना तो दूर रहा, जंजीर भी न चढ़ा सके।

देवीसिंह—बेशक यह बड़ी चालाकी की बात है। जब खाली कुण्डी में ताला लगा रहेगा तो किसी तरह कोई जंजीर नहीं चढ़ा सकता।

कमलिनी—और यह बात तारा को मालूम थी मगर अफसोस, उसने इस पर कुछ ध्यान न दिया और धोखा खा गई। मैं बहुत दिनों से इस फिक्र में थी कि भगवानी को अच्छी तरह जाँच कर खटका मिटा लिया जावे लेकिन इतनी फुरसत ही न मिली। दस दिन निश्चिन्त होकर घर में बैठने की कभी नौबत ही न आई। मगर आश्चर्य की बात है कि भगवानी ने इतनी खोटी होने पर भी हमारे यहाँ की कोई बात मायारानी के कान तक न पहुँचाई क्योंकि अभी तक कोई ऐसी बात पाई नहीं गई जिससे मैं समझती कि मेरा फलाँ भेद मायारानी को मालूम हो गया है।

भैरोंसिंह—यह बात कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि मौका मिलने पर आदमी की तबीयत यकायक बदल जाय। एक पुरानी मसल चली आती है कि 'आदमी का शैतान आदमी होता है।' इसका मतलब यही है कि चालाक और धूर्त आदमी अपनी लच्छेदार बातों में फँसाकर किसी आदमी की तबीयत को बदल सकता है। मन बड़ा ही चंचल है, इसे स्वाधीन रखना कोई मामूली बात नहीं है। बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों का सैकड़ों वर्षों का उद्योग भी, जो केवल मन को स्वाधीन करने के विषय में किया गया था, बात-की-बात में वृथा हो चुका है। हाँ, नेक और बद आदमियों के मन में इतना भेद अवश्य होता है कि भाव बदल जाने या धोखे में पड़कर किसी बुराई के हो जाने पर नेक आदमी तुरत चौकन्ना हो जाता है और सोचता है कि 'बेशक यह काम मुझसे बुरा हो गया, मगर बुरे मनुष्य में जिसने अपने मन पर अधिकार जमाने के लिए कुछ उद्योग न किया हो, यह बात नहीं होती। जो आदमी इस बात को सोचता कि मन क्या वस्तु है, इसकी चंचलता कैसी है, यह कितनी जल्दी बदल जाने की सामर्थ्य रखता है, या उसे अधिकार में न रखने से क्या-क्या खराबियाँ हो सकती हैं, उसके हृदय में एक ऐसी ताकत पैदा हो जाती है जिसकी उत्पत्ति तो विचारशक्ति से है मगर यह कहना बहुत कठिन है कि वह स्वयं क्या पदार्थ है। उसका काम यह है कि मन की चंचलता या शिथिलता के कारण यदि कोई बुराई होना चाहती है तो वह विचित्र ढंग से खुटका पैदा कर तुरत खबर दे देता है कि यह काम बुरा है या तूने बुरा किया। यह विषय बड़ा गम्भीर है, ऐसे समय में अर्थात् राह चलते-चलते इस विषय को स्पष्ट रूप से मैं नहीं दिखा सकता मगर मेरे कहने का मतलब केवल यही है कि आदमी का शैतान आदमी होता है। आदमी अपने हमजिन्स की तबीयत को बेशक बदल सकता है. हाँ यह

बात विचारशक्ति की दृढ़ता और स्थिरता पर निर्भर है कि किसका मन कितनी देर में बदल सकता है। भगवानी औरत की जात है जिनका मन बनिस्बत मर्दों के बहुत कमजोर होता है। ऐसे को यदि तीन धूर्तों की लच्छेदार बातों ने, जो आपके यहाँ कैद थे, मौका पाकर बदल दिया तो कोई आश्चर्य की बात नहीं, इससे इस बात को निश्चित तौर पर कह नहीं सकते कि भगवानी अवश्य पहले से ही खोटी थी या पहले अच्छी थी, बीच में खोटी बना दी गई।

कमलिनी—(भैरोंसिंह के विचारों से प्रसन्न होकर) बेशक तुम्हारा यह कहना बहुत ठीक है, मैं स्वीकार करती हूँ।

देवीसिंह—(भैरोंसिंह की पीठ मुहब्बत से ठोंककर) शाबाश ! मैं यह जानकर प्रसन्न हुआ कि तुम मन की अवस्था को अच्छी तरह से समझते हो, जिसका नतीजा भविष्य में बहुत अच्छा निकलेगा। ईश्वर हमारे उस मनोरथ को पूरा करे जिसके लिए इस समय तेजी और घबराहट के साथ हम लोग जा रहे हैं फिर किसी समय इस विषय पर बहुत-सी बातें मैं तुमसे कहूँगा।

इन लोगों को राह चलने या स्थान खोजने में किसी तरह की कठिनता न हो इसलिए विधाता ने आसमान पर कुदरती माहताबी जला दी थी और वह क्रमशः ऊँची होकर पृथ्वी के इस खण्ड की उन तमाम चीजों को, जो किसी आड़ में न थीं, साफ दिखाई देने में सहायता कर रही थी। यही सबब था कि इन लोगों को उन कठिन रास्तों पर चलने में विशेष कष्ट न हुआ जो बहुत ही पथरीला, खराब और चकाबू के नक्शे की तरह पेचीला था।

पहाड़ियों पर घूम-फिर कर चढ़ते-उतरते हुए ये लोग एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जिसके दोनों तरफ ऊँचे पहाड़ और बीच में एक बारीक पगडण्डी थी जिसके देखने से साफ मालूम होता था कि कारीगरों ने बड़े-बड़े ढोकों को काट कर यह रास्ता तैयार किया होगा। यहाँ पर कमलिनी और लाड़िली घोड़ों पर से उतर पड़ीं और उन्हें एक पेड़ से बाँध आगे की तरफ रवाना हुईं। कमलिनी आगे-आगे जा रही थी, उसके पीछे लाड़िली और फिर दोनों ऐयार आश्चर्य से चारों तरफ देखते और यह सोचते हुए जा रहे थे कि निःसन्देह अनजान आदमी जिसे इस रास्ते का हाल मालूम न हो, यहाँ कदापि नहीं आ सकता।

इस पगडंडी पर दो सौ कदम जाने के बाद साफ पानी से भरा हुआ एक पतला चश्मा मिला जो इन लोगों की राह काटता हुआ दाहिने से बाईं तरफ को बह रहा था। अब कमलिनी उसी नहर के किनारे-किनारे बाईं तरफ जाने लगी, मगर अपनी तेज निगाहें उन छोटे-छोटे जंगली पेड़ों पर बड़ी सावधानी से डालती जाती थी जो उस चश्मे की दोनों किनारों पर बड़ी खूबी और खूबसूरती के साथ खड़े इस समय की ठण्डी-ठण्डी हवा के नर्म झोकों में नये शराबियों की तरह धीरे-धीरे झूम रहे थे।

यकायक कमलिनी की निगाह एक ऐसे पेड़ पर पड़ी जिसके दोनों तरफ पत्थरों के ढोंके इस तौर पर पड़े हुए थे मानो किसी ने जान-बूझ कर इकट्ठे किये हों। यहाँ पर कमलिनी रुकी और कुछ सोचने के बाद अपने साथियों को लिये चश्मे के पार उतर गई

जिसके आगे थोड़ी ही दूर जाने के बाद कुछ ढलवाँ जमीन मिली मगर लाड़िली और दोनों ऐयार कमलिनी के पीछे-पीछे चले ही गये। दो सौ कदम से ज्यादा न गये होंगे कि ये लोग एक गुफा के मुहाने पर पहुँच कर रुक गये। कमलिनी ने देवीसिंह से मोमबत्ती जलाने के लिए कहा और जब मोमबत्ती जल चुकी, तो सब उस खोह के अन्दर घुसे। खोह की अवस्था देखने से जाना जाता था कि वर्षों से इसकी जमीन ने किसी आदमी के पैर न चूमे होंगे बल्कि कह सकते हैं कि शायद किसी जंगली जानवर ने भी इसके अन्दर आने का साहस न किया होगा। थोड़ी ही दूर पर खोह का अन्त हुआ और इन लोगों ने अपने सामने लोहे का एक बन्द दरवाजा देखा। कमलिनी ने लाड़िली पर एक भेद-भरी निगाह डाली और कहा, "इस दरवाजे का हाल राजा गोपालसिंह के सिवाय कोई भी नहीं जानता। मुझे तो खून से लिखी हुई किताब की बदौलत इसका हाल मालूम हुआ है, इसकी चाबी भी इसी जगह मौजूद है।" यह कह कर कमलिनी ने तिलिस्मी खंजर के कब्जे से दरवाजे के दाहिनी तरफ बचोंबीच की जमीन ठोंकी जो वास्तव में किसी धातु की थी, मगर मुद्दत से काम में न आने के कारण उसका रंग पत्थर के रंग में मिल गया था।

ठोंकने के साथ ही बित्ते भर का एक पल्ला अलग हो गया और उसके अन्दर हाथ डाल कर कमलिनी ने कोई पेंच दबाया और इसके साथ ही हल्की आवाज देता हुआ वह दरवाजा खुल गया। कमलिनी ने उस खिड़की को बन्द कर दिया जिसके अन्दर हाथ डाल कर पेंच घुमाया था और इसके बाद सभी को लिए दरवाजे के अन्दर चली गई।

दरवाजा खोलने के लिए जिस तरह की चाबी इस तरफ रखी थी उसी तरह की दरवाजे के दूसरी तरफ भी थी अर्थात् दूसरी तरफ भी उसी तरह की ताली और पेंच मौजूद था जिसे घुमा कर कमलिनी ने दरवाजा बन्द किया और साथियों को साथ लिए हुए आगे की तरफ बढ़ी। इन सभी को घंटे भर तक तेजी के साथ जाना पड़ा और इसके बाद मालूम हुआ कि सुरंग के दूसरे मुहाने पर पहुँच गये क्योंकि यहाँ भी उसी रंग-ढंग का दरवाजा बना हुआ था। कमलिनी ने उस दरवाजे को भी खोला और सभी को साथ लिये हुए अन्दर चली गई। यहाँ पर रास्ता बँट गया था अर्थात् एक सुरंग बाईं तरफ गई हुई थी और दूसरी दाहिनी तरफ। कमलिनी ने भैरोंसिंह और देवीसिंह की तरफ देख के कहा, "मुझे मालूम है कि दाहिनी तरफ जाने से हम लोग उस कोठरी में पहुँचेंगे जिसमें कैदी लोग कैद थे या जो कैदखाने के नाम से पुकारी जाती है, और बाईं तरफ जाने से हम लोग उस सुरंग के बीचोंबीच में पहुँचेंगे जिसमें किशोरी, कामिनी और तारा को भगवनिया ने फँसा रक्खा है। आप लोगों की क्या राय है किधर चलना चाहिए?"

देवीसिंह — हम लोगों को पहले उस सुरंग ही में चलना चाहिए जिसमें किशोरी कामिनी और तारा को जल्द देखें।

इस बात को सभी ने पसन्द किया और कमलिनी ने बाईं तरफ का रास्ता लिया। दो-चार कदम जाने के बाद भैरोंसिंह ने कहा, "मैं समझता हूँ कि अब बीस-पच्चीस कदम से ज्यादा न चलना होगा और उस ठिकाने पर पहुँच जायँगे, जहाँ शीघ्र पहुँचने की इच्छा है!"

कमलिनी—यह बात तुमको कैसे मालूम हुई ?

भैरोंसिंह—(छत और दोनों तरफ की दीवार की तरफ इशारा करके) देखिये छत और दीवान नम मालूम होती हैं, कहीं-कहीं पानी की बूंदें भी टपक रही हैं, इससे निश्चित होता है कि इस समय हम लोग तालाब के नीचे पहुँच गये हैं।

कमलिनी ने कहा, "ठीक है, तुम्हारा सबूत ऐसा नहीं है कि कोई काट सके।"

थोड़ी ही दूर आगे जाने के बाद एक छोटी-सी खिड़की मिली। इसका दरवाजा भी उसी ढंग से खुलने वाला था जैसा कि पहला और दूसरा दरवाजा, जिनका हाल हम ऊपर लिख आये हैं। कमलिनी ने दरवाजा खोला।

इस समय इन चारों का कलेजा धक-धक कर रहा था, क्योंकि अब ये लोग किशोरी, कामिनी और तारा की किस्मतों का फैसला देखने वाले थे और उनके दिलों का यह खुटका क्रमशः बढ़ता ही जाता था कि देखें बेचारी किशोरी, कामिनी और तारा को हम लोग किस अवस्था में पाते हैं! कहीं ऐसा न हुआ हो कि वे तीनों भूख-प्यास के दुःख को न सह कर इस दुनिया के कूच कर गई हों और इस समय उनकी लाशें सामने पड़ कर हम लोगों को भी दीन-दुनिया के लायक न रक्खें।

यहाँ पर एक मोमबत्ती और जला ली गई। दरवाजा खुला और ये चारों उसके अन्दर गये। आह, यहाँ यकायक जमीन पर सामने की तरफ तीन लाशें पड़ी हुई दिखाई दीं जिन पर नजर पड़ते ही कमलिनी के मुँह से एक चीख निकल पड़ी और वह 'हाय' करके उन लोगों के पास जा पहुँची।

ये तीनों लाशें किशोरी, कामिनी और तारा की थीं जो भूख और प्यास की सताई हुई इस अवस्था को पहुँच गई थीं। तारा के बगल में तिलिस्मी नेजा जमीन पर पड़ा हुआ था और उसके जोड़ की अँगूठी उसकी खूबसूरत उँगली में पड़ी हुई थी।

कमलिनी ने सबसे पहले किशोरी के कलेजे पर हाथ रक्खा। कलेजे की धड़कन बन्द थी और शरीर मुर्दे की तरह ठंडा था। कमलिनी की आँखों से आँसू की बूंदें गिरने लगीं, मगर जब उसने किशोरी की नब्ज पर हाथ रक्खा तो इसके साथ ही खुश होकर बोल उठी, "अहा, अभी नब्ज चल रही है! आशा है कि ईश्वर मेरी मेहनत को सफल करेगा!"

कमलिनी ने तारा और कामिनी की भी जाँच की। दोनों ऐयारों ने भी सभी को गौर से देखा। किशोरी, कामिनी और तारा तीनों की अवस्था खराब थी, होश-हवास कुछ भी न था, साँस बिल्कुल मालूम नहीं पड़ती थी, हाँ नब्ज का कुछ-कुछ पता लगता था जो बहुत ही बारीक और सुस्त चल रही थी। यद्यपि यह जान कर सभी को कुछ प्रसन्नता हुई कि ये तीनों अभी जीती हैं मगर फिर भी उन तीनों की अन्तिम अवस्था इस बात का निश्चय नहीं कर सकती थी कि इनकी जान निःसन्देह बच ही जायगी, और यही कारण था कि जिससे कमलिनी, लाड़िली, देवीसिंह और भैरोंसिंह का कलेजा काँप रहा था और आँखें डबडबाई हुई थीं।

देवीसिंह ने अपने बटुए में से एक शीशी निकाली जिसमें लाल रंग का कोई अर्क था। उसी में से थोड़ा-थोड़ा अर्क उन तीनों के मुँह में (जो पहले ही से खुला हुआ था)

डाला और थोड़ी देर बाद फिर नब्ज पर हाथ रक्खा। नब्ज पहले से कुछ तेज मालूम हुई और साँस भी कुछ चलने लगी।

भैरोंसिंह—इन दोनों को यहाँ से बाहर निकाल कर मैदान में ले चलना चाहिए क्योंकि जब तक ठण्डी और ताजी हवा न मिलेगी इनकी अवस्था ठीक न होगी!

देवीसिंह—बेशक ऐसा ही है, इस सुरंग की बन्द हवा हमारे इलाज को सफल न होने देगी।

कमलिनी—तो पहले यही काम करना चाहिए।

इतना कहकर कमलिनी ने तारा की उँगली से तिलिस्मी नेजे के जोड़ की अँगूठी निकाल ली और भैरोंसिंह को देकर कहा, "इस अँगूठी को तुम पहन लो जिसमें इस तिलिस्मी नेजे को अपने पास रख सको, क्योंकि इन तीनों को बाहर ले जाने के बाद लाड़िली और देवीसिंह को साथ लेकर थोड़ी देर के लिए मैं तुमसे अलग हो जाऊँगी और किशोरी, कामिनी तथा तारा की हिफाजत के लिए तुम अकेले रह जाओगे।"

"मैं आपका मतलब समझ गया।" कह कर भैरोंसिंह ने अँगूठी लेकर अपनी उँगली में पहन ली।

कमलिनी—मेरे इस कहने से तुमने क्या मतलब निकाला? मेरा इरादा क्या समझे?

भैरोंसिंह—यही कि आप लोग माधवी, मनोरमा और शिवदत्त की शक्लें बना कर उन दुश्मनों को धोखा देना चाहते हैं क्योंकि वे लोग अभी तक बेहद उथल-पुथल मचाने पर भी आपके मकान के बाहर न हुए होंगे।

कमलिनी—शाबाश! तुम्हारी बुद्धि बड़ी तेज है, बेशक मेरा यही इरादा है।

दो दफा कर के हिफाजत के साथ चारों आदमियों ने किशोरी, कामिनी और तारा को सुरंग के बाहर निकाला और देवीसिंह तथा भैरोंसिंह बड़ी मुस्तैदी से किशोरी, कामिनी और तारा का इलाज करने लगे। जब कमलिनी को इस बात का निश्चय हो गया कि अब इन तीनों की जान का खौफ नहीं है, तब वह देवीसिंह और लाड़िली को साथ लेकर फिर उसी सुरंग से घुसी। अबकी दफा वह कैदखाने वाली कोठरी में गई और वहाँ कार्रवाई का पूरा मौका पाकर इन तीनों ने माधवी, मनोरमा और शिवदत्त बनकर जो कुछ किया उसका हाल हम ऊपर के बयान में लिख चुके हैं।

पाठक महाशय, अब आप यह तो समझ ही गये होंगे कि दुश्मनों ने खोज ढूंढ़-कर तहखाने में से जिन कैदियों को निकाला, वे वास्तव में माधवी, मनोरमा और शिवदत्त न थे, बल्कि कमलिनी, लाड़िली और देवीसिंह थे। खैर, अब इस तरफ आइये और किशोरी, कामिनी तथा तारा का हाल देखिये, जिनकी हिफाजत के लिए केवल भैरोंसिंह रह गये थे।

ताकत पहुँचाने वाली दवाओं की बरकत से किशोरी, कामिनी और तारा ने उस समय आँखें खोलीं जब आसमान पर सुबह की सफेदी फैल चुकी थी। पूरब से निकल-कर क्रमशः फैल जाने वाली लालिमा रात भर तेजी के साथ चमकने वाले सितारों और उनके सरदार चन्द्रदेव को सूर्यदेव की अवाई की सूचना दे रही थी, और इसी सबब से

तारों समेत तारापति भी नौ-दो-ग्यारह होने के उद्योग में लगे हुए थे, तथा भैरोंसिह आसमान की तरफ मुंह किये बड़ी दिलचस्पी के साथ इस शोभा को देख-देखकर सोच रहा था कि "वाह, ईश्वर की भी क्या विचित्र गति है ? करोड़ों आदमी ऐसे होंगे जो चन्द्रदेव की यह अवस्था देख सूर्यदेव ही के ऊपर इनसे वैर रखने का कलंक लगाते होंगे जिनकी बदौलत चन्द्रमा में रोशनी है और वह खूबसूरती तथा उद्दीपन का मसाला गिना जाता है।"

इस समय भैरोंसिह को यह देखकर कि किशोरी, कामिनी और तारा ने आँखें खोल दी हैं, बड़ी खुशी हुई और उसने समझा कि अब मेरी मेहनत ठिकाने लगी। मगर अफसोस, उसे इस बात की कुछ खबर न थी कि बदकिस्मती ने अभी तक उन लोगों का पीछा नहीं छोड़ा या विधाता अभी भी उन लोगों के अनुकूल नहीं हुआ।

8

भगवानो को भूतनाथ के हवाले करके जब कमलिनी चली गयी तो भूतनाथ एक पत्थर की चट्टान पर बैठकर सोचने लगा। श्यामसुन्दरसिंह किसी काम के लिए चला गया और भगवानी उसके सामने दूसरी चट्टान पर सिर कपड़े बैठी हुई थी। उसके हाथ-पैर खुले थे, मगर भूतनाथ के सामने से भाग जाने की हिम्मत उसे न थी। भूतनाथ क्या सोच रहा था या किस विचार में डूबा हुआ था, इसका पता अभी न लगता था, मगर उसके ढंग से इतना जरूर मालूम होता था कि वह किसी गम्भीर चिन्ता में डूबा हुआ है, जिसमें कुछ-कुछ लाचारी और बेबसी की झलक भी मालूम होती थी। वह घण्टों तक न जाने क्या-क्या सोचता और बहुत देर बाद लम्बी साँस लेकर धीरे से बोला, 'बेशक, वही था और अगर वही था तो उसने मुझे अपनी आँखों की ओट होने न दिया होगा...'

यह बात भूतनाथ ने इस ढंग से कही मानो वह स्वयं अपने दिल को सुना रहा और आगे भी कुछ कहना चाहता है, मगर पास ही से किसी ने उसकी अधूरी बात का यह जवाब दे दिया—'"हाँ, आँखों की ओट नहीं होने दिया !"

भूतनाथ चौंक पड़ा और मुड़कर पीछे की तरफ देखने लगा। उसी समय एक आदमी भूतनाथ की तरफ बढ़ता हुआ दिखाई दिया जो तुरन्त भूतनाथ के सामने आकर खड़ा हो गया। चन्द्रदेव जिनको उदय हुए अभी आधी घड़ी भी नहीं हुई थी, इस नये आये हुए मनुष्य की सूरत-शक्ल को अच्छी तरह नहीं तो भी बहुत-कुछ दिखा रहे थे। इसका कद नाटा, बदन गठीला और मजबूत था, रंग यद्यपि काला तो न था, मगर गोरा भी न था। चेहरा कुछ लम्बा, सिर पर बड़े-बड़े घुंघराले बाल इतने चमकदार और खूबसूरत थे कि ऐयारों को उन पर नकली या बनावटी होने का गुमान हो सकता था। चुस्त पायजामा और घुटने तक का चपकन जिसमें बहुत से जेब थे, पहने और उस पर रेशमी कमरबन्द बाँधे हुए था, केवल कमरबन्द ही नहीं, बल्कि कमरबन्द के ऊपर बेशकीमत

कमन्द इस खूबसूरती के ढंग से लपेटे हुए था कि देखने से औरों को तो नहीं, मगर ऐयारों की बहुत ही खूबसूरत जँचती होगी। कमर में बाईं तरफ लटकने वाली तलवार की म्यान साफ कह रही थी कि मैं एक हल्की-पतली तथा नाजुक तलवार की हिफाजत कर रही हूँ, पीठ पर गैंडे की एक छोटी-सी ढाल भी लटक रही थी, और हाथ में कोई चीज थी, जो कपड़े के अन्दर लपेटी हुई थी। वह सब कुछ था, मगर उसके सिर पर टोपी, पगड़ी या मुँडासा इत्यादि कुछ भी न था अर्थात् सिर से वह नंगा था। यह आदमी जिस ढंग और चाल से घूमकर भूतनाथ के सामने आ खड़ा हुआ, उससे मालूम होता था कि इसके बदन में फुर्ती और चालाकी कूट-कूटकर भरी हुई है।

कई सायत तक भूतनाथ चुपचाप गौर से उसकी तरफ देखता रहा और वह भी काठ की तरह खड़ा रहा। आखिर भूतनाथ ने कहा, "क्या तुम बहुत देर से हमारे साथ हो?"

आदमी—बहुत देर से ही नहीं, बल्कि बहुत दूर से भी।

भूतनाथ—ठीक है, मैंने रास्ते में तुम्हें एक झलक देखा भी था।

आदमी—मगर कुछ बोले नहीं और मैं भी यह सोचकर छिप गया कि कमलिनी के सामने कहीं तुम्हारी बेइज्जती न हो।

भूतनाथ—और ताज्जुब नहीं कि यह भी सोच लिया हो कि इस समय भूतनाथ अकेला नहीं है।

आदमी—शायद यह भी हो! (हँसकर), मगर सच कहना, क्या तुम्हें विश्वास था कि कभी मुझे फिर अपने सामने देखोगे?

भूतनाथ—नहीं, कभी नहीं, स्वप्न में भी नहीं।

आदमी—अच्छा, तो फिर आज का दिन बहुत मुबारक समझना चाहिए।

यह कहकर वह बड़े जोर से हँसा।

भूतनाथ—आज का दिन शायद तुम्हारे लिए मुबारक हो, मगर मेरे लिए तो बड़ा ही मनहूस है।

आदमी—इसलिए कि तुम मुझे मरा हुआ समझते थे?

भूतनाथ—केवल मरा ही हुआ नहीं, बल्कि पंचतत्व में मिल गया हुआ!

आदमी—और इसी से तुम निश्चिन्त थे तथा समझते थे कि तुम्हारे सच्चे दोषों को जानने वाला दुनिया में कोई नहीं रहा!

भूतनाथ—अब मुझे अपने दोषों के प्रकट होने का डर नहीं है। क्योंकि राजा वीरेन्द्रसिंह और उनके लड़कों तथा ऐयारों की तरफ से मुझे माफी मिल गई है।

आदमी—किसकी बदौलत?

भूतनाथ—कमलिनी की बदौलत।

आदमी—ठीक है, मगर उस सोहागिन की तरफ से तुम्हें माफी न मिली होगी जिसने अपना नाम तारा रखा हुआ है, बल्कि उसे इस बात की खबर भी न होगी कि तुम उसके···

भूतनाथ—ठहरो-ठहरो, तुम्हें इसका खयाल रख के कोई नाजुक बात कहनी

चाहिए कि मेरे सिवाय कोई और सुनने वाला तो नहीं है।

आदमी—कोई जरूरत नहीं कि मैं इस बात का ध्यान रखूं। मैं अन्धा नहीं हूँ इसलिए तुम्हें इतना तो विश्वास होना ही चाहिए कि भगवानी मेरी आँखों की आड़ में न होगी !

भूतनाथ—खैर, तो भगवानी के सामने जरा सम्हल के बातें करो।

आदमी—सो कैसे हो सकता है ? मैं बिना बातें किये टल नहीं सकता और तुम कमलिनी के डर से भगवानी को बिदा नहीं कर सकते। अच्छा देखो, मैं तुम्हारी इज्जत का खयाल करके भगवानी को बिदा कर देता हूँ !(भगवानी से) जा री, तू यहाँ से चली जा ! जहाँ तेरा जी चाहे वहाँ चली जा !

भूतनाथ—(काँप कर) नहीं-नहीं, ऐसा न करो !

आदमी—मैं तो ऐसा ही करूँगा ! (भगवानी से) जा री ! तू जाती क्यों नहीं ? क्या मौत के पंजे से बचना तुझे अच्छा नहीं लगता !

भूतनाथ—मैं हाथ जोड़ता हूँ, माफ करो, जरा सोचो तो सही।

आदमी—तुमने उस वक्त क्या सोचा था कि मैं सोचूँ ?

भूतनाथ—अच्छा, तब एक काम करो, इसके हाथ-पैर बाँधकर अलग कर दो, फिर हम बातें कर लेंगे।

आदमी—(भगवानी से)क्यों री, हाथ-पैर बँधवा के जान देना मंजूर है या भाग जाना पसन्द करती है ?

इस आदमी और भूतनाथ की बातें सुन भगवानी को बड़ा आश्चर्य हो रहा था। वह सोच रही थी कि क्या सबब है जो यह अद्भुत मनुष्य बात-बात में भूतनाथ को दबाये जाता है ? इसके मुँह से जितने शब्द निकलते हैं, सब हुकूमत और लापरवाही के ढंग के होते हैं और इसके विपरीत भूतनाथ के मुँह से निकले हुए शब्द उसकी बेबसी, लाचारी और कमजोरी की सूचना देते हैं। साफ-साफ जान पड़ता है कि भूतनाथ इससे दबता है और इसका इस समय यहाँ आना भूतनाथ को बहुत बुरा मालूम हुआ है। निःसन्देह इसमें और भूतनाथ में कोई गुप्त भेद की बात है जिसे भूतनाथ प्रकट नहीं करना चाहता। जो हो, पर मुझे इन बातों से क्या मतलब ? सच तो यह है कि इस समय इसका यहाँ आना मेरे लिए बहुत मुबारक है। साफ देख रही हूँ कि वह मुझे चले जाने का हुक्म दे रहा है और भूतनाथ जोर करके उसका हुक्म टाल नहीं सकता, अतएव विलम्ब करना नादानी है, जहाँ तक हो सके, यहाँ से जल्द भाग जाना चाहिए। यद्यपि कमलिनी ने वादा किया है कि किशोरी, कामिनी और तारा के मिल जाने पर तेरी जान छोड़ दी जायगी—फिर भी पराधीन और खतरे में तो पड़ी ही रहूँगी। कौन ठिकाना तारा, कामिनी और किशोरी भूख-प्यास की तकलीफ से मर गई हों और इस सबब से कमलिनी क्रोध में आकर मेरा सिर उतार ले ! नहीं-नहीं, ऐसा न होना चाहिए। इस समय ईश्वर ने ही मेरी मदद की है, जो इस आदमी को यहाँ भेज दिया है। अस्तु, जहाँ तक हो सके, जल्दी भाग जाना ही उचित है।

इन बातों को सोचकर भगवानी उठ खड़ी हुई और घने जंगल की तरफ रवाना

हो गयी। फिर-फिरकर देखती जाती थी कि कहीं भूतनाथ मेरे पीछे तो नहीं आता, मगर ऐसा न था और इसलिए वह खुशी-खुशी कदम बढ़ाने लगी। उसने यह भी सोच लिया था कि माधवी, मनोरमा और शिवदत्त मेरी बदौलत छूट गये हैं। इसलिए उन तीनों में से चाहे जिसके पास मैं चली जाऊँगी, मेरी कदर होगी और मुझे किसी बात की परवाह न रहेगी। भगवानी स्वयं तो चली गयी, मगर घबराहट में उसने वह कीमती जेवरों और जवाहरात की चीजों की गठरी उसी जगह छोड़ दी जो कमलिनी के घर से लूटकर लाई थी। यह गठरी अभी तक उसी जगह एक पत्थर के ढोंके पर पड़ी हुई थी और इस पर किशोरी, कामिनी तथा तारा को छुड़ाने की जल्दी में कमलिनी ने भी विशेष ध्यान न दिया था, तो भी एक तौर पर यह गठरी भी भूतनाथ के ही सुपुर्द थी।

भगवानी को इस तरह चले जाते देख भूतनाथ की आँखों में खून उतर आया और क्रोध के मारे उसका बदन काँपने लगा। उसने जोर से जफील (सीटी) बजाई और इसके बाद उस आदमी की तरफ देख के बोला—

भूतनाथ—बेशक, तुमने बहुत बुरा किया कि भगवानी को यहाँ से बिदा कर दिया, मैं तुम्हारी इतनी जबर्दस्ती किसी तरह बरदाश्त नहीं कर सकता!

आदमी—(जोश के साथ) तो क्या तुम मेरा मुकाबला करोगे? कह दो, कह दो—हाँ, कह दो!

भूतनाथ—आखिर तुममें क्या सुरखाब का पर लगा हुआ है जो तुम इतना बढ़े चले जाते हो? मैं भी तो मर्द हूँ!

आदमी—(बहुत जोर से हँसकर—जिससे मालूम होता था कि बनावट की हँसी है) हाँ-हाँ, मैं जानता हूँ, तुम मर्द हो और इस समय मेरा मुकाबला करना चाहते हो!

यह कहकर उसने पीछे तरफ देखा, क्योंकि पत्तों की खड़खड़ाहट तेजी के साथ किसी के आने की सूचना देने लगी थी।

पाठकों को याद होगा कि कमलिनी यहाँ पर अकेले भूतनाथ को नहीं छोड़ गई थी, बल्कि श्यामसुन्दरसिंह को भी छोड़ गई थी। कमलिनी के चले जाने के बाद श्यामसुन्दरसिंह, भूतनाथ की आज्ञानुसार यह देखने के लिए वहाँ से चला गया था कि जंगल में थोड़ी दूर पर कहीं कोई ऐसी जगह है जहाँ हम लोग आराम से एक दिन रह सकें और किसी आने-जाने वाले मुसाफिर को मालूम न हो। यही सबब था कि इस समय श्यामसुन्दरसिंह मौजूद था और भूतनाथ ने उसी को बुलाने के लिए जफील दी थी, जिसके आने की आहट इन लोगों को मिली।

आदमी—(भूतनाथ से) मैं तो पहले ही समझ चुका था कि तुम श्यामसुन्दरसिंह को बुला रहे हो। मगर तुम विश्वास करो कि उसके आने से मैं डरता नहीं हूँ, बल्कि तुम्हारी बेवकूफी पर अफसोस करता हूँ। मर्द-आदमी, तुमने इतना न सोचा कि जब भगवानी के सामने तुम मेरी बातों को नहीं सुन सकते थे तो श्यामसुन्दरसिंह के सामने कैसे सुनोगे? खैर मुझे इन बातों से क्या मतलब, तुम्हें अख्तियार है, चाहे दो सौ आदमी इकट्ठे कर लो!

भूतनाथ—(घबराहट की आवाज से) तुम तो इस तरह बातें कर रहे हो जैसे

अपने साथ एक फौज लेकर आये हो !

आदमी—बेशक, ऐसा ही है। (दो कदम आगे बढ़कर और अपने हाथ की वह गठरी दिखाकर जिसमें कोई चीज लपेटी हुई थी) इसके अन्दर ऐसी चीज है, जिसका होना मेरे साथ वैसा ही है जैसा तुम्हारे साथ एक हजार बहादुर सिपाहियों का होना। क्या तुम नहीं जानते कि इसके अन्दर क्या चीज है ? नहीं-नहीं, तुम बेशक समझ गये होगे कि इस कपड़े के अन्दर··· (कुछ रुककर) हाँ, ठीक है। पहला नाम चाहे कुछ भी हो, मगर अब हमको उसे 'तारा' ही कहकर बुलाना चाहिए—अच्छा,तो हम क्या कह रहे थे ? हाँ, याद आया, इस कपड़े के अन्दर तारा की किस्मत बन्द है। क्या तुम इसे खोलने के लिए हुक्म देते हो ? मगर याद रखो कि खुलने के साथ ही इसमें से इतनी कड़ी आँच पैदा होगी कि जिसे देखते ही तुम भस्म हो जाओगे, चाहे वह आँच मेरे दिल को कितना ही ठण्डा क्यों न करे।

भूतनाथ—(काँपकर और दो कदम पीछे हटकर) ठहरो, जल्दी न करो, मैं हाथ जोड़ता हूँ, जरा सब्र करो !

आदमी—अच्छा क्या कहते हो, जल्दी कहो।

भूतनाथ—पहले यह बताओ कि आज ऐसे समय में तुम मेरे पास क्यों आये हो ?

आदमी—(जोर से हँसकर) क्या बेवकूफ आदमी है ! अबे तू इतना नहीं सोच सकता कि मैं उसी दिन से तुझे खोज रहा होऊँगा, जिस दिन तूने मुझ पर सफाई का हाथ फेरा था, मगर लाचार था कि तेरा पता ही नहीं लगता था ! मैं नहीं जानता था कि भूतनाथ के चोले के अन्दर वही हरामी सूरत छिपी हुई है जिसे मैं वर्षों से ढूंढ़ रहा हूँ। अगर जानता तो कभी का तुझसे मिल चुका होता, इतने दिन मुफ्त में गँवाकर आज की नौबत न आई होती। अच्छा पूछो, और क्या पूछते हो !

भूतनाथ—(बहुत देर तक सोचने के बाद सिर नीचा करके) क्या मैं आशा कर सकता हूँ कि थोड़े दिन तक तुम मुझे और छोड़ दोगे ? मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि इसके बाद स्वयं तुमसे मुलाकात करूँगा। उस समय तुम खुशी से मेरा सिर उतार लेना, मुझे कुछ भी रंज न होगा।

आदमी—सिर उतार लेना !

भूतनाथ—हाँ, मेरा सिर उतार लेना, मुझे कुछ भी दुःख न होगा।

आदमी—क्या सिर उतार लेने से बदला पूरा हो जायगा ?

भूतनाथ—क्यों नहीं, क्या इससे भी बढ़ के कोई सजा है ?

आदमी—मैं समझता हूँ कि यह कुछ भी सजा नहीं है ! क्या तुम नहीं जानते कि प्रायः बुद्धिमान लोग जिन्हें नादान भी कह सकते हैं, जरा-सी बात पर अपनी जान अपने हाथ से बर्बाद कर देते हैं और अपनी बेइज्जती कराना नहीं चाहते तथा ऐसा करते समय उन्हें कुछ भी दुःख नहीं होता !

भूतनाथ—(काँपकर) तो क्या तुमने इससे भी कड़ी कोई सजा मेरे लिए सोच रक्खी है ?

आदमी—बेशक ! बदला उसी को कहते हैं जो उसके बराबर हो जिसका बदला

लिया जाय।

भूतनाथ—(लम्बी साँस लेकर) वास्तव में तुम ठीक कहते हो। मैं भी इसी फेर में मुद्दत से पड़ा हुआ हूँ, (रुककर) खैर, यह बताओ कि हमारे-तुम्हारे बीच में किसी तरह का मामला तै हो सकता है, या तुम थोड़े दिन के लिए मुझे छोड़ सकते हो जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ?

आदमी—नहीं, बल्कि तुम्हें इसी समय हमारे साथ चलना होगा।

भूतनाथ—कहाँ?

आदमी—जहाँ मैं ले चलूं।

भूतनाथ—जबर्दस्ती?

आदमी—हाँ, जबर्दस्ती!

भूतनाथ—ऐसा नहीं हो सकता!

आदमी – ऐसा ही होगा!

भूतनाथ—तुम अपनी ताकत पर भरोसा करते हो?

आदमी—हाँ, अपनी ताकत पर और तदबीर पर भी!

भूतनाथ—अच्छा, फिर देखेंगे।

आदमी—अच्छा, तो श्यामसुन्दरसिंह के सामने (गठरी दिखाकर) इसे खोलू, तुम डरोगे तो नहीं?

भूतनाथ—कोई हर्ज नहीं, मैं श्यामसिंह को तुम्हारी भूल समझा दूंगा।

आदमी—(हँसकर) ओ हो हो, तब तो मुझे इससे बढ़कर कोई तदबीर करनी चाहिए! अच्छा देखो!

इतना कहकर उस अद्भुत आदमी ने तीन दफे ताली बजाई और साथ ही इसके बगल वाले पेड़ों के झुरमुट में से एक आदमी आता हुआ दिखाई दिया जिसने काले कपड़े से सिर से पैर तक अपने को ढांक रक्खा था। भूतनाथ काँप कर कई कदम पीछे हट गया और बड़े गौर से उसकी तरफ देखने लगा और इसके बाद श्यामसुन्दरसिंह की तरफ निगाह फेरी, यह जानने के लिए कि देखें, इन बातों का असर उसके ऊपर क्या हुआ है मगर रात का समय और कुछ दूर होने के कारण श्यामसुन्दरसिंह के चेहरे का उतार-चढ़ाव भूतनाथ देख न सका।

भूतनाथ—(जी कड़ा करके) मैं कैसे जान सकता हूँ कि इस खोल के अन्दर कौन छिपा हुआ है?

नया आदमी—ठीक है, तब यदि कहो तो मैं इस कपड़े को उतार दूं, मगर ताज्जुब नहीं कि मेरी आवाज तुम्हारे कानों में···

भूतनाथ—(चौंककर) बस बस, यह आवाज ऐसी नहीं है जिसे मैं भूल जाऊँ। हाय, वेबसी और मजबूरी इसे कहते हैं। (श्यामसुन्दरसिंह से) अच्छा, तुम थोड़ी देर के लिए यहाँ से चले जाओ, जब मैं जफील बजाऊँगा तब फिर आ जाना।

श्यामसुन्दरसिंह ने इस समय एक ऐसा नाटक देखा था जिसका उसे गुमान भी न था। उन दोनों आदमियों के आने से भूतनाथ की क्या हालत हो गई थी इसे वह खूब

समझ रहा था मगर उसे इस बात का आश्चर्य था कि भूतनाथ जिसके नाम से लोगों के दिल में हौल पैदा होता है इस वक्त ऐसा मजबूर और बेबस क्यों हो रहा है ? यद्यपि भूतनाथ का हुक्म वह टाल नहीं सकता था और उसे वहाँ से टल जाना ही आवश्यक था मगर साथ ही इसके वह इस सीन को भी छोड़ नहीं सकता था। भूतनाथ की आज्ञा पाकर वह वहाँ से चला तो गया मगर घूम-फिर कर बिल्ली की तरह कदम रखता हुआ लौट आया और एक पेड़ की आड़ में छिपकर खड़ा हो गया, जहाँ से वह उन तीनों को देख सकता था और उनकी बातचीत भी बखूबी सुन सकता था।

जब भूतनाथ ने देखा कि श्यामसुन्दरसिंह चला गया है तो उसने उस आदमी से कहा जो पहले आया था, "क्या हमारे बीच में मेल नहीं हो सकता ?"

आदमी—नहीं।

भूतनाथ—फिर तुम मुझसे क्या चाहते हो ?

आदमी—यही कि चुपचाप हमारे साथ चले चलो।

इस बात को सुनकर भूतनाथ ने सिर झुका लिया और कुछ सोचने लगा। यह अवस्था देखकर उस आदमी ने कहा, "भूतनाथ, मालूम होता है कि तुम भागने की तदबीर सोच रहे हो, मगर इस बात को खूब याद रक्खो कि मेरे सामने से तुम्हारा भाग जाना बिल्कुल ही वृथा है जब तक कि यह चीज मेरे पास मौजूद है और मेरे साथी जीते हैं। मैं फिर कहता हूँ कि चुपचाप मेरे साथ चले चलो और जो कुछ मैं कहूँ करो !"

भूतनाथ—नहीं-नहीं, मैं भागना पसन्द नहीं करता बल्कि इसके बदले में तुम्हारे साथ लड़कर जान दे देना उचित समझता हूँ।

आदमी—अगर यही इरादा है तो आओ, मैं मुस्तैद हूँ !

यह कहकर उस आदमी ने अपने हाथ की गठरी उस दूसरे आदमी के हाथ में दे दी जो सिर से पैर तक काले कपड़े से ढँका हुआ था और उसे वहाँ से चले जाने के लिए कहा। वह व्यक्ति वहाँ से हटकर पेड़ों की आड़ में गायब हो गया और उस विचित्र मनुष्य ने तलवार म्यान से बाहर खींच ली। भूतनाथ ने भी तलवार खींच ली और उसके सामने पैंतरा बदलकर आ खड़ा हुआ और दोनों में लड़ाई शुरू हो गई। निःसन्देह भूतनाथ तलवार चलाने के फन में बहुत होशियार और बहादुर था मगर श्यामसुन्दरसिंह ने जो छिपकर यह तमाशा देख रहा था, मालूम कर लिया कि उसका वैरी इस काम में उससे बहुत बढ़-चढ़ के है क्योंकि घण्टे-भर की लड़ाई में ही उसने भूतनाथ को सुस्त कर दिया और अपने बदन में एक जख्म भी न लगने दिया, इसके विपरीत भूतनाथ के बदन में छोटे-छोटे कई जख्म लग चुके थे और उनमें से खून निकल रहा था। केवल इतना ही नहीं, श्यामसुन्दरसिंह ने यह भी मालूम कर लिया कि उस अद्भुत आदमी ने, जो लड़ाई के फन में भूतनाथ से बहुत ही बढ़-चढ़ के है, कई मौकों पर जान-बूझ के तरह दे दी और भूतनाथ को छोड़ दिया, नहीं तो अब तक वह भूतनाथ को कब का खत्म कर चुका होता।

मगर क्या भूतनाथ इस बात को नहीं समझता था ? बेशक समझता था ! वह खूब जानता था कि आज मेरा दुश्मन मुझसे बहुत जबर्दस्त है और उसने कई मौकों पर

जब कि वह मेरी जान ले सकता था, जान-बूझकर तरह दे दी या अगर जख्म पहुँचाया भी तो बहुत कम ।

सुबह हो चुकी थी । अब वहाँ की चीजें बिल्कुल साफ-साफ दिखाई देने लगी थीं । भूतनाथ बहुत ही थक गया था, इसलिए वह सुस्ताने के लिए ठहर गया और बड़े गौर से अपने वैरी की सूरत देखने लगा जिसके चेहरे पर थकावट या उदासी का कोई चिह्न नहीं दीख पड़ता था बल्कि वह मन्द-मन्द मुसका रहा था और उसकी आँखें भूतनाथ के चेहरे पर इस ढंग से पड़ रही थीं जैसे उस्तादों की निगाहें अपने नौसिखुए चेलों पर पड़ा करती हैं ।

भूतनाथ ठहर गया और उसने धीमी आवाज में अपने वैरी से कहा, "अब मैं लड़ने की हिम्मत नहीं कर सकता, विशेष करके इसलिए कि तुम मुझसे उस तरह नहीं लड़ते जैसे दुश्मनों को लड़ना चाहिए । मैं खूब जानता हूँ कि तुमने कई मौकों पर मुझे छोड़ दिया । खैर, अब मैं अपनी भलाई के लिए सिवाय इसके और कोई उपाय नहीं देखता कि अपने हाथ से अपनी जान दे दूँ ।"

आदमी—नहीं-नहीं, भूतनाथ, तुम अपने हाथ से अपनी जान नहीं दे सकते । क्योंकि तुम्हारी एक बहुत ही प्यारी चीज मेरे कब्जे में है । जो तुम्हारे बाद बड़ी तकलीफ में पड़ जायगी और जिसे तुम 'लामाघाटी' में छोड़ आये थे । मुझे विश्वास है कि तुम उसकी बेइज्जती कबूल न करोगे !

यह एक ऐसी बात थी, जिसने भूतनाथ के दिल को एकदम से ही मसल डाला और इस तकलीफ को वह सह न सका । उसका सिर घूमने लगा, वह धीरे-से जमीन पर बैठ गया, और वह विचित्र आदमी इस ढंग से उसे देखने लगा जैसे बाघ अपने शिकार को काबू में कर लेने के बाद आशा और प्रसन्नता की दृष्टि से उसकी तरफ देखता है ।

श्यामसुन्दरसिंह इस दृश्य को गौर और ताज्जुब से देख रहा था । बीच में एक दफे उसकी यह इच्छा भी हुई कि झाड़ी में से बाहर निकले और भूतनाथ के पास पहुँच कर उसकी मदद करे मगर दो बातों को सोच कर वह रुक गया । एक तो यह थी कि भूतनाथ ने उसे वहाँ से बिदा कर दिया था और कह दिया था कि 'जब हम जफील बजाएँ तब आना' मगर इतनी लड़ाई होने और हार मानने पर भी भूतनाथ ने उसे नहीं बुलाया, इससे साफ मालूम होता है कि भूतनाथ श्यामसुन्दरसिंह का उस जगह आना पसन्द नहीं करता, दूसरे यह है कि उसने कमलिनी की जुबानी भूतनाथ की बहुत तारीफ सुनी थी । कमलिनी जोर देकर कहती थी कि लड़ाई के फन में भूतनाथ बहुत ही तेज और होशियार है । मगर इस जगह उस विचित्र मनुष्य के सामने उसने भूतनाथ को ऐसा पाया जैसे काबिल उस्ताद के सामने एक नौसिखुआ लड़का । इससे यह नहीं कहा जा सकता कि भूतनाथ नादान है, बल्कि भूतनाथ ने जिस चालाकी और तेजी से अपने वैरी का मुकाबला किया, वह साधारण आदमी का काम नहीं था, असल तो यह है कि भूतनाथ का वैरी ही कोई विचित्र व्यक्ति था । उसकी चालाकी, फुर्ती और वीरता देखकर श्यामसुन्दरसिंह यद्यपि सिपाही था, मगर डर गया । और मन में कहने लगा कि यह मनुष्य नहीं है, इसके सामने जाकर मैं भूतनाथ की कुछ भी मदद नहीं कर सकता ।

इन्हीं दो बातों को सोच कर श्यामसुन्दरसिंह जहाँ-का-तहाँ खड़ा रह गया और कुछ न कर सका।

श्यामसुन्दरसिंह छिपा हुआ इन सब बातों को सोच रहा था, भूतनाथ हताश होकर जमीन पर बैठ गया था और उसका वैरी आशा और प्रसन्नता की दृष्टि से उसे देख रहा था कि इसी बीच में एक आदमी ने श्यामसुन्दरसिंह के मोढ़े पर हाथ रखा।

श्यामसुन्दरसिंह चौंक पड़ा और उसने फिर कर देखा तो एक नकाबपोश पर निगाह पड़ी। जिसका कद नाटा तो न था मगर बहुत लम्बा भी न था। उसका चेहरा स्याह रंग के नकाब से ढँका हुआ था और उसके बदन का कपड़ा इतना चुस्त था कि बदन की मजबूती, गठन और सुडौली साफ मालूम होती थी। उसका कोई अंग ऐसा न था, जो कपड़े के अन्दर ढँका हुआ न हो। कमर में खंज्र, तलवार और पीठ पर लटकती हुई एक छोटी-सी ढाल के अतिरिक्त वह हाथ में दो हाथ का डंडा भी लिए हुए था। हाँ, यह कहना तो हम भूल ही गये कि उसकी कमर में कमन्द और ऐयारी का बटुआ भी लटकता दिखाई दे रहा था।

श्यामसुन्दरसिंह ने बड़े गौर से उसकी तरफ देखा और कुछ बोलना ही चाहता था कि उसने चुप रहने और अपने पीछे-पीछे चले आना का इशारा किया। श्यामसुन्दरसिंह चुप तो रह गया, मगर उसके पीछे-पीछे जाने की हिम्मत न पड़ी। यह देख उस नकाबपोश ने धीरे-से कहा, "डरो मत, हमको अपना दोस्त समझो और चुपचाप चले आओ। देखो, देर मत करो, नहीं तो पछताओगे।" इतना कहकर नकाबपोश ने श्यामसुन्दरसिंह की कलाई पकड़ ली और अपनी तरफ खींचा।

श्यामसुन्दरसिंह को ऐसा मालूम हुआ कि जैसे लोहे के हाथ ने कलाई पकड़ ली हो, जिसका छुड़ाना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव था। अब श्यामसुन्दरसिंह में इन्कार करने की हिम्मत न रही और वह चुपचाप उसके पीछे-पीछे चला गया। दस-बारह कदम से ज्यादा न गया होगा कि नकाबपोश रुका और उसने श्यामसुन्दरसिंह से कहा, "इतना देखने पर भी तुम कमलिनी के नमक की इज्जत करते हो या नहीं?"

श्यामसुन्दरसिंह—बेशक इज्जत करता हूँ।

नकाबपोश—अच्छा तो तुम उस मैदान में जाओ जहाँ भूतनाथ बैठा अपनी बदनसीबी पर विचार कर रहा है और उस गठरी को उठा लाओ जिसे भगवनिया चुरा लाई थी। तुम जानते हो कि उसमें लाखों रुपये का कीमती माल है। कहीं ऐसा न हो कि वैरी उसे उठा ले जायँ। ऐसा हुआ तो तुम्हारे मालिक का बहुत नुकसान होगा।

श्यामसुन्दरसिंह—ठीक है, मगर मैं डरता हूँ कि ऐसा करने से कहीं भूतनाथ रंज न हो जाय।

नकाबपोश—तुम्हें भूतनाथ के रंज होने का खयाल न करना चाहिए, बल्कि अपने मालिक के नफा-नुकसान को विचारना चाहिए। इसके सिवाय मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि भूतनाथ कुछ भी न कहेगा। हाँ, उसका वैरी कुछ बोले तो ताज्जुब नहीं, मगर नहीं, जहाँ तक मैं समझता हूँ कि वह भी कुछ न बोलेगा, क्योंकि वह नहीं जानता कि उस गठरी में क्या चीज है।

श्यामसुन्दरसिंह—अगर रोके तो ?

नकाबपोश—मैं छिप कर देखता रहूँगा, अगर वह तुम्हें रोकना चाहेगा तो मैं झट से पहुँच जाऊँगा, तब तक तुम गठरी उठा कर चल देना ।

श्यामसुन्दरसिंह—अगर ऐसा ही है तो आप ही पहले वहाँ जाकर उससे लड़िये, बीच में मैं जाकर गठरी उठा लूँगा ।

नकाबपोश—(हँस कर) मालूम होता है कि तुम्हें मेरी बातों पर विश्वास नहीं और तुम उस आदमी से बहुत डरते हो ?

श्यामसुन्दरसिंह—बेशक ऐसा ही है क्योंकि मैं देख चुका हूँ कि भूतनाथ ऐसे जवांमर्द और बहादुर को उसने कैसा नीचा दिखाया और जहाँ तक मैं समझता हूँ, आप भी उसका मुकाबला नहीं कर सकते । मालूम होता है कि आपने उसकी लड़ाई नहीं देखी । अगर देखते तो लड़ने की हिम्मत न करते ।

नकाबपोश—नहीं-नहीं, मैं उसकी लड़ाई देख चुका हूँ और इसी से उसके साथ लड़ने की इच्छा होती है ।

श्यामसुन्दरसिंह—अगर ऐसा है तो विलम्ब न कीजिये, जाकर उससे लड़ाई शुरू कर दीजिये, फिर मैं जाकर गठरी उठा लूंगा और चल दूंगा । मगर यह तो बताइये कि आप कौन हैं और कमलिनी के लिए इतनी तकलीफ क्यों उठा रहे हैं ?

नकाबपोश—इसका जवाब मैं कुछ भी न दूंगा ! (कुछ सोच कर) अच्छा, तो अब यह बताओ कि गठरी उठा लेने के बाद तुम कहाँ चले जाओगे ?

श्यामसुन्दरसिंह—इसका जवाब मैं क्या दे सकता हूँ ? जहाँ मौका मिलेगा चल दूंगा ।

नकाबपोश—नहीं, ऐसा न करना । जहाँ तुम्हें जाना चाहिए, मैं बताता हूँ ।

श्यामसुन्दर्सिंह—(चौंक कर) अच्छा बताइये !

नकाबपोश—तुम यहाँ से सीधे दक्खिन की तरफ चले जाना, थोड़ी दूर जाने के बाद एक पीपल का पेड़ दिखाई देगा, उसके नीचे पहुँच कर बाईं तरफ घूम जाना, एक पगडंडी मिलेगी, उसी को अपना रास्ता समझना । थोड़ी दूर जाने के बाद फिर एक पीपल का पेड़ दिखाई देगा, उसके नीचे चले जाना । वहाँ एक नकाबपोश बैठा हुआ दिखाई देगा और उसी के पास हाथ-पैर बँधी हुई हरामजादी भगवानी को भी देखोगे जो मौका पाकर यहाँ से भाग गई थी ।

श्यामसुन्दर—(ताज्जुब में आकर) अच्छा फिर ?

नकाबपोश—फिर तुम भी उसके पास जाकर बैठ जाना, जब मैं उस जगह आऊँगा तो देखा जायगा, या जैसा वह नकाबपोश कहेगा वैसा ही करना । डरना मत, उसे अपना दोस्त समझना । तुम देखते हो कि मैं जो कुछ कहता या करता हूँ, उससे तुम्हारे मालिक ही की भलाई हैं ।

श्यामसुन्दरसिंह—मालूम तो ऐसा ही होता है ।

नकाबपोश—मालूम होता है नहीं बल्कि यह कहो कि बेशक ऐसा है । अच्छा, अब तुम्हें एक बात और कहनी है ।

श्यामसुन्दरसिंह—वह क्या ?

नकाबपोश—यह तो तुम देख ही चुके हो कि अद्भुत आदमी ने भूतनाथ को अपने कब्जे में कर लिया है।

श्यामसुन्दरसिंह—सो तो प्रकट ही है।

नकाबपोश—अब वह भूतनाथ को अपने साथ ले जायगा।

श्यामसुन्दरसिंह—अवश्य ले जायगा, इसी के लिए तो इतना बखेड़ा मचाये है।

नकाबपोश—उस समय मैं भी उसके साथ-साथ चला जाऊँगा।

श्यामसुन्दरसिंह—अच्छा तब ?

नकाबपोश—तब रात को तुम अपने साथी नकाबपोश और भगवानी को लेकर उस समय इसी जगह आ जाना जिस समय कमलिनी ने तुमसे मिलने की प्रतिज्ञा की है और सब हाल ठीक-ठीक उससे कह देना और यह भी कह देना कि कल शाम को अपने तिलिस्मी मकान के पास मेरी बाट जोहे।

श्यामसुन्दरसिंह—अच्छा ऐसा करूँगा, मगर आप भी तो विचित्र आदमी मालूम पड़ते हैं।

नकाबपोश—जो हो, लो, अब मेरे साथ-साथ चले जाओ, मैं उसके मुकाबले में जाता हूँ।

नकाबपोश और श्यामसुन्दरसिंह की बातचीत बहुत जल्द ही हुई थी। इसमें आधी घड़ी से ज्यादा समय न लगा होगा बल्कि इससे भी कम लगा होगा। आखिरी बात कह कर नकाबपोश उस तरफ रवाना हुआ जहाँ भूतनाथ बैठा हुआ सोच रहा था कि अब क्या करना चाहिए ! श्यामसुन्दरसिंह भी उसके पीछे-पीछे गया, मगर जाकर पेड़ों की आड़ में छिप कर खड़ा हो गया जहाँ से वह सब कुछ देख और सुन सकता था।

भूतनाथ अभी तक उसी तरह अपने विचार में निमग्न था और वह अद्भुत व्यक्ति उसकी तरफ बड़े गौर से देख रहा था। इसी बीच नकाबपोश भी उस जगह जा पहुँचा और उस चट्टान पर बैठ गया जिस पर गठरी रखी हुई थी।

पहले तो भूतनाथ ने समझा कि यह भी उसी विचित्र मनुष्य का साथी होगा। जिसने मुझे हर तरह से दबा रखा है। मगर जब उस आदमी को भी नकाबपोश के यकायक आ जाने से अपनी तरह आश्चर्य के भँवर में डूबे हुए देखा, तो उसे बड़ा ही ताज्जुब हुआ और वह बड़े गौर से उसी तरफ देखने लगा। इसके पहले कि भूतनाथ कुछ कहे उसका दुश्मन नकाबपोश की तरफ बढ़ गया और जरा कड़ी आवाज में उससे बोला, "तुम यहाँ क्यों आये हो और क्या चाहते हो ?"

नकाबपोश—तुम्हें मेरे आने और चाहने से कोई मतलब नहीं, तुम लोग अपना काम करो।

यह जवाब कुछ ऐसी लापरवाही के साथ दिया गया था कि भूतनाथ और उसका वैरी दोनों ही दंग रह गये। आखिर उस आदमी ने भूतनाथ से कहा, "खैर, हमें इनसे कोई मतलब नहीं, तुम उठो और मेरे साथ चलो।"

नकाबपोश—(दिल्लगी के ढंग पर) न जाय तो गोद में उठा कर ले आओ !

आदमी—क्यों जी, तुम हमारे बीच में बोलने वाले कौन !

नकाबपोश—कोई नहीं हम तो केवल राय देते हैं कि जिसमें तुम दोनों का बखेड़ा जल्दी निपट जाय और किसी तरह इस जगह का पिण्ड छूटे।

आदमी—(चिढ़ कर) मालूम होता है कि तुम हमसे मसखरापन कर रहे हो !

नकाबपोश—अगर ऐसा भी समझ लो तो हमारा कोई हर्ज नहीं, मगर यह तो बताओ कि तुम दूसरे की अमलदारी में क्यों हुल्लड़ मचाये हुए हो ? यहाँ से जाते क्यों नहीं ?

आदमी—ओहो, मालूम होता है, आप ही यहाँ के राजा हैं !

नकाबपोश—नहीं, मगर इस जमीन के ठेकेदार हैं, और इतनी हिम्मत रखते हैं कि अगर तुम लोग बारह पल के अन्दर यहाँ से न चले जाओ तो कान पकड़ कर इस जंगल से बाहर कर दें या लिबड़ी बरताना[1] उतार कर दो लात जमावें और दक्खिन का रास्ता दिखाएँ !

नकाबपोश की इन बातों को बर्दाश्त करके चुप रहने की ताकत उस विचित्र मनुष्य में न थी, झट तलवार खींचकर सामने आ खड़ा हुआ और बोला, "बस खबरदार, जो अब एक शब्द भी मुंह से निकाला। चुपचाप उठ कर चला जा, नहीं तो अभी दो टुकड़े कर दूंगा !"

नकाबपोश भी फुर्ती के साथ सामने खड़ा हो गया और बोला, "मालूम होता है तुझे मेरी बातों का अभी तक विश्वास नहीं हुआ, इसी से ढिठाई करने के लिए सामने आ खड़ा हुआ है। मैं फिर कहता हूँ कि यहाँ से चला जा और विश्वास रख कि यद्यपि मैं तेरे ऐसे नौसिखुए लौंडों के सामने तलवार खींचना उचित नहीं समझता, तथापि केवल लात और हाथ से तुझे दुरुस्त करके रख दूंगा।"

इतना सुनते ही उस आदमी ने तलवार का एक भरपूर हाथ नकाबपोश पर जमाया, जो अपने हाथ में केवल एक डण्डा लिए हुए उसके सामने खड़ा था, मगर इसका नतीजा वैसा न निकला जैसा कि वह समझे हुआ था, क्योंकि नकाबपोश ने फुर्ती से पैंतरा बदल कर अपने को बचा लिया और पीछे की तरफ जाकर उस आदमी की कमर पर एक लात ऐसी जमाई कि वह मुंह के बल जमीन पर गिर पड़ा।

भूतनाथ जो दुःख और शोक से कातर, हो जाने पर भी आश्चर्य के साथ इस तमाशे को देख रहा था, नकाबपोश की यह फुर्ती और चालाकी देख कर हैरान हो गया और एकदम से बोल उठा, "वाह बहादुर, क्या बात है ! वास्तव में तुम्हारे सामने यह नौसिखुआ लौंडा ही है !"

इस कैफियत और भूतनाथ के आवाज कसने से वह आदमी चुटीले साँप की तरह पेंच खाकर पुनः लड़ने के लिए तैयार हो गया, क्योंकि उसने इस तरह शर्मिन्दगी उठाने की बनिस्बत जान दे देना उत्तम समझ लिया था।

पुनः लड़ाई होने लगी और अबकी दफे उस आदमी ने बड़ी फुर्ती, मुस्तैदी और

---

1. लिबड़ी बरताना—कपड़ा-लत्ता-सामान इत्यादि।

बहादुरी दिखाई मगर नकाबपोश ने अब भी अपनी कमर से तलवार निकालने का कष्ट स्वीकार न किया और लकड़ी के डण्डे से ही उसका मुकाबला किया। हाँ, उसने इतना अवश्य किया कि बायें हाथ में अपनी ढाल ले ली जिसके सहारे अपने वैरी की चोटों को बचाता जाता था। इसी बीच में श्यामसुन्दर सिंह वहाँ आ पहुँचा और गठरी उठा कर चलता बना।

थोड़ी ही देर में मौका पाकर नकावपोश ने बैरी की उस कलाई पर, जिसमें तलवार का बेशकीमत कब्जा था, एक डण्डा ऐसा जमाया कि वह बेकाम हो गई और तलवार उसके हाथ से छूट कर जमीन पर गिर पड़ी। उसी समय भूतनाथ पुनः चिल्ला उठा, "वाह उस्ताद, क्या कहना है ! तुम-सा बहादुर मैंने आज तक न देखा और न देखने की आंशा ही है !"

अब उस आदमी को हर तरह से नाउम्मीदी हो गई और उसने समझ लिया कि इस बहादुर नकाबपोश का मुकाबला मैं किसी तरह नहीं कर सकता और न यह नकाबपोश मुझे जान से मारने की ही इच्छा रखता है। वह आश्चर्य, लज्जा और निराशा की निगाह से नकाबपोश की तरफ देखने लगा।

नकाबपोश—मैं पुनः कहता हूँ कि मुझसे मुकाबला करने का इरादा छोड़ दो और जो कुछ भी हुक्म दे चुका हूँ, उसे मानो अर्थात् यहाँ से चले जाओ। हाँ, तुम्हारे और भूतनाथ के मामले में मैं किसी तरह की रुकावट न डालूँगा, तुम दोनों में जो कुछ पटे, पटा लो।

आदमी--अच्छा ऐसा ही होगा।

यह कह कर वह भूतनाथ के पास गया और बोला, "अब बोलो, मेरे साथ चलोगे या नहीं ! जो कुछ कहना हो, साफ-साफ कह दो !"

भूतनाथ—मैं तुम्हारे साथ चलने पर राजी नहीं हूँ।

आदमी—अच्छा, तो फिर मुझे भी जो कुछ कहना है, इस बहाहुर नकाबपोश के सामने ही कह डालता हूँ, क्योंकि ऐसा बहादुर गवाह मुझे फिर न मिलेगा।

यह कह कर उसने बड़े जोर से ताली बजाई। भूतनाथ समझ गया कि इसने फिर उस आदमी को बुलाया है जो सिर से पैर तक अपने को ढाँके हुए था और जिसके हाथ में वह पुलिन्दा भी इसने दे दिया है जिसमें इसके कथनानुसार तारा की किस्मत बन्द है।

जो कुछ भूतनाथ ने सोचा, वास्तव में वही बात थी। मगर थोड़ी देर तक राह देखने पर भी वह आदमी न आया। जिसे उस विचित्र मनुष्य ने ताली बजा कर बुलाया था। इसलिए उसके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा और वह स्वयं उसकी खोज में चला गया। थोड़ी देर तक चारों तरफ खोजता रहा, इसकें बाद उसने एक झाड़ी के अन्दर उस आदमी को विचित्र अवस्था में देखा, अर्थात् अब वह कपड़ा उसके ऊपर न था। जिसने सिर से पैर तक उसे छिपा रखा था और इसलिए वह साफ औरत मालूम पड़ती थी। वह जमीन पर पड़ी हुई थी, रस्सी से हाथ-पैर बँधे हुए थे। एक कपड़ा उसके मुँह पर इस तरह बँधा हुआ था कि हजार उद्योग करने पर भी वह कुछ बोल

नहीं सकती थी, और वह गठरी भी उसके पास इधर-उधर कहीं नहीं दिखाई देती थी जिसमें तारा की किस्मत बन्द थी और जो उस आदमी ने लड़ाई करते समय उसके हाथ में दे दी थी।

विचित्र मनुष्य ने झटपट उसके हाथ-पैर खोले, मुँह पर से कपड़ा दूर किया और उसकी इस बेइज्जती का कारण पूछा। कुछ शान्त होने पर उसने कहा, "जिस समय तुम भूतनाथ से लड़ रहे थे, उसी समय एक नकाबपोश यहाँ आया था और उसने एक कपड़ा इस फुर्ती के साथ मेरे मुँह पर डाल दिया और मुझे बेकाबू कर दिया कि मैं कुछ न कर सकी, न तो तुम्हें बुला सकी और न चिल्ला ही सकी। इसके बाद उसने मेरे मुँह पर मजबूती से कपड़ा बाँधा और फिर रस्सी से हाथ-पैर बाँधने के बाद वह गठरी लेकर चला गया, जो तुमने मुझे दी थी और जो इस घबराहट में मेरे हाथ से छूट कर जमीन पर जा रही थी।"

आदमी—आह, तो मुझे अब मालूम हुआ कि वह शैतान नकाबपोश मेरा बहुत कुछ नुकसान करने के बाद मैदान में गया और मुझसे लड़ा था। हाय, उसने तो मुझे चौपट ही कर दिया, भूतनाथ पर काबू पाने का जो कुछ जरिया मेरे पास था, उसमें से बारह आना जाता रहा।

औरत—शायद ऐसा ही हो, क्योंकि मैं नहीं जानती कि किस नकाबपोश से तुम्हारी लड़ाई हुई और नतीजा क्या निकला?

आदमी—जो नकाबपोश मुझसे लड़ा था, वह अभी तक अखाड़े में बैठा हुआ है। जहाँ तक मुझे विश्वास होता है, मैं कह सकता हूँ कि उसी ने तुम्हें तकलीफ दी है। मगर अफसोस, लड़ाई का नतीजा अच्छा न निकला, क्योंकि वह मुझसे बहुत जबर्दस्त है।

औरत—(आश्चर्य से) क्या लड़ाई में उसने तुम्हें दबा लिया?

आदमी—बेशक ऐसा ही हुआ, और इस समय मैं उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता।

औरत—तो क्या वह भूतनाथ का पक्षपाती है?

आदमी—कहता तो वह यही है कि मैं तुम्हारे और भूतनाथ के बीच में कुछ भी न बोलूंगा, तुम अगर चाहो तो भूतनाथ को ले जाओ या जैसा चाहो उसके साथ बर्ताव करो।

औरत—मगर, मेरे प्यारे मजनूं! तुम किसी बात की चिन्ता न करो, क्योंकि मैं उसे पहचान गई हूँ। इसलिए आज नहीं, तो फिर कभी जब तुम्हें मौका मिलेगा, तुम इस बेइज्जती का बदला ले सकोगे।

आदमी—(खुश होकर) तुमने उसे पहचान लिया? किस तरह पहचाना?

औरत—जब वह मेरे हाथ-पैर बाँध रहा था, उसी समय इत्तिफाक से उसके चेहरे पर से नकाब हट गया और मैंने उसे अच्छी तरह पहचान लिया।

आदमी—यह बहुत अच्छा हुआ, हाँ तो वह कौन है?

इसके जवाब में औरत ने धीरे-से उसके कान में कुछ कहा, जिसे सुनते ही वह चौंक पड़ा और सिर नीचा करके कुछ सोचने लगा। कई पल के बाद वह बोला,

"आह, मुझे गुमान न था कि उस नकाबपोश के अन्दर एक ऐसे की सूरत छिपी हुई है जो अपना सानी नहीं रखता, मगर बहुत बुरा हुआ। वह चीज मेरे हाथ में होती, तो भूतनाथ को इतना डर न था, जितना अब है। खैर, क्या हर्ज है, जब पता लग गया तो जाता कहाँ है? आज नहीं कल, कल नहीं परसों। एक-न-एक दिन बदला ले लूंगा। मगर सुनो तो सही, मुझे एक नई बात सूझी है।"

विचित्र मनुष्य ने उस औरत से धीरे-धीरे कुछ कहा, जिसे वह बड़े गौर से सुनती रही और जब बात पूरी हो गई, तो बोली, "ठीक है, ठीक है। मैं अभी जाती हूँ, निश्चय रखो कि मेरी सवारी का घोड़ा घंटे भर के अन्दर अपनी पीठ खाली कर देगा और बहुत जल्द···

आदमी—बस-बस, मैं समझ गया। तुम जाओ और मैं भी अब उसके पास जाता हूँ।

उस औरत को बिदा करके वह विचित्र मनुष्य फिर उसी जगह आया, जहाँ भूतनाथ अभी तक सिर झुकाये हुए बैठा था मगर उस नकाबपोश का कहीं पता न था।

आदमी—(भूतनाथ से) वह नकाबपोश कहाँ गया?

भूतनाथ—(इधर-उधर देखकर) मालूम नहीं, कहाँ चला गया।

आदमी—क्या तुम उसे जानते हो?

भूतनाथ—नहीं।

आदमी—मगर वह तुम्हारा पक्ष क्यों करता है?

भूतनाथ—मैंने तो कोई ऐसी बात नहीं देखी, जिसमें मालूम हो कि वह मेरा पक्ष करता था।

आदमी—तुमने कोई ऐसी बात नहीं देखी, तो मैं कह देना उचित समझता हूँ कि वह नकावपोश वह गठरी बेगम के हाथ से जबर्दस्ती ले गया, जिसमें तारा की किस्मत बन्द थी।

भूतनाथ—चलो, अच्छा हुआ, एक बला से तो छुटकारा मिला!

आदमी—छुटकारा नहीं मिला बल्कि तुम और भी बड़ी आफत में फँस गये यदि वास्तव में तुम उसे नहीं जानते!

भूतनाथ—हाँ, ऐसा भी हो सकता है, खैर, जो कुछ किस्मत में बदा है, होगा, मगर तुम यह बताओ कि अब मुझसे क्या चाहते हो? किसी तरह मेरा पिंड छोड़ोगे या नहीं?

आदमी—क्या हुआ, अगर वह गठरी चली गई, मगर फिर भी तुम खूब समझते होगे कि अभी तक तुम पूरी तरह से मेरे कब्जे में हो और तुम्हारी वह प्यारी चीज भी मेरे कब्जे में हैं जिसका इशारा मैं पहले कर चुका हूँ। अतः मैं हुक्म देता हूँ कि तुम उठो और मेरे साथ चलो!

भूतनाथ—खैर चलो, मैं चलता हूँ।

इतना कहकर भूतनाथ ने आसमान की तरफ देखा और एक लम्बी साँस ली।

इस समय दिन अनुमान से पहर-भर चढ़ चुका था और धूप में हरारत क्रमशः

बढ़ती जाती थी। भूतनाथ को साथ लिए हुए वह विचित्र मनुष्य पूरब की तरफ रवाना हो गया।

9

दिन बहुत ज्यादा चढ़ चुका था, जब कमलिनी अपना काम करके सुरंग की राह से लौटी और किशोरी, कामिनी तथा तारा को भैरोंसिंह के साथ बातचीत करते पाया। कमलिनी, लाड़िली और देवीसिंह बहुत प्रसन्न हुए और क्यों न होते, जिस आदमी की मेहनत ठिकाने लगती है उसकी खुशी का अन्दाजा करना उसी आदमी का काम है जो कठिन मेहनत करके किसी अमूल्य वस्तु का लाभ कर चुका हो। किशोरी, कामिनी और तारा को इस तरह पाना कम खुशी की बात न थी जिनके मिलने के विषय में आशा की भी आशा टूटी हुई थी।

किशोरी, कामिनी और तारा जमीन पर पड़ी बातें कर रही थीं क्योंकि उनमें उठने की सामर्थ्य बिल्कुल न थी, उन्होंने अपने बचाने वालों की तरफ—खास कर कमलिनी की तरफ—अहसान, शुक्रगुजारी और मुहब्बत-भरी निगाहों से देर तक देखा, जिसे कमलिनी तथा उसके साथी अच्छी तरह समझ कर प्रसन्न होते रहे। कमलिनी को इस बात की खुशी हद से ज्यादा थी कि किशोरी, कामिनी तथा तारा की जान बच गई।

कमलिनी, लाड़िली, देवीसिंह, और भैरोंसिंह इस बात पर विचार करने लगे कि अब क्या करना चाहिए। किशोरी, कामिनी और तारा में इतनी सामर्थ्य न थी कि दो कदम भी चल सकें या घोड़े पर सवार हो सकें और दो-तीन दिन के अन्दर इतनी ताकत हो भी नहीं सकती थी।

कमलिनी—अफसोस तो यह है कि दुश्मनों ने मेरे तिलिस्मी मकान की अवस्था बिल्कुल खराब कर दी और वह मकान अब इस योग्य न रहा कि उसमें चल कर डेरा डालें, बिछावन और बर्तन तक उठा के ले गये।

देवीसिंह—तालाब की अवस्था भी तो बिल्कुल खराब है। मिट्टी भर जाने के कारण वह स्थान अब निर्भय होकर रहने योग्य नहीं रहा और उसकी सफाई भी सहज में नहीं हो सकती।

कमलिनी—नहीं, इस बात की तो मुझे कुछ भी चिन्ता नहीं है क्योंकि दो दिन के अन्दर मैं उस तालाब को बिना परिश्रम साफ कर सकती हूँ और ऐसा करने के लिए किसी मजदूर की भी आवश्यकता नहीं है।

भैरोंसिंह—सो कैसे?

कमलिनी—उस मकान में एक विचित्र कुआँ है। यदि उसका मुँह खोल दिया जाये, तो चश्मे की तरफ दो हाथ मोटी पानी की धारा उसमें से निकला करे और महीनों बन्द न हो, इसके अतिरिक्त तालाब में जल की निकासी के लिए भी एक लम्बी-चौड़ी

मोरी बनी हुई है। कारीगरों ने ये दोनों चीजें तालाब की सफाई के लिए बनाई हैं। बस इसी से तुम समझ सकते हो कि तालाब की सफाई कोई मुश्किल नहीं है। जब कुएँ से बेअन्दाज जल निकल कर तालाब को साफ करता हुआ दूसरी तरफ से निकल जाने लगेगा तो उतनी मिट्टी का बह जाना कुछ कठिन नहीं है जितनी दुश्मनों ने तालाब में भर दी हैं।

देवीसिंह—बेशक अगर ऐसा है तो तालाब की सफाई कुछ मुश्किल नहीं है।

तारा—(बारीक और कमजोर आवाज से) अफसोस, यह बात मुझे मालूम नहीं थी, नहीं तो तालाब का जल क्यों सूखता और मिट्टी भरने की नौबत क्यों आती !

कमलिनी—ठीक है, और इसी सबब से मैं मकान की बरबादी का इलजाम तुझ पर नहीं लगाती बल्कि अपने ऊपर लगाती हूँ इसलिए कि यह भेद मैंने तुझे क्यों न बता रखा था। असल तो यह है कि दुश्मनों के इस उद्योग का मुझे गुमान भी न था, खैर, जो होना था हो गया।

देवीसिंह—अच्छा, तो जिस तरकीब से आपने कहा है तालाब को साफ करके इन लोगों को उसी मकान में ले चलना चाहिए। बाकी रहा मकान के अन्दर का सामान, सो इसके लिए कोई चिन्ता नहीं, देखा जायेगा।

कमलिनी—हाँ, मैं भी यही उचित समझती हूँ, दो रोज में मकान और तालाब की दुरुस्ती हो जायेगी, तब तक इन लोगों को इसी जगह रखना चाहिए, यह जगह भी बड़ी हिफाजत की है, जिसको रास्ता मालूम न हो यहाँ कदापि नहीं आ सकता। देखिये चारो तरफ कैसे ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं। कभी-कभी इन पहाड़ों के ऊपर से जाते हुए मुसाफिर दिखाई देते हैं मगर वे लोग यदि यहाँ आना चाहें तो नहीं आ सकते। जब तक मकान और तालाब की सफाई न हो जाये, तब तक वहाँ केवल आपका रहना काफी है। सफाई के सम्बन्ध में या और भी जिन-जिन बातों की आवश्यकता है, मैं आपको समझा दूंगी और फिर इसी जगह आकर इनके पास रहूँगी और इनका इलाज करूँगी।

देवीसिंह—आपका खयाल बहुत ठीक है, जो कुछ आप कहें, मैं करने के लिए तैयार हूँ।

कमलिनी—पहले किशोरी, कामिनी और तारा के खाने-पीने का बंदोबस्त करना चाहिए। (भैरोंसिंह से) इस रमणीक स्थान में तीतरों और बटेरों की कमी नहीं है।

भैरोंसिंह—और हमारे पास खाना बनाने का सफरी सामान भी है, मैं भी यही समझता हूँ कि इनके लिए तीतर का शोरबा बहुत लाभदायक होगा।

किशोर—(कमजोर आवाज से) नहीं, मैं शोरबा या मांस न खाऊँगी, औरतों के लिए यह···

देवीसिंह—(हुकूमत के ढंग पर, मगर वह हुकूमत का ढंग ठीक वैसा ही था जैसा बड़े लोग छोटों पर कर सकते हैं) नहीं, बीमारी की अवस्था में इसका खयाल नहीं हो सकता है, तुम इसे दवा समझ के चुप रहो।

बेचारी किशोरी ने इस बात का कुछ भी जवाब नहीं दिया और चुप हो रही। भैरोंसिह उसी समय उठ खड़ा हुआ और तीतर पकड़ने के लिए चला गया। उस धूर्त और चालाक ऐयार को इस काम के लिए तीर या गुलेल इत्यादि किसी विशेष सामान

की आवश्यकता न थी, वह केवल अपनी फुर्ती और चालाकी से बात-की-बात में सब्ज घास पर चरते हुए और खटका पाने के साथ ही झाड़ियों में घुस कर छिप जाने वाले[1] कई तीतरों को पकड़ लाया और शोरबा पकाने का बन्दोबस्त करने लगा। इधर कमलिनी और देवीसिंह में बातचीत होने लगी।

देवीसिंह—उन दोनों घोड़ों की भी सुध लेनी चाहिए जिन्हें यहाँ से थोड़ी ही दूर पर एक पेड़ से बाँध कर छोड़ आये हैं।

कमलिनी—हाँ, उन घोड़ों को भी जिस तरह बने, धीरे-धीरे यहाँ तक ले आना चाहिए, नहीं तो बेचारे जानवर भूख और प्यास के मारे मर जायेंगे। एक तो यहाँ का रास्ता ऐसा खराब है कि घोड़ों पर सवार होकर मैं आ नहीं सकती थी; दूसरे रात का समय था इसलिए लाचार होकर उनको उसी जगह छोड़ देना पड़ा, पर अब हम लोगों को वहाँ तक जाने की कोई आवश्यकता नहीं जान पड़ती।

देवीसिंह—ठीक है, अगर कहिए, तो मैं उन दोनों घोड़ों को यहाँ ले आऊँ, अब तो दिन का समय है और जब तक भैरोंसिंह खाने की तैयारी करता है तब तक बेकार बैठे रहने से कुछ काम ही करना अच्छा है।

कमलिनी—अगर ले आइए, तो अच्छी बात है, मगर हाँ, सुनिए तो सही, भूतनाथ और श्यामसुन्दरसिंह को कहा गया था कि आज रात के समय हम लोगों से मिलने के लिए उसी ठिकाने तैयार रहें जहाँ भगवानी उनके हवाले की गई थी।

देवीसिंह—जी हाँ, कहा गया था, मगर मैं समझता हूँ कि अब हम लोगों का वहाँ जाना वृथा ही है, अगर आप कहिए तो मैं उन लोगों के पास जाऊँ और यदि इस समय मुलाकात हो जाय, तो इस बात की इत्तिला भी देता जाऊँ या उन लोगों को इसी जगह लेता आऊँ?

कमलिनी—एक तो रात होने के पहले उन लोगों से मुलाकात ही नहीं हो सकती, कौन ठिकाना वहाँ हों या दूसरी जगह चले गये हों, दूसरी बात यह है कि मैं उन लोगों को यह जगह दिखाना नहीं चाहती और न यहाँ का भेद बताना चाहती हूँ, क्योंकि आजकल की अवस्था देखकर श्यामसुन्दरसिंह पर से भी विश्वास उठा जाता है, बाकी रहा भूतनाथ। वह यद्यपि मेरे आधीन है और इस बात का उद्योग भी करता है कि हम लोगों को प्रसन्न रखे, मगर वह कई ऐसी भयानक घटनाओं का शिकार हो रहा है कि बहुत लायक और खैरख्वाह होने पर भी मैं उसे किसी भी योग्य नहीं समझती और न इसी बात का विश्वास है कि उसका दिल वैसा ही रहेगा जैसा आज है; बल्कि मैं कह सकती हूँ कि वह अपने दिल का मालिक नहीं है।

देवीसिंह—यह तो आप एक ऐसी बात कहती हैं जिसे पहेली की तरह उल्टी

---

1. तीतरों और बटेरों की प्रकृति है कि यदि उनके पीछे दौड़िए तो वे भी आगे-आगे पहले तो दौड़ते हैं और इसके बाद अगल-बगल की झाड़ी में ऐसा घुस बैठते हैं कि जल्दी पता नहीं लगता, हां जब साफ मैदान पाते हैं अर्थात् पास में कोई छोटी या बड़ी झाड़ी नहीं होती तो उड़ भी जाते हैं।

भूमिका कहने की इच्छा होती है।

कमलिनी—बेशक ऐसा ही है। इस जगह 'तिनके की ओट पहाड़' वाली कहावत ठीक बैठती है। न मालूम वह कौन-सा भेद है जिसको जानने के लिए पहाड़ ऐसे पचासों दिन नष्ट करने की आवश्यकता होगी।

देवीसिंह—तो क्या आप भूतनाथ को अच्छी तरह नहीं जानतीं ?

कमलिनी—मैं भूतनाथ के सात पुश्त को जानती हूँ जिसका परिचय आप लोगों को भी आपसे-आप मिल जायगा। निःसन्देह भूतनाथ दिल से हम लोगों का खैरख्वाह है परन्तु उसका दिल निरोग नहीं है और उसके भीतर का लंगर जो फौलाद की तरह ठोस है किसी चुम्बक की समीपता के कारण सीधी चाल नहीं चलता। मैं इस फिक्र में हूँ कि उसे हर तरह से स्वतन्त्र कर दूँ मगर उसके दिल पर किसी जबरदस्त घटना के हादसे की लगी हुई मोहर उसके द्वारा कोई भेद प्रकट होने नहीं देती, निःसन्देह उस पर किसी अनुचित कार्य का काला धब्बा ऐसा मजबूत लगा है कि वह केवल आँसुओं के जल से धुलकर साफ नहीं हो सकता। हाय, एक दफे की चूक जन्म-भर के लिए बवाल हो जाती है। आप स्वयं चालाक हैं; यदि मेरी तरह खोज में लगे रहेंगे तो कुछ पता पा जायेंगे। वह बेशक हम लोगों का खैरख्वाह है, नमकहराम नहीं, मगर जिसका दिल इश्क का लवलेश न होने पर भी अपने अख्तियार में न हो उसका क्या विश्वास ?

कमलिनी की इन भेद-भरी बातों ने केवल देवीसिंह ही को नहीं बल्कि किशोरी, कामिनी और तारा को भी हैरानी में डाल दिया जो असाध्य रोगियों की तरह जमीन पर पड़ी हुई थीं और उनसे थोड़ी ही दूर पर बैठे हुए भैरोंसिंह ने भी कमलिनी की बातों को अच्छी तरह सुना और समझा, मगर जिस तरह देवीसिंह के दिल पर उन बातों ने असर किया उस तरह भैरोंसिंह के दिल पर उन बातों ने, मालूम होता है कोई असर नहीं किया क्योंकि भैरोंसिंह के चेहरे पर उन बातों को सुनने से आश्चर्य या उत्कण्ठा की कोई निशानी नहीं पाई जाती थी।

कुछ देर तक सोचने के बाद देवीसिंह यह कहकर उठ खड़े हुए, "अच्छा, मैं पहले घोड़ों की फिक्र में जाता हूँ, फिर जैसा होगा देखा जायगा।"

आधा घण्टा सफर करने के बाद देवीसिंह उस जगह पहुँचे जहाँ एक पेड़ के साथ दोनों घोड़े बँधे हुए थे। वहाँ से थोड़ी दूर पर एक चश्मा बह रहा था। देवीसिंह दोनों घोड़ों को वहाँ ले गये और पानी पिलाने के बाद लम्बी बागडोर के सहारे पेड़ों के साथ बाँध दिया जहाँ उनके चरने के लिए लम्बी घास बहुतायत के साथ जमी हुई थी।

देवीसिंह ने सोचा कि यद्यपि कुसमय है मगर फिर भी वहाँ अवश्य चलना चाहिए जहाँ भगवानी को छोड़ आये थे, शायद भूतनाथ या श्यामसुन्दरसिंह से मुलाकात हो जाय, अगर किसी से मुलाकात हो गई तो कह देंगे कि आज प्रतिज्ञानुसार इस जगह कमलिनी से मुलाकात न होगी। अगर यह काम हो गया तो रात के समय पुनः बीमारों को छोड़ के इस तरफ आने की आवश्यकता न पड़ेगी।

इन बातों को सोचकर देवीसिंह वहाँ से आगे की तरफ बढ़े, मगर सौ कदम से ज्यादा दूर न गये होंगे कि सामने की तरफ से किसी के आने की आहट मालूम पड़ी।

देवीसिंह ठहर गये और बड़े गौर से उधर देखने लगे जिधर से किसी के आने की आहट मिल रही थी। थोड़ी ही देर में दो आदमी निगाह के सामने आ पहुँचे जिनमें से एक को देवीसिंह पहचानते थे और दूसरे को नहीं। पाठक समझ गये होंगे कि उन दोनों में से एक तो भूतनाथ था और दूसरा वही विचित्र आदमी जिसने भूतनाथ पर अपना अधिकार कर लिया था और जो इसे उसे समय अपने साथ न मालूम कहाँ लिये जाता था।

देवीसिंह ने भूतनाथ के उदास और मुरझाये चेहरे को बड़े गौर से देखा और फिर आगे बढ़कर उससे पूछा—

देवीसिंह—क्यों साहब, आप कहाँ जा रहे हैं और वह आपका साथी कौन है ?

भूतनाथ—(अपने साथी की तरफ इशारा करके) इन्हें आप नहीं जानते। इनके साथ मैं एक जरूरी काम के लिए जा रहा हूँ, आप कमलिनीजी से कह दीजियेगा कि आज रात को प्रतिज्ञानुसार मैं उनसे मिल नहीं सकता।

देवीसिंह—सो क्यों ?

भूतनाथ—इसलिए कि इनके साथ जाता हूँ, क्या जाने कब छुट्टी मिले !

देवीसिंह—इनके साथ कहाँ जाते हो ?

भूतनाथ—(घबराहट और लाचारी के ढंग से) सो तो मुझे मालूम नहीं !

इतना कहके उसने एक लम्बी साँस ली। अब देवीसिंह के दिमाग में वे बातें घूमने लगीं जो भूतनाथ के विषय में कमलिनी ने कही थीं। देवीसिंह ने भूतनाथ की कलाई पकड़ ली और एक तरफ ले जाकर पूछा, "दोस्त, क्या तुम इतना भी नहीं बता सकते कि कहाँ जा रहे हो ? ऐयार लोगों का आपस में क्या ऐसा ही बर्ताव होता है ! क्या तुम और हम दोनों एक ही के पक्ष के नहीं हैं और क्या तुम अपने दिल की बातें मुझसे भी नहीं कह सकते ? बोलो-बोलो, मेरी बातों का कुछ जवाब दो ! वाह-वाह, यह क्या ! तुम रो क्यों रहे हो ?"

भूतनाथ—(आँखों से आँसू पोंछकर) हाय, मैं कुछ भी नहीं कह सकता कि मेरे दिल की क्या अवस्था है। (मुहब्बत से देवीसिंह का हाथ पकड़ के) मैं तुमको अपना बड़ा भाई समझता हूँ, और तुम इस बात का अपने दिल में ध्यान भी न लाना कि भूतनाथ तुम्हारे साथ चालबाजी की बातें करेगा, मगर हाय, मैं मजबूर हूँ, कुछ नहीं कह सकता ! (विचित्र मनुष्य की तरफ इशारा करके) मैं और मेरा सर्वस्व इस हरामजादे की मुट्ठी में है और छुटकारे की कोई आशा नहीं ! अफसोस ! अच्छा दोस्त, अब मुझे बिदा दो, अगर जीता रहा तो फिर मिलूंगा !

देवीसिंह—भूतनाथ, तुम कैसी बे-सिर-पैर की बातें कर रहे हो, कुछ समझ में नहीं आता ! आश्चर्य है कि तुम्हारे ऐसा बहादुर आदमी और इस तरह की बातें करे। साफ-साफ कहो तो कुछ मालूम हो, कदाचित् मैं तुम्हारी मदद कर सकूं।

भूतनाथ—नहीं, तुम कुछ भी मदद नहीं कर सकते। मेरा नसीबा बिगड़ा हुआ है और इसे वही ठीक कर सकता है जिसने इसे बनाया है।

देवीसिंह—मैं इस बात को नहीं मानता। निःसन्देह ईश्वर सबके ऊपर है, परन्तु साथ ही इसके यह भी समझना चाहिए कि वह किसी को बनाने और बिगाड़ने के लिए

अपने हाथ-पैर से काम नहीं लेता। यदि ऐसा करे या हो तो उसमें और मनुष्य में कहने के लिए भी कोई भेद बाकी न रह जाय, अतएव कह सकते हैं कि केवल उसकी इच्छा ही इतनी प्रबल है कि वह किसी तरह टल नहीं सकती और वह इस पृथ्वी का काम इसी पर रहने वालों से कराता रहता है। इसका तत्त्व यह है कि वह जिस मनुष्य द्वारा अपनी इच्छा पूरी किया चाहता है उसके अन्दर उस बुद्धि और साहस का संचार करता है जिसका मुकाबला करने वाला पृथ्वी में सिवाय बुद्धि और साहस के और कोई नहीं। इसके साथ-ही-साथ जिससे वह रुष्ट होता है उससे बुद्धि और साहस छीन लेता है। बस, इन्हीं के द्वारा वह अपनी इच्छा पूरी करके नित्य नवीन नाटक देखा करता है और यही उसकी कारीगरी है। मैं इस समय जब अपनी तरफ ध्यान देता हूँ तो ईश्वर की कृपा से अपने में साहस की कमी नहीं देखता और दिल को तुम्हारी मदद के लिए व्याकुल पाता हूँ और इससे भी निश्चय होता है कि मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ और यही ईश्वर की इच्छा है। तुम एकदम हताश मत हो जाओ और जान-बूझ के अपनी जान के दुश्मन मत बनो, असल-असल हाल कहो, फिर देखो कि मैं क्या करता हूँ।

भूतनाथ—तुम्हारा कहना बहुत ठीक है, परन्तु मुझे निश्चय है कि जब मैं अपना असल भेद तुमसे कह दूंगा तो तुम स्वयं मुझसे घृणा करोगे और चाहोगे कि यह दुष्ट किसी तरह मेरे सामने से दूर हो जाय! प्यारे दोस्त, जबसे मैंने अपनी प्रकृति बदलने का उद्योग किया है और ईश्वर के सामने कसम खाई है कि अपने माथे से बदनामी का टीका दूर करके नेक, ईमानदार, सच्चा और सुयोग्य बनूंगा तब से मेरे हृदय की विचित्र अवस्था हो गई है। जब मुझे यह मालूम होता है कि मेरी पिछली बातें अब प्रकट हुआ चाहती हैं तब मुझे मौत से है बढ़ के कष्ट होता है, और जब मैं यह चाहता हूँ कि अपनी जान देकर भी किसी तरह इन बातों से छुटकारा पाऊँ तो उसी समय मुझे मालूम होता है कि मेरे अन्दर दिल के पास ही बैठा हुआ कोई कह रहा है कि खबरदार ऐसा न करना। तू कसम खा चुका है कि अपने सिर से बदनामी का टीका दूर करेगा। यदि ऐसा किये बिना मर जायगा तो ईश्वर के सामने झूठा होने के कारण नरक का भागी होगा, अर्थात् तेरी आत्मा जो कभी मरने वाली नहीं है, बड़ा कष्ट भोगेगी और हजारों वर्ष तक बिना पानी के मछली की तरह तड़पा करेगी। हाय, ये बातें ऐसी हैं कि मुझे बेचैन किए देती हैं। ऐसी अवस्था में तुम स्वयं सोच सकते हो कि अपनी बुराइयों को मैं अपने ही मुंह से कैसे प्रकट करूँ और तुमसे क्या कहूँ। यदि जी कड़ा करके कुछ कहूंगा भी तो निःसन्देह तुम मुझसे घृणा करोगे जैसाकि तुमसे कह चुका हूँ।

देवीसिंह—नहीं-नहीं, कदापि नहीं! मैं शपथपूर्वक कहता हूँ कि यदि मुझे यह भी मालूम हो जायगा कि तुम मेरे पिता के घातक हो, जिन पर मेरा बड़ा ही स्नेह था तो भी मैं तुम्हें इसी तरह मुहब्बत की निगाह से देखूंगा, जैसाकि अब देख रहा हूँ! कहो, अब इससे ज्यादा मैं क्या कह सकता हूँ!

इतना सुनते ही भूतनाथ जिसने अपनी पीठ विचित्र मनुष्य की तरफ इसलिए कर रखी थी कि चेहरे के उतार-चढ़ाव से वह उसकी बातों का कुछ भेद न पा सके, देवीसिंह के पैरों पर गिर पड़ा और रोने लगा। देवीसिंह ने उसे उठाकर गले से लगा लिया और

कहा—"देखो, जी कड़ा करो, घबड़ाओ मत, ईश्वर जो कुछ करेगा, अच्छा ही करेगा, क्योंकि नेकी की राह चलने वालों की वह सहायता किया ही करता है और उनके पिछले ऐबों पर ध्यान नहीं देता, यदि वह जान जाय कि यह व्यक्ति भविष्य में नेक और सच्चा निकलेगा।"

विचित्र मनुष्य जो दूर खड़ा यह तमाशा देख रहा था, जी में बहुत ही कुढ़ा और उसने भूतनाथ से ललकार के कहा, "भूतनाथ, यह क्या बात है ? तुम राह-चलते हर एक ऐरे-गैरे के सामने खड़े होकर घण्टों कलपा करोगे और मैं खड़ा पहरा दिया करूँगा ? यह नहीं हो सकता। मैं तुम्हारा ताबेदार नहीं हूँ बल्कि तुम मेरे ताबेदार हो, चलो, जल्दी करो, अब मैं नहीं रुक सकता !"

भूतनाथ ने लाचारी और मजबूरी की निगाह देवीसिंह पर डाली और सिर नीचा करके चुप हो रहा। देवीसिंह ने पहिले तो भूतनाथ के कान में धीरे से कुछ कहा और इसके बाद विचित्र मनुष्य की तरफ बढ़कर बोले—

देवीसिंह—क्यों बे, क्या तूने मुझे ऐरे-गैरों में समझ लिया ? जुबान सँभाल के नहीं बोलता ! क्या तू नहीं जानता कि मैं कौन हूँ ?

विचित्र—मैं खूब जानता हूँ कि तुम्हारा नाम देवीसिंह है और तुम राजा वीरेन्द्र-सिंह के ऐयार हो, मगर मुझे इससे क्या मतलब ? तुमने मेरे आसामी को इतनी देर तक क्यों रोक रखा हैं ?

देवीसिंह—भूतनाथ तेरा आसामी नहीं है बल्कि मेरा साथी ऐयार है। कदाचित् अपने पागलपन में तूने इसे अपना आसामी समझ लिया हो तो भी जो कुछ कहना हो भूतनाथ से कह, तुझे पागल समझकर मैं कुछ न कहूँगा छोड़ दूँगा, मगर तू इतना हौसला नहीं कर सकता कि राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों को 'ऐरे-गैरे' कहकर सम्बोधन करे ! क्या तू नहीं जानता कि ऐयार की इज्जत राजदीवान से कम नहीं होती ? मैं बेशक तुझे इस बेअदबी की सजा दूंगा।

विचित्र मनुष्य—तुम मुझे क्या सजा दोगे, मैं तुम्हें समझता ही क्या हूँ !

देवीसिंह—तो मैं दिखाऊँ तमाशा तुझे और बता दूं कि राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग कैसे होते हैं ?

विचित्र मनुष्य—जो कुछ करते बने करो, मैं तैयार हूँ, तुमसे डरता नहीं।

इतना कहकर विचित्र मनुष्य ने म्यान से तलवार निकाल ली और देवीसिंह ने भी जमीन पर से पत्थर का एक टुकड़ा उठा लिया। विचित्र मनुष्य ने झपटकर देवीसिंह पर तलवार का वार किया। देवीसिंह उछलकर दूर जा खड़े हुए और उस पत्थर के टुकड़े से अपने बैरी पर वार किया, मगर उसने पैंतरा बदलकर अपने को बचा लिया और देवी-सिंह पर **झपटा**। अब की दफे देवीसिंह ने फुर्ती के साथ पत्थर के दो टुकड़े दोनों हाथों में उठा लिये **और** दुश्मन के वार को खाली देकर एक पत्थर चलाया। जब तक विचित्र मनुष्य उस वार को बचाए तब तक देवीसिंह ने दूसरा टुकड़ा चलाया जो उसके घुटने पर बैठा और उसे सख्त चोट लगी। देवीसिंह ने विलम्ब न किया, फिर एक पत्थर उठा लिया और अपने वैरी को दूर से ही मारा। पैर में चोट लग जाने के कारण वह उछलकर अलग

न हो सका और देवीसिंह का चलाया हुआ दूसरा पत्थर उसके दूसरे घुटने पर इस जोर से लगा कि वह चलने लायक न रहा, इसके बाद देवीसिंह का चलाया हुआ फिर एक पत्थर उसकी दाहिनी कलाई पर बैठा और तलवार उसके हाथ से छूटकर जमीन पर गिर पड़ी। विचित्र मनुष्य की कलाई नकाबपोश की लड़ाई में पहले ही चोट खा चुकी थी, अबकी दफे तो वह ऐसी बेकाम हुई कि उसे विश्वास हो गया कि कई महीने तक तलवार का कब्जा न थाम सकेगी। वह घबराहट के साथ देवीसिंह की तरफ देख ही रहा था कि देवीसिंह का चलाया हुआ एक और पत्थर आया जिसने उसका सिर तोड़ दिया और उसने भहरा कर जमीन पर गिरते-गिरते यह सुना, "देखी राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयार की करामात !"

देवीसिंह तुरन्त उस विचित्र मनुष्य के पास पहुँचे जो जमीन पर बेहोश पड़ा हुआ था। अपने बटुए में से बेहोशी की दवा निकालकर उसे सुँघाई और उसके हाथ-पैर बांधने के बाद पुनः भूतनाथ के पास आये और बोले, "तुम मेरी इस कार्रवाई से किसी तरह की चिन्ता मत करो और देखो कि मैं इस कम्बख्त को कैसा छकाता हूँ।"

भूतनाथ—मैं आपकी जितनी तारीफ करूँ थोड़ी है। कोई जमाना ऐसा था कि ऐसे दुष्ट लोग मेरे नाम से काँपा करते ते परन्तु अब तो बात ही उल्टी हो गई। अब यह जब मेरे सामने आता है तो 'बालि' बन कर आता है अर्थात् इसकी सूरत देखते ही मेरी ताकत, फुर्ती और चालाकी हवा खाने चली जाती है या इसी दुष्ट का साथ देती है। अच्छा तो अब मुझे क्या करना चाहिए ? हाँ इस बात पर भी विचार कर लेना कि मेरी इज्जत अर्थात् मेरी स्त्री इसके कब्जे में है, न मालूम इसने उसे कहाँ कैद कर रखा है !

देवीसिंह—(आश्चर्य से भूतनाथ का मुँह देख के) खैर, पहले यह बताओ कि यह कौन है, इससे तुमसे कब मुलाकात हुई और क्या हुआ ?

भूतनाथ ने यह तो नहीं बताया कि वह विचित्र मनुष्य कौन है मगर जिस समय से वह मिला और उसके बाद जो-जो हुआ, सब पूरा-पूरा कह सुनाया और देवीसिंह आश्चर्य के साथ सुनते रहे।

देवीसिंह कुछ देर तक सोचते रहे। भगवनिया के छूट जाने का उन्हें बहुत रंज था क्योंकि उन्हें या भूतनाथ को इस बात की खबर नहीं थी कि भगवनिया भूतनाथ के कब्जे से निकल कर नकाबपोश के कब्जे में फँसी है। देवीसिंह इस बात पर देर तक गौर करते रहे कि नकाबपोश कौन होगा, तारा की किस्मत क्या चीज होगी जो गठरी में थी, और वह घूमती-फिरती नकाबपोश के कब्जे में कैसे जा पहुँची ? देवीसिंह को विश्वास तो था कि तारा की किस्मत के विषय में भूतनाथ से बढ़कर साफ कोई नहीं समझा सकता मगर साथ ही इसके यह भी निश्चय था कि भूतनाथ अपने मुँह से इन भेदों को इस समय कदापि न खोलेगा और ऐसा करने के लिए जोर देने से उसे कष्ट होगा।

देवीसिंह—अच्छा भूतनाथ, यह बताओ कि तुम मुझ पर विश्वास कर सकते हो ? मैं इस दुष्ट के पंजे से तुम्हें छुड़ाने का उद्योग करूँगा। तुम इस बात की चिन्ता न करो कि मैं इसे मार डालूंगा या बहुत दिनों तक कैद कर रक्खूंगा क्योंकि ऐसा करने से तुम्हारी स्त्री को कष्ट होगा और यह बात मुझे मंजूर नहीं है !

भूतनाथ—मैं शपथ-पूर्वक कहता हूँ कि अपनी जिन्दगी का सबसे नाजुक और

कीमती हिस्सा आपके हवाले करता हूँ, आप जैसा चाहें उसके साथ बर्ताव करें, मगर मेरी एक प्रार्थना अवश्य स्वीकार करें।

देवीसिंह—वह क्या ?

भूतनाथ—यही कि इस भेद के विषय में मेरी जुबान से कुछ कहलाने का उद्योग न करें और तहकीकात करने पर जो कुछ भेद आपको मालूम हों उन भेदों को भी बिना मेरी इच्छा के राजा वीरेन्द्रसिंह, उनके दोनों कुमार, राजा गोपालसिंह, तारा और कमलिनी पर प्रकट न करें। बस इससे ज्यादा कुछ न कहकर आशा करता हूँ कि मुझे अपना कनिष्ठ भ्राता समझ कर इस दुष्ट के पंजे से छुटकारा दिलावेंगे। हाँ, एक बात कहना भूल गया, वह यह है कि इस दुष्ट को कैद करके आप बेफिक्र न रहियेगा, इसके मददगार लोग बड़े ही शैतान और पाजी हैं।

देवीसिंह—जो कुछ तुमने कहा, मुझे मंजूर है। मैं वादा करता हूँ कि जब तक तुम आज्ञा न दोगे तुम्हारे भेद अपने दिल के अन्दर रक्खूंगा और उद्योग करूँगा जिसमें तुम्हारी आत्मा निरोग हो और तुम स्वतन्त्र होकर विचार कर सको—अच्छा एक काम करो।

भूतनाथ—कहिये।

देवीसिंह—इस दुष्ट को तो मैं अपने कब्जे में करता हूँ, जहाँ मुनासिब समझूंगा ले जाऊँगा, तुम यहाँ से जाओ, कल सवेरे तालाब वाले तिलिस्मी मकान में जिसे दुश्मनों ने खराब कर डाला है मुझसे और कमलिनी से मुलाकात करो। इस बीच अगर हो सके तो श्यामसुन्दरसिंह को खोज निकालो और उसे भी अपने साथ उसी जगह लेते आओ। फिर जो कुछ मुनासिब होगा किया जायगा।

भूतनाथ—(चौंक कर) तो क्या ये सब बातें आप कमलिनी से कहेंगे ?

देवीसिंह—हाँ यदि आवश्यकता होगी तो कहूँगा और इसमें तुम्हारा कुछ हर्ज नहीं है, परन्तु विश्वास रक्खो कि इन बातों का असल भेद, जिनका मैं पता भविष्य में लगाऊँगा, अपनी प्रतिज्ञानुसार किसी से न कहूँगा।

भूतनाथ—(मजबूरी के ढंग से) बहुत अच्छा, मैं जाता हूँ।

भूतनाथ वहाँ से चला गया। देवीसिंह ने उस विचित्र मनुष्य की गठरी बाँधी और उस जगह आये जहाँ दोनों घोड़ों को छोड़ा था। घोड़ों पर जीन कसने के बाद एक पर उस आदमी को लादा और दूसरे पर आप सवार होकर उस तरफ रवाना हुए जहाँ कमलिनी, किशोरी, कामिनी इत्यादि को छोड़ा था।

10

दिन ढल चुका था सब देवीसिंह विचित्र मनुष्य की गठरी और दोनों घोड़ों को लिए हुए वहाँ पहुँचे जहाँ किशोरी, कामिनी, तारा, कमलिनी, लाड़िली और भैरोंसिह

को छोड़ा था। तीतर का शोरवा पीने से किशोरी, कामिनी और तारा की तबीयत ठहरी हुई थी और वे इस योग्य हो गई थीं कि दीवार के सहारे कुछ देर तक बैठ सकें, अस्तु इस समय जब देवीसिंह वहाँ पहुँचे तो वे तीनों पत्थर की चट्टान के सहारे बैठी हुई कमलिनी और भैरोंसिंह से बातचीत कर रही थीं। वहाँ जंगली पेड़ों की घनी छाया थी जिनकी टहनियाँ तेज हवा के झपेटों से झोंके खा रही थीं और पत्तों की खड़खड़ाहट की मधुर ध्वनि बहुत ही भली मालूम देती थी।

जिस समय भैरोंसिंह ने देखा कि देवीसिंह के साथ दोनों घोड़े ही नहीं हैं बल्कि एक गठरी भी है वह उठकर आगे बढ़ गया और विचित्र मनुष्य की गठरी अपनी पीठ पर लाद कर कमलिनी के पास ले आया। उस समय सभी की आश्चर्य-भरी निगाहें उसी गठरी की तरफ पड़ रही थीं। दोनों घोड़ों को पेड़ से बाँधकर जब देवीसिंह कमलिनी के पास पहुँचे तो उन्होंने अपने पास की गठरी खोली और सभी ने बड़े गौर से उस विचित्र मनुष्य के चेहरे पर नजर डाली। यद्यपि देवीसिंह ने उसके फटे हुए सिर पर कपड़ा बाँध दिया था मगर थोड़ा-थोड़ा खून अभी तक बह रहा था।

कमलिनी—इसे आप कहाँ से लाए और यह कौन है ?

देवीसिंह—मुझे अभी तक मालूम न हुआ कि यह कौन है।

कमलिनी—(आश्चर्य से) क्या खूब ! अगर ऐसा ही था तो इसे कैद क्यों कर लाये ?

देवीसिंह—इसका किस्सा बड़ा ही विचित्र है। मुझे अब निश्चय हो गया कि भूतनाथ निःसन्देह किसी भारी घटना का शिकार हो रहा है जैसा कि आपने कहा था।

कमलिनी—अच्छा अब मैं टूटी-फूटी बातें नहीं सुनना चाहती, जो कुछ हाल हो खुलासा-खुलासा कह जाइये।

इस जगह पुनः उन बातों को दोहराना पाठकों का समय नष्ट करना है अतएव इतना ही कह देना काफी है कि देवीसिंह ने अपना पूरा हाल तथा भूतनाथ की जुबानी इस विचित्र मनुष्य और नकाबपोश वगैरह का जो कुछ हाल सुना था, कमलिनी से कह सुनाया जिसे सुनकर कमलिनी को बड़ा ही ताज्जुब हुआ। कमलिनी से भी ज्यादा ताज्जुब तारा को हुआ जब उसने सुना कि इस विचित्र मनुष्य के हाथ में एक गठरी थी जिसके विषय में यह कहता था कि इसके अन्दर तारा की किस्मत बन्द है और गठरी घूमती-फिरती किसी नकाबपोश के हाथ में चली गई, मालूम नहीं वह नकाबपोश कौन था या कहाँ चला गया।

कमलिनी—(तारा से) जब तुम्हारी किस्मत की गठरी इस आदमी के हाथ में थी तो मालूम होता है कि तुम इसे जानती भी होगी !

तारा—कुछ भी नहीं, बल्कि जहाँ तक मैं कह सकती हूँ मालूम होता है कि मैंने इसकी सूरत भी कभी नहीं देखी होगी।

कमलिनी—ठीक है, इस समय इसके विषय से तुमसे कुछ पूछना भूल है, क्योंकि साफ मालूम होता है कि इस आदमी की सूरत वास्तव में वैसी नहीं है जैसी हम देख रहे हैं। जरूर इसने अपनी सूरत बदली है और इसके बाल भी असली नहीं बल्कि बना-

वटी हैं, जब वे अलग किए जायेंगे और इसका चेहरा धोया जायगा तब शायद तुम इसे पहचान सको।

तारा—कदाचित ऐसा ही हो।

कमलिनी—अच्छा तो पहले इसका चेहरा साफ करना चाहिए।

देवीसिंह—मैं भी यही मुनासिब समझता हूँ, इसके बाद इसे होश में लाकर जो कुछ पूछना हो पूछा जायगा।

इतना कहकर देवीसिंह ने अपने बटुए में से लोटा निकाला, भैरोंसिंह का लोटा भी उठा लिया और जल भरने के लिए चश्मे के किनारे गये। चश्मा बहुत दूर न था इसलिए बहुत जल्द लौट आये और बाल दूर करके उसका चेहरा धोने लगे। आश्चर्य की बात है कि जैसे-जैसे उस विचित्र मनुष्य का चेहरा साफ होता था, तैसे-तैसे तारा के चेहरे की रंगत बदलती जाती थी यहाँ तक कि उसका चेहरा अच्छी तरह साफ हुआ भी न था कि तारा ने एक चीख मारी और 'हाय' कह के गिरने के साथ ही बेहोश हो गई। उस वक्त सभी का खयाल तारा की तरफ जा रहा और कमलिनी ने कहा, "निःसन्देह इस मनुष्य को तारा पहचानती है!"

उसी समय भैरोंसिंह की निगाह सामने की तरफ जा पड़ी और एक नकाबपोश को अपनी तरफ आते हुए देखकर उसने कहा, "देखिये, एक नकाबपोश हम लोगों की तरफ ही आ रहा है! आश्चर्य है कि उसने यहाँ का रास्ता कैसे देख लिया! कदाचित् चाचाजी के पीछे छिपकर चला आया हो। बेशक ऐसा ही है, नहीं तो इस भूलभुलैया रास्ते का पता लगाना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है! जो हो मगर मैं कसम खाकर कह सकता हूँ कि यह वही नकाबपोश है जिसका हाल इस समय सुनने में आया है। और देखो उसके हाथ में एक गठरी भी है, हाँ यह वही गठरी होगी जिसके विषय में कहा जाता है कि इसमें तारा की किस्मत बन्द है!"

कमलिनी—बेशक ऐसा ही है।

देवीसिंह—हाँ, इसके लिए तो मैं भी कसम खा सकता हूँ।

चन्द्रकान्ता सन्तति

बारहवाँ भाग

1

हम ग्यारहवें भाग के अन्त में लिख आये हैं कि जब देवीसिंह ने उसे विचित्र मनुष्य का चेहरा धोकर साफ किया तो शायद तारा ने उसे पहचान लिया और इस घटना का उस पर ऐसा असर हुआ कि वह चिल्ला उठी, उसका सिर घूमने लगा और वह जमीन पर गिरने के साथ ही बेहोश हो गई। उसी समय सामने से वह नकाबपोश भी आता हुआ दिखाई दिया जिसने उस विचित्र मनुष्य को हैरान-परेशान कर दिया था और उस गठरी को भी अपने कब्जे में कर लिया था जिसमें विचित्र मनुष्य के कहे मुताबिक तारा की किस्मत बन्द थी। इस बयान में भी हम उसी सिलसिले को जारी रखना उचित समझते हैं।

बात की बात में नकाबपोश उस जगह आ पहुँचा जहाँ वह विचित्र मनुष्य और उसके सामने एक पत्थर की चट्टान पर तारा बेहोश पड़ी हुई थी तथा कमलिनी बड़ी मुहब्बत से तारा का सिर थामे ताज्जुब-भरी निगाहों से हरएक को देख रही थी।

देवीसिंह—(नकाबपोश से) आप यहाँ कैसे? क्या यहाँ का रास्ता आपको मालूम था?

नकाबपोश—नहीं-नहीं, मैं तुम्हारे पीछे-पीछे यहाँ तक आया हूँ।

इतना कहकर नकाबपोश ने अपने चेहरे से नकाब उठाकर पीछे की तरफ उलट दी और सभी ने तेजसिंह को पहचान कर बड़ा ही आश्चर्य किया। भैरोसिंह ने दौड़कर अपने पिता के चरण छूए, देवीसिंह भी तेजसिंह के गले मिले और किशोरी, कामिनी, लाड़िली तथा कमलिनी ने भी उन्हें प्रणाम किया।

देवीसिंह—(तेजसिंह से) क्या आप ही वह नकाबपोश हैं जिसका विचित्र हाल भूतनाथ की जुबानी मैंने सुना है?

तेजसिंह—हाँ, मैं ही था, मगर भूतनाथ को इस बात का शक भी न हुआ होगा कि नकाबपोश वास्तव में तेजसिंह है। (विचित्र मनुष्य की तरफ इशारा करके) इस और भूतनाथ के बीच में जो-जो बातें या घटनाएँ हुईं वह भूतनाथ की जुबानी तुमने सु

ही होंगी ?

देवीसिंह--हाँ, सुनी तो हैं मगर मुझे विश्वास नहीं है कि भूतनाथ ने जो कहा, सब सच कहा होगा।

तेजसिंह--ठीक है, रात से मेरा खयाल भी भूतनाथ की तरफ से ऐसा ही हो रहा है, खैर मैं स्वयं सब हाल तुम लोगों से कहता हूँ। मैं तारासिंह को साथ लिये हुए रोहतासगढ़ गया था। उस समय मैं रोहतासगढ़ ही में था जब यह खबर पहुँची कि कमलिनी के तिलिस्मी मकान को दुश्मनों ने घेर लिया है और उस पर अपना दखल जमाना ही चाहते हैं। मैंने तुरन्त थोड़े से फौजी सिपाहियों को दुश्मन से मुकाबला करने के लिए रवाना किया और दो घंटे बाद तारासिंह को साथ लेकर सूरत बदले हुए खुद भी उसी तरफ रवाना हुआ। रात की पहली अँधेरी थी जब हम दोनों एक जंगल में पहुँचे और उसी समय घोड़े के टापों की आवाज आने लगी। यह आवाज पीछे की तरफ से आ रही थी और क्रमशः पास होती जाती थी। हम दोनों यह सोच कर पेड़ की आड़ में खड़े हो गये कि जब यह सवार आगे निकल जाय तब हम लोग चलेंगे। मगर जब यह घोड़ा उस पेड़ के पास पहुँचा जिसकी आड़ में हम दोनों छिपे खड़े थे तो हमने देखा कि उस घोड़े पर एक नहीं बल्कि दो आदमी सवार हैं जिनमें से एक औरत है जो पीछे की तरफ बैठी हुई है। उसका औरत होना मुझे इस तरह मालूम हुआ कि जब घोड़ा उस पेड़ के पास पहुँचा जिसकी आड़ में हम लोग छिपे हुए थे तो उस औरत ने कहा, "जरा ठहर जाइये, मैं इस जगह उतरूँगी और दस-बारह पल के लिए आपसे जुदा होऊँगी।" बस इस आवाज ही से मुझे निश्चय हो गया कि वह औरत है। घोड़ा रोक कर सवार उतर पड़ा और हाथ का सहारा देकर उस औरत को भी उसने उतारा।

इतना कह कर तेजसिंह रुक गये और कमलिनी की तरफ देख कर बोले, "मगर मुझे इस समय अपना किस्सा कहते अच्छा नहीं मालूम होता।

कमलिनी—सो क्यों?

तेजसिंह—इसलिए कि मैं एक तरफ बेचारी तारा को बेहोश देखता हूँ, दूसरी तरफ किशोरी और कामिनी को ऐसी अवस्था में पाता हूँ जैसे वर्षों की बीमार हों और तुमको भी सुस्त और उदास देखता हूँ, इन कारणों से मेरी यह इच्छा होती है कि पहले इस तरफ का हाल सुन लूँ।

कमलिनी—आपका कहना बहुत ठीक है, फिर भी मैं यही चाहती हूँ कि पहले आपका हाल सुन लूँ।

तेजसिंह—खैर, मैं भी अपना किस्सा मुख्तसिर ही में पूरा करता हूँ।

इतना कहकर तेजसिंह ने फिर कहना शुरू किया—

"जब वह औरत उस काम से छुट्टी पा चुकी जिसके लिए उतरी थी, तो घोड़े के पास आई और अपने साथी से बोली, "भूतनाथ ने जिस समय आपको देखा उसके चेहरे पर मुर्दनी छा गई।" इसका जवाब उस आदमी ने जो वास्तव में (विचित्र मनुष्य की तरफ इशारा करके) यही हजरत थे, यों दिया, "बेशक ऐसा ही है क्योंकि भूतनाथ मुझे मुर्दा समझे हुए था। देखो तो सही आज मेरे और उसके बीच कैसी निपटती है। मैं उसे

अवश्य अपने साथ ले जाऊँगा और नहीं तो आज ही उसका भण्डा फोड़ दूँगा जो बड़ा अच्छा नेक और बहादुर बना फिरता है !" इतना कह दोनों पुनः घोड़े पर सवार हुए और आगे की तरफ चले। मेरे दिल में तरह-तरह के खुटके पैदा हो रहे थे और मैं अपने को उनके पीछे-पीछे जाने से किसी तरह रोक नहीं सकता था। लाचार हम दोनों भी उनके पीछे तेजी के साथ रवाना हुए। इस बात की फिक्र मेरे दिल से बिल्कुल जाती रही कि हमारे फौजी सिपाही दुश्मनों के मुकाबले में कब पहुँचेंगे और क्या करेंगे। अब तो यह फिक्र पैदा कि यह आदमी कौन है और इससे तथा भूतनाथ से क्या सम्बन्ध है, इस बात का पता लगाना चाहिए, और इसीलिए हम लोग अपना रास्ता छोड़ कर घोड़े के पीछे-पीछे ही रवाना हुए मगर हम लोगों को बहुत देर तक सफर न करना पड़ा और शीघ्र ही हम लोग उस जंगल में जा पहुँचे जिसमें भगवानी और श्यामसुन्दर की कहा-सुनी हो रही थी और थोड़ी देर के बाद आप लोग भी पहुँच गये थे। मैं जान-बूझकर आप लोगों से नहीं मिला और इस विचित्र मनुष्य के पीछे पड़ा रहा यहाँ तक कि आप लोग चले गये और मुझे वह विचित्र घटना देखनी पड़ी।"

इसके बाद तेजसिंह ने वह सब हाल कहा जिसे हम ऊपर लिख आये हैं और पुनः इस जगह दोहरा कर लिखना वृथा समझते हैं। हाँ, उस दूसरे नकाबपोश के विषय में कदाचित् पाठकों को भ्रम होगा इसलिए साफ लिख देना आवश्यक है कि वह दूसरा नकाबपोश जिसने भगवानी को भागने से रोक रखा था और जिसके पास पहुँचने के लिए तेजसिंह ने श्यामसुन्दरसिंह को नसीहत की थी, वास्तव में तारासिंह था जिसका हाल इस समय तेजसिंह के बयान करने से मालूम हुआ।

जो कुछ हम ऊपर लिख आये हैं, उतना बयान करने के बाद तेजसिंह ने कहा, "जब यह विचित्र मनुष्य भूतनाथ को लेकर रवाना हुआ तो मैं भी इसके पीछे-पीछे चला पर बीच ही में उससे और देवीसिंह से मुलाकात हो गई, देवीसिंह उसे पकड़ के यहाँ ले आये और मैं भी देवीसिंह के पीछे-पीछे चुपचाप यहाँ तक चला आया।"

इतना कह कर तेजसिंह चुप हो गये और तारा की तरफ देखने लगे।

कमलिनी—यह घटना तो बड़ी ही विचित्र है, निःसन्देह इसके अन्दर कोई गुप्त रहस्य छिपा हुआ है।

तेजसिंह—जहाँ तक मैं समझता हूँ मालूम होता है कि आज बड़ी-बड़ी गुप्त बातों का पता लगेगा। अब कोई ऐसी तरकीब करनी चाहिए जिसमें यह (विचित्र मनुष्य की तरफ इशारा करके) अपना सच्चा हाल कह दे।

देवीसिंह—तो इसे होश में लाना चाहिए।

तेजसिंह—नहीं, इसे अभी इसी तरह पड़ा रहने दो। कोई हर्ज नहीं और पहले तारा को होश में लाने का उद्योग करो।

देवीसिंह—बहुत अच्छा।

अब देवीसिंह तारा को होश में लाने का उद्योग करने लगे और तेजसिंह ने कमलिनी से कहा, "जब तक तारा होश में आवे, तब तक तुम अपना हाल और इस तरफ जो कुछ बीता है, सो सब हाल कह जाओ।" कमलिनी ने ऐसा ही किया अर्थात्

अपना और किशोरी, कामिनी तथा तारा का सब हाल संक्षेप में कह सुनाया, और इसी बीच में तारा भी होश में आकर बातचीत करने योग्य हो गई।

कमलिनी—(तारा से) क्यों बहिन, अब तबीयत कैसी है ?

तारा—अच्छी है।

कमलिनी—तुम इस विचित्र मनुष्य को देख कर इतना डरीं क्यों ? क्या इसे पहचानती हो ?

तारा—हाँ, मैं इसे पहचानती हूँ मगर अफसोस कि कि इसका असल भेद अपनी जुबान से नहीं कह सकती। (बिचित्र मनुष्य की तरफ देख के) हाय, इस बेचारे ने तो किसी का कुछ भी नुकसान नहीं किया, फिर आप लोग क्यों इसके पीछे पड़े हैं ?

कमलिनी—बहिन, मेरी समझ में नहीं आता कि तुम इसका भेद जान के भी इतना क्यों छिपाती हो ? क्या तुमने अभी नहीं सुना कि इसके और भूतनाथ के बीच में क्या बातें हुई हैं ? मगर फिर भी ताज्जुब है कि इसे तुम अपनायत के ढंग से देख रही हो !

तारा—(लम्बी साँस लेकर) हाय, अब मैं अपने दिल को नहीं रोक सकती। उसमें अब इतनी ताकत नहीं है कि उन भेदों को छिपा सके जिन्हें इतने दिनों तक अपने अन्दर इसलिए छिपा रखा था कि मुसीबत के दिन निकल जाने पर प्रकट किये जायेंगे। नहीं-नहीं, अब मैं नहीं छिपा सकती ! बहिन कमलिनी, तू वास्तव में मेरी बहिन है और सगी बहिन है, मैं तुझसे बड़ी हूँ, मेरा ही नाम लक्ष्मीदेवी है।

कमलिनी—(चौंक कर और तारा को गले से लगाकर) ओह ! मेरी प्यारी बहिन ! क्या वास्तव में तुम लक्ष्मीदेवी हो ?

तारा—हाँ, और यह विचित्र मनुष्य हमारा बाप है !

कमलिनी—हमारा बाप बलभद्रसिंह !

तारा—हाँ, यही हमारे-तुम्हारे और लाड़िली के बाप बलभद्रसिंह हैं। कम्बख्त मायारानी की बदौलत मेरे साथ मेरे बाप भी कैदखाने की अँधेरी कोठरी में सड़ते रहे। हरामजादा दारोगा इस पर भी सन्तुष्ट न हुआ और उसने इनको जहर दे दिया मगर ईश्वर ने एक सहायक भेज दिया जिसकी बदौलत इनकी जान बच गई। पर फिर भी उस जहर के तेज असर ने इनका बदन फोड़ दिया और रंग बिगाड़ दिया बल्कि इस योग्य तक नहीं रखा कि तुम इन्हें ठीक से पहचान सको। इतना ही नहीं, और भी बड़े-बड़े कष्ट भोगने पड़े। (रो कर) हाय ! अब मेरे कलेजे में दर्द हो रहा है। मैं उन मुसीबतों को बयान नहीं कर सकती ! तुम स्वयं अपने पिता ही से सब हाल पूछ लो, जिन्हें मैं कई वर्षों के बाद इस अवस्था में देख रही हूँ !

पाठक, आप समझ सकते हैं कि तारा की इन बातों ने कमलिनी के दिल पर क्या असर किया होगा, तेजसिंह और भैरोंसिंह की क्या अवस्था हुई होगी और देवीसिंह कितने शर्मिन्दा हुए होंगे जिन्होंने पत्थर मार कर उस विचित्र मनुष्य का सिर तोड़ डाला था। कमलिनी दौड़ी हुई अपने बाप के पास गई और उसके गले से चिपट कर रोने लगी। तेजसिंह भी लपक कर उनके पास गये और लखलखे की डिबिया उसकी नाक से

लगाई। बलभद्रसिंह होश में आकर उठ बैठे और ताज्जुब-भरी निगाहों से चारों तरफ देखने लगे। तारा, कमलिनी और लाड़िली पर निगाह पड़ते ही उद्योग करने पर भी न रुकने वाले आँसू उनकी आँखों में डबडबा आये और उन्होंने कमलिनी की तरफ देखकर काँपती हुई आवाज में कहा, "क्या तारा ने मेरे या अपने विषय में कोई बात कही है? तुम लोग जिस निगाह से मुझे देख रही हो उससे साफ मालूम होता है कि तारा ने मुझे पहचान लिया और मेरे तथा अपने विषय में कुछ कहा है!"

कमलिनी—(गद्‌गद होकर) जी हाँ, तारा ने अपना और आपका परिचय देकर मुझे बड़ा ही प्रसन्न किया है।

बलभद्रसिंह—तो बस, अब मैं अपने को क्योंकर छिपा सकता हूँ और इस बात से क्योंकर इनकार कर सकता ड़ँ कि मैं तुम तीनों बहिनों का बाप हूँ। आह! मैं अपने दुश्मनों से अपना बदला स्वयं लेने की नीयत से थोड़े दिन तक और अपने को छिपाना चाहता था मगर समय ने ऐसा न करने दिया! खैर मर्जी परमात्मा की! अच्छा कमलिनी, सच कहना, क्या तुझे इस बात का गुमान भी था कि तेरा बाप जीता है?

कमलिनी—मैं अफसोस के साथ कहती हूँ कि कई पितृपक्ष ऐसे बीत गए जिनमें मैं आपके नाम तिलांजलि दे चुकी हूँ क्योंकि मुझे विश्वास दिलाया गया था कि हम लोगों के सिर पर से हमारे प्यारे बाप का साया जाता रहा और इस बात को भी एक जमाना गुजर गया। जो हो, मगर आज हमारी खुशी का अन्दाजा कोई भी नहीं कर सकता।

बलभद्रसिंह उठ कर तारा के पास गये जिसमें चलने-फिरने की ताकत अभी तक नहीं आई थी, तारा उनके गले से लिपट गई और फूट-फूट कर रोने लगी। उसके बाद लाड़िली की नौबत आई और उसने भी रो-रो कर अपने कपड़े भिगोये और मायारानी को गालियाँ देती रही। आधे घंटे तक यही हालत रही, अन्त में तेजसिंह ने सभी को समझा-बुझा कर शान्त किया और फिर बातचीत होने लगी।

देवीसिंह—(बलभद्रसिंह से) मैं आपसे माफी माँगता हूँ, मुझसे जो कुछ भूल हुई वह अनजाने में हुई है!

बलभद्रसिंह—(हँस कर) नहीं-नहीं, मुझे इस बात का रंज कुछ भी नहीं है, बल्कि सच तो यह है कि अब मुझे केवल आप ही लोगों का भरोसा रह गया है, मगर अफसोस इतना ही है कि भूतनाथ आप लोगों का दोस्त है और मैं उसे किसी तरह भी माफ नहीं कर सकता।

तेजसिंह—हम लोगों को बड़ा ही आश्चर्य हो रहा है और बिल्कुल समझ में नहीं आता कि आपके और भूतनाथ के बीच में किस बात की ऐंठन पड़ी हुई है।

बलभद्रसिंह—(तेजसिंह से) मालूम होता है कि अभी तक आपने वह गठरी नहीं खोली जो आपने एक औरत के हाथ से छीनी थी और जो इस समय भी मैं आपके पास देख रहा हूँ।

तेजसिंह—(गठरी दिखाकर) नहीं, मैंने इसे अभी तक नहीं खोला।

बलभद्रसिंह—तभी आप ऐसा पूछते हैं, अच्छा अब इसे खोलिये।

कमलिनी—वह औरत कौन थी ?

बलभद्रसिंह—उसका भी हाल मालूम हो जायगा, जरा सब्र करो ! (तेजसिंह से) हाँ साहब, अब वह गठरी खोलिये ।

"बहुत अच्छा" कह कर तेजसिंह उठे और गठरी लिये हुए उस तरफ बढ़ गए जहाँ किशोरी, कामिनी और तारा पड़ी थीं । इसके बाद सभी की तरफ देख के बोले, "इस गठरी में क्या है सो देखने के लिए सभी का जी बेचैन हो रहा होगा बल्कि मैं कह सकता हूँ कि तारा सबसे ज्यादा बेचैन होगी इसलिए मैं किशोरी, कामिनी और तारा ही के पास बैठ कर यह गठरी खोलता हूँ जिससे इन्हें उठने और चलने की तकलीफ न होगी, आइये, आप लोग भी इसी जगह आ बैठिये ।"

इतना कहकर तेजसिंह वहाँ बैठ गए, बलभद्रसिंह उनके बगल में जा बैठे, और बाकी सभी ने तेजसिंह को इस तरह घेर लिया जैसे किसी मदारी को खेल करते समय मनचले लड़के घेर लेते हैं । तेजसिंह ने गठरी खोली और सभी की निगाह उसके अन्दर की चीजों पर पड़ी ।

इस गठरी में पीतल की एक छोटी-सी सन्दूकड़ी थी जिसे कमलदान भी कह सकते हैं और एक मुट्ठा कागजों का था । बलभद्रसिंह ने कहा, "पहले इस कागज के मुट्ठे को खोलो ।" तेजसिंह ने ऐसा ही किया और जब कागज का मुट्ठा खोला गया तो मालूम हुआ कि कई चिट्ठियों को आपस में एक-दूसरे के साथ जोड़ के वह मुट्ठा तैयार किया गया है ।

तेजसिंह—(मुट्ठा खोलते हुए) इसे शैतान की आँत कहूँ या विधाता की जन्म-पत्री !

बलभद्रसिंह—(हँस कर) आप जो चाहें कह सकते हैं । इन चिट्ठियों और पुर्जों को मैंने क्रम के साथ जोड़ा है, आप शुरू से एक-एक करके पढ़ना आरम्भ कीजिये ।

तेजसिंह—बहुत अच्छा ।

तेजसिंह ने पहला पुर्जा पढ़ा, उसमें ऊपर की तरफ यह लिखा हुआ था—

"श्रीयुत् रघुबरसिंह योग्य लिखी हेलासिंह का राम-राम ।" और बाद में यह मजमून था—

"मेरे प्यारे दोस्त—

"आपको मालूम है कि राजा गोपालसिंह की शादी बलभद्रसिंह की लड़की लक्ष्मीदेवी के साथ होने वाली है, मगर मैं चाहता हूँ कि आप कृपा करके कोई ऐसा बन्दोबस्त करें जिसमें वह शादी टूट जाय और उसके बदले में मेरी लड़की मुन्दर की शादी राजा गोपालसिंह के साथ हो जाय । अगर ऐसा हुआ तो मैं जन्म-भर आपका अहसान मानूंगा और जो कुछ आप कहेंगे करूँगा । मुझे आपकी दोस्ती पर बहुत भरोसा है । शुभम् ।"

बलभद्र—लीजिये, पहले नम्बर की चिट्ठी समाप्त !

तारा—रघुबरसिंह किसका नाम है ?

तेजसिंह—इस भूतनाथ का नाम रघुबरसिंह है और नानक इसी का लड़का है, (बलभद्रसिंह से) क्या हेलासिंह मायारानी के बाप का नाम है ?

बलभद्रसिंह—जी हाँ, और मायारानी का असल नाम मुन्दर है।

कमलिनी—अच्छा आगे पढ़िये।

तेजसिंह ने दूसरी चिट्ठी पढ़ी। उसमें यह लिखा था—

"मेरे प्यारे दोस्त हेलासिंह,

आपका पत्र पहुँचा। मैं इस बात का उद्योग कर सकता हूँ मगर इस काम में हद से ज्यादा मेहनत करनी पड़ेगी। खुल्लमखुल्ला तो आपकी लड़की की शादी राजा गोपालसिंह से नहीं हो सकती क्योंकि राजा गोपालसिंह को आपकी लड़की का विधवा होना मालूम है, हाँ उनका दारोगा अगर हमारे साथ मिल जाय तो कोई करकीब निकल सकती है, लेकिन उसमें भी यह कठिनाई है कि दारोगा लालची है और आप गरीब हैं।

रघुबरसिंह।"

देवीसिंह—वाह-वाह, भूतनाथ तो बड़ा शैतान मालूम होता है ! यह सब काँटे क्या उसी के बोए हुए हैं !

कमलिनी—मगर अफसोस है कि आप उसे अपना दोस्त बनाने के लिए कसम खा चुके हैं !

बलभद्रसिंह—मैं ठीक कहता हूँ कि थोड़ी देर बाद देवीसिंहजी को अपने किये पर पछताना पड़ेगा।

लाड़िली—खैर, जो होगा देखा जायगा, आप तीसरी चिट्ठी पढ़िये।

बलभद्रसिंह—मालूम नहीं है कि भूतनाथ की चिट्ठी का जवाब हेलासिंह ने क्या दिया था क्योंकि वह चिट्ठी मेरे हाथ नहीं लगी। यह तीसरी चिट्ठी जो आप पढ़ेंगे वह भी भूतनाथ ही की लिखी हुई है।

तेजसिंह तीसरी चिट्ठी पढ़ने लगे। उसमें लिखा हुआ था—

"प्रियवर हेलासिंह—

"आपने लिखा कि 'यद्यपि मुन्दर विधवा है और उसकी उम्र भी ज्यादा है परंतु नाटी होने के सबब वह ज्यादा उम्र की मालूम नहीं पड़ती' ठीक है, मगर बहुत-सी बातें ऐसी हैं जो औरों को चाहे मालूम न हों, मगर उससे किसी तरह छिपी नहीं रह सकतीं जिसके साथ उसकी शादी होगी और इसी बात से राजा गोपालसिंह का दारोगा भी डरता है, मगर मैंने भविष्य के लिए उसके खयाल में ऐसे-ऐसे सरसब्ज बाग पैदा कर दिए हैं कि जिसकी बेसुध और मदहोश कर देने वाली खुशबू को वह अभी से सूँघने लग गया है, तिस पर भी मैं इस बात का तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि यह शादी प्रकट रूप से नहीं हो सकती। इसके लिए उस ब्याह वाले दिन ही कोई अनोखी चाल चलनी पड़ेगी। अस्तु, दारोगा साहब ने यह कहा है कि आज के आठवें दिन गुरुवार को संध्या समय दारोगा साहब के बँगले में आप उनसे मिलें, मैं भी वहाँ मौजूद रहूँगा। फिर जो कुछ तै हो जाय वही ठीक है।

वही रघुबर।"

कमलिनी—मुझे यह नहीं मालूम था कि भूतनाथ के हाथ से ऐसे-ऐसे अनुचित कार्य हुए हैं। उसने यही कहा था कि मैं राजा वीरेन्द्रसिंह का दोषी हूँ और इस बात का सबूत मायारानी और उसकी सखी मनोरमा के कब्जे में है। जहाँ तक मुझसे बना मैंने भूतनाथ का पक्ष करके उन सबूतों को गारत कर दिया मगर मैं हैरान थी कि भूतनाथ को धमकाने, कब्जे में रखने या तबाह करने के लिए मायारानी ने इतने सबूत क्यों बटोर रक्खे हैं या उसे भूतनाथ की परवाह इतनी क्यों हुई! मगर आज उस बात का असल भेद खुल गया। इस समय मालूम हो गया कि लक्ष्मीदेवी और गोपालसिंह के साथ दगा करने में भूतनाथ शरीक था और इस बात का डर केवल भूतनाथ और दारोगा ही को नहीं था बल्कि मायारानी को भी था और वह भी अपने को भूतनाथ और दारोगा के कब्जे में समझती थी। राजा गोपालसिंह को कैद करने के बाद यह डर और भी बढ़ गया होगा और भूतनाथ ने भी उसे कुछ डराया-धमकाया या रुपये वसूल करने के लिए तंग किया होगा और उस समय भूतनाथ को अपने आधीन करने के लिए मायारानी ने यह कार्रवाई की होगी अर्थात भूतनाथ को राजा वीरेन्द्रसिंह का दोषी ठहराने के लिए बहुत से सबूत इकट्ठे किये होंगे।

भैरोंसिंह – मैं भी यही सोचता हूँ।

तेजसिंह—निःसन्देह ऐसा ही है।

कमलिनी—ओफ ओह! अगर मैं पहले ही ऐसा जान गई होती तो भूतनाथ का इतना पक्ष न करती और न उसे अपना साथी ही बनाती।

देवीसिंह—मगर इधर तो उसने आपके कामों में बड़ी मेहनत की है इसलिए मुरौवत तो करनी पड़ेगी!

कमलिनी—नहीं-नहीं, मैं उसका कसूर कभी माफ नहीं कर सकती चाहे जो हो!

देवीसिंह—मगर फिर वह भी आप ही लोगों का दुश्मन हो जायगा। जहाँ तक मैं समझता हूँ इस समय वह अपने किए पर आप पछता रहा है।

कमलिनी—जो हो मगर यह कसूर ऐसा नहीं है जिसे मैं माफ कर सकूँ। ओह, क्रोध के मारे मेरा अजब हाल हो रहा है!

तेजसिंह—उसने कसूर भी भारी किया है।

बलभद्रसिंह—अभी क्या है, अभी तो कुछ देखा ही नहीं! उसने जो किया है उसका हजारवाँ भाग भी अभी तक आपको मालूम नहीं हुआ है! जरा आगे की चिट्ठियाँ तो पढ़िए, और इसके बाद जब वह पीतल वाला कमलदान खुलेगा तब हम देवीसिंहजी से पूछेंगे कि 'कहिए, भूतनाथ के साथ कैसा सलूक करना चाहिए?'

इस समय बेचारी तारा (जिसको आगे से हम लक्ष्मीदेवी के नाम से लिखा करेंगे) चुपचाप बैठी लम्बी-लम्बी साँसें ले रही थी। बाप की शर्म से वह इस विषय में कुछ बोल नहीं सकती थी मगर भूतनाथ से बदला लेने का खयाल उसके दिल में मजबूती के साथ जड़ पकड़ता जा रहा था और क्रोध की आँच उसके अन्दर इतनी ज्यादा तेज होकर सुलग रही थी कि उसका तमाम बदन गर्म हो रहा था इस तरह जैसे बुखार चढ़ आया हो। आज के पहले तक वह भूतनाथ को लायक और नेक समझती थी, मगर इस

समय यकायक जो बातें मालूम हुईं उन्होंने उसे अपने आपे से बाहर कर दिया था ।

तेजसिंह ने चौथी चिट्ठी पढ़ी । उसमें यह लिखा हुआ था—

"प्रिय बन्धु हेलासिंह,

"बहुत दिनों से पत्र न भेजने के कारण आपको उदास न होना चाहिए । मैं इस फिक्र में लगा हुआ हूँ कि किसी तरह बलभद्रसिंह और लक्ष्मीदेवी को खपा डालूं मगर अभी तक मैं कुछ न कर सका क्योंकि एक तो बलभद्रसिंह स्वयं ऐयार है दूसरे आज-कल राजा गोपालसिंह की आज्ञानुसार बिहारीसिंह और हरनामसिंह भी उसके घर की हिफाजत कर रहे हैं । खैर कोई चिन्ता नहीं, देखिए तो सही क्या होता है ! मैंने बलभद्रसिंह के पड़ोस में हलवाई की एक दूकान खोली है और अच्छे-अच्छे कारीगर हलवाई नौकर रक्खे हैं । बहुत-सी मिठाइयाँ मैंने ऐसी तैयार की हैं जिनमें दारोगा साहब का दिया हुआ अनूठा जहर बड़ी खूबी के साथ मिलाया गया है । यह जहर ऐसा है कि जिसे खाने के साथ ही आदमी नहीं मर जाता बल्कि महीनों तक बीमार रह के जान देता है । जहर खाने वाले का बदन बिल्कुल फूट जायगा और वैद्य लोग उसे देख के सिवाय इसके और कुछ भी नहीं कह सकेंगे कि यह गर्मी की बीमारी से मरा है, जहर का तो किसी को गुमान भी होगा । मैंने उस घर की लौंडियों और नौकरों से भी मेल-जोल पैदा कर लिया है, अस्तु चाहे वे लोग कैसे भी होशियार और धूर्त क्यों न हों, मगर एक-न-एक दिन हमारी जहरीली मिठाई बलभद्रसिंह के पेट में उतर ही जायगी । आपकी लड़की बड़ी ही होशियार और चाँगली है । वह सुजान के घर में बहुत अच्छे ढंग से रहती है । सुजान ने उसे अपनी भतीजी कहके मशहूर किया है और उसकी भी बातचीत चल रही है, मगर गोपालसिंह का बूढ़ा बाप बड़ा ही शैतान है । दारोगा साहब उसका नाम-निशान भी मिटाने के उद्योग में लगे हुए है । सब्र करो, घबराओ मत, काम अवश्य बन जायगा । आज से मैं अपना नाम बदल देता हूँ, मुझे अब भूतनाथ कह के पुकारा करना ।

वही—भूत० ।"

इस चिट्ठी ने सभी के दिल पर बड़ा ही भयानक असर किया, यहाँ तक कि देवीसिंह की आँखें भी मारे क्रोध के लाल हो गईं और तमाम बदन काँपने लगा ।

तेजसिंह—बेईमान ! दुष्ट ! इतनी बड़ी-चढ़ी बदमाशी !

भैरोंसिह—इस हरामजदगी का कुछ ठिकाना है !

लाड़िली—इस समय मेरा कलेजा फुंका जाता है । यदि भूतनाथ यहाँ मौजूद होता तो इसी समय अपने हृदय की आँच में उसे आहुति दे देती । परमेश्वर, ऐसे-ऐसे पापियों के साथ तू···

कमलिनी—हाय ! कम्बख्त भूतनाथ ने तो ऐसा काम किया है कि यदि वह कुत्ते से भी नुचवाया जाय तो उसका बदला नहीं हो सकता ।

बलभद्रसिंह—ठीक है, मगर मैं उसकी जान कदापि न मारूँगा । मैं वही काम करूँगा जिससे मेरे कलेजे की आग ठंडी हो । ओफ···

देवीसिंह—इधर हम लोगों के साथ मिल के भूतनाथ ने जो-जो काम किए हैं उनसे विश्वास हो गया था कि वह हम लोगों का खैरख्वाह है, हम लोग उससे बहुत ही प्रसन्न थे और…

बलभद्रसिंह—नहीं वह ऐसे काले साँप का जहरीला बच्चा है जिसके काटे का मन्त्र ही नहीं। उसका कोई ठिकाना नहीं। बेशक वह कुछ दिन में आप लोगों को अपने आधीन करके मायारानी से मिल जाता। यह काम भी वह कभी का कर चुका होता, मगर जब से उसने मेरी सूरत देख ली है और उसे निश्चय हो गया कि मैं मरा नहीं बल्कि जीता हूँ तब से उसकी अक्ल ठिकाने नहीं है, वह घबरा गया है और अपने बचाव की तरकीब सोच रहा है। (तेजसिंह से) खैर, आगे पढ़िए, देखिए और क्या बात मालूम होती है!

तेजसिंह ने अगली चिट्ठी पढ़ी, उसमें यह लिखा हुआ था—

"मेरे लँगोटिया यार हेलासिंह—

"मालूम होता है तुम्हारा नसीबा बड़ा जबर्दस्त है। राजा गोपालसिंह का बुड्ढा बाप बड़ा ही चाँगला और काइयाँ था। वह कम्बख्त अपने ही मन की करता था। अगर वह जीता रहता तो लक्ष्मीदेवी की शादी गोपालसिंह से अवश्य हो जाती, क्योंकि वह बलभद्रसिंह की बहुत इज्जत करता था। बलभद्रसिंह की जाति उत्तम है और जाति-पाँति का खयाल वह बुड्ढा बहुत करता था। खैर आज मैं तुम्हें बधाई देता हूँ कि मेरी और दारोगा की मेहनत ठिकाने लगी और वह इस दुनिया से कूच कर गया। सच तो यह है कि बड़ा भारी काँटा निकल गया। अब साल-भर के लिए शादी रुक गई और इस बीच में हम लोग बहुत कुछ कर गुजरेंगे।

वही—भूत०।"

चिट्ठी पूरी करने के साथ ही तेजसिंह की आँखों से आँसू की बूँदें टपकने लगीं और उन्होंने एक लम्बी साँस लेकर कहा, "अफसोस! यह बात किसी को भी मालूम न हुई कि राजा गोपालसिंह का बाप इन दुष्टों की चालबाजियों का शिकार हुआ। बेचारा बड़ा ही लायक और बात का धनी था।"

तारा यद्यपि बड़ी मुश्किल से अपने दिल को रोके हुए यह सब तमाशा देख और सुन रही थी मगर इस चिट्ठी ने उसके साहस में विघ्न डाल दिया और उसे सभी की आँखें बचा कर आँचल के कोने से अपने आँसू पोंछने पड़े। किशोरी, कामिनी, लाड़िली, कमलिनी और ऐयारों का दिल भी हिल गया और भूतनाथ की सूरत घृणा के साथ उनकी आँखों के सामने घूमने लगी। तेजसिंह ने कागज का मुट्ठा जमीन पर रख दिया और अपने दिल को सम्हालने की नीयत से सिर उठाकर सरसब्ज पहाड़ियों की तरफ देखने लगे। थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा इसके बाद तेजसिंह ने कागज का मुट्ठा उठा लिया और फिर पढ़ने लगे।

"मेरे भाग्यशाली मित्र हेलासिंह,

मुबारक हो ! आज हमारी जहरीली मिठाई बलभद्रसिंह के घर में जा पहुँची। इसका जो कुछ नतीजा होगा, उसको मैं अगली चिट्ठी में लिखूंगा। वास्तव में तुम किस्मतवर हो ।

वही—भूत।"

कमलिनी—हाय कम्बख्त, तेरा सत्यानाश हो !

लाड़िली—चाण्डाल कहीं का, ऐसा सत्यानाशी और हम लोगों के साथ रहे ! छीः छीः !

तारा—(तेजसिंह से) हाय, मेरा जी डूबा जाता है, मैं हाथ जोड़ती हूँ। इसके बाद वाली चिट्ठी शीघ्र पढ़िये जिसमें मालूम हो कि उस विश्वासघाती की मिठाई का क्या नतीजा निकला ।

सब—हाँ-हाँ, यहाँ पर हम लोग नहीं रुक सकते, शीघ्र पढ़िये ।

तेजसिंह—मैं पढ़ता हूँ—

"श्रीमान प्यारे बन्धु हेलासिंह,

खुशी मनाइये कि मेरी मिठाई ने लक्ष्मीदेवी की माँ, लक्ष्मीदेवी के छोटे भाई और दो लौंडियों का काम तमाम कर दिया। बलभद्रसिंह और उसकी तीनों लड़कियों ने मिठाई नहीं खाई थी, इसलिए बच गयीं। खैर, फिर सही, जाते कहाँ हैं।

वही—भूत।"

इस चिट्ठी ने तो अन्धेर कर दिया। कोई भी ऐसा नहीं था जिसकी आँख से आँसू न निकल रहे हों। कमलिनी और लाड़िली रोने लगीं, और लक्ष्मीदेवी तो चिल्ला कर बोली, "हाय, इस समय मुझे लड़कपन की सब बातें याद आ रही हैं। वह समाँ मेरी आँखों के सामने घूम रहा है। मेरे घर में वैद्यों की धूम मची हुई थी, मेरी प्यारी माँ अपने लड़के की लाश पर पछाड़ें खा रही थी, अन्त में वह भी मर गई। हम लोग रो-रोकर लाश के साथ चिपटते थे और हमारा बाप हम लोगों को खींच-खींचकर अलग करता था। हाय ! क्या दुनिया में कोई ऐसी सजा है जो इस बात का पूरा बदला कहला सके !"

किशोरी—(रोकर) कोई नहीं, कोई नहीं !

कमलिनी—हाय ! मेरे कलेजे में दर्द होने लगा ! किस दुष्ट का जीवनचरित्र मैं सुन रही हूँ ! बस अब मुझमें सुनने की सामर्थ्य नहीं रही, (रोकर) ओफ, इतना जुल्म ! इतना अन्धेर !

भैरोंसिंह—बस रहने दीजिए, अब इस समय आगे न पढ़िये।

तेजसिंह—इस समय मैं आगे पढ़ ही नहीं सकता।

तेजसिंह ने कागज का मुट्ठा लपेट कर रख दिया और सभी को दिलासा और तसल्ली देने लगे। तेजसिंह का इशारा पाकर भैरोंसिंह और देवीसिंह कई तीतर और बटेर का शिकार कर लाये और उसका कबाब तथा शोरबा बनाने लगे जिसमें सभी को खिला-पिलाकर शान्त करें।

आज खाने-पीने की इच्छा किसी की भी न थी, मगर तेजसिंह के समझाने-बुझाने से सभी ने कुछ खाया और जब शान्त हुए तो तेजसिंह ने कहा, "अब हमको तालाब वाले मकान में चलना चाहिए।"

बलभद्रसिंह—हाँ, अब इस जगह रहना ठीक न होगा, मकान में चलकर जो-कुछ पढ़ना या देखना हो, करिएगा।

कमलिनी—मेरी भी यही राय है। मैं देवीसिंहजी से कह चुकी हूँ कि यदि मैं उस मकान में रहती तो दुश्मन हमारा कुछ भी न बिगाड़ सकते और तालाब को पाट देना तो असम्भव ही था। खैर, अब भी मैं बिना परिश्रम के उस तालाब की सफाई कर सकती हूँ।

इतना कहकर कमलिनी ने तालाब वाले मकान का बहुत-सा भेद तेजसिंह को बताया और जिस तरह से तालाब की सफाई हो सकती थी वह भी कहा, जो कि हम ऊपर भी लिख आये हैं। अन्त में सभी ने निश्चय कर लिया कि घण्टे भर के अन्दर इस जगह को छोड़ देना और तालाब वाले मकान में चले जाना चाहिए।

2

सुबह का सुहावना समय है। पहले घण्टे की धूप ने ऊँचे-ऊँचे पेड़ों की टहनियों, मकानों के कँगूरों और पहाड़ों की चोटियों पर सुनहली चादर बिछा दी है। मुसाफिर लोग दो-तीन कोस की मंजिल मार चुके हैं। तारासिंह और श्यामसुन्दरसिंह अपने साथ भगवनिया और भूतनाथ को लिए हुए तालाब वाले तिलिस्मी मकान की तरफ जा रहे हैं। उनके दोनों साथी अर्थात् भगवनिया और भूतनाथ अपने-अपने गम में सिर नीचा किए चुपचाप पीछे-पीछे जा रहे हैं। भूतनाथ के चेहरे पर उदासी और भगवनिया के चेहरे पर मुर्दनी छाई हुई है। कदाचित भूतनाथ के चेहरे पर भी मुर्दनी छाई हुई होती या वह इन लोगों में न दिखाई देता यदि उसे इस बात की खबर होती कि तारा की किस्मत वाली गठरी तेजसिंह के हाथ लग गई है और तारा तथा बलभद्रसिंह का भेद खुल गया है। वह तो यही सोचे हुए था कि तारा अपने बाप को नहीं पहचानेगी, बलभद्रसिंह अपने को छिपावेगा और देवीसिंह मेरे भेदों को गुप्त रखने का उद्योग करेगा। बस इतनी ही बात थी जिससे वह एकदम हताश नहीं हुआ था और इन लोगों के साथ कमलिनी से मिलने के लिए चुपचाप सिर झुकाये हुए कुछ सोचता-विचारता जा रहा था। वह अपनी धुन में ऐसा डूबा हुआ था कि उसे अपने चारों तरफ की कुछ भी खबर न थी और उसकी वह धुन उस समय टूटी जब तारासिंह ने कहा, "वह देखो, तालाब वाला तिलिस्मी मकान दिखाई देने लगा। कई आदमी भी नजर पड़ते हैं। मालूम पड़ता है कि उसमें कमलिनी का डेरा आ गया। अगर मेरी निगाह धोखा नहीं देती तो मैं कह सकता हूँ कि यह चबूतरे के दक्षिणी कोने पर खड़े होकर जो इसी तरफ देख रहे हैं,

हमारे चाचा तेजसिंह हैं !"

तेजसिंह के नाम ने भूतनाथ को चौंका दिया और उसके दिल में एक नया शक पैदा हुआ। इसके साथ ही उसके चेहरे की रंगत ने पुनः पल्टा खाया अर्थात् जर्दी के बाद सफेदी ने अपना कुदरती रंग दिखाया और भूतनाथ का काँपता हुआ पैर धीरे-धीरे आगे की तरफ बढ़ने लगा। जब ये लोग मकान के पास पहुँच गये तो भूतनाथ ने देखा कि भैरोंसिह और देवीसिंह भी अन्दर से निकल आये हैं और नफरत की निगाह से उसे देख रहे हैं। जब ये लोग तालाब के किनारे पहुँचे तो भगवनिया ने देखा कि तालाब की मिट्टी न मालूम कहाँ गायब हो गयी है, तालाब पूरा स्वच्छ है, और उसमें मोती की तरह साफ जल भरा हुआ दिखाई देता है। वह बड़े आश्चर्य से तालाब के जल और उसके बीच वाले मकान को देखने लगी।

भैरोंसिह उन लोगों को ठहरने का इशारा करके मकान के अन्दर गया और थोड़ी देर बाद बाहर निकला, इसके बाद डोंगी खोलकर किनारे पर ले गया और चारों आदमियों को सवार करके मकान के अन्दर ले आया।

श्यामसुन्दरसिंह और भगवानी को विश्वास था कि यह मकान हर तरह के सामान से खाली होगा, यहाँ तक कि चारपाई, बिछावन और पानी पीने के लिए लोटा-गिलास तक न होगा, मगर नहीं, इस समय यहाँ जो कुछ सामान उन्होंने देखा, वह बनिस्बत पहले के बेशकीमत और ज्यादा था। इसका कारण यह था कि दुश्मन लोग इस मकान में से वही चीजें ले गये थे जिन्हें वे लोग देख और पा सकते थे, मगर इस मकान के तरखानों और गुप्त कोठरियों का हाल उन्हें मालूम न था जिनमें एक से एक बढ़ के उम्दा चीजें तथा बेशकीमत असबाब मकान सजाने के लिए भरा हुआ था और जिन्हें इस समय कमलिनी ने निकालकर मकान को पहले से ज्यादा खूबसूरती के साथ सजा डाला था और भागे हुए आदमियों में से दो सिपाही और दो नौकर भी आ गये थे जो भाग जाने के बाद भी छिपे-छिपे इस मकान की खोज-खबर लिया करते थे।

तारासिंह, श्यामसुन्दरसिंह, भगवनिया और भूतनाथ उस कमरे में पहुंचाए गए जिसमें किशोरी, कामिनी, लक्ष्मीदेवी, कमलिनी, लाड़िली और बलभद्रसिंह वगैरह बैठे हुए थे और किशोरी, कामिनी और लक्ष्मीदेवी सुन्दर मसहरियों पर लेटी हुई थीं।

बलभद्रसिंह को असली सूरत में देखते ही भूतनाथ चौंका और घबड़ाकर दो कदम पीछे हटा, मगर भैरोंसिह ने जो उसके पीछे था, उसे रोक लिया। बलभद्रसिंह की असली सूरत देखकर भूतनाथ को विश्वास हो गया कि उसका सारा भेद खुल गया और इस बारे में उस समय तो कुछ भी शक न रहा जब उस कागज के मुट्ठे और पीतल की सन्दूकची को भी कमलिनी के सामने देखा जो भूतनाथ की विचित्र जीवनी का पता दे रहे थे, जिस समय भूतनाथ की निगाह उनके चेहरे पर गौर के साथ पड़ी जिनसे रंज और नफरत साफ जाहिर होती थी उस समय उसके दिल में एक हौल-सा पैदा हो गया और उसकी सूरत देखने वालों को ऐसा मालूम हुआ कि वह थोड़ी ही देर में पागल हो जायगा क्योंकि उसके हवास में फर्क पड़ गया था और वह बड़ी ही बेचैनी के साथ चारों तरफ देखने लगा था।

बलभद्रसिंह—भूतनाथ, मैं अफसोस करता हूँ कि तुम्हारे भेदों को कुछ दिन तक और छिपा रखने का मौका मुझे न मिला !

देवीसिंह—जिस गठरी में तारा की किस्मत बन्द थी और जिसे तुम अपने सामने देख रहे हो, वह वास्तव में तेजसिंह के कब्जे में आ गई थी।

बलभद्रसिंह—जिस नकाबपोश ने तुम्हारे सामने मुझे पराजित किया था, वह तेजसिंह थे और इस समय तुम्हारी बगल में खड़े हैं। हैं-हैं ! देखो, सम्हालो ! पागल मत बनो।

भूतनाथ—(लड़खड़ाई हुई आवाज से) ओह ! उस औरत को धोखा हुआ ! उसने नकाबपोश को वास्तव में नहीं पहचाना !

भूतनाथ पागलों की तरह हाथ-मुँह फैला और आँखें फाड़-फाड़कर चारों तरफ देखने लगा और फिर चक्कर खाकर जमीन पर गिरने के साथ ही बेहोश हो गया।

तेजसिंह—बुरे कामों का यही नतीजा निकलता है।

देवीसिंह—इससे कोई पूछे कि ऐसे-ऐसे खोटे कर्म करके दुनिया में तूने क्या मजा पाया ? मैं समझता हूँ, अब या तो यह अपनी जान दे देगा या यहाँ से भाग जाना पसन्द करेगा।

बलभद्रसिंह—हाँ, यदि इसकी एक बहुत ही प्यारी चीज मेरे कब्जे में न होती तो बेशक यह अपनी जान दे देता या भाग ही जाता। मगर अब यह ऐसा नहीं कर सकता है।

कमलिनी—वह कौन-सी चीज है ?

बलभद्रसिंह—जल्दी न करो, उसका हाल भी मालूम हो जायगा।

तेजसिंह—खैर, आप यह तो बताइए कि इसके साथ क्या सलूक करना चाहिए ?

बलभद्रसिंह—कुछ नहीं, इसे इसी तरह उठाकर तालाब के बाहर रख आओ और छोड़ दो, जहाँ जी चाहे चला जाय।

कमलिनी—(तेजसिंह से) क्या आपको मालूम है कि इसका लड़का नानक आज कल कहाँ है ?

तेजसिंह—मुझे नहीं मालूम।

किशोरी—इसका केवल एक ही लड़का है ?

तेजसिंह—क्या तुम्हें अभी तक किसी ने नहीं कहा कि भूतनाथ की पहली स्त्री से एक लड़की भी है जिसका नाम कमला है और जो तुम्हारी प्यारी सखी है ? हाय, मैं अफसोस करता हूँ कि इस दुष्ट का हाल सुनकर उस बेचारी को बड़ा ही दुःख होगा। मैं सच कहता हूँ कि कमला ऐसी लायक लड़की बहुत कम देखने-सुनने में आवेगी।

इनना सुनते ही भैरोंसिंह के चेहरे पर खुशी की निशानी दिखाई देने लगी जिसे उसने बड़ी होशियारी से तुरन्त दबा दिया और किशोरी सिर नीचा करके न मालूम क्या सोचने लगी।

तेजसिंह—(बलभद्रसिंह से) अच्छा, तो यह निश्चय हो गया कि इसे तालाब के बाहर छोड़ आया जाय ?

बलभद्रसिंह—हाँ, मेरी राय में तो ऐसा ही होना चाहिए।

कमलिनी—क्या इसे कुछ भी सजा न दी जायगी? इसका तो इसी समय सिर उतार लेना चाहिए।

बलभद्रसिंह—(ताज्जुब से कमलिनी की तरफ देख के) तुम ऐसा कहती हो? मुझे आश्चर्य होता है। शायद गम ने तुम्हारी अक्ल में फर्क डाल दिया है। इसे मार डालने से क्या हमारा बदला पूरा हो जायगा?

कमलिनी ने शरमा कर सिर नीचा कर लिया और तेजसिंह का इशारा पाकर भैरोंसिंह और देवीसिंह ने भूतनाथ को तालाब के बाहर पहुँचा दिया। तारासिंह और श्यामसुन्दरसिंह आश्चर्य से सभी का मुँह देख रहे थे कि यह क्या मामला है, क्योंकि इधर जो कुछ गुजरा था उसका हाल उन्हें भी मालूम न था।

ऊपर लिखे कामों से छुट्टी पाकर तेजसिंह ने तारासिंह को एक किनारे ले जाकर वह हाल सुनाया जो इधर गुजर चुका था और फिर अपने ठिकाने आ बैठे। इसके बाद कमलिनी ने बलभद्रसिंह से कहा—"मेरा जी इस बात को जानने के लिए बेचैन हो रहा है कि इतने दिनों तक आप कहाँ रहे, किस स्थान में रहे और क्या करते रहे? आप पर क्या-क्या मुसीबतें आयीं और हम लोगों का हाल जानकर भी आपने इतने दिनों तक हम लोगों से मुलाकात क्यों नहीं की? क्या आप नहीं जानते थे कि हमारी लड़कियाँ कहाँ और किस मुसीबत में पड़ी हुई हैं?"

बलभद्रसिंह—इन सब बातों का जवाब मिल जायगा, जरा सब्र करो और घबराओ मत। पहले उन चिट्ठियों को सुन जाओ, फिर इसके बाद जो कुछ तुम्हें पूछना हो पूछना और मुझे भी जो कुछ तुम्हारे विषय में मालूम नहीं है, पूछूंगा। (तेजसिंह से) यदि इस समय कोई आवश्यक काम न हो तो आप उन चिट्ठियों को पढ़िए या पढ़ने के लिए किसी को दीजिए!

तेजसिंह—नहीं-नहीं, (कागज के मुट्ठे की तरफ देख के) इन चिट्ठियों को मैं स्वयं पढ़ूंगा और इस समय हम लोग सब कामों से निश्चिन्त भी हैं। हाँ, तारासिंह को यदि कुछ···

तारा—नहीं, मुझे कोई काम नहीं है। केवल भगवनिया के विषय में पूछना है कि इसके साथ क्या सलूक किया जाय?

तेजसिंह—इसका जवाब कमलिनी के सिवाय और कोई नहीं दे सकता।

यह कह उन्होंने कमलिनी की तरफ देखा।

कमलिनी—(भैरोंसिंह से) आपको यहाँ का सब हाल मालूम हो चुका है। इसलिए आप ही तहखाने तक जाने की तकलीफ उठाइये।

"बहुत अच्छा" कहकर भैरोंसिंह उठ खड़ा हुआ और भगवानी की कलाई पकड़े हुए बाहर चला गया। कमलिनी ने श्यामसुन्दरसिंह से कहा, "अब तुम्हें भी यहाँ न ठहरना चाहिए, बस तुरन्त चले जाओ और हमारे आदमियों को जो दुश्मन के सताने से इधर-उधर भाग गये हैं, जहाँ तक हो सके ढूंढ़ो तथा हमारे यहाँ आ जाने की खुशखबरी सुनाओ। बस, चले ही जाओ, यहाँ अटकने की कोई जरूरत नहीं।"

श्यामसुन्दरसिंह चाहता था कि वह यहाँ रहे और उस घटनाओं का हाल पूरा-पूरा जाने जो बलभद्रसिंह और भूतनाथ से सम्बन्ध रखती हैं, क्योंकि बलभद्रसिंह को देख के भूतनाथ की जो हालत हुई थी उसे वह अपनी आँखों से देख चुका था और उस का सबब जानने के लिए बहुत ही बेचैन भी था—मगर कमलिनी की आज्ञा सुनकर उसका अथाह उत्साह टूट गया और वहाँ से चले जाने के लिए मजबूर हुआ। वह अपने दिल में समझे हुए था कि उसने भगवानी को पकड़ के बड़ा काम किया है, इसके बदले में कमलिनी उससे खुश होगी और उसकी तारीफ करके उसका दर्जा बढ़ावेगी, मगर वे बातें तो दूर ही रहीं कमलिनी ने उसे वहाँ से चले जाने के लिए कहा। इस बात का श्यामसुन्दरसिंह को बहुत रंज हुआ, मगर क्या कर सकता था। लाचार मुँह बना कर पीछे की तरफ मुड़ा, इसके साथ ही देवीसिंह भी कमलिनी का इशारा पाकर उठे और श्यामसुन्दरसिंह को तालाब के बाहर पहुँचाने को चले।

जब श्यामसुन्दरसिंह को पहुँचाने के लिए देवीसिंह तालाब के बाहर गए तो उन्होंने देखा कि भूतनाथ जिसे बेहोशी की अवस्था में तालाब के बाहर पहुँचाया गया था, अब होश में आकर तालाब के ऊपर वाली सीढ़ी पर चुपचाप बैठा हुआ है।

देवीसिंह को इस पार आते हुए देख कर वह उठा और पास आकर देवीसिंह की कलाई पकड़ कर बोला, "मैं जो कुछ कहना चाहता हूँ उसे सुन लो तब यहाँ से जाना।"

देवीसिंह ने कहा, "बहुत अच्छा कहो मैं सुनने के लिए तैयार हूँ। (श्यामसुन्दरसिंह से) तुम क्यों खड़े हो गये? जाओ, जो काम तुम्हारे सुपुर्द हुआ है उसे करो।" देवीसिंह की बात सुन कर श्यामसुन्दरसिंह को और भी रंज हुआ और वह मुँह बना कर चला गया।

देवीसिंह—(भूतनाथ से) अब जो कुछ तुम्हें कहना हो कहो।

भूतनाथ—पहले आप यह बताइये कि मुझे इस बेइज्जती के साथ बँगले के बाहर क्यों निकाल दिया?

देवीसिंह—क्या तुम स्वयम् इस बात को नहीं सोच सके?

भूतनाथ—मैं क्योंकर समझ सकता था? हाँ इतना मैंने अवश्य देखा कि सभी की जो निगाह मुझ पर पड़ रही थी वह रंज और घृणा से खाली न थी, मगर कुछ सबब मालूम न हुआ।

देवीसिंह—क्या तुमने बलभद्रसिंह को नहीं देखा? क्या उस गठरी पर तुम्हारी निगाह नहीं गई जो तेजसिंह के सामने रक्खी हुई थी? और क्या तुम नहीं जानते कि उस कागज के मुट्ठे में क्या लिखा हुआ है?

भूतनाथ—तब नहीं तो अब मैं इतना समझ गया कि उस आदमी ने, जो अपने को बलभद्रसिंह बताता है, मेरी चुगली की होगी और मेरे झूठे दोष दिखला कर मुझ पर बदनामी का धब्बा लगाया होगा—मगर मैं आपको होशियार कर देता हूँ कि वह वास्तव में बलभद्रसिंह नहीं है बल्कि पूरा जालिया और धूर्त है, निःसन्देह वह आप लोगों को धोखा देगा। यदि मेरी बातों का विश्वास न हो तो मैं इस बात के लिए तैयार हूँ

कि आप लोगों में से कोई एक आदमी मेरे साथ चले, मैं असली बलभद्रसिह को जो वास्तव में लक्ष्मीदेवी का बाप है और अभी तक कैदखाने में पड़ा हुआ है दिखला दूंगा। मैं सच कहता हूँ कि उस कागज के मुट्ठे में जो कुछ लिखा हुआ है यदि उसमें किसी तरह की मेरी बुराई है तो बिल्कुल झूठ है।

देवीसिंह—मैं केवल तुम्हारे इतना कहने पर क्योंकर विश्वास कर सकता हूँ? मैं तुम्हारे अक्षर अच्छी तरह पहचानता हूँ जो उस कागज के मुट्ठे की लिखावट से बखूबी मिलते हैं। खैर इसे भी जाने दो, मैं यह पूछता हूँ कि बलभद्रसिंह को वहाँ देखकर तुम इतना डरे क्यों? यहाँ तक कि डर ने तुम्हें बेहोश कर दिया!

भूतनाथ—यह तो तुम जानते ही हो कि मैं उससे डरता हूँ, मगर इस सबब से नहीं डरता कि वह कमलिनी का बाप बलभद्रसिंह है, बल्कि उससे डरने का कोई दूसरा ही सबब है जिसके विषय में मैं कह चुका हूँ कि आप मुझसे न पूछेंगे और यदि किसी तरह मालूम हो जाय तो बिना मुझसे पूछे किसी पर प्रकट न करेंगे।

देवीसिंह—अच्छा इस बात का जवाब तो दो कि अगर तुम्हें यह मालूम था कि कमलिनी का बाप किसी जगह कैद है और तारा वास्तव में लक्ष्मीदेवी है जैसा कि तुम इस समय कह रहे हो तो आज तक तुमने कमलिनी को इस बात की खबर क्यों न दी? या यह बात क्यों न कही कि 'मायारानी वास्तव में तुम्हारी बहिन नहीं है।'

भूतनाथ—इसका सबब यही था कि असली बलभद्रसिंह ने जो अभी तक कैद है और जिसके छुड़ाने की मैं फिक्र कर रहा हूँ मुझसे कसम ले ली है कि जब तक वे कैद से न छूटें, मैं उनके और लक्ष्मीदेवी के विषय में किसी से कुछ न कहूँ और वास्तव में अगर मुझ पर इतनी विपत्ति न आ पड़ती तो मैं किसी से कहता भी नहीं। मुझे इस बात का बड़ा ही दुःख है कि मैं तो अपनी जान हथेली पर रखकर आप लोगों का काम करूँ और आप लोग बिना समझे-बूझे और असल बात को बिना जाँचे दूध की मक्खी की तरह मुझे निकाल फेंकें। क्या मुरौवत नेकी और धर्म इसी को कहते हैं? क्या यही जवाँमर्दी का काम है? आखिर मुझ पर इलजाम तो लग ही चुका था, मगर मेरी और उस दुष्ट की, जो कमलिनी का बाप बन के मकान के अन्दर बैठा हुआ है, दो-दो बातें तो हो लेने देते।

भूतनाथ की बात सुनकर देवीसिंह को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और वह कुछ देर तक सिर नीचा किए हुए सोचते रहे, इसके बाद कुछ याद करके बोले, "अच्छा मेरी एक बात का जवाब दो।"

भूतनाथ—पूछिए।

देवीसिंह—यदि तुम्हें उस कागज के मुट्ठे से कुछ डर न था और वास्तव में जो कुछ उस मुट्ठे में तुम्हारे खिलाफ लिखा हुआ है वह झूठ है जैसा कि तुम अभी कह चुके हो तो तुम उस गठरी को देख के उस समय क्यों डरे थे जब बलभद्रसिंह ने रात के समय उस जंगल में तुम्हें वह गठरी दिखाई थी और पूछा था कि यदि कहो तो भगवानी के सामने इसे खोलूं? मैं सुन चुका हूँ कि उस समय इस गठरी को देखकर तुम काँप गये थे और नहीं चाहते थे कि भगवानी के सामने वह खोली जाय!

भूतनाथ—ठीक है, मगर मैं उस कागज के मुट्ठे को याद करके नहीं डरा था बल्कि मुझे इस बात का गुमान भी न था कि गठरी में कोई कागज का मुट्ठा भी है, सच तो यह है कि मैं उस पीतल की सन्दूकड़ी को याद करके डरा था जो उस समय तेजसिंह से सामने पड़ी हुई थी। मैं यही समझे हुए था कि उस गठरी के अन्दर केवल एक पीतल की सन्दूकड़ी है और वास्तव में उसकी याद से ही मैं काँप जाता हूँ। उसकी सूरत देखने से जो हालत मेरी होती है सो मैं ही जानता हूँ, मगर साथ ही इसके मैं यह भी कहे देता हूँ कि उस पीतल की सन्दूकड़ी के अन्दर जो चीज है उससे कमलिनी, तारा और लाड़िली या असली बलभद्रसिंह का कोई सम्बन्ध नहीं है। इसका विश्वास आपको उसी समय हो जायगा जब वह सन्दूकड़ी खोली जायगी।

भूतनाथ की बातों ने देवीसिंह को चक्कर में डाल दिया। वह कुछ भी नहीं समझ सकते थे कि वास्तव में क्या बात है। देवीसिंह ने जो बातें भूतनाथ से पूछीं उनका जवाब भूतनाथ ने बड़ी खूबी के साथ दिया, न तो कहीं अटका और न किसी तरह का शक रहने दिया और ये ही बातें थीं जिन्होंने देवीसिंह को तरद्दुद, परेशानी और आश्चर्य में डाल दिया था। बहुत देर गौर करने के बाद देवीसिंह ने पुनः भूतनाथ से पूछा।

देवीसिंह—अच्छा अब तुम क्या चाहते हो सो कहो!

भूतनाथ—मैं केवल इतना ही चाहता हूँ कि आप मुझे इस मकान में ले चलिए और तेजसिंह तथा तीनों बहिनों से कहिए कि मेरे मुकदमे की पूरी-पूरी जाँच करें, आप लोगों के आगे निर्दोष होने के विषय में जो कुछ मैं सबूत दूँ उसे अच्छी तरह सुनें समझें और देखें तथा इसके बाद जो दगाबाज ठहरे उसे सजा दें, बस।

देवीसिंह—अच्छा, मैं जाकर तेजसिंह और कमलिमी से ये बातें कहता हूँ, फिर जैसा वे कहेंगे किया जायगा।

भूतनाथ—तो आप एक काम और कीजिए।

देवीसिंह—वह क्या?

इसके जवाब में भूतनाथ ने अपने ऐयारी के बटुए में से एक तस्वीर निकाल कर देवीसिंह के हाथ में दी और कहा, "आप यह तस्वीर लक्ष्मीदेवी (तारा) को दिखाएँ और पूछें कि तुम्हारा बाप यह है या वह दगाबाज जो सामने बैठा हुआ अपने को बलभद्रसिंह बताता है?"

देवीसिंह ने बड़े गौर से उस तस्वीर को देखा। यह तस्वीर पूरी तो नहीं मगर फिर भी बलभद्रसिंह की मूरत से बहुत-कुछ मिलती थी। भूतनाथ की बातों ने और उसके सवाल-जवाब के ढंग ने देवीसिंह के दिल पर मामूली असर पैदा नहीं किया था, बल्कि सच तो यह है कि उसने थोड़ी देर के लिए देवीसिंह की राय बदल दी थी। देवीसिंह ने सोचा कि ताज्जुब नहीं भूतनाथ बहुत-कुछ सच ही कहता हो और बलभद्रसिंह वास्तव में असली बलभद्रसिंह न हो क्योंकि जहाँ तक मैंने देखा है बलभद्रसिंह के मिलने में जितना जोश कमलिनी, लाड़िली और तारा के दिल में पैदा हुआ था उतना बलभद्रसिंह के दिल में अपनी तीनों लड़कियों को देखकर पैदा नहीं हुआ, यह एक ऐसी बात है

जो मेरे दिल में शक पैदा कर सकती है, मगर उस कागज के मुट्ठे में जितनी चिट्ठियाँ भूतनाथ के हाथ की लिखी कही जाती हैं वे अवश्य भूतनाथ के हाथ की लिखी हुई हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं क्योंकि जब मैंने भूतनाथ से कहा था कि तुम्हारे अक्षर इन चिट्ठियों के अक्षरों से मिलते हैं तो इस बात का कोई जवाब उसने नहीं दिया अस्तु उन दुष्ट कर्मों का करने वाला तो अवश्य भूतनाथ है मगर क्या यह बलभद्रसिंह भी वास्तव में असली बलभद्रसिंह नहीं है? अजब तमाशा है, कुछ समझ में नहीं आता कि क्या निश्चय किया जाय।

इन सब बातों को सोचते हुए देवीसिंह वहाँ से रवाना हुए और डोंगी पर सवार हो मकान के अन्दर गए जहाँ तेजसिंह उस कागज के मुट्ठे को हाथ में लिए हुए देवीसिंह के वापस आने की राह देख रहे थे।

तेजसिंह—देवीसिंह, तुमने इतनी देर क्यों लगाई? मैं कब से राह देख रहा हूँ कि तुम आ जाओ तो इस मुट्ठे को खोलूं।

देवीसिंह—हाँ-हाँ, आप पढ़िये, मैं भी आ गया।

तेजसिंह—मगर यह तो कहो कि तुम्हें इतनी देर क्यों लगी?

देवीसिंह—भूतनाथ ने मुझे रोक लिया और कहा कि पहले मेरी बातें सुन लो तब यहाँ से जाओ।

बलभद्रसिंह—क्या भूतनाथ तालाब के बाहर अभी तक बैठा है?

देवीसिंह—हाँ, अभी तक बैठा है और बैठा रहेगा।

बलभद्रसिंह—सो क्यों, क्या कहता है?

देवीसिंह—वह कहता है कि मुझे कमलिनी ने बिना समझे व्यर्थ निकाल दिया, उन्हें चाहिए था कि नकली बलभद्रसिंह के सामने मेरा इन्साफ करतीं।

बलभद्रसिंह—नकली बलभद्रसिंह कैसा?

देवीसिंह—वह आपको नकली बलभद्रसिंह बताता है और कहता है कि असली बलभद्रसिंह अभी तक एक जगह कैद हैं, अगर किसी को शक हो तो मुझ से सवाल-जवाब कर ले।

बलभद्रसिंह—नकली और असली होने के सबूत की जरूरत है या सवाल-जवाब करने की?

देवीसिंह—ठीक है मगर उसने आपको बुलाया है और कहा है कि बलभद्रसिंह मेरी एक बात आकर सुन जाय फिर जो कुछ भी उनके जी में आवे करे।

बलभद्रसिंह—मारो कम्बख्त को, मैं अब उसकी बातें सुनने के लिए क्यों जाने लगा?

देवीसिंह—क्या हर्ज है अगर आप उसकी दो बातें सुन लें, कदाचित् कोई नया रहस्य ही मालूम हो जाय!

बलभद्रसिंह—नहीं, मैं उसके पास न जाऊँगा।

तेजसिंह—तो भूतनाथ को इसी जगह क्यों न बुला लिया जाय?

कमलिनी—हाँ, मैं भी यही उचित समझती हूँ।

देवीसिंह—नहीं-नहीं, इससे यह उत्तम होगा कि बलभद्रसिंह खुद उससे मिलने के लिए तालाब पर जायें।

इतना कह कर देवीसिंह ने तेजसिंह की तरफ देखा और कोई गुप्त इशारा किया।

बलभद्रसिंह—उसका इस मकान में आना मुझे भी पसन्द नहीं ! अच्छा मैं स्वयं जाता हूँ, देखूँ वह नालायक क्या कहता है।

तेजसिंह—अच्छी बात है, आप भैरोंसिंह को अपने साथ लेते जाइये।

बलभद्रसिंह—सो क्यों ?

देवीसिंह—कौन ठीक कम्बख्त चोट कर बैठे, आखिर गम और डर ने उसे पागल तो बना ही दिया है।

इतना कहकर देवीसिंह ने फिर तेजसिंह की तरफ देखा और इशारा किया जिसे सिवाय तेजसिंह के और कोई नहीं समझ सकता था।

बलभद्रसिंह—अजी, उस कम्बख्त गीदड़ में इतनी हिम्मत कहाँ जो मेरा मुकाबला करे !

तेजसिंह—ठीक है, मगर भैरोंसिंह को साथ लेकर जाने में हर्ज भी क्या है ! (भैरोंसिंह से) जाओ जी भैरों, तुम इनके साथ जाओ !

लाचार भैरोंसिंह को साथ लेकर बलभद्रसिंह बाहर चला गया। इसके बाद कमलिनी ने देवीसिंह से कहा, "मुझे मालूम होता है कि आपने मेरे पिता को जबर्दस्ती भूतनाथ के पास भेजा है।"

देवीसिंह—हाँ, इसलिए कि ये थोड़ी देर के लिए अलग हो जायँ तो मैं एक अनूठी बात आप लोगों से कहूँ।

कमलिनी—(चौंक कर) क्या भूतनाथ ने कोई नई बात बताई है ?

देवीसिंह—हाँ भूतनाथ ने यह बात बहुत जोर देकर कही कि असली बलभद्रसिंह अभी तक कैद में है और यदि किसी को शक हो तो मेरे साथ चले मैं दिखला सकता हूँ। उसने बलभद्रसिंह की तस्वीर भी मुझे दी है और कहा है कि यह तस्वीर तीनों बहिनों को दिखाओ, वे पहिचानें कि असली बलभद्रसिंह यह है या वह।

लक्ष्मीदेवी ने हाथ बढ़ाया और देवीसिंह ने वह तस्वीर उसके हाथ पर रख दी।

तारा—(तस्वीर देख कर) आह ! यह तो मेरे बाप की असली तस्वीर है ! इस चेहरे में तो कोई ऐसा फर्क ही नहीं है जिससे पहचानने में कठिनाई हो। (कमलिनी की तरफ तस्वीर बढ़ा कर) लो बहिन, तुम भी देख लो, मैं समझती हूँ यह सूरत तुम्हें भी न भूली होगी।

कमलिनी—(तस्वीर देखकर) वाह ! क्या इस सूरत को अपनी जिन्दगी में कभी भूल सकती हूँ ! (देवीसिंह से) क्या भूतनाथ ने इसी सूरत को दिखाने का वादा किया है ?

देवीसिंह—हाँ, इसी को।

कमलिनी—तो क्या आपने पूछा नहीं कि तुम यह हाल पहले ही जानते थे, तो अब तक हम लोगों से क्यों न कहा ?

देवीसिंह—केवल यही नहीं बल्कि मैंने कई और बातें भी उससे पूछीं।

तेजसिंह—तुममें और भूतनाथ में जो-जो बातें हुईं सब कह जाओ।

वह तस्वीर एक-एक करके सभी ने देखी और तब देवीसिंह उन बातों को दोहरा गये जो उनके और भूतनाथ के बीच में हुई थीं। उनके सुनने से सभी को ताज्जुब हुआ और सभी कोई सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए।

कमलिनी—(तारा से)बहिन, बेशक तुम इस विषय में हम लोगों से बहुत ज्यादा गौर कर सकती हो, फिर भी इतना मैं कह सकती हूँ कि मेरे पिता में, जो भूतनाथ से मिलने गए हैं, और इस तस्वीर में बहुत ज्यादा फर्क नहीं है।

तारा—क्या कहूँ अक्ल कुछ काम नहीं करती ! मैं उन्हें अच्छी तरह पहचानती हूँ और इस तस्वीर को भी अच्छी तरह पहिचानती हूँ। इस तस्वीर को तो हम तीन में से जो देखेगा वही कहेगा कि हमारे पिता की है, मगर इनको केवल मैं ही पहचानती हूँ। जिस ज़माने में मैं और ये एक ही कैदखाने में थे, उसी जमाने में इनकी सूरत-शक्ल में बहुत फर्क पड़ गया था। (चौंककर) आह, मुझे एक पुरानी बात याद आई है जो इस भेद को तुरन्त साफ कर देगी !

कमलिनी—वह क्या ?

तारा—तुम्हें याद होगा कि जब हम छोटे-छोटे बच्चे थे और लाड़िली बहुत ही छोटी थी तो इसे उसे एक दफे बुखार आया था और वह बुखार बहुत ही कड़ा था यहाँ तक कि सरसाम हो गया था और उसी पागलपन में इसने पिताजी के मोढ़े पर दाँत से काट लिया था।

कमलिनी—ठीक है, अब मुझे भी यह बात याद पड़ी। इतने जोर से दाँत काटा था कि सेरों खून निकल गया था। जब तक वे हम लोगों के साथ रहे तब तक मैं बराबर उस निशान को देखती थी। मुझे विश्वास है कि सौ वर्ष बीत जाने पर भी वह दाग मिट नहीं सकता।

तारा—बेशक ऐसा ही था और हमने-तुमने मिलकर यह सलाह गाँठी थी कि दाँत काटने के बदले में लाड़िली को खूब मारेंगे। आखिर वह लड़कपन का जमाना ही तो था !

कमलिनी—हाँ और यह बात हमारी माँ को मालूम हो गई थी और उसने हम दोनों को समझाया था।

तारा की यह बात ऐसी थी कि इसने लड़कपन के जमाने की याद दिला दी और कमलिनी तथा लाड़िली को तो इस बात में कुछ भी शक न रहा कि तारा बेशक लक्ष्मी-देवी है मगर बलभद्रसिंह के विषय में जरूर कुछ शक हो गया और उनके विषय में दोनों ने यह निश्चय कर लिया कि बलभद्रसिंह भूतनाथ से मिलकर लौटें तो किसी बहाने से उनका मोढ़ा देखा जाय, साथ ही यह भी निश्चय कर लिया कि इसके बाद ही कोई आदमी भूतनाथ के साथ जाय और उस कैदी को भी देखे, बल्कि जिस तरह बने, उसे छुड़ाकर ले आवे।

इतने ही में तालाब के बाहर से कुछ शोरगुल की आवाज आई। तेजसिंह ने पता

लगाने के लिए तारासिंह को बाहर भेजा और तारासिंह ने लौटकर खबर दी कि भूतनाथ और बलभद्रसिंह में लड़ाई बल्कि यों कहना चाहिए कि जबरदस्त कुश्ती हो रही है।

यह सुनते ही कमलिनी, लाड़िली, देवीसिंह और तेजसिंह बाहर चले गए और देखा कि वास्तव में वे दोनों लड़ रहे हैं और भैरोंसिंह अलग खड़ा तमाशा देख रहा है। भूतनाथ और बलभद्रसिंह की लड़ाई तेजसिंह पहले ही देख चुके थे और उन्हें मालूम हो चुका था कि बलभद्रसिंह भूतनाथ से बहुत जबरदस्त है मगर इस समय जिस खूबी और बहादुरी के साथ भूतनाथ लड़ रहा था उसे देखकर तेजसिंह को ताज्जुब मालूम हुआ और उन्होंने तारासिंह की तरफ देख के कहा, "इस समय भूतनाथ बड़ी बहादुरी से लड़ रहा है। मैं समझता हूँ कि पहली दफे जब हमने भूतनाथ की लड़ाई देखी थी तो उस समय डर और घबराहट ने भूतनाथ की हिम्मत तोड़ दी थी मगर इस समय क्रोध ने उसकी ताकत दूनी कर दी है, लेकिन भैरों चुपचाप खड़ा तमाशा क्यों देख रहा है?"

देवीसिंह—जो हो, पर इस समय उचित है कि पार चल के इन लोगों को अलग कर देना चाहिए, डोंगी एक ही है जो इस समय उस पार गई हुई है।

कमलिनी—सब्र कीजिए, मैं दूसरी डोंगी ले आती हूँ, यहाँ डोंगियों की कमी नहीं है।

इतना कहकर कमलिनी चली गई और थोड़ी देर में मोटे और रोगनी कपड़े की एक तोशक उठा लाई जिसमें हवा भरने के लिए एक कोने पर सोने का पेंचदार मुँह बना हुआ था और उसी के साथ एक छोटी भाथी भी थी। तेजसिंह ने उसी भाथी से बात-की-बात में हवा भरके उसे तैयार किया और उस पर तेजसिंह और देवीसिंह बैठकर पार जा पहुँचे।

तेजसिंह और देवीसिंह को यह देखकर बड़ा ही ताज्जुब हुआ कि दोनों आदमियों का खंजर और ऐयारी का बटुआ भैरोंसिंह के हाथ में है और वे दोनों बिना हर्बे के लड़ रहे हैं। तेजसिंह ने बलभद्रसिंह को और देवीसिंह ने भूतनाथ को पकड़कर अलग किया।

बलभद्रसिंह—इस नालायक कमीने को इतना करने पर भी शर्म नहीं आती, चूल्लू-भर पानी में डूब नहीं मरता और मुकाबला करने के लिए तैयार होता है!

भूतनाथ—मैं कसम खाकर कहता हूँ कि यह असली बलभद्रसिंह नहीं है। वह बेचारा अभी तक कैद में है और इसी की बदौलत कैद में है। जिसका जी चाहे मेरे साथ चले, मैं दिखाने के लिए तैयार हूँ।

बलभद्रसिंह—साथ ही इसके यह भी क्यों नहीं कह देता कि चिट्ठियाँ भी तेरे हाथ की लिखी हुई नहीं हैं!

भूतनाथ—हाँ-हाँ, तेरे हाथ की लिखी वे चिट्ठियाँ भी मेरे पास मौजूद हैं, जिनकी बदौलत बेचारा बलभद्रसिंह अभी तक मुसीबत झेल रहा है।

यह कहकर भूतनाथ ने अपना ऐयारी का बटुआ लेने के लिए भैरोंसिंह की तरफ हाथ बढ़ाया।

3

जिस समय भूतनाथ ने बलभद्रसिंह से यह कहकर कि 'तेरे हाथ की लिखी हुई वे चिट्ठियाँ भी पास मौजूद हैं जिनकी बदौलत बेचारा बलभद्रसिंह अभी तक मुसीबत झेल रहा है' भैरोंसिंह की तरफ ऐयारी का बटुआ लेने को हाथ बढ़ाया। उस समय तेजसिंह को विश्वास हो गया कि बेशक भूतनाथ बलभद्रसिंह को दोषी ठहरावेगा मगर भैरोंसिंह के हाथ से ऐयारी का बटुआ लेने के बाद भूतनाथ ने कुछ सोचा और फिर तेजसिंह की तरफ देखकर कहा—

भूतनाथ—नहीं, इस समय मैं उन चिट्ठियों को नहीं निकालूंगा, क्योंकि यह झट इनकार कर जायगा और कह देगा कि ये चिट्ठियाँ मेरे हाथ की लिखी नहीं। आप लोगों को इसके हाथ की लिखावट देखने का मौका अभी तक नहीं मिला है।

बलभद्रसिंह—नही-नहीं, मैं इनकार न करूँगा, तू कोई चिट्ठी निकाल के दिखा तो सही।

भूतनाथ—हाँ-हाँ, मैं चिट्ठियाँ निकालूंगा, मगर इस थोड़ी देर में मैं इस बात को सोच चुका हूँ कि तेरे हाथ की लिखी हुई चिट्ठियों को निकालना इस समय की अपेक्षा उस समय विशेष लाभदायक होगा जब मैं तेजसिंह या किसी को ले जाकर असली बलभद्रसिंह का सामना करा दूंगा। (तेजसिंह से)कहिए आप मेरे साथ चलने के लिए तैयार हैं या किसी को साथ भेजेंगे ?

तेजसिंह—इस बात का फैसला कमलिनी या लक्ष्मीदेवी करेंगी। मैं तुमको पुनः इस मकान में चलने की आज्ञा देता हूँ, मगर साथ-ही-साथ यह भी कह देता हूँ कि देखो भूतनाथ, तुम बड़े-बड़े जुर्म कर चुके हो और इस समय भी अपने हाथ की लिखी हुई चिट्ठियों से इनकार नहीं करते, मगर अब मैं देखता हूँ कि तुम पुनः कोई नया पातक किया चाहते हो !

इतना कहकर तेजसिंह ने बलभद्रसिंह का हाथ पकड़ लिया और देवीसिंह तथा भैरोंसिंह को यह कहकर मकान की तरफ रवाना हुए कि "हम दोनों के जाने के बाद थोड़ी देर में जब हम कहला भेजें तो भूतनाथ को लेकर मकान में आना।"

बलभद्रसिंह को साथ लिए हुए तेजसिंह मकान के अन्दर आए और कमलिनी, किशोरी तथा तारा इत्यादि से सब हाल कहा।

तारा—इसमें कोई शक नहीं कि भूतनाथ झूठा, दगाबाज और परले सिरे का बेईमान हो चुका है।

कमलिनी—ठीक है (बलभद्रसिंह की तरफ देखके) आप बहुत सुस्त और पसीने-पसीने हो रहे हैं अतएव कपड़े उतारकर आराम कीजिए और ठण्डे होइए।

बलभद्रसिंह—हाँ, मैं भी यही चाहता हूँ।

इतना कहकर बलभद्रसिंह ने कपड़े उतार डाले। उस समय लोगों का ध्यान बलभद्रसिंह के मोढ़े की तरफ गया और सभी ने उस निशान को बहुत अच्छी तरह देखा

जिसे लक्ष्मीदेवी ने याद दिलाया था।

कमलिनी—(खुशी से बलभद्रसिंह का हाथ पकड़ के और लक्ष्मीदेवी की तरफ करके) देखो बहिन, यह पुराना निशान अभी तक मौजूद है। ऐसी अवस्था में मुझे कोई धोखा दे सकता है ? कभी नहीं।

बलभद्रसिंह—(हँसकर) इस निशान को लाड़िली अच्छी तरह पहचानती होगी क्योंकि इसी ने बीमारी की अवस्था में दाँत काटा था। (लम्बी साँस लेकर) अफसोस, आज और उस ज़माने के बीच में जमीन-आसमान का फर्क पड़ गया है। ईश्वर, तेरी महिमा कुछ कही नहीं जाती।

बलभद्रसिंह के मोढ़े का निशान देखकर कमलिनी, लाड़िली और लक्ष्मीदेवी का शक जाता रहा और इसके साथ-ही-साथ तेजसिंह इत्यादि ऐयारों को भी निश्चय हो गया कि यह बेशक कमलिनी, लक्ष्मीदेवी और लाड़िली का बाप है और भूतनाथ अपनी बदमाशी और हरामजदगी से हम लोगों को धोखे में डालकर दुःख दिया चाहता है।

थोड़ी देर तक बाप-बेटियों के बीच में वैसी ही मुहब्बत-भरी बातें होती रहीं जैसी कि बाप-बेटियों में होनी चाहिये और बीच-ही-बीच में ऐयार लोग भी हाँ, नहीं, ठीक है, बेशक इत्यादि करते रहे। इसके बाद इस विषय पर विचार होने लगा कि भूतनाथ के साथ इस समय क्या सलूक करना चाहिए। बहुत देर तक वाद-विवाद होने पर यह निश्चय ठहरा कि भूतनाथ को कैद कर रोहतासगढ़ भेज देना चाहिए, जहाँ उसके किए हुए दोषों की पूरी-पूरी तहकीकात समय मिलने पर हो जायगी, हाँ लगे हाथ उस कागज के मुट्ठे को अवश्य पढ़कर समाप्त कर देना चाहिए जिससे भूतनाथ की बदमाशियों तथा पुरानी घटनाओं का पता लगता है—तथा इन सब बातों से छुट्टी पाकर किशोरी, कामिनी लक्ष्मीदेवी, कमलिनी और लाड़िली को रोहतासगढ़ में चलकर आराम के साथ रहना चाहिए।

ऊपर लिखी बातों में जो तै हो चुकी थीं, कई बातें कमलिनी की इच्छानुसार न थीं मगर तेजसिंह की जिद से, जिन्हें सब लोग बड़ा बुजुर्ग और बुद्धिमान मानते थे, लाचार होकर उसे भी मानना ही पड़ा।

तेजसिंह उसी समय कमरे के बाहर चले गए और जफील बजाकर देवीसिंह तथा भैरोंसिंह का अपनी तरफ ध्यान दिलाया। जब दोनों ऐयारों ने इधर देखा तो तेजसिंह ने कुछ इशारा किया जिससे वे दोनों समझ गए कि भूतनाथ को कैदियों की तरह बेबस करके मकान के अन्दर ले जाने की आज्ञा हुई है। देवीसिंह ने यह बात भूतनाथ से कही, भूतनाथ ने कुछ सोचकर सिर झुका लिया और तब हथकड़ी पहनने के लिए अपने दोनों हाथ देवीसिंह की तरफ बढ़ाए। देवीसिंह ने हथकड़ी और बेड़ी से भूतनाथ को दुरुस्त किया और इसके बाद दोनों ऐयार उसे डोंगी पर चढ़ाकर मकान के अन्दर ले आए। इस समय भूतनाथ की निगाह फिर उस कागज के मुट्ठे और पीतल की सन्दूकड़ी पर पड़ी और पुनः उसके चेहरे पर मुर्दनी छा गई।

तेजसिंह—भूतनाथ, तुम्हारा कसूर अब हम सब लोगों को मालूम हो चुका है। यद्यपि यह कागज का मुट्ठा अभी पूरा-पूरा पढ़ा नहीं गया, केवल चार-पाँच चिट्ठियाँ ही

इसमें की पढ़ी गईं परन्तु इतने ही में सभी का कलेजा काँप गया है। निःसन्देह तुम बहुत कड़ी सजा पाने के अधिकारी हो, अतएव तुम्हें इस समय कैद करने का हुक्म दिया जाता है, फिर जो होगा देखा जायगा।

भूतनाथ—(कुछ सोचकर) मालूम होता है कि मेरी अर्जी पर किसी ने ध्यान नहीं दिया और इस बलभद्रसिंह को सभी ने सच्चा समझ लिया है।

तेजसिंह—बेशक बलभद्रसिंह सच्चे हैं और इस विषय में अब तुम हम लोगों को धोखा देने का उद्योग मत करो, हाँ यदि कुछ कहना है तो इन चिट्ठियों के बारे में कहो जो बेशक तुम्हारे हाथ की लिखी हुई हैं और तुम्हारे दोषों को आईने की तरफ साफ खोल रही हैं।

भूतनाथ—हाँ इन चिट्ठियों के विषय में भी मुझे बहुत-कुछ कहना है, परन्तु आप लोगों के सामने कुछ कहना उचित नहीं समझता क्योंकि आप लोग मेरा फैसला नहीं कर सकते।

तेजसिह—सो क्यों, क्या हम लोग तुम्हें सजा नहीं दे सकते?

भूतनाथ—यदि आप धर्म की लकीर को बेपरवाही के साथ लाँघने से कुछ भी संकोच कर सकते हैं तो मेरा कहना सही है, क्योंकि आप लोगों के मालिक राजा वीरेन्द्र-सिंह मेरे पिछले कसूरों को माफ कर चुके हैं और इधर राजा वीरेन्द्रसिंह का जो-जो काम मैं कर चुका हूँ उस पर ध्यान देने योग्य भी वे ही हैं। इसी से मैं कहता हूँ कि बिना मालिक के कोई दूसरा मेरे मुकद्दमे को नहीं देख सकता।

तेजसिंह—(कुछ देर तक सोचने के बाद) तुम्हारा यह कहना सही है। खैर जैसा तुम चाहते हो वैसा ही होगा और राजा साहब ही तुम्हारे मामले का फैसला करेंगे मगर मुजरिम को गिरफ्तार और कैद करना तो हम लोगों का काम है।

भूतनाथ—बेशक, कैद करके जहाँ तक जल्द हो सके, मालिक के पास ले जाना जरूर आप लोगों का काम है, मगर कैद में बहुत दिनों तक रखकर किसी को कष्ट देना आपका काम नहीं क्योंकि कदाचित् वह निर्दोष ठहरे जिसे आपने दोषी समझ लिया हो।

तेजसिंह—क्या तुम फिर भी अपने को बेकसूर साबित करने का उद्योग करोगे?

भूतनाथ—बेशक मैं बेकसूर बल्कि इनाम पाने के योग्य हूँ परन्तु आप लोगों के सामने जिन पर अक्ल की परछाईं तक नहीं पड़ी है मैं अब कुछ भी न कहूँगा। आप यह न समझिए मैं केवल इसी बुनियाद पर अपने को छुड़ा लूँगा कि महाराज ने मेरा कसूर माफ कर दिया है। नहीं, बल्कि मेरा मुकदमा कोई अनूठा रंग पैदा करके मेरे बदले में किसी दूसरे ही को कैदखाने की कोठरी का मेहमान बनावेगा।

तेजसिंह—खैर, मैं भी तुम्हें बहुत जल्द राजा वीरेन्द्रसिंह के सामने हाजिर करने का उद्योग करूँगा।

इतना कहकर तेजसिंह ने देवीसिंह की तरफ देखा और देवीसिंह ने भूतनाथ को तहखाने की कोठरी में ले जाकर बन्द कर दिया।

इस काम से छुट्टी पाकर तेजसिंह ने चाहा कि किसी ऐयार के साथ भूतनाथ और भगवनिया को आज ही रोहतासगढ़ रवाना करें और इसके बाद कागज के मुट्ठे

को पुनः पढ़ना आरम्भ करें मगर उन्हें शीघ्र ही मालूम हो गया कि कोई ऐयार तब तक भूतनाथ को लेकर रोहतासगढ़ जाना खुशी से पसन्द न करेगा जब तक भूतनाथ की जन्मपत्री पढ़ या सुन न लेगा। अस्तु तेजसिंह की यही इच्छा हुई कि लगे हाथ सब कोई रोहतासगढ़ चले चलें और जो कुछ हो वहाँ ही हो। अन्त में ऐसा ही हुआ अर्थात् तेजसिंह की आज्ञा सभी को माननी पड़ी।

4

नानक को तो हमने इस तरह भुला दिया जैसे अमीर लोग किसी से कुछ वादा करके उसे भुला देते हैं। आज अकस्मात् नानक की याद आयी है, अकस्मात् काहे, बल्कि यों कहना चाहिए कि यकायक आ पड़ने वाली आवश्यकता ने नानक की याद दिला दी है।

जमानिया प्रान्त से भागे हुए स्वार्थी नानक ने वहाँ से बहुत दूर जाकर अपना डेरा बसाया और यही सबब है कि आज मिथिलेश की अमलदारी में एक छोटे से शहर के मामूली मुहल्ले में मँगनी का मकान लेकर लापरवाही के साथ दिन बिताते हुए नानक को हम देखते हैं। यह शहर यद्यपि छोटा है मगर दो-तीन पढ़े-लिखे विद्यानुरागी रईसों और अमीरों के कारण जिन पर यहाँ की रिआया का बहुत बड़ा प्रेम है, अँगूठी का सुडौल नगीना हो रहा है।

नानक यद्यपि कंगाल नहीं था मगर बहुत ही खुदगर्ज और साथ-साथ कंजूस भी होने के कारण अपने को छिपाये हुए बहुत ही साधारण ढंग से रहा करता था, अर्थात् उसके घर में (कुत्ते-बिल्ली को छोड़) एक नौकर, एक मजदूरनी और एक उसकी जोरू के सिवाय जिसे वह न मालूम कहाँ से उठा लाया या ब्याह लाया था, और कोई भी नहीं रहता था। लोगों का कथन तो यही था कि नानक ने ब्याह कर अपनी गृहस्थी बसाई है मगर कई आदमियों को जो नानक के साथ ही साथ रामभोली के किस्से से भी अच्छी तरह जानकार थे, इस बात का विश्वास नहीं होता था।

नानक के लिए यह शहर नया नहीं है। जब से उसका नाम इस किस्से में आया है उसके पहले भी समय-समय पर कई दफे वह इस शहर में आकर रह चुका है। अब की दफे यद्यपि उसे इस शहर में आए बहुत दिन नहीं हुए मगर वह इस ढंग से रह रहा है जैसे पुराना वाशिन्दा हो। वह यह भी सोचे हुए है कि उसका गुमनाम बाप, अर्थात् भूतनाथ जिसका असल हाल थोड़े ही दिन हुए, उसे मालूम हुआ है, बहुत जल्द वीरेन्द्रसिंह की बदौलत मालामाल होकर शहर में आवेगा और उस समय हम लोग बड़ी खुशी से जिन्दगी बितावेंगे मगर उसकी इस आशा को बड़ा भारी धक्का लगा जैसा कि आगे चलकर मालूम होगा।

रात पहर भर के लगभग जा चुकी है। नानक अपने मकान के अन्दर वाले

दालान को बिछावन आसन और रोशनी के सामान से इस तरह सजा रहा है जैसे किसी नए या बहुत ही प्यारे मेहमान की अवाई सुन कर जाहिरदारी के शौकीन लोग सजाया करते हैं। उसकी स्त्री भी खाने-पीने के सामान की तैयारी में चारों तरफ मटकती फिरती है और थालियों को तरह-तरह के खाने तथा कई प्रकार के मांस से सजा रही है। उस की सूरत-शक्ल और चाल-ढाल से यह भी पता लगता है कि उसे अपने मेहमान के आने की खुशी नानक से भी ज्यादा है। खैर, इस टीमटाम के बयान को तो जाने दीजिये, मुख्तसिर यह है कि बात की बात में सब सामान दुरुस्त हो गया और नानक की स्त्री ने अपनी लौंडी से कहा—"अरे, जरा आगे बढ़ के देख तो सही, गज्जू बाबू आते हैं या नहीं !"

लौंडी—(धीरे से, जिसमें दूसरा कोई सुनने न पावे) बीबी जल्दी क्यों करती हो, वे तो यहाँ आने के लिए तुमसे भी ज्यादा बेचैन हो रहे होंगे।

बीबी—(मुस्कुरा कर धीरे से) कम्बख्त—यह तू कैसे जानती है ?

लौंडी—तुम्हारी और उनकी चाल से क्या मैं नहीं जानती ? क्या उसे एकादशी के रात वाली बात भूल जाऊँगी ? (अपना बाजू दिखाकर) देखो यह तुम्हारी···

लौंडी अपनी बात पूरी भी न करने पाई थी कि मटकते हुए नानक भी उसी तरफ आ पहुँचे और लाचार होकर लौंडी को चुप रह जाना पड़ा।

नानक—(सजी हुई थालियों की तरफ देख के) अरे, इसमें मुरब्बा तो रक्खा ही नहीं !

बीबी—मुरब्बा क्या खाक रखती ! न मालूम कहाँ से सड़ा हुआ मुरब्बा उठा लाये ! वह उनके खाने लायक भी है ? लखपती आदमी की थाली में रखते शर्म तो नहीं मालूम पड़ती !

नानक—मेरा तो दो आना पैसा उसमें लग गया और तुम्हें पसन्द ही नहीं। क्या मैं अंधा था जो सड़ा हुआ मुरब्बा उठा लाता !

बीबी—तुम्हारे अंधे होने में शक ही क्या है ? ऐसे ही आँख वाले होते तो रामभोली, अपनी माँ और अपने बाप को पहचानने में वर्षों तक काहे झख मारते रहते ?

नानक—(चिढ़ कर) तुम्हारी बातें तो तीर की तरह लगती हैं ! तुम्हारे तानों ने तो कलेजा पका दिया ! रोज-रोज की किचकिच ने तो नाकों दम कर दिया ! न मालूम कहाँ की कम्बख्ती आयी थी जो तुम्हें मैं अपने घर में ले आया।

बीबी—(अपने मन में) कम्बख्ती नहीं आई थी बल्कि तुम्हारा नसीब चमका था जो मुझे अपने घर में लाए ! अगर मैं न आती तो ऐसे-ऐसे अमीर तुम्हारे दरवाजे पर थूकने भी नहीं आते ! (प्रकट) तुम्हारी कम्बख्ती तो नहीं मेरी कम्बख्ती आई थी जो इस घर में आई ! जने-जने के सामने मुँह दिखाना पड़ता है। तुम्हें तो ऐसा मकान भी न जुड़ा जिसमें मरदानी बैठक तो होती और तुम्हारे दोस्तों की खिदमत से मेरी जान छूटती। अच्छा तो तभी होता जब वही गूँगी तुम्हारे घर आती और दिन में तीन दफे झाड़ू दिलवाती। चलो, दूर हो जाओ मेरे सामने से, नहीं तो अभी भण्डा फोड़ के रख दूँगी।

लौंडी—बीबी, रहने भी दो, तुम तो बड़ी भोली हो, जरा-सी बात में रंज हो जाती हो !

बड़ी मुश्किल से लौंडी ने लड़ाई बन्द करवाई और इतने ही में दरवाजे पर से किसी के पुकारने की आवाज आयी। नानक दौड़ा हुआ बाहर गया। दरवाजा खोलने पर मालूम हुआ कि पांच-सात नौकरों के साथ गज्जू बाबू आ पहुँचे हैं। इनका असल नाम 'गजमेन्दुपाल' था मगर अमीर होने के कारण लोग इन्हें गज्जू बाबू के नाम से पुकारा करते थे।

नौकरों को तो बाहर छोड़ा और अकेले गज्जू बाबू आँगन में पहुँचे। नानक ने बड़ी खातिरदारी से इन्हें बैठाया और थोड़ी देर तक गपशप के बाद खाने की सामग्री उनके आगे रक्खी गई।

गज्जू बाबू—अरे, तो क्या मैं अकेला ही खाऊँगा ?

नानक—और क्या ?

गज्जू बाबू—नहीं, सो नहीं होगा, तुम भी अपनी थाली ले आओ और मेरे सामने बैठो।

नानक—भला खाइए तो सही, मैं आपके सामने ही तो हूँ, (बैठ कर) लीजिए बैठ जाता हूँ।

गज्जू बाबू—कभी नहीं, हरगिज नहीं, मुमकिन नहीं ! ज्यादा जिद करोगे तो मैं उठ कर चला जाऊँगा !

नानक—अच्छा आप खफा न होइए, लीजिए मैं भी अपनी थाली लाता हूँ।

लाचार नानक को भी अपनी थाली लानी पड़ी। लौंडी ने गज्जू बाबू के सामने नानक के लिए आसन बिछा दिया और दोनों आदमियों ने खाना शुरू किया।

गज्जू बाबू—वाह, गोश्त तो बहुत ही मजेदार बना है—जरा और मँगाना।

नानक—(लौंडी से) अरे जा, जल्दी से गोश्त का बरतन उठा ला।

गज्जू बाबू—वाह-वाह, क्या दाई परोसेगी ?

नानक—क्या हर्ज है ?

गज्जू बाबू—वाह, अरे हमारी भाभी साहिबा कहाँ हैं ? बुलाओ साहब। जब हमारी-आपकी दोस्ती है तो पर्दा काहे का ?

नानक—पर्दा तो कुछ नहीं है मगर उसे आपके सामने आते शर्म मालूम होगी।

गज्जू बाबू—व्यर्थ ! भला इसमें शर्म काहे की ? हाँ अगर आप कुछ शर्माते हों तो बात दूसरी है !

नानक—नहीं, भला आपसे शर्म काहे की ? आप-हम तो एक-दिल एक-जान ठहरे ! आपकी दोस्ती के लिए मैंने बिरादरी के लोगों तक की परवाह नहीं की।

गज्जू बाबू—ठीक है और मैंने भी अपने भाई साहब के नाक भौं चढ़ाने का कुछ खयाल न किया और तुम्हें साथ लेकर अजमेर और मक्के चलने के लिए तैयार हो गया।

नानक—ठीक है, (अपनी स्त्री से) अजी सुनो तो सही—जरा गोश्त का बर्तन लेकर यहाँ आओ।

गज्जू बाबू—हाँ-हाँ, चली आओ, हर्ज क्या है। तुम तो हमारी भाभी ठहरीं—अगर जिद हो तो हमसे मुह-दिखाई ले लेना !

इतना सुनते ही छमछम करती हुई बीबी साहिबा पर्दे से बाहर निकलीं और गोश्त का बर्तन बड़ी नजाकत से लिए दोनों महापुरुषों के पास आ खड़ी हुईं।

हम यहाँ पर बीबी साहब का हुलिया लिखना उचित नहीं समझते और सच तो यह है कि लिख भी नहीं सकते क्योंकि उनके चेहरे का खास-खास हिस्सा नाम मात्र के घूंघट में छिपा हुआ था। खैर जाने दीजिये, ऐसे तम्बाकू पीने के लिए छप्पर फंकने वाले लोगों का जिक्र जहाँ तक कम आये अच्छा है। हम तो आज नानक को ऐसी अवस्था में देख कर हैरान हैं और कमलिनी तथा तेजसिंह की भूल पर अफसोस करते हैं। यह वही नानक है जिसे हमारे ऐयार लोग नेक और होनहार समझते थे और अभी तक समझते होंगे मगर अफसोस, इस समय यदि किसी तरह कमलिनी को इस बात की खबर हो जाती कि नानक के धर्म तथा नेक चालचलन के लम्बे-चौड़े दस्तावेज को दीमक चाट गए, अब उसका विश्वास करना या उसे सच्चा ऐयार समझना अपनी जान के साथ दुश्मनी करना है तो बहुत अच्छा होता। यद्यपि किशोरी, कामिनी, लाड़िली, लक्ष्मीदेवी और वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों का दिल भूतनाथ से फिर गया है मगर नानक पर कदाचित् अभी तक उनकी दया-दृष्टि बनी हुई है।

नानक की स्त्री ने बर्तन में से दो टुकड़ा गोश्त निकाल कर गज्जू बाबू की थाली में रक्खा और पुनः निकालकर थाली में रखने के लिए झुकी ही थी कि बाहर से किसी आदमी ने बड़े जोर से पुकारा, "अजी नानक जी हैं !" इस आवाज को सुनते ही नानक चौंक गया और उसने दाई की तरफ देख के कहा, "जल्दी जा, देख तो सही कौन पुकार रहा है !"

दाई दौड़ी हुई दरवाजे पर गई। दरवाजा खोल कर जब उसने बाहर की तरफ देखा तो एक नकाबपोश पर उसकी निगाह पड़ी जिसने चेहरे की तरह अपने तमाम बदन को भी काले कपड़े से ढँक रक्खा था। उसके तमाम कपड़े इतने ढीले थे कि उसके अंग-प्रत्यंग का पता लगाना या इतना भी जान लेना कि यह बुड्ढा है या जवान बड़ा ही कठिन था।

दाई उसे देख कर डरी। यदि गज्जू बाबू के कई सिपाही उसी जगह दरवाजे पर मौजूद न होते तो वह निःसन्देह चिल्ला कर मकान के अन्दर भाग जाती मगर गज्जू बाबू के नौकरों के रहने से उसे कुछ साहस हुआ और उसने नकाबपोश से पूछा—

दाई—तुम कौन हो और क्या चाहते हो ?

नकाबपोश—मैं आदमी हूँ और नानक परसाद से मिलना चाहता हूँ।

दाई—अच्छा तुम बाहर बैठो वह भोजन कर रहे हैं, जब हाथ मुँह धो लेंगे तब आवेंगे।

नकाबपोश—ऐसा नहीं हो सकता ! तू जाकर कह दे कि भोजन छोड़ कर जल्दी से मेरे पास आवें। जा देर मत कर। यदि थाली की चीजें बहुत स्वादिष्ट लगतीं

हों और जूठा छोड़ने की इच्छा न होती हो तो कह दीजियो कि 'रोहतासमठ का पुंजारी' आया है।

यह बात नकाबपोश ने इस ढंग से कही कि दाई ठहरने या पुनः कुछ पूछने का साहस न कर सकी। किवाड़ बन्द करके दौड़ती हुई नानक के पास गई और सब हाल कहा। 'रोहतासमठ का पुजारी' आया है इस शब्द ने नानक को बेचैन कर दिया। उसके हाथ में इतनी भी ताकत न रही कि गोश्त के टुकड़े को उठा कर अपने मुँह तक पहुँचा देता। लाचार उसने घबड़ाई हुई आवाज में गज्जू बाबू से कहा—"आधे घण्टे के लिए मुझे माफ कीजिये। उस आदमी से बातचीत करना कितना आवश्यक है सो आप इसी से समझ सकते हैं कि घर में आप ऐसा दोस्त और सामने की भरी थाली छोड़कर जाता हूँ। आपकी भाभी साहिबा आपको खुले दिल से खिलावेंगी। (अपनी स्त्री से) दो-चार गिलास आसव का भी इन्हें देना।"

इतना कहकर अपनी बात का बिना कुछ जवाब सुने ही नानक उठ खड़ा हुआ। अपने हाथ से गगरी उँडेल हाथ-मुँह धो दरवाजे पर पहुँचा और किवाड़ खोलकर बाहर चला गया। यद्यपि इस समय नानक ने तकल्लुफ की टाँग तोड़ डाली थी तथापि उसके चले जाने से गज्जू बाबू को किसी तरह का रंज न हुआ, बल्कि एक तरह की खुशी हुई और उन्होंने अपने दिल में कहा, 'चलो इनसे भी छुट्टी मिली।'

दरवाजे के बाहर पहुँच कर नानक ने उस नकाबपोश को देखा और बिना कुछ कहे उसका हाथ पकड़ के मकान से कुछ दूर ले गया। जब ऐसी जगह पहुँचा जहाँ उन दोनों की बातें सुनने वाला कोई दिखाई नहीं दिया तव नानक ने बातचीत आरंभकी।

नानक—मैं तो आवाज ही से पहचान गया था कि मेरे दोस्त आ पहुँचे, मगर लौंडी को इसलिए दरवाजे पर भेजा था कि मालूम हो जाय कि आप किस ढंग से आए हैं और किस प्रकार की खबर लाए हैं। जब लौंडी ने आपकी तरफ से 'रोहतासगढ़ के पुजारी' का परिचय दिया, बस कलेजा दहल उठा, मालूम हो गया कि खबर जरूर भयानक होगी।

नकाबपोश—बेशक ऐसी ही बात है। कदाचित् तुम्हें यह सुन कर आश्चर्य होगा कि तुम्हारा बहुत दिनों का खोया हुआ बाप अर्थात् भूतनाथ अब मैदान की ताजी हवा खाने योग्य नहीं रहा।

नानक—हैं, सो क्यों ?

नकाबपोश—उसका दुर्दैव जो बहुत दिनों तक पारे में चाँदी की तरह छिपा हुआ था, एकदम प्रकट हो गया। उसने तुम्हारी माँ को भी अष्टम चन्द्रमा की तरह कृपा-दृष्टि से देख लिया और साढ़ेसाती के कठिन शनि को भी तुमसे जैंगोपाल करने के लिए कहला भेजा है, पर इससे यह न समझना कि ज्योतिषियों के बताये हुए दान का फल बन कर मैं तुम्हारी रक्षा के लिए आया हूँ। अब तुम्हें भी यह उचित है कि आज-कल के ज्योतिषियों के कर्म-भण्डार से फलित विद्या की तरह जहाँ तक हो सके, जल्द अन्तर्धान हो जाओ।

नानक—(डर कर) अफसोस, तुम्हारी आदत किसी तरह कम नहीं होती। दो

शब्दों में पूरी हो जाने वाली बात को भी बिना हजार शब्दों का लपेट दिए तुम नहीं रहते। साफ क्यों नहीं कहते कि क्या हुआ ?

नकाबपोश—अफसोस, अभी तक तुम्हारी बुद्धि की कतरनी को चाटने के लिए शान का पत्थर नहीं मिला। अच्छा, तब मैं साफ-साफ ही कहता हूँ सुनो। तुम्हारे बाप का छिपा हुआ दोष बरसात की बदली में छिपे हुए चन्द्रमा की तरह यकायक प्रकट हो गया। इसी से तुम्हारी माँ भी दुश्मन के काबू में, शेर के पंजे में बेचारी हिरनी की तरह पड़ गई और उसी कारण से तुम पर भी उल्लू के पीछे शिकारी बाज की तरह धावा हुआ ही चाहता है। सम्भव है कि चारपाई के खटमल की तरह जब तक कोई ढूंढ़ने के लिए तैयार हो, तुम गायब हो जाओ। मगर मेरी समझ में फिर भी गरम पानी का डर बना ही रहेगा।

नानक—(चिढ़ कर) आखिर तुम न मानोगे ! खैर, मैं समझ गया कि मेरे बाप का कसूर वीरेन्द्रसिंह को मालूम हो गया। परन्तु उनके, तेजसिंह के और कामिनी के मुँह से निकले हुए 'क्षमा' शब्द पर मुझे वहुत भरोसा था। यद्यपि दोष जान लेने के पहले ही उन्होंने ऐसा किया था।

नकाबपोश—नहीं-नहीं, तुम्हारे बाप ने वीरेन्द्रसिंह का जो कुछ कसूर किया था वह तो उनके ऐयारों को पहले ही मालूम हो गया था। मगर इन नये-नये प्रकट भये हुए दोषों के सामने वे दोष ऐसे थे, जैसे सूर्य के सामने दीपक, चन्द्रमा के सामने जुगनू, दिन के आगे रात या मेरे मुकाबले में तुम !

नानक—अगर तुम में यह ऐब न होता तो तुम बड़े काम के आदमी थे। देख रहे हो कि हम लोग सड़क पर बेमौके खड़े हैं, मगर फिर भी संक्षेप में बात पूरी नहीं करते !

नकाबपोश—इसका सवब यही है कि मेरा नाम संक्षेप में या अकेले में नहीं है। गोपी और कृष्ण इन दोनों शब्दों से मेरा नाम बड़े लोगों ने ठोंक मारा है। अस्तु बड़े लोगों की इज्जत का ध्यान करके मैं अपने नाम को स्वार्थ की पदवी देने के लिए सदैव उद्योग करता रहता हूँ। इसी से गोपियों के प्रेम की तरह मेरी बातों का तौल नहीं होता और जिस तरह कृष्णजी त्रिभंगी थे, उसी तरह मेरे मुख से निकला प्रत्येक शब्द त्रिभंगी होता है। हाँ, यह तुमने ठीक कहा कि सड़क पर खड़े रहना भले मनुष्यों का काम नहीं है। अस्तु, थोड़ी दूर आगे बढ़ चलो और नदी के किनारे बैठ कर मेरी बात इस तरह ध्यान देकर सुनो जैसे बीमार लोग वैद्य के मुँह से अपनी दवा का अनुपान सुनते हैं। बस, जल्द बढ़ो देर न करो, क्योंकि समय बहुत कम है, कहीं ऐसा न हो कि विलम्ब हो जाने के कारण वीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग आ पहुँचें और उस चरणानुरागी पात्र की मजबूती का इल्जाम तुम्हारे माथे ठोंकें, जिसके कारण जंगली काँटों और कंकड़ियों से बच कर यहाँ तक वे लोग पहुँचेंगे।

नानक—(झुंझला कर) बस माफ कीजिए, बाज आए आपकी बातें सुनने से। जिस सबब से हम पर आफत आने वाली है, उसका पता हम आप लगा लेंगे। मगर द्रौपदी के चीर की तरह समाप्त न होने वाली बातें तुमसे न सुनेंगे।

नकाबपोश – (हँस कर) शाबाश-शाबाश, जीते रहो ! अब मैं तुमसे खुश हो गया, क्योंकि अब तुम भी अपनी बातों में उपमालंकार की टाँग तोड़ने लगे। सच तो यों है कि तुम्हारा झुँझलाना मुझे उतना ही अच्छा लगता है, जितना इस समय भूख की अवस्था में फजली आम और अधावट दूध से भरा हुआ चौसेरा कटोरा मुझे अच्छा लगता।

नानक—तो साफ-साफ क्यों नहीं कहते कि हम भूखे हैं ? जब तक पेट भर कर खा न लेंगे, तब तक असल मतलब न कहेंगे।

नकाबपोश—शाबाश, खूब समझे। बेशक मैंने यही सोचा था कि तुम्हारे यहाँ दक्षिणा के सहित भोजन करूँगा और उन बातों का रत्ती-रत्ती भेद बता दूँगा जिनकी बदौलत तुम कुम्भीपाक में पड़ने से भी ज्यादा दुःख भोगना चाहते हो, मगर नहीं, दरवाजे पर पहुँचते ही देखता हूँ कि फोड़ा फूट गया और सड़ा मवाद बह निकला है। अब तुम इस लायक न रहे कि तुम्हारा छूआ पानी भी पीया जाय। खैर, हम तुम्हारे दोस्त हैं, जिस काम के लिए आये हैं, उसे अवश्य ही पूरा करेंगे। (कुछ सोच कर) कभी नहीं, छिः-छिः, तुम नालायक से अब हम दोस्ती रखना नहीं चाहते। जो कुछ ऊपर कह चुके हैं, उसी से जहाँ तक अपना मतलब निकाल सको, निकाल लो और जो कुछ करते बनो करो, हम जाते हैं !

इतना कह कर नकाबपोश वहाँ से रवाना हो गया। नानक ने उसे बहुत समझाया और रोकना चाहा। मगर उसने एक न सुनी और सीधे नदी के किनारे का रास्ता लिया तथा नानक भी अपनी बदकिस्मती पर रोता हुआ घर पहुँचा। उस समय मालूम हुआ कि उसके नौजवान अमीर दोस्त को अच्छी तरह अपनी नायाब ज्याफत का आनन्द लेकर गये हुए आधी घड़ी बीत चुकी है।

5

सन्तति के छठवें भाग के पाँचवें बयान में हम लिख आए हैं कि कमलिनी ने जब कमला को मायारानी की कैद से छुड़ाया तो उसे ताकीद कर दी कि तू सीधे रोहतासगढ़ चली जा और किशोरी की खोज में इधर-उधर घूमना छोड़ कर बराबर उसी किले में बैठी रह। कमला ने यह बात स्वीकार कर ली और वीरेन्द्रसिंह के चुनारगढ़ चले जाने के बाद भी कमला ने रोहतासगढ़ को नहीं छोड़ा, ईश्वर पर भरोसा करके उसी किले में बैठी रही।

यद्यपि उस किले का जनाना हिस्सा बिल्कुल सूना हो गया था, मगर जब से कमला ने उसमें अपना डेरा जमाया, तब से बीस-पच्चीस औरतें, जो कमला की खातिर के लिए राजा वीरेन्द्रसिंह की आज्ञानुसार लौंडियों के तौर पर रख दी गई थीं, वहाँ दिखाई देने लगी थीं। जब राजा वीरेन्द्रसिंह यहाँ से चुनारगढ़ की तरफ रवाना होने

लगे, तब उन्होंने भी कमला को ताकीद कर दी कि तू अपनी ऐयारी को काम में लाने के लिए इधर-उधर दौड़ना छोड़ के बराबर इसी किले में बैठी रहियो और यदि चारों तरफ की खबर लिए बिना तेरा जी न माने तो हमारे जासूसों को, जो ज्योतिषिजी की मातहती में हैं, जहाँ जी चाहे भेजा कीजियो। इसी तरह ज्योतिषीजी को भी ताकीद कर दी थी कि कमला की खातिरदारी में किसी तरह की कमी न होने पावे तथा यह जिस समय जो कुछ चाहे उसका इन्तजाम कर दिया करना और इसमें भी कोई शक नहीं कि पंडित जगन्नाथ ज्योतिषी ने कमला की बड़ी खातिर की। कमला बड़े आराम से यहाँ रहने लगी और जासूसों के जरिये से जहाँ तक हो सकता था, चारों तरफ की खबर भी लेती रही।

आज बहुत दिनों के बाद कमला के चेहरे पर हँसी दिखाई दे रही है। आज वह बहुत खुश है, बल्कि यों कहना चाहिए कि आज उसकी खुशी का अन्दाजा करना बहुत ही कठिन है, क्योंकि पंडित जगन्नाथ ज्योतिषी ने तेजसिंह के हाथ की लिखी चिट्ठी कमला के हाथ में दी और जब कमला ने उसे खोल कर पढ़ा तो यह लिखा हुआ पाया—

"मेरे प्यारे दोस्त ज्योतिषीजी,

आज हम लोगों के लिए बड़ी खुशी का दिन है, इसलिए कि हम ऐयार लोग किशोरी, कामिनी, कमलिनी, लाड़िली और तारा को एक साथ लिए हुए रोहतासगढ़ की तरफ आ रहे हैं, अस्तु जहाँ तक हो सके पालकियों और सवारियों के अतिरिक्त कुछ फौजी सवारों को भी साथ लेकर तुम स्वयं 'डहना' पहाड़ी के नीचे हम लोगों से मिलो।

तुम्हारा दोस्त—

तेजसिंह।"

इस चिट्ठी के पढ़ते ही कमला हद से ज्यादा खुश हो गई और उसकी आँखों से गर्म-गर्म आँसुओं की बूंदें गिरने लगीं, गला भर आया और कुछ देर तक बोलने या कुछ पूछने की सामर्थ्य न रही। इसके बाद अपने को सम्हाल कर उसने कहा—

कमला—यह चिट्ठी आपको कब मिली? आप अभी तक गए क्यों नहीं?

ज्योतिषी—यह चिट्ठी मुझे अभी मिली है। मैं तेजसिहजी के लिखे बमूजिब इन्तजाम करने का हुक्म देकर तुम्हारे पास खबर करने के लिए आया हूँ और अभी चला जाऊँगा।

कमला—आपने बहुत अच्छा किया, मैं भी उनसे मिलने के लिए ऐसे समय अवश्य चलूंगी, मगर मेरे लिए भी पालकी का बन्दोबस्त कर दीजिए, क्योंकि ऐसे समय में दूसरे ढंग पर वहाँ जाने से मालिक की इज्जत में बट्टा लगेगा।

ज्योतिषीजी—बेशक ऐसा ही है, मैं पहले ही से सोच चुका था कि तुम हमारे साथ चले बिना न रहोगी, इसलिए तुम्हारे वास्ते भी इन्तजाम कर चुका हूँ। पालकी ड्योढ़ी पर आ चुकी होगी, बस तैयार हो जाओ, देर मत करो।

कमला झटपट तैयार हो गई और ज्योतिषीजी ने भी तेजसिंह के लिखे बमूजिब सब तैयारी बात की बात में कर ली। घण्टे भर ही के बाद रोहतासगढ़ पहाड़ के

नीचे पाँच-सौ सवार चाँदी-सोने के काम की पालकियों को बीच में लिए हुए 'डहना' पहाड़ी की तरफ जाते हुए दिखाई दिए और पहर भर के बाद वहाँ जा पहुँचे, जहाँ तेजसिंह, किशोरी इत्यादि को एक गुफा के अन्दर बैठा कर ऐयारों तथा बलभद्रसिंह को साथ लिए ज्योतिषीजी का इन्तजार कर रहे थे। तेजसिंह तथा ऐयार लोग खुशी-खुशी ज्योतिषीजी से मिले। कमला की पालकी उस गुफा के पास पहुँचाई गई जिसमें किशोरी और कमलिनी इत्यादि थीं और कहार सब वहाँ से अलग कर दिए गए।

वह गुफा जिसमें कमलिनी और किशोरी इत्यादि थीं, ऐसी तंग न थी कि उनको किसी तरह की तकलीफ होती, बल्कि वह एक आड़ की जगह में और बहुत ही लम्बी-चौड़ी थी और उसमें चाँदना बखूबी पहुँचा रहा था। तारासिंह की ज़ुबानी जब किशोरी ने यह सुना कि कमला भी आई है तो उससे मिलने के लिए बेचैन हो गई और जब तक वह पालकी के अन्दर से निकले तब तक किशोरी स्वयं खोह के बाहर निकल आई। कमला ने किशोरी को देखा तो बड़े जोर और मुहब्बत से लपक कर किशोरी के गले से लिपट गई और किशोरी ने भी बड़े प्रेम से उसे दबा लिया तथा दोनों की आँखों से आँसुओं की बूंदें टपाटप गिरने लगीं। कमलिनी ने दोनों को अलग किया और कमला को अपने गले से लगा लिया। इसके बाद कामिनी, लाड़िली और तारा भी बारी-बारी कमला से मिलीं। उस समय सभी के चेहरे खुशी से दमक रहे थे और सभी के दिल की कली खिली जाती थी। किशोरी, कामिनी, तारा और लाड़िली को मालूम हो चुका था कमला, भूतनाथ की लड़की है और वे सब भूतनाथ से बहुत रंज थीं। मगर कमला की तरफ से किसी का दिल मैला न था, बल्कि कमला को देखने के साथ ही उन पाँचों के दिल में ऐसी मुहब्बत पैदा हो गई, जैसी सच्चे प्रेमियों के दिल में हुआ करती है। मगर अफसोस कि अभी तक कमला को इस बात की खबर नहीं हुई कि भूतनाथ उसका बाप है और उसने बड़े-बड़े कसूर किए हैं।

किशोरी, कमलिनी और कमला इत्यादि की मुहब्बत भरी बातचीत कदापि पूरी न होती, यदि तेजसिंह वहाँ पहुँच कर यह न कहते कि "अब तुम लोगों को यहाँ से बहुत जल्दी चल देना चाहिए जिससे सूर्यास्त के पहले ही रोहतासगढ़ पहुँच जाएँ।' पालकियाँ गुफा के आगे रखी गईं। कमलिनी, किशोरी, कामिनी, कमला, लाड़िली और तारा उन पर सवार हुईं। कहारों को आकर पालकी उठाने का हुक्म दिया गया और खुशी-खुशी सब कोई रोहतासगढ़ की तरफ रवाना हुए।

सूर्य अस्त होने के पहले ही सवारी रोहतासगढ़ किले के अन्दर दाखिल हो गई। किले का जनाना भाग आज फिर रौनक हो गया। मगर महल में पैर रखते ही एक दफे किशोरी का कलेजा दहल उठा, क्योंकि इस समय उसने पुनः अपने को उसी मकान में पाया जिसमें कुछ दिन पहले बेबसी की अवस्था में रह कर तरह-तरह की तकलीफें उठा चुकी थी और इसके साथ-ही-साथ उसको लाली और कुन्दन की बातें याद आ गईं। केवल किशोरी ही को नहीं, बल्कि लाड़िली को भी वह जमाना याद आ गया क्योंकि यही लाड़िली लाली बन कर उन दिनों इस महल में रहती थी जिन दिनों किशोरी यहाँ मुसीबत के दिन काट रही थी। लाड़िली तो किशोरी को पहचानती थी,

मगर किशोरी को इस बात का गुमान न था कि वह लाली वास्तव में यही लाड़िली थी, जो आज हमारे महल में दाखिल है।

महल में पैर रखने के साथ ही किशोरी को वे पुरानी बातें याद आ गईं और इस सबब से उसके खूबसूरत चेहरे पर थोड़ी देर के लिए उदासी छा गई, साथ ही पुरानी बातें याद आ जाने के कारण लाड़िली की निगाह भी किशोरी के चेहरे पर जा पड़ी। वह उसकी अवस्था को देख कर समझ गई कि इस समय इसे पुरानी बातें भी याद आ गई हैं। उन्हीं बातों को खुद भी याद करके इस समय अपने को और किशोरी को मालिक की तरह या दूसरे ढंग से इस मकान में आए देख के और किशोरी के चेहरे पर ध्यान पड़ने से लाड़िली को हँसी आ गई। उसने चाहा कि हँसी रोके परन्तु रोक न सकी और खिलखिला कर हँस पड़ी जिससे किशोरी को कुछ ताज्जुब हुआ और उसने लाड़िली से पूछा—

किशोरी—क्यों, तुम्हें हँसी किस बात पर आई ?

लाड़िली—यों ही हँसी आ गई।

किशोरी—ऐसा नहीं है, इसमें जरूर कोई भेद है, क्योंकि कई दिनों से हमारा तुम्हारा साथ है पर इस बीच में व्यर्थ हँसते हुए हमने तुम्हें कभी नहीं देखा। बताओ, सही बात क्या है ?

लाड़िली—तुम्हें विचित्र ढंग से घबराकर चारों तरफ देखते हुए देखकर मुझे हँसी आ गई।

किशोरी—केवल यही बात नहीं है, जरूर कोई दूसरा सबब भी इसके साथ है।

कमलिनी—मैं समझ गई ! बहिन, मुझसे पूछो, मैं बताऊँगी ! बेशक लाड़िली के हँसने का दूसरा सबब है जिसे वह शर्म के मारे नहीं कहना चाहती।

किशोरी—(कमलिनी की कलाई पकड़कर) अच्छा बहिन, तुम ही बताओ कि इसका क्या सबब है ?

कमलिनी—इसके हँसने का सबब यही है कि जिन दिनों तुम इस मकान में बेबसी और मुसीबत के दिन काट रही थीं, उन दिनों यह लाड़िली भी यहाँ रहती थी और इससे-तुमसे बहुत मेल-मिलाप था।

किशोरी—(ताज्जुब से) तुम भी हँसी करती हो ! क्या मैं ऐसी बेवकूफ हूँ जो महीनों तक इस महल में लाड़िली के ही साथ रही और फिर भी उसे पहचान न सकूँ !

कमलिनी—(हँसकर) यह तो मैं नहीं कहती हूँ कि उन दिनों इस महल में लाड़िली अपनी असली सूरत में थी ! मेरा मतलब लाली से है, वास्तव में यह लाड़िली उन दिनों लाली बनकर यहाँ रहती थी।

किशोरी—(ताज्जुब से घबराकर और लाड़िली को पकड़कर) हैं ! क्या वास्तव में लाली तुम ही थीं ?

लाड़िली—इसके जवाब में 'हाँ' कहते मुझे शर्म मालूम होती है। अफसोस उन दिनों मेरी नीयत आज की तरह साफ न थी क्योंकि मैं दुष्टा मायारानी के आधीन थी। उसे मैं अपनी बड़ी बहिन समझती थी और उसी की आज्ञानुसार एक काम के लिए

यहाँ आई थी।

किशोरी—ओफ ओह ! तब तो आज बड़े-बड़े भेदों का पता लगेगा जिन्हें याद करके मेरा जी बेचैन हो जाता था और इस सबब से मैं और भी परेशान थी कि उन भेदों का असल मतलब कुछ मालूम न होता था, अब तो मैं बहुत कुछ तुमसे पूछूंगी और तुम्हें बताना पड़ेगा।

कमलिनी—हाँ-हाँ, तुम्हें सब कुछ मालूम हो जायगा, मगर घबराती क्यों हो, इस समय हम लोगों को केवल यही काम है कि ईश्वर को धन्यवाद दें जिसकी कृपा से हम लोग हजारों दुःख उठाकर ऐसी जगह आ पहुँचे हैं जहाँ हमारे दुश्मन रहते थे और जिसे अब हम अपना घर समझते हैं।

लाड़िली—(किशोरी से) बेशक ऐसा ही है, केवल एक यही बात नहीं और भी कई अद्भुत बातें तुम्हें मालूम होंगी। जरा सब्र करो, सफर की हरारत मिटाओ और आराम करो, जल्दी क्यों करती हो !

6

रात का समय है और चाँदनी छिटकी हुई। आसमान पर कहीं-कहीं छोटे बादलों के टुकड़े दौड़ते हुए दिखाई दे रहे हैं जिनमें कभी-कभी चन्द्रमा छिपता और फिर तेजी के साथ निकल आता है। इस समय रोहतासगढ़ किले के चारों तरफ की मनभावन छटा बहुत भली मालूम पड़ती है। महल की छत पर किशोरी, कामिनी, कमलिनी, लाड़िली, लक्ष्मीदेवी और कमला टहलती हुई चारों तरफ की कैफियत देख रही हैं। इस समय की शोभा, छटा या प्राकृतिक अवस्था जो कुछ भी कहें उन सबके दिल पर जुदे ढंग का असर कर रही है। कमलिनी अपने ध्यान में डूबी हुई है, लक्ष्मीदेवी कुछ और ही सोच रही है, लाड़िली किसी दूसरे ही सम्भव-असम्भव के विचार में पड़ी है, किशोरी और कामिनी अलग ही मन के लड्डू बना रही हैं। मगर कमला के दिल का कोई ठिकाना नहीं। उसने जब से यह सुन लिया है कि भूतनाथ गिरफ्तार करके रोहतासगढ़ के कैदखाने में डाल दिया गया है तब से वह तरह-तरह की बातें सोच रही है। भूतनाथ वास्तव में कौन है ? उसने क्या कसूर किया ? वीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग उससे खुश थे—फिर यकायक रंज क्यों हो गए ? और यह तारा कभी-कभी लक्ष्मीदेवी के नाम से क्यों पुकारी जाती है ? कमलिनी तारा का अदब क्यों करने लग गई ? इत्यादि बातों को जानने के लिए उसका जी बेचैन हो रहा है मगर अभी तक किसी ने इन बातों का जिक्र उससे न किया है। हाँ, इस समय इन्हीं विषयों पर बात करने का वादा है परन्तु कमला इसी बात का मौका ढूंढ़ रही है कि ये सब एक ठिकाने बैठ जाँय तो बातों का सिलसिला छेड़ा जाय।

घण्टे-भर तक टहल-टहलकर चारों ओर देखने के बाद सबकी सब एक ठिकाने

फर्श पर बैठ गईं और कमला ने बातचीत करना आरम्भ कर दिया।

कमला—(किशोरी से) क्यों बहिन ! भूतनाथ तो राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों के साथ मिल-जुलकर काम करता था और सब कोई उससे खुश थे, फिर यकायक यह क्या हो गया कि उसे कैदखाने की गर्म हवा खानी पड़ी ?

किशोरी—इसका हाल कमलिनी बहिन से पूछो।

कामिनी—क्योंकि वह इन्हीं का ऐयार था और इन्हीं की आज्ञानुसार काम करता था।

कमलिनी—(हँसकर) किसी का ऐयार था या किसी का बाप था, इससे क्या मतलब ? जो था सो था—अब न कोई उसे अपना ऐयार बनाना पसन्द करेगा और न कोई अपना बाप कहना स्वीकार करेगा।

किशोरी—(मुस्कुराकर) जिस तरह अब तुम मायारानी को अपनी बहिन कहना उचित नहीं समझतीं।

कमलिनी—नहीं-नहीं, इस तरह और उस तरह में तो बड़ा फर्क है। कम्बख्त मायारानी तो वास्तव में हमारी बहिन है ही नहीं !

कमला—(ताज्जुब से) मायारानी तुम्हारी बहिन नहीं है ? फिर तुमने मुझसे क्यों कहा था कि 'मायारानी हमारी बड़ी बहिन है !'

कमलिनी—तब तक मैं उसका असल हाल नहीं जानती थी, उसी तरह जिस तरह तुम भूतनाथ का असल हाल नहीं जानतीं और जब जान जाओगी तो न मालूम तुम्हारे दिल का क्या हाल होगा। खैर, वह सब जो कुछ हो लेकिन भूतनाथ का सच्चा-सच्चा हाल कभी-न-कभी तुम्हें मालूम हो ही जायगा। मगर देखो बहिन, दुनिया में कोई किसी के दोष का भागी नहीं हो सकता। जिस तरह ईमानदार बाप बदनीयत लड़के के दोष से दोषी नहीं हो सकता उसी तरह धर्मात्मा लड़का अपने कपटी कुटिल तथा कुचाली बाप के कामों का उत्तरदायी नहीं हो सकता। हर एक आदमी अपने किए का फल आप ही भोगेगा, उसके बदले में उसका कोई नातेदार या मित्र दण्ड नहीं पा सकता, पर हाँ बचाव में मदद जरूर कर सकता है, इसी के साथ-ही-साथ यह भी बँधी हुई बात है कि अच्छे और बुरे का साथ बहुत दिनों तक निभ नहीं सकता चाहे वह आपस में दोस्त हों या भाई हों या बाप-बेटे हों, क्योंकि दोनों की प्रकृति में भेद रहता है और जब तक दोनों की प्रकृति एक या कुछ-कुछ मिलती जुलती न हो, प्रेम नहीं हो सकता।

कमला—क्षमा करना, क्योंकि मैं बीच ही में टोकती हूँ—तब लोग ऐसा क्यों कहते हैं कि 'बुरे की सोहबत करने से अच्छा आदमी भी बुरा हो जाता है ?'

कमलिनी—ठीक है, जहाँ तक मैं समझती हूँ किसी एक बुरे आदमी की सोहबत में कोई एक भला आदमी बुरा नहीं हो सकता, बल्कि एक बुरा आदमी किसी एक भले आदमी के साथ से कुछ सुधर सकता है—क्योंकि मन एक शुद्ध पदार्थ होता है। यदि वह किसी तरह के दबाव में न पड़ जाय या किसी तरह की जरूरियात उसे मजबूर न करें तो वह बराबर सचाई ही की तरह ढुलकता रहता है—हाँ, यदि कोई एक अच्छे चाल-चलन का आदमी चार-पांच या दस-बीस बदमाशों की सोहबत में बैठे, तो निःसन्देह

वह कुचाली हो ही जायगा क्योंकि बहुत से नापाक दिल मिल-जुलकर उस पाक-दिल पर जबर्दस्त हो जायेंगे—और सच तो ये है कि सोहबत एक आदमी के संग को नहीं कहते बल्कि कई आदमियों के झुण्ड में मिल कर बैठने का नाम सोहबत है। हाँ, तो मैं क्या कह रही थी, जब तुमने टोका था—बिल्कुल ही भूल गई! इसी से कहते हैं कि बातों के सिलसिले में टोकना अच्छा नहीं होता।

कमला—ठीक है, तभी तो मैंने पहले ही क्षमा माँग ली थी। खैर, जाने भी दो। मैं तुम्हारी बातों का मतलब पा गई कि तुम भूतनाथ को मेरा नातेदार बनाना चाहती हो।

कमलिनी—मैं क्यों बनाना चाहती हूँ! ईश्वर ही ने उसे तुम्हारा नातेदार बनाया है, खैर, मैं सबसे पहले तुमसे नानक का हाल कहती हूँ। नानक ने अपना हाल स्वयं ही तेजसिंह से कहा था और मैं उस समय छिपकर उसे सुन रही थी। इसके बाद और लोगों को भी वह हाल मालूम हुआ।

तब कमलिनी ने पिछला बहुत-सा हाल जो गुजर चुका था वह कह सुनाया और तब तेजसिंह का पागल बन के मायारानी के बाग में जाना और वहाँ की कैफियत जनाना नानक का हाल, चंडूल की दिल्लगी[1], भूतनाथ और शेरसिंह का रंग-ढंग तथा बाकी का सब हाल भी कहा जिसे बड़े गौर और आश्चर्य से सब सुनती रहीं। इस समय कमला के दिल की अजब हालत थी, उसकी आँखों के सामने उसके लड़कपन का जमाना घूम रहा था। वह उस समय की बातों को अच्छी तरह यादकर करके सोच रही थी जब उसकी माँ जीती थी और उसका बाप बहुत दिनों तक गैरहाजिर रहा करता था। अन्त में उसका बाप यकायक गायब हो गया था और किसी अनजान आदमी ने उसके मरने की खबर कमला के नाना को पहुँचाई थी। उन दिनों कमला के बाप के बारे में तरह-तरह की खबरें उड़ रही थीं। आखिर जब कमला का चाचा शेरसिंह कमला के घर गया और उसने स्वयं कहा कि 'बेशक कमला का बाप मेरे सामने मरा और मैंने ही उसकी दाह-क्रिया की है', तब सभी को उसके मरने का विश्वास हुआ था।

कमला—हाँ, तो इस किस्से से साबित होता है बल्कि मेरा दिल गवाही देता है कि भूतनाथ मेरा रिश्तेदार है।

कमलिनी—बेशक ऐसा ही है।

कमला—तो साफ-साफ जल्दी क्यों नहीं कह देतीं कि वह मेरा कौन है? यद्यपि मैं समझ गई हूँ तथापि अपने मुँह से कुछ कह नहीं सकती।

कमलिनी—अच्छा, तो मैं कहे देती हूँ कि वह तुम्हारा बाप है और नानक तुम्हारा भाई।

कमला—तो उसने अपने मरने की झूठी खबर क्यों मशहूर की थी? नानक के किस्से से तो केवल इतना ही जाना जाता है कि राजा वीरेन्द्रसिंह के यहाँ चोरी करने

1. पाठकों को मालूम होगा कि कमलिनी ही चंडूल बनी हुई थी।

के कारण उसे ऐसा करना पड़ा था।

कमलिनी—पहले तो मैं भी ऐसा ही समझती थी और भूतनाथ ने भी इसके सिवा और कोई सबब अपने गायब होने का नहीं कहा था, मगर अब जो बातें मालूम हुई हैं वे बहुत ही भयानक हैं और इस योग्य हैं कि उनका फल भोगने के डर से उसका जहाँ तक हो अपने को छिपाना उचित ही था। ओफ! भूतनाथ ने मुझे बड़ा धोखा दिया। अगर भूतनाथ के कागजात जो मनोरमा के कब्जे में थे और जो मेरे उद्योग से भूतनाथ को मिल गये थे, इस समय मौजूद होते तो बेशक बहुत-सी बातों का पता लगता, मगर अफसोस! अपनी भूल का दण्ड सिवाय अपने और किसको दूं?

कमला—बहिन, चाहे जो हो मैं अपनी माँ की नसीहत कदापि भूल नहीं सकती और न उसके विपरीत ही कुछ कर सकती हूँ। ईश्वर उसकी आत्मा को सुखी करे, वह बड़ी ही नेक थी। जिस समय चाचा ने मेरे बाप के मरने की खबर पहुँचाई थी, उस समय वह बहुत ही बीमार थी। सब लोग तो रोने-पीटने लगे, मगर उसकी आँखों में आँसू की बूँद भी दिखाई नहीं दी। इसका कारण लोगों ने यही बताया कि रंज बहुत ज्यादा है जिससे यह बेसुध हो रही है, मगर मेरी माँ ने मुझे चुपके से बुला के समझाया और यह भी कहा कि "बेटी! मैं खूब समझती हूँ कि तेरा बाप मरा नहीं है, बल्कि कहीं छिपा बैठा है, और वास्तव में उसका चाल-चलन ऐसा नहीं कि वह हम लोगों को अपना मुँह दिखाए मगर क्या किया जाय वह मेरा पति है, किसी के आगे उसकी निन्दा करना मेरा धर्म नहीं है। मैं खूब समझती हूँ कि अबकी दफे की बीमारी से मैं किसी तरह बच नहीं सकती, इसीलिए तुझे समझाती हूँ कि यदि कदाचित् तेरा बाप तुझे मिल जाय तो तू उससे किसी तरह की भलाई की आशा न रखना। हाँ, तेरा चाचा बहुत ही लायक है, वह सिवाय भलाई के तेरे साथ बुराई कभी न करेगा, मगर मेरी समझ में नहीं आता कि उसने स्वयं अपने भाई के मरने की झूठी खबर क्यों उड़ाई। खैर, जो हो मैं अपने सिर की कसम देकर कहती हूँ कि तू अपना चाल-चलन को बहुत सम्हाले रहना और वही काम करना जिसमें किशोरी का भला हो, क्योंकि उसका नमक मेरे और तेरे रोम-रोम में भिदा हुआ है—और साथ ही मुझे इस बात का भी पूरा विश्वास है कि किशोरी तुझे जी से चाहती है और वह जो कुछ करेगी तेरे लिए सब अच्छा ही करेगी। बाकी रही किशोरी की माँ और किशोरी का नाना, सो किशोरी की माँ एक ऐसे आदमी के पाले पड़ी है कि जिसके मिजाज का कोई ठिकाना नहीं, ताज्जुब नहीं कि किसी दिन उसे खुद अपनी जान दे देनी पड़ जाय, और किशोरी का नाना परले सिरे का क्रोधी है, अतएव सिवाय किशोरी के तुझे सहारा देने वाला मुझे कोई दिखाई नहीं देता।"

इतना सुनते-सुनते किशोरी को अपनी माँ याद आ गयी और उसकी आंखों से टप-टप आँसू की बूंदें गिरने लगीं। कमला का भी यही हाल था। कमलिनी ने दोनों के आंसू पोंछे और समझा-बुझाकर दोनों कों शान्त किया। थोड़ी देर तक बातचीत बन्द रही, इसके बाद फिर शुरू हुई।

कमला—(कमलिनी से) तो क्या मैं सुन सकती हूँ कि मेरे बाप ने क्या काम किये हैं जिनके लिए आज उसको यह दिन देखना पड़ा?

कमलिनी—हाँ-हाँ, मैं वह सब हाल तुमसे कहूँगी, मगर कमला, तुम यह न समझना कि उसके सबब से हम लोगों के दिल में तुम्हारी मुहब्बत कम हो जायगी।

किशोरी—नहीं-नहीं, ऐसा कदापि नहीं हो सकता ! मैं तुम्हारी नेकियों को कदापि नहीं भूल सकती। तुमने मेरी जान बचाई, तुमने दुःख के समय मेरा साथ दिया, और तुम्हारे ही भरोसे पर मैंने जो जी में आया किया।

लक्ष्मीदेवी—(कमला से)यद्यपि मेरा-तुम्हारा साथ नहीं हुआ है, परन्तु मैं तुम्हारे दिल को इन्हीं दो-चार दिनों में अच्छी तरह समझ गई हूँ। निःसन्देह तुम्हारी दोस्ती कदर करने लायक है और यह बात तो हम लोग अच्छी तरह जानते हैं कि तुमने किशोरी लिए बहुत तकलीफ उठाई, इससे ज्यादा कोई किसी के लिए नहीं कर सकता।

कमला—मैंने किशोरी के लिए कुछ भी नहीं किया, जो कुछ किया किशोरी की मुहब्बत ने किया है। मैं तो केवल इतना जानती हूँ कि मेरी जिंदगी किशोरी की जिंदगी के साथ है। यदि वह खुश है तो मैं भी खुश हूँ, इसे दुःख है तो मुझे भी रंज है। और फिर मैं किस लायक हूँ ! मगर उस समय बेशक मुझे बड़ा दुःख होगा जब किसी को यह कहते सुनूँगी कि 'कमला का बाप दुष्ट था।' हाय, जिसके साथ मैं जान देने के लिए तैयार हूँ, उसी के साथ मेरा बाप बुराई करे !

कमलिनी—नहीं-नहीं, कमला—तुम्हारे बाप ने किशोरी के साथ कोई बुराई नहीं की बल्कि उसने हम तीनों बहिनों के साथ बुराई की है जिन्हें तुम थोड़े दिन पहले जानती भी नहीं थीं। अतएव तुम्हें रंज न करना चाहिए, फिर मैं यह भी उम्मीद करती हूँ कि राजा वीरेन्द्रसिंह भूतनाथ का कसूर माफ कर देंगे।

लक्ष्मीदेवी—बहिन, इन बातों को जाने भी दो ! चाहे भूतनाथ ने हम लोगों के साथ कैसी ही बुराई क्यों न की हो, मगर हम लोग उसे अवश्य माफ करेंगे क्योंकि कमला को किसी तरह उदास नहीं देख सकते। कमला, तू मेरी सगी बहिन से बढ़कर है ! जब कि किशोरी तुझे अपना मानती है तो निःसन्देह हम लोग उससे बढ़कर मानेंगी। सच तो यह है कि आज हम लोग जिन सुखों की आशा कर रहे हैं, वे सब किशोरी के चरणों की बदौलत हैं।

इतना कहकर लक्ष्मीदेवी ने कमला को गले लगा लिया और उसके आँसू पोंछे, क्योंकि इस समय उसकी आँखों से बेअन्दाज आँसू बह रहे थे। किशोरी भी रो रही थी, लक्ष्मीदेवी, लाड़िली और कमलिनी की आँखें भी सूखी न थीं। कमलिनी ने सभी को समझाया और बातों का रंग-ढंग बदल देने की कोशिश की। थोड़ी देर तक सन्नाटा रहने के बाद सभी ने एक-एक करके अपना हाल कहना शुरू किया यहाँ तक कि आज की तीन पहर रात बातों में ही बीत गई और इसके बाद एक नई घटना ने सभी को चौंका दिया।

7

रात पहर भर से कम रह गई थी जब किशोरी, कामिनी, कमला, लक्ष्मीदेवी, लाड़िली और कमलिनी की बातें पूरी हुईं और उन्होंने चाहा कि अब उठकर नीचे चलें और दो घण्टे आराम करें। इस समय महल में बिलकुल सन्नाटा था। लौंडियाँ बेफिक्री के साथ खुर्राटे ले रही थीं, क्योंकि कमलिनी ने सभी को अपने सामने बिदा कर दिया था और कह दिया था कि बिना बुलाये कोई हम लोगों के पास न आवे।

इस समय ये सब जिस महल में हैं वह राजमहल के नाम से पुकारा जाता था। महाराज दिग्विजयसिंह की रानी इसी में रहा करती थीं। इसके बगल में पीछे की तरफ महल का वह दूसरा भाग था जिसमें किशोरी उन दिनों में रहती थी जब दिग्विजयसिंह की जिन्दगी में जबर्दस्ती इस मकान के अन्दर लाई गई थी और लाली तथा कुन्दन भी किशोरी की हिफाजत के लिए उसी मकान में रहा करती थीं जिनका हाल सन्तति के तीसरे भाग के आठवें बयान में लिख आये हैं।

पाठक भूले न होंगे कि उसी महल या बाग में (जिसमें पहले किशोरी रहा करती थी) एक कोने पर वह इमारत थी जिसका दरवाजा हमेशा बन्द रहता था और जिसकी छत फोड़कर किशोरी को साथ लिए लाली उसके अन्दर चली गई थी। यद्यपि महल का वह भाग अलग था, मगर राजमहल की छत पर से वह मकान बखूबी दिखाई देता था। किशोरी, कमला, लाड़िली, कामिनी, लक्ष्मीदेवी और कमलिनी की बात जब समाप्त हुई और वे सब नीचे जाने के इरादे से उठकर खड़ी हुईं तो यकायक लाड़िली की निगाह उस इमारत पर पड़ी जिसके अन्दर किशोरी को लेकर वह (लाली) चली गयी थी। आज भी उस मकान का दरवाजा उसी तरह बन्द था जैसे दिग्विजयसिंह के समय में बन्द रहा करता था, हाँ, पहले की तरह आज उसके दरवाजे पर पहरा नहीं पड़ता था, उस मकान की छत जिसमें लाली ने सेंध लगाई थी, दुरुस्त कर दी गयी थी। बाग में चारों तरफ सन्नाटा था, क्योंकि आजकल उसमें कोई रहता न था और यह बात कमलिनी और लाड़िली इत्यादि को मालूम थी।

जिस समय लाड़िली की निगाह उस मकान की छत पर पड़ी, उसे एक आदमी दिखाई दिया जो बड़ी मुस्तैदी के साथ चारों तरफ घूम-घूम और देख-देखकर शायद इस बात की टोह ले रहा था कि कोई आदमी दिखाई तो नहीं देता, मगर किशोरी और कामिनी इत्यादि ऐसे ठिकाने थीं कि ये सब चारों तरफ सबको देखतीं, मगर इन्हें कोई नहीं देख सकता था क्योंकि जिस मकान की छत पर ये सब थीं, उसके चारों तरफ पुर्से भर ऊँची कनाती दीवार थी और उसमें बहुत से सूराख देखने और तीर मारने के लायक बने हुए थे और इस समय लाड़िली ने भी उस आदमी को ऐसे ही एक सूराख की राह से ही देखा था।

लाड़िली ने कमलिनी का हाथ पकड़ लिया और उस इमारत की तरफ देखने का इशारा किया। कमलिनी ने और इसके बाद एक-एक करके सभी ने उस आदमी को

देखा और अब क्या करेगा यह जानने के लिए सभी की निगाह उसी तरफ अटक गई।

थोड़ी देर बाद उस छत पर नीचे की तरफ से आती हुई रोशनी दिखाई दी जिससे मालूम हुआ कि उसकी छत इस समय पुनः तोड़ी गयी है और नीचे की कोठरी में और भी कई आदमी हैं। रोशनी दिखाई देने के बाद दो आदमी और निकल आये और तीन आदमी उस छत पर दिखाई देने लगे। अब पूरी तरह निश्चय हो गया कि उस मकान की छत्त तोड़ी गई है। उन तीनों आदमियों ने बड़े गौर से उस तरफ देखा जहाँ किशोरी, कामिनी इत्यादि खड़ी थीं, मगर कुछ दिखाई न दिया, इसके बाद उन तीनों ने झुककर छत के नीचे से एक भारी गठरी निकाली। उसके बाद नीचे से दो आदमी और निकलकर छत पर आ गये तथा अब वहाँ पाँच आदमी दिखाई देने लगे।

कमलिनी ने कमला का हाथ पकड़ के कहा, "बहिन, इन शैतानों की कार्रवाई बेशक देखने और जाँचने योग्य है, ताज्जुब नहीं कि कोई अनूठी बात मालूम हो, अस्तु तू जाकर जल्दी से तेजसिंहजी को इस मामले की खबर कर दे, फिर जो कुछ उनके जी में आयेगा, वह करेंगे।" इतना सुनते ही कमला तेजसिंह की तरफ चली गई और सब फिर उसी तरफ देखने लगीं।

थोड़ी देर तक वे पाँचों आदमी बैठकर उस गठरी के साथ न मालूम क्या करते रहे, इसके बाद कमन्द के जरिये वह गठरी बाहर की तरफ बाग में उतार दी गई। उसके पीछे वे पाँचों आदमी भी बाग में उतर आये और गठरी लिए हुए बाग के बीचोंबीच वाले उस कमरे की तरफ चले गये जिसमें पहले किशोरी रहा करती थी। उसी समय कमला भी लौटकर आ पहुँची और बोली, "तेजसिंहजी को खबर कर दी गयी और वे देवीसिंहजी वगैरह ऐयारों को साथ लेकर किसी गुप्त बाग में गये हैं।"

कमलिनी—मुझे भी वहाँ जाना उचित है!

किशोरी—क्यों?

कमलिनी—उस मकान के गुप्त भेद की खबर तेजसिंह को नहीं है, कदाचित् कोई आवश्यकता पड़े।

किशोरी—कोई आवश्यकता न पड़ेगी, बस, चुपचाप खड़ी तमाशा देखो।

लक्ष्मीदेवी—इनमें से अगर एक आदमी को भी तेजसिंह पकड़ लेंगे तो सब भेद खुल जायगा।

कमलिनी—हाँ, सो तो है।

कमला—मैं समझती हूँ कि उस मकान के अन्दर और भी कई आदमी होंगे। अगर वे सब गिरफ्तार हो जाते तो बहुत ही अच्छा होता।

कमलिनी—इसी से तो मैं कहती हूँ कि मुझे वहाँ जाने दो। मेरे पास तिलिस्मी खंजर मौजूद है, मैं बहुत कुछ कर गुजरूँगी।

किशोरी—नहीं बहिन, मैं तुम्हें कदापि न जाने दूंगी, मुझे डर लगता है, तुम्हारे बिना मैं यहाँ नहीं रह सकती।

कमलिनी—खैर, मैं न जाऊँगी। तुम्हारे ही पास रहूँगी।

अब हम बाग के उस हिस्से का हाल लिखते हैं जिसमें वे पाँचों आदमी गठरी

लिए दिखाई दे चुके हैं।

वे पाँचों आदमी गठरी लिए हुए बाग के बीचोंबीच वाले उस मकान में पहुँचे जिसमें पहले किशोरी थी। जब उस मकान के अन्दर पहुँच गये तो उन लोगों ने चकमक से आग झाड़ मशाल जलाई और गठरी को बँधी-बँधाई जमीन पर छोड़कर आपस में यों बातचीत करने लगे—

एक—अच्छा, अब क्या करना चाहिए ?

दूसरा—गठरी को इसी जगह छोड़कर राजमहल में पहुँचना और अपना काम करना चाहिए।

तीसरा—नहीं-नहीं, पहले इस गठरी को ऐसी जगह रखना या पहुँचाना चाहिए जिससे सवेरा होते ही किसी-न-किसी की निगाह इस पर अवश्य पड़े।

चौथा—बाग के इस हिस्से में जब कोई रहता ही नहीं, फिर किसी की निगाह इस पर क्यों पड़ने लगी ?

पाँचवां—अगर ऐसा है तो इसे भी अपने साथ ही राजमहल में ले चलना।

पहला—अजब आदमी हो, राजमहल में अपना जाना तो कठिन हो रहा है तुम कहते हो, गठरी भी लेते चलो।

दूसरा—फिर इस बाग में इस गठरी का रखना बेकार ही है जहाँ कोई आदमी रहता ही नहीं !

चौथा—बस, अब इसी हुज्जत में रात बिता दो ! अभी पहले अपना असल काम तो कर लो जिसके लिए आये हो, चलो, पहले तहखाना खोलो।

दूसरा—ठीक है, मैं भी यही उचित समझता हूँ।

इतना कहकर वह खड़ा हो गया और अपने साथियों को भी उठने का इशारा किया।

8

उन लोगों ने वह बँधी-बँधाई गठरी तो उसी जगह छोड़ दी और बीच वाले कमरे के दरवाजे पर पहुँचे जिसमें ताला बन्द था। एक आदमी ने लोहे की सलाई के सहारे ताला खोला और इसके बाद सब-के-सब उस कमरे के अन्दर जा पहुँचे। यह कमरा इस समय भी हर तरह से सजा और अमीरों के रहने लायक बना हुआ था। पहले तो उन आदमियों ने मशाल की रोशनी में वहाँ की हरएक चीज को अच्छी तरह गौर से देखा और इसके बाद सभी ने मिलकर वहाँ का फर्श जो जमीन पर बिछा हुआ था उठा डाला। यहाँ की जमीन संगमरमर के चौखूटे पत्थर के टुकड़ों से बनी हुई थी जिसे देख एक ने कहा—

एक—अगर हम लोगों का अन्दाज ठीक है और वास्तव में इसी कमरे का पता

हम लोगों को दिया गया है तो यहाँ की जमीन में सूराख करना कोई बड़ी बात नहीं है, दो-चार पत्थर उखाड़ने से सहज ही में काम चल जायेगा।

दूसरा—बेशक ऐसा ही है, मगर मैं समझता हूँ कि थोड़ी देर रुककर बाबाजी की राह देखना उचित होगा।

तीसरा—अजी, अपना काम करो, इस तरह रुकारुकी में रात बीत जायेगी तो मुफ्त में मारे जायँगे।

पहला—मारे क्यों जायँगे? यहाँ है ही कौन, जो हम लोगों को गिरफ्तार करेगा!

तीसरा—(कुछ रुककर और बाहर की तरफ कान लगाकर) किसी के आने की आहट मालूम होती है।

चौथा—(ध्यान देकर) ठीक तो है, मगर सिवाय बाबाजी के और होगा ही कौन?

तीसरा—लीजिए, आ ही तो गए।

चौथा—हमने कहा था कि बाबाजी होंगे।

इतने ही में दो आदमियों को साथ लिए बाबाजी भी वहाँ आ पहुँचे, वही बाबाजी जो मायारानी के तिलिस्मी दरोगा थे। उनके साथ में एक तो मायारानी थी और दूसरा आदमी पटने का सूबेदार वही शेरअलीखाँ था जिसकी लड़की गौहर का हाल ऊपर के किसी बयान में लिखा जा चुका है। मायारानी इस समय अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए थी, मगर उसकी पोशाक जनाने ढंग की और उसी शान-शौकत की थी जैसी कि उन दिनों पहना करती थी जब तिलिस्म की रानी कहलाने का उसे हक था और अपने ऊपर किसी तरह की आफत आने का शानो-गुमान भी न था।

हम इस जगह थोड़ा-सा हाल तेजसिंह का लिख देना भी उचित समझते हैं। कमला की जुबानी समाचार पाकर तेजसिंह तुरन्त तैयार हो गये और तारासिंह वगैरह ऐयारों को साथ लिए हुए महल के उस हिस्से में पहुँचे जिसमें ऊपर लिखी कार्रवाई हो रही थी। उन पाँचों बदमाशों को कमरे के अन्दर जाते हुए तेजसिंह ने देख लिया था इसलिए वे छिपते हुए पिछली राह से कमरे की छत पर चढ़ गये। छत के बीचोंबीच में जमीन से दो हाथ ऊँचा एक रोशनदान बना हुआ था जिसके जरिये कमरे के अंदर रोशनी और कुछ धूप भी पहुँचा करती थी। उस रोशनदान में चारों तरफ बिल्लौरी शीशे इस ढंग के लगे हुए थे जिन्हें जब चाहे खोल और बन्द कर सकते थे। तारासिंह तो हिफाजत के लिए हाथ में नंगी तलवार लिए सीढ़ी पर खड़े हो गए और तेजसिंह, देवीसिंह तथा भैरोंसिंह उसी रोशनदान की राह से कमरे के अन्दर का हाल देखने और उन शैतानों की बातचीत सुनने लगे।

अब हम फिर कमरे के अन्दर का हाल लिखते हैं। बाबाजी ने आने के साथ ही उन पाँचों आदमियों की तरफ देख के कहा—

बाबाजी—अभी तक तुम लोग सोच-विचार में ही पड़े हो?

एक—अनजान जगह में हम लोग कौन काम जल्दी के साथ कर सकते हैं? खैर

अब यह बताइये कि यही जमीन खोदी जायेगी या कोई और ?

बाबाजी—हाँ, यही जमीन खोदी जायेगी, बस, जल्दी करो, रात बहुत कम है। सिर्फ आठ-दस पत्थर उखाड़ डालो, दो हाथ से ज्यादा मोटी छत नहीं है।

दूसरा—बात-की-बात में सब काम ठीक किये देता हूँ, कोई हर्ज नहीं।

इतना कहकर उन लोगों ने जमीन खोदने में हाथ लगा दिया और बाबाजी, मायारानी तथा शेरअलीखाँ में यों बातचीत होने लगी—

मायारानी—जिस राह से हम लोग आये हैं, उसी राह से अपने फौजी सिपाहियों को भी ले आते तो क्या हर्ज था ?

बाबाजी—तुम बाज दफे बच्चों की सी बात करती हो। एक तो वह तिलिस्मी रास्ता इस लायक नहीं कि उस राह से हम सैकड़ों फौजी आदमियों को ला सकें। क्या जाने किससे क्या गलती हो जाये या कैसी आफत आ पड़े, सिवाय इसके सैकड़ों बल्कि हजारों आदमियों पर तिलिस्मी गुप्त भेदों का प्रकट कर देना क्या मामूली बात है ? अगर ऐसा होता तो बुजुर्ग लोग जिन्होंने इस किले और तिलिस्म को तैयार किया है यह रास्ता क्यों बनाते जिसे इस समय हम लोग खोद रहे हैं ? इसे भी जाने दो, सबसे भारी बात सोचने की यह है कि इस तिलिस्मी रास्ते से जिधर से हम लोग आये हैं, हमारी फौज इस किले में तब पहुँच सकती है जब वह इस पहाड़ के ऊपर चढ़ आये मगर यह कब हो सकता कि हजारों आदमी इस पहाड़ पर चढ़ आवें और किले वालों को खबर तक न हो। ऐसा होना बिल्कुल असम्भव है, मगर जब हम इस रास्ते को खोल देंगे तो हमारे फौजी सिपाहियों को पहाड़ पर चढ़ने की जरूरत न रहेगी, क्योंकि इसका दूसरा मुहाना 'जस' नदी के किनारे पड़ता है जो इस पहाड़ के नीचे कुछ हटकर बहती है।

मायारानी—तो क्या यहाँ से उस नदी तक जाने के लिए पहाड़ के अन्दर ही अन्दर सीढ़ियाँ बनी हुई हैं ?

बाबाजी—बेशक ऐसा ही है। रास्ते के बारे में इस किले की अवस्था ठीक 'देवगढ़'[1] की तरह समझनी चाहिए। मैं जहाँ तक खयाल करता हूँ यह रोहतासगढ़ का किला

1. देवगढ़' का किला हैदराबाद (दक्षिण) लगभग तीन सौ मील के उत्तर और पश्चिम के कोने में है। यह किला बहुत ऊँची पहाड़ी के ऊपर विचित्र ढंग का बना हुआ है जिसके देखने से आश्चर्य होता है। पहाड़ का बहुत बड़ा भाग छील-छालकर दीवार की जगह पर कायम किया गया है। पहाड़ के चारों तरफ एक खाई है, उसके बाद तिहरी दीवार है। अन्दर जाने का रास्ता किसी तरफ से मालूम नहीं होता। शहर उन तीनों दीवारों के बाहर बसा हुआ है और शहर के शहरपनाह की बड़ी मजबूत दीवार है। पहाड़ काटकर अन्दर किले में जाने के लिए उसी तरह की सीढ़ियाँ बनी हुई हैं जैसे किसी बुर्ज या धरहरे के ऊपर चढ़ने के लिए होती हैं। उस राह से जानकार आदमी का भी बिना मशाल की रोशनी के सीढ़ियाँ चढ़कर किले के अन्दर जाना बहुत मुश्किल है। किले के अन्दर जहाँ वह रास्ता समाप्त हुआ है उसके मुँह पर भारी लोहे का तवा इसलिए रखा हुआ है कि यदि कदाचित् दुश्मन इस रास्ते से घुस भी आवें तो तवे के ऊपर सैकड़ों मन लकड़ियाँ रखकर आग जला दी जाय जिसमें उसकी गर्मी से दुश्मन अन्दर-ही-अन्दर जल मरें। इस किले में पानी के कई हौज हैं और एक सौ साठ

(शेष पृष्ठ 328 पर देखें)

और वह देवगढ़ का किला एक ही आदमी का बनवाया हुआ है।

मायारानी—तो क्या फौज के सिपाही भीतर-ही-भीतर इस छत को नहीं तोड़ सकते थे जो दूसरी राह से आकर हम लोगों को यह काम करना पड़ा?

बाबाजी—नहीं, इसका एक खास सबब और भी है जो इस समय छत के नीचे जाने ही से तुम्हें मालूम हो जायेगा। (शेरअलीखाँ की तरफ देख के)मैं समझता हूँ आपकी फौज उस नदी के किनारे नियत स्थान पर पहुँच गई होगी?

शेरअलीखाँ—जरूर पहुँच गई होगी, केवल हम लोगों के जाने की देर है, मगर अफसोस यही है कि अब रात बहुत कम रह गई है।

बाबाजी—कोई हर्ज नहीं, आजकल इस बाग में बिल्कुल सन्नाटा रहता है, कोई झाँकने के लिए भी नहीं आता, मगर पहर दिन चढ़े तक भी हमारी फौज यहाँ तक आ पहुँचे तो किसी को पता न लगेगा और बात-की-बात में यह किला अपने कब्जे में आ जायेगा। बड़ी खुशी की बात तो यह है कि आजकल किशोरी, कामिनी, लाड़िली और तारा भी इस किले में मौजूद हैं।

इतने ही में बाहर की तरफ से आवाज आई, "तारा मत कहो, लक्ष्मीदेवी कहो, क्योंकि अब तारा और लक्ष्मीदेवी में कोई भेद नहीं रहा।"

आश्चर्य से बाबाजी, मायारानी शेरअलीखाँ और उन पाँचों आदमियों की निगाह जो जमीन खोदने में लगे हुए थे, दरवाजे की तरफ घूम गई और उन्होंने एक विचित्र आदमी को कमरे के अन्दर आते देखा। हमारे ऐयार लोग भी जो छत के ऊपर रोशनदान की राह से झाँककर देख रहे थे, ताज्जुब के साथ उस आदमी तरफ देखने लगे।

इस विचित्र आदमी का तमाम बदन बेशकीमत स्याह पोशाक और फौलादी जर्रः मोजे और जाली इत्यादि से ढका हुआ था, केवल चेहरे का हिस्सा फौलादी जालीदार बारीक नकाब के अन्दर से झलक रहा था मगर वह इतना ज्यादा काला था और लाल तथा बड़ी-बड़ी आँखें ऐसी चमक रही थीं कि देखने से डर मालूम होता था। यह आदमी बहुत ही ताकतवर है इसका अन्दाज तो केवल इतने ही से मिल सकता था कि उसके बदन पर कम-से-कम दो मन लोहे का सामान था और उसकी चाल बहुत गम्भीर तथा निडर बहादुरों की सी थी। ढाल, तलवार और खंजर के सिवाय और कोई हरबा उसके पास दिखाई न देता था।

इस विचित्र आदमी के आते ही ताज्जुब के साथ-ही-साथ डर भी सभी के दिल पर

फुट ऊँचा एक बुर्ज भी है जिस पर से दूर-दूर तक की छटा दिखाई देती है। यह किला अभी तक देखने लायक है, देखने से अक्ल दंग होती है, मुमकिन नहीं कि कोई इसे लड़कर फतह कर सके। चौदहवीं सदी में दिल्ली का बादशाह 'मुहम्मद तुगलक' दिल्ली उजाड़ के वहाँ की रिआया को इसी देवगढ़ में बसाने के लिए ले गया था और देवगढ़ का नाम दौलताबाद रखकर इसे अपनी राजधानी कायम किया था, परन्तु अन्त में उसे पुन: लौटकर दिल्ली आना पड़ा। देवगढ़ के इर्दगिर्द कई स्थान अब भी देखने योग्य हैं, जैसे कि एलोरा की गुफा इत्यादि, जिसका आनन्द देशाटन करने वालों को ही मिल सकता है।

छा गया और बाबाजी ने घबराई आवाज में इस आदमी से पूछा, "आप कौन हैं?"

आदमी—हम जिन्न हैं।

बाबाजी—मैं समझता हूँ कि जिन्न किसे कहते हैं।

आदमी—जिन्न उसको कहते हैं जो सब जगह पहुँच सके, भूत भविष्य वर्तमान तीनों कालों का हाल जाने, कोई हरबा उस पर असर न करे और जो किसी के मारने से न मरे।

बाबाजी—(ताज्जुब से) तो क्या ये सब गुण आप में हैं?

जिन्न—बेशक!

बाबाजी—मैं कैसे समझूँ?

जिन्न—आजमा के देख लो!

बाबाजी तो उस जिन्न से बातें कर रहे थे, मगर मायारानी और शेरअलीखाँ का डर के मारे कलेजा सूख रहा था। मायारानी तो औरत ही थी मगर शेरअलीखाँ बहादुर होकर डर के मारे काँप रहा था। इसका सबब शायद यह हो कि मुसलमान लोग जिन्न का होना वास्तविक और सच मानते हैं। जो हो मगर बाबाजी अर्थात् दारोगा को जिन्न की बात का विश्वास नहीं हो रहा था, फिर भी जिस समय उसने कहा कि 'आजमा के देख लो' तो उस समय दारोगा भी बेचैन हो गया और सोचने लगा कि इसे किस तरह आजमावें?

जिन्न—शायद तुम सोच रहे हो कि इस जिन्न को किस तरह आजमावें क्योंकि तुम्हारे पास कोई जरिया आजमाने का नहीं है। अच्छा, हम खुद अपनी बात का सबूत देते हैं, लो, सम्हल जाओ!

इतना कहकर उस जिन्न ने अपना बदन झाड़ा और अँगड़ाई ली, इसके बाद ही उसके तमाम बदन में से आग की चिनगारियाँ निकलने लगीं और इतनी ज्यादा चमक पैदा हुई कि सभी की आँखें चौंधियाने लगीं। यह चिनगारियाँ और चमक उस फौलादी जर्रः और जाल में से निकल रही थी जो वह अपने बदन में पहने हुए था। यह हाल देखकर मायारानी, शेरअलीखाँ और पाँचों आदमी घबरा गये, मगर दारोगा को फिर भी विश्वास न हुआ, तिलिस्मी खंजर की तरह उसके जर्रः और जाल में भी किसी प्रकार का तिलिस्मी असर खयाल करके उसने अपने दिल को समझा लिया और कहा।

दारोगा—खैर, इससे हमें कोई मतलब नहीं, आप यह कहिये कि यहाँ किस काम से आये हैं?

जिन्न—(चिनगारियों और चमक को बन्द करके)तुम लोगों की हरामजदगी का तमाशा देखने और तुम लोगों के कामों में विघ्न डालने के लिए।

दारोगा—यह तो मैं खूब जानता हूँ कि तुम न तो जिन्न हो और न शैतान ही बल्कि कोई धूर्त ऐयार हो। यह सामान जो तुम्हारे बदन पर है, तिलिस्मी है और सहज में तुम्हें कोई गिरफ्तार नहीं कर सकता। मगर साथ ही इसके यह भी समझ रखो कि मैं तिलिस्म का दारोगा हूँ और चालीस वर्ष तक तिलिस्म का इन्तजाम करता रहा हूँ।

जिन्न—(जोर से हँसकर) बेईमान, हरामखोर, उल्लू का पट्ठा कहीं का!

दारोगा—(गुस्से से) बस, जुबान सम्हालकर बातें करो।

जिन्न—अबे जा दूर हो सामने से। चालीस वर्ष तक तिलिस्म का इन्तजाम करता रहा! तेरे ऐसे बेईमान और मालिक की जान लेने वाले भी अगर तिलिस्मी कारखाने को जानने की डींग हाँकें तो बस हो चुका। बस, अब बेहतरी इसी में है कि तुम यहाँ से चले जाओ और जो किया चाहते हो उसका ध्यान छोड़ो नहीं तो अच्छा न होगा।

इतना कहकर उसने शेरअलीखाँ, मायारानी और उन पाँचों आदमियों की तरफ भी देखा जो इस मकान में पहले आये थे।

दारोगा ने क्षण-भर तो कुछ सोचा और फिर शेरअलीखाँ की तरफ देख के बोला, "क्या एक अदना ऐयार मक्कारी करके हम लोगों का बना-बनाया खेल चौपट कर देगा? देख क्या रहे हो! मारो इस कम्बख्त को, बचकर जाने न पावे।"

शेरअलीखाँ पहले तो कुछ सहमा हुआ था, मगर दारोगा की बातचीत ने उसे निडर कर दिया और जिन्न का खयाल छोड़ उसने भी कुछ-कुछ यकीन कर लिया कि यह कोई ऐयार है। आखिर उसने म्यान से तलवार निकाल ली और उन पाँचों आदमियों की तरफ जो जमीन खोदने के लिए आये थे कुछ इशारा करके जिन्न के ऊपर हमला किया। जिन्न ने इसकी कुछ भी परवाह न की और बड़े गम्भीर भाव से चुपचाप खड़ा रहा तथा शेरअलीखाँ के हमले को बरदाश्त कर गया, मगर शेरअलीखाँ के हमले का नतीजा कुछ भी न निकला क्योंकि उसकी तलवार आवाज देती हुई जमीन पर गिर पड़ी। इसके साथ ही उन पाँचों आदमियों ने भी जिन्न पर हमला किया, मगर जिन्न ने इसकी भी कुछ परवाह न की, बल्कि शेरअलीखाँ के गले में हाथ डाल तथा पैर की आड़ लगाकर ऐसा झटका दिया कि वह किसी तरह सम्हल न सका और जमीन पर गिर पड़ा। जिन्न उसकी छाती पर सवार हो गया और जोर से बोला, "खबरदार, मुझ पर कोई हमला न करे। कोई मेरी तरफ बढ़ा और मैंने शेरअलीखाँ का सिर काटकर अलग किया।"

मालूम होता है कि वे पाँचों आदमी शेरअलीखाँ के ही नौकर थे क्योंकि उसी के इशारे से जिन्न पर हमला करने के लिए तैयार हो गये थे और जब उसी को जिन्न के नीचे मजबूर देखा तो यह सोचकर कि कदाचित् हम लोगों के हमला करने से नाराज होकर जिन्न उसका सिर काट ही न ले हमला करने से रुक गये और पीछे हटकर ताज्जुब की निगाहों से उस विचित्र व्यक्ति को देखने लगे जिसने अपना नाम जिन्न रखा था, साथ ही इसके डर और आश्चर्य ने मायारानी और दारोगा के पैर भी वहीं चिपका दिये।

जब हमला करने वाले अलग हो गये तो जिन्न ने नर्मी के साथ शेरअलीखाँ से कहा जो उसके नीचे दबा हुआ मजबूर पड़ा था और जीवन की आशा छोड़ चुका था—

जिन्न—मुझे आपसे किसी तरह की दुश्मनी नहीं और न मैं आपकी जान ही लिया चाहता हूँ, सिर्फ दो बात आपसे पूछा चाहता हूँ, लेकिन अगर इसमें किसी तरह के हीले और हुज्जत को जगह मिलेगी तो लाचार रहम भी न कर सकूँगा।

शेरअलीखाँ—वे कौन-सी दो बातें हैं?

जिन्न—एक तो जो कुछ मैं इस समय आपसे पूछूँ, उसका जवाब एकदम सच-सच दीजिये।

शेरअलीखाँ ने सिर हिला दिया, मानो स्वीकार किया।

जिन्न—दूसरी बात मैं अपने सवालों के अन्त में कहूँगा।

शेरअलीखाँ—बहुत अच्छा, इन्हें भी पूछ डालिये।

जिन्न—आपने इस कम्बखत 'मुन्दर' का साथ क्यों दिया, जिसने अपने को मायारानी के नाम से मशहूर कर रखा है?

'मुन्दर' के शब्द में जादू का असर था जिसने मायारानी और दारोगा के कलेजे को दहला दिया। यह एक ऐसी गुप्त और भेद की बात थी जिसके सुनने के लिए दोनों तैयार न थे और न यहाँ सुनने की उन दोनों की आशा ही थी।

शेरअलीखाँ—(ताज्जुब से) मुन्दर!

जिन्न—हाँ मुन्दर, आप यह न समझिये कि यह आपके दोस्त बलभद्रसिंह की लड़की है।

शेरअलीखाँ—तो क्या यह हमारे दोस्त के दुश्मन हेलासिंह की लड़की मुन्दर है?

जिन्न—जी हाँ।

शेरअलीखाँ—(जोश के साथ) बस आप मेहरबानी करके मुझे छोड़ दीजिए। अगर आप बहादुर हैं और आपको बहादुरी का दावा है तो मुझे छोड़िये, मैं कसम खाकर कहता हूँ कि अगर आपकी यह बात सच निकली तो आपकी गुलामी अपनी इज्जत का सबब समझूँगा।

जिन्न तुरन्त उसकी छाती पर से उठकर अलग खड़ा हो गया और मायारानी तथा दारोगा की सूरत गौर से देखने लगा, जिनके चेहरे का रंग गिरगिट की तरह बदल रहा था।

शेरअलीखाँ उठकर खड़ा हो गया और गुस्से-भरी आँखों से मायारानी की तरफ देखकर बोला, "इस बहादुर ने (जिन्न की तरफ इशारा करके) जो कुछ कहा, क्या वह ठीक है?"

मायारानी—झूठ, बिल्कुल झूठ!

जिन्न—शायद मुन्दर को इस बात की खबर नहीं कि असली मायारानी अर्थात् लक्ष्मीदेवी का बाप प्रकट हो गया है और वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों के सामने ही वह अपनी लड़की लक्ष्मीदेवी से मिला जो तारा के नाम से कमलिनी के मकान में इस तरह रहती थी कि कमलिनी को भी अब तक उसका हाल मालूम न होने पाया था और इस समय बलभद्रसिंह और लक्ष्मीदेवी इस रोहतासगढ़ किले के अन्दर मौजूद भी हैं। (शेरअलीखाँ से) मैं समझता हूँ कि तुम उनसे मिलना खुशी से पसन्द करोगे और मुलाकात होने पर सच-झूठ का शक भी न रहेगा, अच्छा, अब मैं जाता हूँ। तुम जो मुनासिब समझो, करो।

शेरअलीखाँ—सुनिये, वह दूसरी बात तो आपने कही ही नहीं।

जिन्न—अब इस समय उसके कहने की कोई जरूरत नहीं मालूम पड़ती है, फिर देखा जायेगा!

इतना कह जिन्न तो वहाँ से रवाना हो गया और इन सभी को परेशानी की हालत में छोड गया। मायारानी और दारोगा की इस समय अजब हालत थी। मौत की भयानक

सूरत उनकी आँखों के सामने दिखाई दे रही थी, तमाम बदन सनसना रहा था, सिर में चक्कर आ रहे थे, पैरों में इतनी कमजोरी आ गई थी कि खड़ा रहना मुश्किल होगया था, यहाँ तक कि दोनों जमीन पर बैठ गये और अपनी बदकिस्मती का इन्तजार करने लगे।

जिन्न के चले जाने के बाद शेरअलीखाँ ने मायारानी की तरफ देख के कहा—

शेरअलीखाँ—तूने तो केवल एक ही कलंक का टीका अपने माथे पर दिखाया था जिसपर मैंने इसलिये विशेष ध्यान नहीं दिया कि तू मेरे दोस्त की लड़की है, मगर अब तो एक ऐसी बात मालूम हुई है जिसने मुझे तड़पा दिया, मेरे कलेजे में दर्द पैदा कर दिया, रंजोगम का पहाड़ मेरे ऊपर डाल दिया। अफसोस, बलभद्रसिंह मेरा लँगोटिया दोस्त और लक्ष्मीदेवी मेरी मुँह बोली लड़की! हाँ राजा गोपालसिंह से मुझे कोई ऐसा सरोकार न था सिवाय इसके कि वह मेरे दोस्त का दामाद था। निःसन्देह यह सब काम इसी कम्बख्त दारोगा की मदद से किया गया होगा!

मुन्दर—(खड़ी होकर) बड़े अफसोस की बात है कि तुमने एक मामूली आदमी की झूठी बातों पर विश्वास करके मेरी तरफ कुछ भी ध्यान न दिया और न अपनी तथा उसकी बर्बादी का ही कुछ खयाल किया जिसके साथ तुमने कई काम करने के लिए कसमें खाई थीं।

शेरअली—खैर, मैं थोड़ी देर के लिए तेरी बात माने लेता हूँ कि वह एक झूठा और मामूली आदमी था, मगर इस बात का पता लगाना कौन कठिन है कि इस वक्त इस किले के अन्दर बलभद्रसिंह है या नहीं।

मुन्दर—उस बनावटी जिन्न ने तुम्हें धोखा दिया, जब उसने देखा कि वह अकेले हम लोगों को गिरफ्तार नहीं कर सकता तो यह चालबाजी खेली जिसमे तुम मेरे बाप बलभद्रसिंह का पता लगाने के लिए जिसे मरे हुए एक जमाना बीत गया है, इस किले वालों से मिलकर गिरफ्तार हो जाओ और अपने साथ हम लोगों को भी बरबाद करो। अगर तुमको उसकी सचाई पर ऐसा ही दृढ़ विश्वास है तो हम लोगों को इस किले के बाहर पहुँचा दो और तब जो जी में आवे सो करो।

शेरअली—जब मुझे उसकी बातों पर विश्वास ही है तो तुझे यहाँ से राजी-खुशी के साथ क्यों जाने दूँगा जिसने हजारों आदमियों को धोखे में डालकर बर्बाद किया और मुझे प्रतापी राजा वीरेन्द्रसिंह के साथ दुश्मनी करने के लिए तैयार किया?

मुन्दर—तुमने मुफ्त में मेरा साथ देना स्वीकार नहीं किया, तुमने मेरे बाप बलभद्रसिंह की दोस्ती का खयाल नहीं किया बल्कि तुमने उस दौलत की लालच में पड़ कर मेरा साथ दिया जिसने तुम्हें अमीर ही नहीं बल्कि जिन्दगी भर के लिए लापरवाह कर दिया—मेरे बाप बलभद्रसिंह के साथ तुमको मुहब्बत थी यह बात तो मैं तब समझूं जब सब मेरी दौलत मुझे वापस कर दो। यह भला कौन भलमनसी की बात है कि मेरी कुल जमा-पूंजी लेकर मुझे कंगाल बना दो और अन्त में यों धोखा देकर बर्बाद करो!

शेरअली—(हँसकर) यह किसी बड़े भारी बेवकूफ का काम है कि अपने घर में आई दौलत को फिर निकाल बाहर करे तिस पर भी ऐसे नालायक की दौलत जिसने एक नहीं बल्कि सैकड़ों खून किये हों!

मुन्दर—(क्रोध में आकर) तो क्या तुम अपने मन की ही करोगे ?

शेरअली—बेशक !

मुन्दर—अच्छा तो मैं जाती हूँ, जो तुम्हारे जी में आवे, करो।

शेरअली—ऐसा नहीं हो सकता।

इतना सुनते ही मायारानी ने तिलिस्मी खञ्जर कमर से निकाल लिया और शेरअलीखाँ की तरफ बढ़ा ही चाहती थी कि सामने के दरवाजे से आता हुआ फिर वही जिन्न दिखाई पड़ा।

जिन्न—(मायारानी की तरफ इशारा करके) इसके कब्जे से तिलिस्मी खञ्जर ले लेना मैं भूल गया था क्योंकि जब तक यह खञ्जर इसके पास रहेगा, यह किसी के काबू में न आएगी।

यह कहकर उसने मायारानी की तरफ हाथ बढ़ाया और मायारानी ने वह खंजर उसके बदन के साथ लगा दिया, मगर उस पर इसका असर कुछ भी न हुआ। जिन्न ने मायारानी के हाथ से खंजर छीन लिया तथा अँगूठी भी निकाल ली और इसके बाद फिर बाहर का रास्ता लिया।

दरोगा और जितने आदमी वहाँ मौजूद थे, सब आश्चर्य और डर के साथ मुँह देखते ही रह गये, कोई एक शब्द भी मुँह से न निकाल सका।

अब इस जगह हम पुनः थोड़ा-सा हाल उन ऐयारों का लिखना चाहते हैं जो इस कमरे की छत पर बैठें सब तमाशा देख और सभी की बातें सुन रहे थे।

शेरअलीखाँ को छोड़कर जब वह जिन्न कमरे के बाहर निकला तो उसी समय तेजसिंह छत के नीचे उतरे और इस फिक्र में आगे की तरफ बढ़े कि जिन्न का पीछा करें मगर जब ये छिपते हुए सदर दरवाजे के पास पहुँचे, जिधर से वह जिन्न आया और फिर लौट गया था तो उन्होंने और भी कई बातें ताज्जुब की देखीं। एक तो यह कि वह जिन्न लौट कर चला नहीं गया, बल्कि अभी तक दरवाजे की बगल में छिपा हुआ खड़ा है और कान लगाकर सब बातें सुन रहा है। दूसरे यह कि जिन्न अकेला नहीं है, बल्कि उसके साथ एक आदमी और भी है जो स्याह नकाब से अपने को छिपाये हुए और हाथ में एक नंगी तलवार लिए है। जब यह जिन्न दोहरा कर कमरे के अन्दर गया और मायारानी से तिलिस्मी खंजर छीन कर फिर बाहर चला आया तो अपने साथी को लिए हुए बाग की तरफ चला और कुछ दूर जाने के बाद अपने साथी से बोला, "आओ भूतनाथ, अब तुमको फिर उसी कैदखाने में छोड़ आवें जिसमें राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों ने तुम्हें कैद किया था और उसी तरह हथकड़ी-बेड़ी तुम्हें पहना दें जिसमें उन लोगों को इस बात का गुमान भी न हो कि भूतनाथ को कोई छुड़ा ले गया था!"

भूतनाथ—बहुत अच्छा, मगर यह तो कहिये कि अब मेरी क्या दशा होगी ?

जिन्न—दशा क्या होगी ? मैं तो कह ही चुका कि तुम हर तरह से बेफिक्र रहो ठीक समय पर मैं तुम्हारे पास पहुँच जाऊँगा।

भूतनाथ—जैसे आपकी मर्जी, मगर मैं समझता हूँ कि राजा वीरेन्द्रसिंह के आने में अब विलम्ब नहीं और उनके आने के साथ ही मेरा मुकदमा पेश हो जायगा।

जिन्न—क्या हर्ज है, मुझे तुम हर वक्त अपने पास समझो और बेफिक्र रहो।

भूतनाथ—जो मर्जी।

तेजसिंह ने जो छिपे हुए उन दोनों के पीछे जा रहे थे, ये बातें भी सुन लीं और उन्हें हद से ज्यदा आश्चर्य हुआ। जिन्न और भूत दोनों उस मकान के पास पहुँचे जिसकी छत फोड़ी गई थी और जो तिलिस्मी तहखाने के अन्दर जाने का दरवाजा था। भूतनाथ ने कमन्द लगाई और उसी के सहारे जिन्न तथा भूतनाथ उसके ऊपर चढ़ गए और टूटी हुई छत की राह से अन्दर उतर गए। तेजसिंह ने भी उसके अन्दर जाने का इरादा किया मगर फिर कुछ सोचकर लौट आए और उसी कमरे की छत पर चले गए जहाँ अपने साथियों को छोड़ा था।

अब हम पुनः कमरे के अन्दर का हाल लिखते हैं। जब मायारानी से तिलिस्मी खंजर छीन कर वह जिन्न कमरे के बाहर चला गया तो मायारानी बहुत ही डरी और जिन्दगी से नाउम्मीद होकर सोचने लगी कि अब जान बचना मुश्किल है, बड़ी नादानी की जो यहाँ आई, भाग निकलने पर भी धनपत वाली करोड़ों रुपये की जमा मेरे हाथ में थी। अगर चाहती या आज के दिन की खबर होती तो किसी और मुल्क में चली जाती और जिन्दगी भर अमीरी के साथ आनन्द करती। मगर दुश्मनी की डाह में वह भी न होने पाया, असंभव बातों के लालच में पड़ कर शेरअलीखाँ के घर में वह सब माल रख दिया और उस स्वार्थी और मतलबी ने ऐसे समय में मेरे साथ दगा की। अब क्या किया जाय? मैं कहीं की भी न रही। एक तो अब मुझे बचने की आशा ही नहीं रही, फिर अगर मान भी लिया जाय कि पहले की तरह यदि अब भी राजा गोपालसिंह मुझे छोड़ देंगे तो मैं कहाँ जाकर रहूँगी और किस तरह अपनी जिन्दगी बिताऊँगी? हाय, इस समय मेरा मददगार कोई भी नहीं दिखाई देता!

मायारानी इन सब बातों को सोच रही थी और शेरअलीखाँ क्रोध में भरा हुआ लाल आँखों से उसे देख रहा था कि यकायक कई आदमियों के आने की आहट पाकर वे दोनों चौंके और दरवाजे की तरफ घूम गये। हमारे बहादुर ऐयारों पर नजर पड़ी और सब के सब आश्चर्य से उनकी तरफ देखने लगे।

सुबह की सफेदी ने रात की स्याही को धोकर अपना रंग इतना जमा लिया था कि बाग का हरएक गुलबूटा साफ-साफ दिखाई देने लग गया था जब तेजसिंह, देवीसिंह, भैरोंसिंह और तारासिंह कमरे की छत पर से नीचे उतरे और शेरअलीखाँ, मायारानी और उनके आदमियों के सामने जा खड़े हुए।

तेजसिंह ने मुस्कराते हुए मायारानी की तरफ देखा और आगे बढ़कर कहा—

तेजसिंह—केवल राजा गोपालसिंह ही ने नहीं, बल्कि हम लोगों ने भी उनकी आज्ञा पाकर इसलिए कई दफे तुझे छोड़ दिया था कि देखें न्यायी ईश्वर तुझे तेरे पापों का फल क्या देता है मगर ईश्वर की मर्जी का पता लग गया। वह नहीं चाहता कि तू एक दिन भी आराम के साथ कहीं रह सके और हम लोगों के सिवाय किसी दूसरे या गैर पर अपनी जिन्दगी की आखिरी नजर डाले। केवल तू ही नहीं (दारोगा की तरफ देखकर) इस नकटे की बदकिस्मती भी इसे किसी दूसरी जगह जाने नहीं देती और घुमा

फिरा कर घर-बैठे हम लोगों के सामने ले आती है। हाँ, यह (शेरअलीखाँ) एक नये बहादुर हैं जो हम लोगों के साथ दुश्मनी करने के लिए तैयार हुए हैं।

शेरअलीखाँ—(हाथ जोड़कर) नहीं-नहीं, मैं खुदा की कसम खाकर कहता हूँ कि मैं आप लोगों के साथ दुश्मनी का वर्त्ताव नहीं रक्खा चाहता और न मुझमें इतनी सामर्थ्य है। मुझे तो इस बदकार ने धोखा दिया। मुझे इसका असल हाल मालूम न था। मैं सुन चुका हूँ कि आप लोग बड़े बहादुर और दिल खोल के खैरात देनेवाले हैं इसलिए भीख के ढंग पर अपने उन कसूरों की माफी माँगता हूँ जो इस वक्त तक कर चुका हूँ।

तेजसिंह—अगर तुम्हारा दिल साफ है और आगे कसूर करने का इरादा नहीं है तो हमने माफ किया। अच्छा आओ और इन दोनों बदकारों को लेकर हमारे साथ चलो। हाँ, यह तो बताओ कि ये पाँचों आदमी तुम्हारे हैं या इस दरोगा के हैं?

शेरअलीखाँ—जी हाँ, ये पाँचों आदमी मेरे ही हैं।

तेजसिंह—और भी तुम्हारा कोई आदमी इस बाग में आया या आने वाला है?

शेरअलीखाँ—जी नहीं, मगर थोड़ी-सी फौज इस पहाड़ी के नीचे नदी-किनारे मौजूद है जिसका…

तेजसिंह—(बात काट कर) उसका हाल हमें मालूम है, खैर देखा जायगा, तुम हमारे साथ आओ।

तेजसिंह की आज्ञानुसार सब के सब कमरे के बाहर निकले। मायारानी और दरोगा के लिए इस वक्त मौत का सामान था, मगर लाचार कोई वस नहीं चल सकता था और न वे दोनों यहाँ से भाग ही सकते थे। तेजसिंह ने भैरोंसिंह को कुछ समझाकर उसी बाग में छोड़ दिया। और बाकी सभी को साथ लिए हुए अपने स्थान का रास्ता लिया। रास्ते में शेरअलीखाँ से यों बातचीत होने लगी—

तेजसिंह—आज की रात केवल हम लोगों के लिए नहीं बल्कि तुम्हारे लिए भी अनूठी ही रही।

शेरअलीखाँ—बेशक ऐसा ही है, जिस राह से मैं इस बाग में आया हूँ और यहाँ आकर जो कुछ देखा जन्म भर याद रहेगा। मैं निश्चिन्त होने पर सब हाल आपसे कहूँगा तो आप भी सुनकर आश्चर्य करेंगे।

तेजसिंह—हमें सब हाल मालूम है। रास्ते के बारे में हम लोगों के लिए कोई नई बात नहीं है क्योंकि जिस तहखाने की राह तुम लोग आये हो, उसी राह से हम लोग कई दफे आ चुके हैं। रही जिन्न वाली बात, सो वह भी हम लोगों से छिपी नहीं है।

शेरअलीखाँ—(ताज्जुब से) क्या आप लोग बहुत देर से यहाँ आये हुए थे?

तेजसिंह—देरी से! बल्कि हमारे सामने तुम इस बाग में आये हो। हाँ, तुम्हारे पाँचों नौकर पहले आ चुके थे, बल्कि यों कहना चाहिए कि उन्हीं के आने की खबर पाकर हम लोग आए थे।

शेरअलीखाँ—आप लोग हम लोगों को कहाँ से देख रहे थे?

तेजसिंह—सो नहीं कह सकते, मगर कोई मामला ऐसा नहीं हुआ जिसे हम लोगों ने न देखा हो या जिसे हम लोग न जानते हों। (मायारानी और दारोगा की

तरफ इशारा करके) हम लोगों का सामना होने के पहले तक ये दोनों कम्बख्त सोचते होंगे कि जिन्न ने पहुँच कर काम में बाधा डाल दी, नहीं तो कमरे की जमीन खुद जाती और सुरंग की राह से तुम्हारी फौज यहाँ पहुँच कर किले को दखल कर लेती।

शेरअलीखाँ—बेशक ऐसा ही है और मैं भी इसका पक्ष लिए ही जाता अगर उन जिन्न ने, चाहे वह कोई भी हो, मुझे कह न दिया होता कि "यह मायारानी असल में तुम्हारे दोस्त की लड़की लक्ष्मीदेवी नहीं है बल्कि तुम्हारे दोस्त के दुश्मन हेलासिंह की लड़की मुन्दर है।"

तेजसिंह—मगर यह खयाल झूठा था क्योंकि तुम्हारी फौज के आने की खबर हम लोगों को मिल चुकी थी और हम लोग उसके रोकने का बन्दोबस्त कर चुके थे केवल इतना ही नहीं बल्कि तुम्हारी फौज के सेनापति महबूबखाँ को हमारे एक ऐयार ने गिरफ्तार करके पहर रात जाने के पहले ही इस किले में पहुँचा भी दिया था।

शेरअलीखाँ—(आश्चर्य से) तो क्या महबूबखाँ यहाँ कैद है?

तेजसिंह—बेशक!

शेरअलीखाँ—ओफ, आप लोगों के साथ दुश्मनी करना आप ही अपनी मौत को बुलाना है!

तेजसिंह—(मायारानी की तरफ देख के) बड़ी खुशी की बात है कि आज तुम अपनी दोनों नालायक बहिनों को भी इसी महल के अन्दर देखोगी।

मायारानी ने इसका जवाब कुछ भी न दिया और सिर झुका लिया मगर भीतर से उसका रंज और भी बढ़ गया क्योंकि कमलिनी तथा लाड़िली के यहाँ होने की खबर उसे बहुत बुरी मालूम हुई।

तेजसिंह सभी को लिए अपने कमरे में पहुँचे। शेरअलीखाँ के लिए एक मकान दिया गया, दारोगा को कैदखाने की अँधेरी कोठरी नसीब हुई, और कमलिनी की इच्छानुसार मायारानी कैदियों की सूरत में महल के अन्दर पहुँचाई गई!

9

दिन पहर भर से ज्यादा चढ़ चुका है। रोहतासगढ़ के महल में एक कोठरी के अन्दर जिसके दरवाजे में लोहे के सींखचे लगे हुए हैं मायारानी सिर नीचा किये हुए गर्म गर्म आँसुओं की बूँदों से अपने चेहरे की कालिख धोने का उद्योग कर रही है, मगर उसे इस काम में सफलता नहीं होती। दरवाजे के बाहर सोने की पीढ़ियों पर, जिन्हें बहुत सी लौंडियाँ घेरे हुई हैं कमलिनी, किशोरी, कामिनी, लाड़िली, लक्ष्मीदेवी और कमला बैठी हुई मायारानी पर बातों के अमोघ बाण चला रही हैं।

किशोरी—(कमलिनी से) तुम्हारी बहिन मायारानी है बड़ी खूबसूरत!

कमला—केवल खूबसूरत ही नहीं, भोली और शर्मीली भी हद से ज्यादा है। देखिये, सिर ही नहीं उठाती, बात करना तो दूसरी बात है।

कामिनी—इन्हीं गुणों ने तो राजा गोपालसिंह को लुभा लिया था।

कमलिनी—मगर मुझे इस बात का बहुत रंज है कि ऐसी नेक बहिन की सोहबत में ज्यादा दिन तक रह न सकी।

किशोरी—जो हो मगर एक छोटी-सी भूल तो मायारानी से भी हो गई।

कामिनी—वह क्या ?

कमलिनी—यही कि राजा गोपालसिंह को इन्होंने कोठरी में बन्द करके कैदियों की तरह रख छोड़ा था।

किशोरी —इसका कोई न कोई सबब तो जरूर ही होगा। मैंने सुना है कि राजा गोपालसिंह इधर-उधर आँखें बहुत लड़ाया करते थे, यहाँ तक कि धनपत नामी एक वेश्या को अपने घर में डाल रक्खा था।(मायारानी से)क्यों बीबी, यह बात सच है ?

लक्ष्मीदेवी—ये तो बोलतीं ही नहीं, मालूम होता है हम लोगों से कुछ खफा हैं।

कमला—हम लोगों ने इनका क्या बिगाड़ा है जो हम लोगों से खफा होंगी, हाँ अगर तुमसे रंज हों तो कोई ताज्जुब की बात नहीं, क्योंकि तुम मुद्दत तक तो तारा के भेष में रहीं और आज लक्ष्मीदेवी बनकर इनका राज्य छीनना चाहती हो। बीबी, चाहे जो हो, मैं तो महाराज से इन्हीं की सिफारिश करूँगी तुम चाहे भला मानो चाहे बुरा।

कामिनी—तुम भले ही सिफारिश कर लो मगर राजा गोपालसिंह के दिल को कौन समझावेगा ?

कमला—उन्हें भी मैं समझा लूंगी कि आदमी से भूल-चूक हुआ ही करती हैं, ऐसे छोटे-छोटे कसूरों पर ध्यान देना भले आदमियों का काम नहीं है, देखो बेचारी ने कैसी नेकनामी के साथ उनका राज्य इतने दिनों तक चलाया।

किशोरी—गोपालसिंह तो बेचारे भोले-भाले आदमी ठहरे, उन्हें जो कुछ समझा दोगी, समझ जायेंगे, मगर ये तारारानी मानें तब तो ! ये जो हकनाहक लक्ष्मीदेवी बन कर बीच में कूदी पड़ती हैं और इस बेचारी भोली औरत पर जरा रहम नहीं खातीं !

लक्ष्मीदेवी —अच्छा रानी, लो मैं वादा करती हूँ कि कुछ न बोलूंगी बल्कि धनपत को छुड़वाने का भी उद्योग करूंगी, क्योंकि मुझे इस बेचारी पर दया आती है।

कमला—हाँ देखो तो सही, राजा गोपालसिंह की जुदाई में कैसा बिलख-बिलख कर रो रही है, कम्बख्त मक्खियाँ भी ऐसे समय में इसके साथ दुश्मनी कर रही हैं। किसी से कहो नारियल का चँवर लाकर इसकी मक्खियाँ तो झले।

किशोरी—इस काम के लिए तो भूतनाथ को बुलाना चाहिए।

कमला—इस बारे में तो मैं खुद शर्माती हूँ।

इतना सुनते ही सब की सब मुस्कुरा पड़ीं और कमलिनी तथा लक्ष्मीदेवी ने मुहब्बत की निगाह से कमला को देखा।

लक्ष्मीदेवी—मेरा दिल यह गवाही देता है कि भूतनाथ का मुकदमा एक दम से पलट जायगा।

कमलिनी—ईश्वर करे ऐसा ही हो, मैं तो चाहती हूँ कि मायारानी का मुकदमा भी एकदम से औंधा हो जाय और तारा बहिन तारा की तारा ही बनी रह जायँ।

ये सब बड़ी देर तक बैठी हुई मायारानी के जख्मों पर नमक छिड़कती रहीं और न मालूम कितनी देर तक बैठी रहतीं अगर इनके कानों में यह खुशखबरी न पहुँचती कि राजा वीरेन्द्रसिंह की सवारी इस किले में दाखिल हुआ ही चाहती है।

10

अब रोहतासगढ़ किले के अन्दर राजा वीरेन्द्रसिंह की सवारी आई है जिससे यहाँ की रिआया बहुत ही प्रसन्न है। छोटे-छोटे बच्चे भी उनके आने की खुशी में मग्न हो रहे हैं। इसका सबब यही है कि राजा वीरेन्द्रसिंह जब जहाँ रहते है खैरात का दरवाजा वहाँ खुला रहता है। यों तो जहाँ इनकी अमलदारी है, बराबर खैरात हुआ ही करती है मगर जहाँ ये स्वयं मौजूद रहते हैं खैरात ज्यादा हुआ करती है। खैरात का मकान और बन्दोबस्त अलग है। कोई आदमी वापस नहीं जाने पाता और जिसको जिस चीज की जरूरत होती है दी जाती है। तीन वर्ष से ऊपर और बारह वर्ष से कम उम्र वाले लड़कों को मिठाई बाँटने का हुक्म है और तीन वर्ष से कम उम्र वाले बच्चों को चीनी के खिलौने बाँटे जाते हैं। चीनी के खिलौने मिठाइयाँ और साथ ही इसके कपड़ों का बाँटना तभी तक जारी रहता है जब तक राजा वीरेन्द्रसिंह स्वयं मौजूद रहते हैं, और अन्न तो हमेशा बँटा करता है। यही सबब है कि आज रोहतासगढ़ के छोटे-छोटे बच्चों को भी हद से ज्यादा खुशी है और वे झुण्ड-के-झुण्ड इधर-उधर घूमते दिखाई दे रहे हैं।

आज यह खबर बहुत अच्छी तरह मशहूर हो रही है कि मायारानी नामी एक औरत और 'दारोगा बाबा' नामी एक मर्द इस किले में गिरफ्तार हुए हैं, जो वीरेन्द्रसिंह के दुश्मन हैं और भूतनाथ नामी कोई ऐयार गिरफ्तार किया गया है, जिसके मुकदमे का फैसला करने के लिए राजा साहब स्वयं आये हैं। ये खबरें किसी एक ढंग पर मशहूर नहीं हैं बल्कि तरह-तरह का पलेथन लगाकर लोग इनकी चर्चा कर रहे हैं और राजा वीरेन्द्रसिंह के दुश्मनों को जी-जान से गालियाँ दे रहे हैं।

राजा वीरेन्द्रसिंह के आने के साथ ही उनके ऐयारों ने एक-एक करके वे कुल बातें बयान कर दीं, जो आज के पहले हो चुकी थीं और जिन्हें राजा वीरेन्द्रसिंह नहीं जानते थे। भूतनाथ का हाल सुनकर उन्हें बड़ा ही रंज हुआ क्योंकि कमला को वे अपनी लड़की की तरह प्यार करते थे। खैर, सब बातों को सुन-सुनाकर राजा वीरेन्द्रसिंह महल में गए और कमलिनी, लाड़िली और कमला इत्यादि से इस तरह मिले जैसे बड़े लोग अपनी लड़कियों और भतीजियों से मिला करते हैं और उन सभी ने भी वैसी ही मुहब्बत और इज्जत का बरताव किया जैसा नेकचलन लड़कियाँ अपने माता-पिता के साथ करती हैं।

सभी को प्यार और दिलासा देकर राजा वीरेन्द्रसिंह बाहर आये और आज का दिन तेजसिंह से सलाह-विचार करने में बिताया। दूसरे दिन दोपहर के बाद शेरअलीखाँ से मुलाकात की और घण्टे भर रात जाने के बाद भूतनाथ का मुकदमा सुनने का विचार

प्रकट करके कहा कि मायारानी तथा दारोगा का मुकदमा भूतनाथ के बाद सुना जायेगा ।

राजा वीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह से यह भी कह दिया कि भूतनाथ का मुकदमा महल के अन्दर सुना जायेगा और उस समय हमारे ऐयारों के सिवाय यहाँ किसी गैर के रहने की जरूरत नही है । औरतों में भी सिवाय लड़कियों के जो चिक के अन्दर बैठाई जायेंगी, कोई लौंडी इतना नजदीक न रहने पावे कि हम लोगों की बातें सुने, और बलभद्रसिंह की गद्दी हमारे पास ही बिछाई जाये ।

हमारे पाठक सवाल कर सकते हैं कि जब मुकदमा सुनने के समय ऐयारों के सिवाय किसी गैर आदमी के मौजूद रहने की मनाही कर दी गई तो किशोरी, कमलिनी और लक्ष्मीदेवी इत्यादि को पर्दे के अन्दर बैठाने की क्या जरूरत थी ? इसका जवाब यह हो सकता है कि ताज्जुब नहीं, राजा वीरेन्द्रसिंह ने सोचा हो कि जिस समय भूतनाथ का मुकदमा सुना जायेगा और उसके ऐबों को पोटलियाँ खोलने के साथ-साथ सबूत की चिट्ठियाँ अर्थात् वह जन्मपत्री पढ़ी जायेगी, जो बलभद्रसिंह ने दी है तो बेशक लड़कियों के दिल पर चोट बैठेगी और उनके चेहरे तथा अंगों से उनकी अवस्था अवश्य प्रकट होगी कौन ठिकाना कोई चीख उठे, कोई बदहवास हो के गिर पड़े, या किसी से किसी तरह की बेअदबी हो जाये, तो यह अच्छी बात न होगी । बड़ों के सामने अनुचित काम बेबसी की अवस्था में हो जाने से दिल को रंज पहुँचेगा और यदि ऐसा न भी हुआ तो भी दिल की अवस्था छिपाने के लिए उन्हें बहुत उद्योग करना पड़ेगा तथा उनके नाजुक कलेजे को तकलीफ पहुँचेगी, जिससे वह लज्जित होगी । इससे इन लोगों का परदे के अन्दर ही बैठना उचित होगा । बेशक यही बात है और बड़ों को ऐसा खयाल होना ही चाहिए !

रात पहर भर से ज्यादा जा चुकी है । महल के एक छोटे से मगर दोहरे दालान में रोशनी अच्छी तरह हो रही है । दालान के पहले हिस्से में बारीक चिक का परदा गिरा हुआ है और भीतर पूरा अंधकार है । किशोरी, कामिनी, लक्ष्मीदेवी, कमलिनी, लाड़िली और कमला उसी के अन्दर बैठी हुई हैं । बाहरी हिस्से में जिसमें रोशनी बखूबी हो रही है, राजा वीरेन्द्रसिंह की गद्दी लगी हुई है, उनके बगल में बलभद्रसिंह बैठे हुए हैं, दूसरी बगल में कागजों की गठरी लिए हुए तेजसिंह विराजमान हैं, और बाकी के ऐयार लोग (भैरोंसिंह को छोड़ के) दोनों तरफ दिखाई दे रहे हैं तथा सभी की निगाहें सामने के मैदान पर पड़ रही हैं जिधर से हथकड़ी-बेड़ी से मजबूर भूतनाथ को लिए हुए देवीसिंह चले आ रहे हैं । भूतनाथ ने आने के साथ ही झुक कर राजा वीरेन्द्रसिंह को सलाम किया और कहा ।

भूतनाथ—व्यर्थ ही बात का बतंगड़ बनाकर मुझे साँसत में डाल रखा गया है, मगर भूतनाथ ने भी जिसने आप लोगों को खुश रखने के लिए कोई बात उठा नहीं रखी इस बात का प्रण कर लिया था कि जब तक राजा वीरेन्द्रसिंह का सामना न होगा, अपने मुकदमे की उलझन को खुलने न देगा ।

वीरेन्द्रसिंह—बेशक इस बात का मुझे भी बहुत रंज है कि उस भूतनाथ के ऊपर एक भारी जुर्म ठहर गया है, जिसकी कारंवाइयों को सुन-सुनकर हम खुश होते थे और जिसे मुहब्बत की निगाह से देखने की अभिलाषा रखते थे ।

भूतनाथ—अगर महाराज को इस बात का रंज है तो महाराज निश्चय रखें कि भूतनाथ महाराज की नजरों से दूर किए जाने लायक साबित नहीं होगा। (इधर-उधर और पीछे की तरफ देख के) मगर अफसोस, हमारा मददगार अभी तक नहीं पहुँचा, न मालूम कहाँ अटक रहा !

इतने में सामने की तरफ से वही जिन्न आता हुआ दिखाई पड़ा, जिसे तेजसिंह पहले देख चुके थे और जिसका हाल राजा वीरेन्द्रसिंह से भी कह चुके थे। इस जिन्न की चाल आजाद, बेफिक्र और निडर लोगों की-सी थी जो धीरे-धीरे चलकर उसी दालान में आ पहुँचा और चुपचाप एक किनारे खड़ा हो गया।

उसके रंग-ढंग और उसकी पोशाक का हाल हम एक जगह बयान कर आए हैं, इसलिए पुनः लिखने की कोई आवश्यकता नहीं। यद्यपि जिन्न आश्चर्यजनक रीति से यकायक वहाँ आ पहुँचा था और उसको इस बात का गुमान था कि हमारा आना लोगों को बड़ा ही आश्चर्यजनक मालूम होगा, मगर ऐसा न था क्योंकि तेजसिंह को इस बात की खबर पहले ही दिन हो चुकी थी जब वे जिन्न और भूतनाथ के पीछे-पीछे जाकर उनकी बातें सुन आये थे और तेजसिंह ने यह हाल राजा वीरेन्द्रसिंह, अपने साथियों और कमलिनी, लक्ष्मीदेवी वगैरह से भी कह दिया था, अतएव जिन्न के आने का सब कोई इन्तजार ही कर रहे थे और जब वह आ गया, तो सब उसकी सूरत गौर से देखने लगे। वीरेन्द्रसिंह का इशारा पाकर देवीसिंह ने उस जिन्न से पूछा—

देवीसिंह—महाराज की इच्छा है कि तुम अपना नाम और यहाँ आने का सबब बताओ।

जिन्न—मेरा नाम कृष्ण जिन्न है और मैं भूतनाथ का विचित्र मुकदमा सुनने तथा अपने एक पुराने मित्र से मिलने आया हूँ।

देवीसिंह—(आश्चर्य से) क्या भूतनाथ के अतिरिक्त कोई दूसरा आदमी भी तुम्हारा मित्र है ?

जिन्न—हाँ।

देवीसिंह—और वह है कहाँ ?

जिन्न—इसी जगह, आप लोगों के बीच ही में।

देवीसिंह—अगर ऐसा है तो तुम उसे अपने पास बुलाओ और बातचीत करो।

जिन्न—इससे आपको कोई मतलब नहीं, जब मौका आवेगा ऐसा किया जाएगा।

देवीसिंह—ताज्जुब है कि तुम किसी का कुछ खयाल न करके बेअदबी के साथ बातचीत करते हो ! क्या हम लोगों के साथ तुम्हें किसी तरह की दुश्मनी या रंज है ? या दुश्मनी पैदा करना चाहते हो ?

जिन्न—दुश्मनी बिना डाह, डर और रंज के पैदा नहीं होती और हमारे को ये तीनों बात छू नहीं गई हैं। न तो हमें किसी का डर है न किसी को डराने की इच्छा है, न किसी को कुछ देते हैं और न किसी से कुछ चाहते हैं, न कोई हमारा कुछ बिगाड़ सकता है न हम किसी का कुछ बिगाड़ते हैं, न हमें किसी बात की कमी है न लालसा है, फिर ऐसी अवस्था में किसी से दुश्मनी या रंज की नौबत हो भी क्योंकर सकती है ? अतः

आप लोगों को यही चाहिए कि हमारा खयाल छोड़कर अपना काम करें और हमारा होना न होना एक बराबर समझें।

जिन्न की बातों से सभी को बड़ा ही आश्चर्य और रंज हुआ, बल्कि हमारे कई ऐयारों को क्रोध भी चढ़ आया, मगर राजा वीरेन्द्रसिंह का इशारा पाकर सभी को चुप और शान्त होना ही पड़ा। वीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह की तरफ देखकर भूतनाथ का मुकदमा शुरू करने के लिए कहा और तेजसिंह ने ऐसा ही किया।

तेजसिंह ने भूमिका के तौर पर थोड़ा-सा पिछला हाल कह कर वह गठरी खोली जिसमें पीतल की एक सन्दूकड़ी और कागज का वह मुट्ठा भी था जिसमें की कई चिट्ठियाँ कमलिनी वगैरह के सामने पढ़ी जा चुकी थीं। तेजसिंह उन चिट्ठियों को पढ़ गये, जिनका हाल हमारे पाठकों को मालूम हो चुका है और इसके बाद अगली चिट्ठी पढ़ने का इरादा किया, मगर जिन्न ने उसी समय टोक दिया और कहा, "यदि महाराज साहब उचित समझें, तो दारोगा और मुन्दर को भी जिसने अपने को मायारानी के नाम से मशहूर कर रखा है और जो इस समय सरकार के कब्जे में है इसी जगह बुलवा लें और चिट्ठियों को उनके सामने पुनः पढ़ने की आज्ञा दें। यद्यपि यहाँ पर शेरअलीखाँ के आने की भी आवश्यकता है परन्तु मौके-मौके पर कई बातें ऐसी प्रकट होंगी, जिनका हाल शेरअलीखाँ को मालूम होने देना हम उचित नहीं समझते।"

यद्यपि जिन्न ने बेमौके टोक दिया था और राजा वीरेन्द्रसिंह तथा हमारे ऐयारों को इस बात का रंज होना चाहिए था, मगर ऐसा नहीं हुआ, बल्कि सभी ने जिन्न की बात पसन्द की और महाराज ने मायारानी को हाजिर करने का हुक्म दिया। तारासिंह गए और थोड़ी ही देर में मायारानी और दारोगा को इस तरह लिए हुए आ पहुँचे, जिस तरह अपनी जान से हाथ धोए और जिद्दी कैदियों को घसीटते हुए लाना पड़ता है। जिस समय मुन्दर वहाँ आई, उसने घबराहट के साथ चारों तरफ देखा। सबसे ज्यादा देर तक उसकी निगाह जिस पर अड़ी रही, वह बलभद्रसिंह था, और बलभद्रसिंह ने भी मायारानी को बड़े गौर से देर तक देखा। जिन्न ने इस समय पुनः टोका और राजा वीरेन्द्रसिंह से कहा, "आशा है कि हमारे होशियार और नीति-कुशल महाराज मुन्दर और बलभद्रसिंह की आँखों को बड़े ध्यान और गूढ़ विचार से देख रहे होंगे!"

जिन्न की इस बात ने होशियारों और बुद्धिमानों के दिल में एक नया ही रंग पैदा कर दिया और तेजसिंह तथा वीरेन्द्रसिंह ने मुस्कुराते हुए जिन्न की तरफ देखा। इसी समय भैरोंसिंह भी आ पहुँचे जिन्हें तेजसिंह कुछ समझा-बुझाकर आज दो दिन हुए बाग के उस हिस्से में छोड़ कर आये थे जिसमें मायारानी गिरफ्तार की गई थी। भैरोंसिंह के हाथ में एक छोटा-सा पुर्जा था जिसे उन्होंने तेजसिंह के हाथ में रख दिया और तब मुस्कुराते हुए जिन्न की तरफ देखा। भैरोंसिंह को देख जिन्न के दाँत भी हँसी से दिखाई दे गए, मगर उसने अपने को रोका और भैरोंसिंह की तरफ से मुँह फेर लिया। तेजसिंह ने इस पुर्जे को पढ़ा और हँसकर राजा वीरेन्द्रसिंह के हाथ में दे दिया। राजा वीरेन्द्रसिंह भी पढ़कर हँस पड़े और जिन्न तथा भैरोंसिंह की तरफ देखने लगे।

इस समय सभी की इच्छा यह जानने की हो रही थी कि भैरोंसिंह ने जो पुर्जा

तेजसिंह को दिया उसमें क्या लिखा हुआ था और राजा वीरेन्द्रसिंह उसे पढ़कर और जिन्न की तरफ देखकर क्यों हँस पड़े ? और इसी तरह जिन्न भैरोंसिंह को और भैरोंसिंह जिन्न को देखकर क्यों हँसे ? असल भेद न किसी को मालूम हुआ न कोई पूछ ही सका।

जब जिन्न ने मायारानी और बलभद्रसिंह की देखा-देखी के बारे में आवाजें कसी, उस समय मायारानी ने बलभद्रसिंह की तरफ से आँखें फेर लीं, मगर बलभद्रसिंह केवल आँख बचाकर चुप न रह गया बल्कि उसने क्रोध में आकर जिन्न से कहा—

बलभद्रसिंह—एक तो तुम बिना बुलाए यहाँ पर चले आए जहाँ आपस की गुप्त बातों का मामला पेश है, दूसरे तुमसे जो कुछ पूछा गया, उसका जवाब तुमने बेअदबी और ढिठाई के साथ दिया, तीसरे अब तुम बात-बात पर टोका-टाकी करने और आवाजें भी कसने लगे ! आखिर कोई कहाँ तक ये हरकतें बरदाश्त करेगा ? तुम हम लोगों की बातों में बोलने वाले कौन ?

जिन्न—(क्रोध और जोश में आकर) हमें भूतनाथ ने अपना मुख्तार बनाया है, इसलिए हम इस मामले में बोलने का अधिकार रखते हैं, हाँ, यदि राजा साहब हमें चुप रहने की आज्ञा दें तो हम अपनी जबान बन्द कर सकते हैं। (कुछ रुककर) मगर मैं अफसोस के साथ कहता हूँ कि क्रोध और खुदगर्जी ने तुम्हारी बुद्धि के आईने को गँदला कर दिया है और निर्लज्जता की सहायता से तुम बोलने में तेज हो गये हो। इतना भी नही सोचते कि इतने बड़े रोहतासगढ़ किले के अन्दर बल्कि महल के बीच में जो बेखौफ घुस आया है वह किसी तरह की ताकत भी रखता होगा या नहीं ! (राजा वीरेन्द्रसिंह और ऐयारों की तरफ इशारा करके) जो ऐसे-ऐसे बहादुरों और बुद्धिमानों के सामने बिना बुलाए आने पर भी ढिठाई के साथ वाद-विवाद कर रहा है, वह किसी तरह की कुदरत भी रखता होगा या नहीं ! मैं खूब जानता हूँ कि नेक, ईमानदार, निर्लोभ और लापरवाह आदमी को राजा वीरेन्द्रसिंह ऐसे बहादुर और तेजसिंह ऐसे चालाक आदमी भी कुछ नहीं कह सकते, तुम्हारे ऐसों की तो हकीकत ही क्या जिसने बेईमानी, लालच, दगाबाजी और बेशर्मी के साथ ही-साथ पापों की भारी गठरी अपने सिर पर उठा रखी है और उसके बोझ से घुटने तक जमीन के अन्दर गड़ा हुआ है। मैं इस बात को भी खूब समझता हूँ कि मेरी इस समय की बातचीत लक्ष्मीदेवी, कमलिनी और लाड़िली को जो इस पर्दे के अन्दर बैठी हुई सब-कुछ देख सुन रही हैं बहुत बुरी मालूम होती होगी, मगर उन्हें धीरज के साथ देखना चाहिए कि हम क्या करते हैं। हाँ मुझे अभी बहुत-कुछ कहना है और मैं चुप नहीं रह सकता क्योंकि तुमने लज्जा से सिर झुका लेने के बदले में बेशर्मी अख्तियार कर ली है और जिस तरह अबकी दफे टोका है उसी तरह आगे भी बात-बात मुझे टोकने का इरादा कर लिया है, मगर खूब समझ रखो कि राजा वीरेन्द्रसिंह और उनके ऐयारों की बातें मैं इसलिए सह लूँगा कि ये लोग किसी के साथ सिवाय भलाई के बुराई करने वाले नहीं हैं जब तक कोई कम्बख्त इन लोगों को व्यर्थ न सतावे, और ये नेक तथा बद को पहचानने की भी बुद्धि रखते हैं, मगर तुम्हारे ऐसे बेईमान और पापी की बातें मैं सह नहीं सकता। भूतनाथ पर एक भारी इल्जाम लगाया गया है और भूतनाथ का मैं मुख्तार हूँ, इससे मेरी इज्जत में कमी नहीं आ सकती। तुम लक्ष्मीदेवी,

कमलिनी और लाड़िली के बाप बनकर अपने को बराबरी का दर्जा दिया चाहते हो, मगर ऐसा नहीं हो सकता। अगर भूतनाथ दोषी है तो तुम भी मुँह दिखाने के लायक नहीं हो। समझ रखो और खूब समझ रखो कि चाहे आज ही या दो दिन के बाद हो, भूतनाथ की इज्जत तुमसे बढ़ी ही रहेगी ! (भूतनाथ की तरफ देखकर) क्यों जी भूतनाथ, तुम क्यों इससे दबे जाते हो ? तुम्हें किस बात का डर है ?

भूतनाथ—(पीतल की सन्दूकड़ी की तरफ इशारा करके) बस केवल इसी का डर है, और इस कागज के मुट्ठे को तो मैं कुछ भी नहीं समझता, इसकी इज्जत तो मेरे सामने इतनी ही हो सकती है जितनी आज के दिन मायारानी की उस चिट्ठी की होती जो वह अपने हाथ से लिख कर राजा गोपालसिंह के सामने इस नीयत से रखती कि उसका कसूर माफ किया जाये और लक्ष्मीदेवी का कुछ खयाल न करके मुझे पुनः रानी बनाया जाये।

जिन्न—निःसन्देह ऐसा ही है और इसी सन्दूकड़ी के सबब से बलभद्रसिंह तुम्हारे सामने ढिठाई कर रहा है। अच्छा इस सन्दूकड़ी का जादू दूर करने के लिए इसी के पास मैं एक तिलिस्मी कलमदान रखे देता हूँ, जिसमें बलभद्रसिंह पुनः तुम्हारे सामने बोलने का साहस न कर सके और तुम्हारा मुकदमा बिना किसी रोक-टोक के समाप्त हो जाये।

इतना कह कर जिन्न ने अपने कपड़ों के अन्दर से एक सोने का कलमदान निकाल कर उस सन्दूकड़ी के बगल में रख दिया जो राजा वीरेन्द्रसिंह के सामने रक्खी हुई थी और भूतनाथ के कागजात की गठरी में से निकाली गई थी।

यह कलमदान, जिसका ताला बन्द था, बहुत ही अनूठा और सुन्दर बना हुआ था। इसके ऊपर की तरफ मीनाकारी के काम की तीन तस्वीरें बनी हुई थीं और उनकी चमक इतनी तेज और साफ थी कि कोई देखने वाला इन्हें पुरानी नहीं कह सकता था।

इस कलमदान को देखते ही भूतनाथ खुशी से उछल पड़ा और जिन्न की तरफ देख के तथा हाथ जोड़ के बोला, "माफ करना, मैंने आपकी कुदरत के बारे में शक किया था। मैं नहीं जानता था कि आपके पास एक ऐसी अनूठी चीज है। यद्यपि मैंने अभी तक आपको नहीं पहचाना, तथापि कह सकता हूँ कि आप साधारण मनुष्य नहीं हैं। आप यह न समझें कि यह कलमदान मुझसे दूर है और मैं इसे अच्छी तरह से देख नहीं सकता। नहीं-नहीं, ऐसा नहीं है, इसकी एक झलक ने ही मेरे दिल के अन्दर इसकी पूरी-पूरी तस्वीर खींच दी है ! (आसमान की तरफ हाथ उठा के) हे ईश्वर, तू धन्य है !"

भूतनाथ के विपरीत बलभद्रसिंह पर उस कलमदान का उल्टा ही असर पड़ा। वह उसे देखते ही चिल्ला उठा और उठकर मैदान की तरफ भागा मगर जिन्न ने फुर्ती के साथ लपक कर उसे पकड़ लिया और वीरेन्द्रसिंह के सामने लाकर कहा, "भलमनसी के साथ हाँ चुपचाप बैठो, तुम भाग कर अपनी जान किसी तरह नहीं बचा सकते !"

केवल भूतनाथ और बलभद्रसिंह पर ही नहीं बल्कि तिलिस्म के दारोगा पर भी उस कलमदान का बहुत ही बुरा असर पड़ा और डर के मारे वह इस तरह काँपने लगा जैसे जड़ैया बुखार चढ़ आया हो। वीरेन्द्रसिंह, तेजसिंह और बाकी के ऐयारों को भी बड़ा ही आश्चर्य हुआ और वे लोग ताज्जुब-भरी निगाहों से उस कलमदान की तरफ देखने लगे। इतने में चिक के अन्दर से आवाज आई, "इस कलमदान को मैं भी जरा देखना

चाहती हूँ !" यह आवाज कमलिनी की थी जिसे सुनकर राजा वीरेन्द्रसिंह ने जिन्न की तरफ देखा और जिन्न ने जोश के साथ कहा, "हाँ-हाँ, आप बेशक इस कलमदान को पर्दे के अन्दर भिजवा दें क्योंकि लक्ष्मीदेवी और कमलिनी को भी इस कलमदान का देखना आवश्यक है।" (तेजसिंह से) "आप स्वयं इसे लेकर चिक के अन्दर जाइये।"

तेजसिंह कलमदान को लेकर उठ खड़े हुए और चिक के अन्दर जाकर कलमदान कमलिनी के हाथ में रख दिया। वहाँ किसी तरह की रोशनी नहीं थी और पूरा अंधकार था इसलिए उन सभी को कलमदान अच्छी तरह देखने के लिए दूसरे कमरे में जाना पड़ा जहाँ दीवारगीरों की रोशनी से दिन की तरह उजाला हो रहा था।

सिवाय लक्ष्मीदेवी के और किसी औरत ने कलमदान को नहीं पहचाना और न किसी पर उसका असर ही पड़ा, मगर लक्ष्मीदेवी ने जिस समय उसे उजाले में देखा, तो उसकी अजब हालत हो गई। वह सिर पकड़कर जमीन पर बैठने के साथ ही बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ी।

लक्ष्मीदेवी के बेहोश होने से एक हलचल-सी मच गई और कमलिनी तथा कमला इत्यादि उसे होश में लाने का उद्योग करने लगीं। तेजसिंह कलमदान उठाकर और यह कहकर कि "लक्ष्मीदेवी की तबीयत ठीक हो के साथ ही बाहर खबर कर देना" वीरेन्द्रसिंह के पास चले आये और कलमदान सामने रखकर लक्ष्मीदेवी का हाल कहा।

इस मामले से सभी का ताज्जुब बढ़ गया और वीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह से कहा—

वीरेन्द्रसिंह—इन भेदों को खोल कर आज अवश्य फैसला कर ही देना चाहिए।

तेजसिंह— मैं भी यही चाहता हूँ। (जिन्न की तरफ देख के) मगर यह बात बिना आपकी मदद के किसी तरह नहीं हो सकती!

जिन्न—जब तक राजा वीरेन्द्रसिंह आज्ञा नहीं देंगे मैं यहाँ से न जाऊँगा क्योंकि मैं भी इस मामले को आज खतम कर देना आवश्यक समझता हूँ मगर तब तक सब्र कीजिए जब तक लक्ष्मीदेवी की तबीयत ठिकाने न हो जाय और वे सब पर्दे के पास आकर बैठ न जायँ। हाँ, बलभद्रसिंह को कहिये कि वह उठकर अपने ठिकाने जाय और भाग जाने का ध्यान भूल कर चुपचाप बैठे।

बलभद्रसिंह की ताकत बिल्कुल निकल गई थी और वह जहाँ का तहाँ सुस्त बैठा रह गया था। तेजसिंह ने उसे उठाकर अपनी बगल में बैठा लिया और थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा।

आधी घड़ी के बाद खबर आई कि लक्ष्मीदेवी की तबीयत ठीक हो गई और वे सब पर्दे के पास आकर बैठ गई हैं।

□□

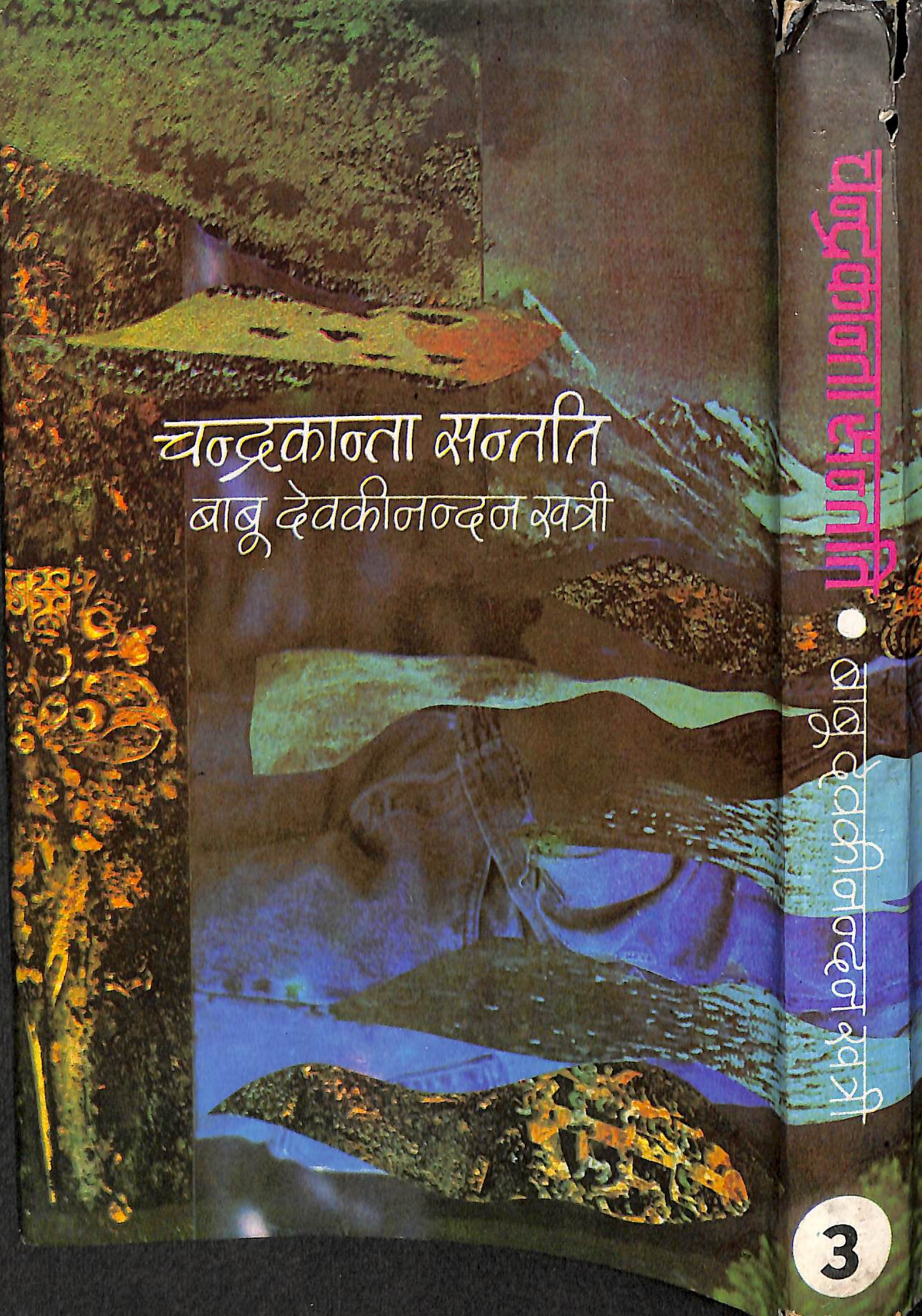
चन्द्रकान्ता सन्तति
बाबू देवकीनन्दन खत्री
चन्द्रकान्ता सन्तति
बाबू देवकीनन्दन खत्री
3